नेताजी सम्पूर्ण वाङ्मय

खंड-3

संपादकीय सलाहकार मंडल
एस सी एन नंबियार
पी के सहगल
आबिद हसन सफरानी
जितेन्द्र नाथ घोष

सम्पादक
शिशिर कुमार बोस

अनुवादक
प्रयाग नारायण त्रिपाठी

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : चैत्र 1909 (मार्च 1988)
द्वितीय संस्करण : शक 1919 (1997)
तृतीय संस्करण : शक 1920 (1999)

ISBN: 81 - 230-0577-6

मूल्य : 130.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

- पटियाला हाऊस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- प्रकाशन विभाग, हाल नं. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
- कामर्स हाऊस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, मुम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई-600090
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुअनन्तपुरम-695001
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004
- एफ विंग प्रथम तल, केंद्रीय सदन, कोरा मंगला, बंगलौर-560034
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- 27/6, राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001

विक्रय काउंटर • प्रकाशन विभाग

- पत्र सूचना कार्यालय, 80-मालवीय नगर, भोपाल (म. प्र.)-462003
- पत्र सूचना कार्यालय, सी. जी. ओ. काम्पलैक्स, 'ए' विंग, ए. बी. रोड, इंदौर (म. प्र.)
- पत्र सूचना कार्यालय, के-21, नंद निकेतन, मालवीय मार्ग, 'सी' स्कीम, जयपुर (राजस्थान)-302001

लेजर कम्पोजिंग : क्विक प्रिंट्स, सी-111/1, नारायणा फेस-1, नई दिल्ली-28
मुद्रक : डी एम एस प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर नई दिल्ली -110003

कृतज्ञता-ज्ञापन

शरत चन्द्र—विभावती बोस सग्रह

एमिली शेंक्ल बोस

अनीता बो फैफ

ए. सी उकील

राधानाथ रथ

दिलीप कुमार राय

सतोष कुमार नाग

गोपाल लाल सान्याल

हरिचरण बागची

शिवनाथ चट्टोपाध्याय
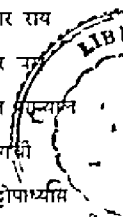
प्राक्कथन

नेताजी सम्पूर्ण वाड्मय के तीसरे खड मे मई 1923 से जुलाई 1926 तक की अवधि के नेताजी के पत्र व्यवहार का विविधतापूर्ण और आकर्षक सकलन है। पत्रो के इस विशाल सकलन के अतर्गत अधिकाश पत्र नेताजी के हैं और कुछ उन्हे लिखे गए पत्र हैं। इनका सबध नेताजी के सार्वजनिक जीवन के आरभिक भाग से है और इनका प्रकाशन व्यवस्थित रूप से पहली बार किया जा रहा है।

आरभ के कुछ पत्रो म बगाल के काग्रेस सगठन के अतर्गत उत्पन्न तनाव का परिचय मिलता है। यह तनाव कौंसिल में प्रवेश के सवाल को लकर पार्टी म मतभेद का परिणाम था। इस मतभेद के कारण दो शिविर बन गए थे। एक तो स्वराजवादियो का शिविर जिसके नेता देशबधु चितरजन दास थे दूसरा तथाकथित अपरिवर्तनवादियो का शिविर। यह द्रष्टव्य है कि इस अवधि मे पहले तो नेताजी स्वराज पार्टी म देशबधु के दाहिने हाथ रहे फिर बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के सचिव भी रहे। अप्रैल 1924 मे उनकी नियुक्ति कलकत्ता कार्पोरेशन के मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप म हुई और इस प्रकार उनकी जीवन धारा म एक नया मोड आया। यद्यपि वे इस पद पर अधिक समय तक काम नहीं कर सके क्योकि उन्हे गिरफ्तार करके 1924 में बर्मा भेज दिया गया तथापि जेल से भेजे गए उनके पत्रो से पता चलता है कि वे कलकत्ता नगर की समस्याओ के प्रति अपने आरभिक जीवन से ही कितनी दिलचस्पी रखते थे।

यह स्वीकार किया गया है कि अपने सक्रिय राजनैतिक जीवन के आरभिक वर्षो में सुभाष चन्द्र बोस को जिस बडी चुनौती का सामना पहली बार करना पडा वह 1924 म उनकी गिरफ्तारी और बर्मा के लिए निष्कासन के रूप में आई। उस अनुभव क बाद उनके शारीरिक बौद्धिक भावनात्मक और वैचारिक व्यक्तित्व म बदलाव आया तथा एक नेता के रूप में उनके जीवन की नींव पडी। 1927 म उनके बर्मा से लौटने और 1933 के आरभ म उनकी जीवन धारा मे एक और बडा मोड आने के बीच उन्हे जिस रूप म देखा गया वह बर्मा की जेलो म उनके व्यक्तित्व के निर्माण का परिणाम था। इस प्रकार इस खड म जो पत्र व्यवहार प्रकाशित किया गया है उससे उनके जीवन क एक महत्वपूर्ण काल खड पर बहुत मूल्यवान प्रकाश पडता है। यह खड इस दृष्टि स और भी दिलचस्प तथा सजीव हो गया है कि नेताजी रिसर्च ब्यूरो ने इसम उनके द्वारा लिखे गए बहुसख्यक पत्रो के साथ साथ उनको लिखे गए पत्रो को भी व्यवस्थित रूप म रखा है। चौथे खड म इस पत्र व्यवहार की अगली कडी के बहुत से पत्रो को दिया जाएगा। इस खड मे प्रकाशित पत्रो म अनेक सभावित प्रश्नो और स्थितियो की चर्चा है जैसे व्यक्तिगत और पारिवारिक सबध सामाजिक परपराए, शैक्षिक तथा सास्कृतिक मामले दर्शन व नैतिकता मनोवैज्ञानिक समस्याए, नगर व्यवस्था सबधी विषय वैचारिक [illegible] तथा सम सामयिक राजनैतिक प्रश्न। उन्होने जो पत्र सरकार को तथा जेल के अधिकारियो

को लिखे, उनमें से बहुत से बर्मा की जेलों में संबद्ध कागज़-पत्रों में पाए गए। इन पत्रों से यह प्रकट होता है कि किसी पराधीन देश में एक विदेशी शक्ति के विरुद्ध किसी राजनैतिक बंदी को कितना असमान और तीव्र संघर्ष करना पड़ता है। कुल मिलाकर ये पत्र-व्यवहार केवल व्यक्तिगत, औपचारिक या राजनैतिक नहीं हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण रूप में ऐतिहासिक हैं।

नेताजी सम्पूर्ण वाङ्मय के पहले खंड में उनके बचपन, किशोरावस्था और युवावस्था के आरंभिक दिनों के पत्र प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान खंड को उसी क्रम की अगली श्रृंखला मानना चाहिए। इन पत्रों में और गहरी पैठ के लिए पाठक को परामर्श दिया जाता है कि वह नेताजी सम्पूर्ण वाङ्मय के दूसरे खंड के निम्नलिखित अध्यायों को पढ़ें—देशबंधु चित्तरंजन दास का उत्थान (1924-25), शिथिलता (1925-27) और बर्मा-जेल में (1925-27)।

इस खंड के पत्र-व्यवहारों के अंतर्गत अधिकांश वे पत्र हैं, जिनका आदान-प्रदान उनके और शरत चन्द्र बोस के बीच हुआ था। दोनों भाइयों के बीच इस पत्र-व्यवहार से जहां एक ओर अनेक सूचनाएं मिलती हैं, वहीं उनके आपसी संबंधों पर भी प्रकाश पड़ता है। ये संबंध भावनात्मक लगाव के रूप में बचपन और युवावस्था में स्थापित हुए और अंत में कष्ट और संघर्ष के बीच आजीवन एक अद्वितीय और अटूट भ्रातृत्व के रूप में परिपक्व हुए। इतिहास में इसकी मिसाल मिलना कठिन है। श्रीमती बासंती देवी और श्रीमती विभावती बोस को लिखे गए उनके पत्रों से उनके व्यक्तिगत संबंधों की प्रकृति और गहराई का पता चलता है। उनके मित्रों, सहयोगियों और अनुयायियों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार अनेक कारणों से बहुत दिलचस्प है। इन मित्रों में हैं:– दिलीप कुमार राय, संतोष कुमार बसु, गोपबंधु दास, शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय, नृसिंह चिंतामणि केलकर आदि।

आरंभ में इस खंड में और बड़ी समयावधि को समेटने की योजना थी। लेकिन जैसे-जैसे काम आगे बढ़ता गया, हमें पता चला कि हमारे पास जो सामग्री है, उसे किसी एक खंड के लिए निर्धारित पृष्ठों के अंतर्गत नहीं दिया जा सकता। इस तरह अतिरिक्त सामग्री चौथे खंड में आएगी। इससे यह संभावना भी प्रकट हुई है कि नेताजी सम्पूर्ण वाङ्मय के अंतर्गत अतिरिक्त खंड रखने पड़ सकते हैं।

हम जैसे-जैसे एक खंड से दूसरे खंड तक पहुंचते जाते हैं, हमारे प्रकाशन प्रभाग का काम और तेज तथा उत्साहवर्द्धक होता जाता है। अंग्रेजी के मूल खंडों का प्रमुख कार्यभार जिन महानुभावों ने संभाला हुआ है, उनमें हैं हमारे वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी श्री त्रिदिव घोष, वरिष्ठ प्रकाशन सहायक श्री जितेन्द्र चक्रवर्ती, अनुसंधान सहायक कुमारी प्रशिला सरकार, कुमारी मिथाली गुहा ठाकुर्ता और कुमारी कस्तूरी दत्त, पुस्तक अधिकारी श्री नाग सुन्दरम, पांडुलिपि तैयार करने के काम में संबद्ध श्री कार्तिक चक्रवर्ती तथा प्रेस संपर्क कार्य से संबद्ध श्री रमणी मोहन दास।

इन खडों का प्रकाशन भारत सरकार के शिक्षा और सस्कृति मत्रालय के वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है, जिसके लिए हम फिर हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। मुझे कोई सदेह नहीं कि पिछले खडो की तरह इस खड का भी स्वागत देश भर मे उत्साह से होगा।

जय हिन्द
शिशिर कुमार बोस

नेताजी भवन
38/2, लाला लाजपत राय रोड
कलकत्ता-700020
15 अगस्त 1981

विषय-सूची

चित्र

पत्र-व्यवहार
मई 1923-जुलाई 1926

1. श्रीयुत् श्याम सुन्दर चक्रवर्ती के नाम

38/2 एल्गिन रोड,
कलकत्ता
9-5-23

प्रिय महोदय,

यह देखते हुए कि बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी की बैठक शीघ्र होने वाली है और उसमे महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों पर विचार किया जाएगा, अगर आप कृपापूर्वक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देवे, तो वह बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी के सदस्यों तथा आम जनता के लिए बहुत सहायक होगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं यह अनुरोध सार्वजनिक हित मे कर रहा हू। अल्पमत वाले पक्ष के सदस्यो ने सभाओ मे और समाचारपत्रों में की गई घोषणाओं में अपनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर दी है। प्रात मे बहुमत पक्ष के नेता के रूप में अब यह आप पर है, महोदय, कि आप अपनी स्थिति पूर्णत स्पष्ट कर दे। जनता चाहती है कि दोनो ही पक्ष अपने-अपने इरादों का खुलासा पेश कर दे, जिससे वह अपना फैसला दे सके।

1 क्या आपका यह विश्वास है, महोदय, कि भारत मे नौकरशाही को तब तक सही राह पर नहीं लाया जा सकता, जब तक सविनय अवज्ञा का सहारा न लिया जाए।

2 अगर उपर्युक्त सवाल का जवाब 'न' मे है, तो आपके विचार से नौकरशाही पर दबाव डालने का कौन-सा तरीका है जिससे वह जनता की मागें मान लें?

3 लेकिन अगर उत्तर 'हा' में है, तो क्या आप यह मानते हैं, महोदय, कि बडे पैमाने पर सविनय अवज्ञा आदोलन अगले छह महीनो मे आरभ करने की कोई सभावना है?

4 अगर ऐसी सभावना है, तो आपके विचार से सपूर्ण देश को सविनय अवज्ञा आदोलन के लिए कैसे तैयार किया जा सकता है।

5 अगर ऐसी सभावना नहीं है, तो आप इसे उचित और ईमानदारी की बात मानते हैं, महोदय, कि सविनय अवज्ञा के लिए तैयारी करने के उद्देश्य से देश में जन-धन जुटाने की अपील की जाए?

6 इस सदर्भ मे क्या आप यह सोचते हैं,महोदय, कि क्या 50 हजार स्वयसेवको और 25 लाख रुपये को जमा कर लेना ही अपने आप मे सविनय अवज्ञा के लिए देश को तैयार करना होगा?

7. क्या आपको मालूम नहीं, महोदय, कि इलाहाबाद में किए गए वादे के अनुसार अल्पमत वाले पक्ष को रचनात्मक कार्यक्रम में मदद देनी थी, न कि सविनय अवज्ञा की तैयारी के वास्ते, जिसकी, उनकी राय में, निकट भविष्य में कोई संभावना नहीं थी?

8. क्या आपको मालूम नहीं है, महोदय, कि इस मामले की ओर बैंगलोर में ध्यान खींचा गया था और सर्वसम्मत समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से अल्पमत वाला पक्ष जन-धन के संग्रह से संबद्ध प्रस्ताव करना चाहता था, परंतु सविनय अवज्ञा को नहीं, बल्कि रचनात्मक कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए।

9. क्या आपको मालूम नहीं है, महोदय, कि उस प्रस्ताव को आपने अध्यक्ष की हैसियत से अनियमित करार दिया था?

10. यदि उत्तर 'हां' में है, तो क्या आप ईमानदारी से अल्पमत वाले पक्ष पर यह इलजाम लगा सकते हैं, महोदय, कि उसने 'गया कार्यक्रम' के अनुसार देश को सविनय अवज्ञा के लिए तैयार करने के वास्ते जन-धन एकत्र करने की दिशा में भरसक प्रयास नहीं किया?

11. क्या यह सच नहीं है, महोदय, कि बैंगलोर में अल्पमत वाले पक्ष के एक सदस्य द्वारा एक प्रस्ताव रखा गया था, जिसमें 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत के अनुसार दोनों पक्षों में समझौते के लिए आग्रह किया गया था?

12. क्या यह सच नहीं है, महोदय, कि आपने अध्यक्ष के नाते उस प्रस्ताव को नियम-विरुद्ध करार दिया था?

13. अगर उत्तर 'हां' में है, तो क्या आप ईमानदारी से कह सकते हैं, महोदय, कि अल्पमत वाले पक्ष ने बहुमत वाले पक्ष के साथ 'एक ही उपासना-गृह में पूजा' करने से इंकार कर दिया है?

14. क्या आपकी यह मान्यता है, महोदय, कि असहयोगी होने के नाते हमें यूनियन बोर्डों, नगरपालिकाओं, स्थानीय बोर्डों, जिला बोर्डों और विधान परिषदों जैसी सार्वजनिक संस्थाओं से कुछ लेना-देना नहीं है?

15. अगर उत्तर 'हां' में है, तो आप इस सच्चाई से कैसे अपनी मान्यता का मेल बिठाते हैं कि स्वयं महात्मा गांधी बोर्डों और म्यूनिसिपैलिटियों पर कब्जा करने के पक्ष में थे और बहुमत वाले पक्ष के प्रायः सभी प्रमुख नेता या तो बोर्डों और म्यूनिसिपैलिटियों में प्रविष्ट हो चुके हैं या प्रवेश के लिए कोशिश में हैं?

16. क्या आप यह आग्रह करेंगे, महोदय, कि उक्त मान्यता को स्वीकार करके महात्मा गांधी और बहुमत वाले पक्ष के प्रमुख नेता असहयोग की भावना के प्रति सच्चे नहीं रहे हैं?

17. क्या आप उन कदमों की पुष्टि करते हैं, महोदय, जो श्रीयुत् राजगोपालाचारी, अंसारी, मोअज्जम अली, सैयद महमूद और श्रीमती नायडू ने निम्नलिखित शर्तों पर समझौते की सिफारिश करते हुए उठाए हैं।

(क) कांग्रेस चुनाव के मैदान मे उतरे।

(ख) दोनो ही पक्ष रचनात्मक कार्यक्रम अपनाए।

(ग) दोनो ही पक्ष देश को सविनय अवज्ञा के लिए तैयार करने में सहायता दें।

(घ) पक्षो का मतभेद समाप्त हो।

18 क्या आप जानते हैं, महोदय, कि अल्पमत वाले पक्ष के सदस्यो को अपने आपको कांग्रेसजन कहने का अधिकार नहीं है और उन्हें तुरत कांग्रेस छोड देनी चाहिए।

19 महोदय, अगर अल्पमत वाला पक्ष यह मार्ग अपनाए, तो क्या आपको प्रसन्नता होगी ?

सादर,

आपका,
सुभाष चन्द्र बोस

2. अब्दुल मतीन चौधरी के नाम
(बंगाल प्रांतीय स्वराज कमेटी)

148, रसा रोड, साउथ,
कलकत्ता
दिनांक 21-5-23

प्रिय श्री चौधरी,

आपका कार्ड मिला। मैं आपको यथाशीघ्र कुछ पैसा भेजने का प्रयत्न कर रहा हू। मैंने अब्दुल हमीद साहब के बारे में पूछताछ करते हुए आपको एक तार भेजा था। मुझे टेलीग्राफ के दफ्तर से सूचना दी गई कि डिप्टी कमिश्नर के आदेश के अनुसार उस तार को बीच मे ही रोक लिया गया। मैंने मौलवी अब्दुल हमीद को बबई के लिए रवाना होने का अनुरोध करते हुए तार भेजा है, लेकिन मैं नहीं जानता कि क्या उन्हे तार मिलेगा या वे रवाना हो सकेंगे।

आपका सुहृद,
सुभाष चन्द्र बोस

3. अमृत बाजार पत्रिका के संपादक के नाम

38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता
4 जून 1923

महोदय,

कलकत्ता के अखबारों में बंबई में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में दिए गए मेरे भाषण की जो गलत रिपोर्ट छपी है, उसकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया गया है। उस बैठक में मैंने कहा था कि बंगाल की विधान परिषद् का पुराने ढंग पर बहिष्कार विफल रहेगा। मेरे कथन की सत्यता कलकत्ता में हुए पिछले उप-चुनाव से सिद्ध हुई है, जिसमें स्वराज पार्टी की पूर्ण निष्क्रियता तथा बहुमत वाले पक्ष के तीव्र परिषद्-विरोधी प्रचार के बावजूद लगभग 40 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले। मैंने यह भी कहा था कि अगली परिषद् में दो विधेयक आ रहे हैं: एक का संबंध विश्वविद्यालय के मामलों से है और दूसरा काश्तकारी अधिकारों के बारे में है। ये दोनों विधेयक प्रबुद्ध वर्ग, मध्य वित्त वर्ग और आम जनता के लिए इतने अधिक महत्त्व के हैं कि परिषद् के बारे में कांग्रेस का रुख कुछ भी क्यों न हो, मेरी राय में बंगाल के अधिकांश लोग अगले चुनाव में अवश्य ही परिषद् के लिए अपने प्रतिनिधि भेजेंगे। निष्कर्ष रूप में मैंने कहा था कि इन परिस्थितियों में मुझे बंगाल में परिषद्-विरोधी प्रचार नितांत व्यर्थ लग रहा है।

मैंने यह कभी नहीं कहा था कि उक्त दोनों विधेयकों के बारे में स्वराज पार्टी का रुख क्या रहेगा। यह कहना मुझे एकदम अनावश्यक लगा था, क्योंकि स्वराज पार्टी का अपनी मांगों के स्वीकृत न किए जाने के बारे में रुख केवल लगातार एक समान अविचल रूप से विघ्न डालने का ही हो सकता था।

मेरे भाषण का उद्देश्य एकमात्र यह बताना था कि बंगाल की वर्तमान परिस्थितियों के कारण उस प्रांत में परिषद्-विरोधी प्रचार का अंत विफलता में ही हो सकता है।

सुभाष चन्द्र बोस

4 अब्दुल मतीन चौधरी के नाम
(बगाल प्रातीय स्वराज्य कमेटी)

148 रसा राड साउथ
कलकत्ता
दिनाक 20 जून 1923

प्रिय श्री चौधरी

किरण बाबू के नाम आपका पत्र मिल गया। मैंने आज तार-मनीआर्डर द्वारा एक सौ रुपया भेज दिया है। मुझे आशा है कि मैं शेष 150 रु भी कुछ दिन बाद भेज सकूगा। लेकिन मैं समझता हू कि मुझे कुछ पैसा बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी के उन सदस्यों को यात्रा-खर्च के लिए देना होगा जो कमेटी की बैठक में शामिल होने के लिए आएगे। लेकिन यह आपके यहा आने पर किया जा सकता है।

कमेटी की बैठक की कार्यसूची में सबसे अधिक महत्व का विषय बवई समझौते पर विचार करना होगा। अगर हम उसे स्वीकृत कराने में सफल होते हैं तो यह सभावना है कि अध्यक्ष श्याम बाबू और मत्री प्रफुल्ल बाबू शायद इस्तीफा दे द। अगर श्याम बाबू और प्रफुल्ल बाबू त्यागपत्र देते हैं तो पुन चुनाव हो सकता है। चुनाव के लिए हम अध्यक्ष पद के लिए मौलाना अबुल कलाम आजाद को खड़ा कर सकते हैं और अगर कोई और बेहतर व्यक्ति न मिला तो मैं मत्री पद का उम्मीदवार हो सकता हू। पूरी सभावना है कि दुबारा चुनाव होने पर अपरिवर्तनवादी मत्री पद के लिए मौलवी मुजीबुर्रहमान को खडा करेंगे।

कृपया इन परिस्थितियों पर विचार कर और अगर आप सोचते हैं कि आप किसी सदस्य पर समर्थन के लिए भरोसा कर सकते हैं तो उसे अपने साथ कलकत्ता ला सकते हैं। बैठक की कार्रवाई के लिए विचार करने योग्य और कोई बात नहीं है। यह मैं आप पर छोडता हू कि आप तय करे कि किसको साथ लाना है। निस्सदेह हम ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं चाहते जो यहा आकर हमारे विरुद्ध मत दे। कृपया यह भी देख कि अपरिवर्तनवादी उस बैठक में शामिल न हो क्योंकि वह हमारे लिए आशिक रूप से लाभप्रद होगा।

अगर तार-मनीआर्डर बीच में रोक लिया जाए, तो कृपया मुझे किसी और के नाम पर तार भेजे और मैं पैसा आपको देने के लिए मुहम्मद इलियास को भेज दूगा। मैं सिल्हट के मौलवी मुहम्मद अब्दुल्ला से मिल चुका हू। वे आपका पत्र लेकर आए थे।

आपका सुहृद,
सुभाष चन्द्र बोस

5. अमृत बाजार पत्रिका के संपादक के नाम

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
24-7-23

महोदय,

सार्वजनिक सभाएं जिस ढंग से आयोजित की जा रही हैं, उसके विरुद्ध प्रतिवाद प्रकट करने का समय अब आ गया है। गत 18 जुलाई को मिर्जापुर पार्क में एक सभा की गई और यह आशा की गई कि उसके आयोजक कलकत्ता में रहने वाले सभी प्रमुख नेताओं को आमंत्रित करेंगे। मैं जानता हूं कि श्रीयुत् दास को अब तक उस सभा में आमंत्रित नहीं किया गया जब तक मैं वहां नहीं पहुंचा और मैंने एक प्रमुख आयोजक को यह सुझाव नहीं दिया कि उन्हें जाकर श्रीयुत् दास को आमंत्रित कर आना चाहिए। दुर्भाग्य से जनता को इन अप्रिय बातों की जानकारी नहीं है और इसलिए वह अपनी ही एक धारणा बना लेती है।

सोमवार, 23 जुलाई को मैंने 'सर्वेंट' में उन सभाओं की सूचना देखी जो 25 और 26 जुलाई को टकिंरा शांति प्रतिष्ठान के संबंध में होने वाली थी। मुझे आयोजकों में अपना नाम भी पढ़ने को मिला। लेकिन यह मेरा दुर्भाग्य था कि आयोजक-मंडल ने मात्र औपचारिकता के नाते भी आयोजकों की सूची को प्रकाशनार्थ भेजने से पहले मुझे सभाओं के बारे में न सूचित करने की आवश्यकता समझी, न सलाह देने की।

आज सवेरे 'सर्वेंट' में एक और सूचना छपी, जिसमें कहा गया कि 25 जुलाई की सभा रद्द की जाती है और ऐलान किया गया कि 26 जुलाई को दो सभाएं होंगी। इस सूचना में भी हस्ताक्षरकर्ताओं में मेरा नाम शामिल था। लेकिन सूचना को प्रकाशन के लिए भेजने से पहले किसी ने भी यह सावधानी नहीं बरती कि मुझे जानकारी देते कि कार्यक्रम में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन किया जा रहा है।

मैं मानता हूं कि एक ही दिन में दो अलग-अलग जगहों पर दो सार्वजनिक सभाएं करना वाहियात बातें हैं। और यह तो और भी ज्यादा बेहूदापन है कि कामकाज वाले दिन सभा दिन में दो बजे से टाउन हाल जैसी जगह में की जाए, जब कि उसी दिन अन्यत्र शाम 4.30 बजे से एक और सभा समान उद्देश्य से की जानी है। इसलिए मैं अपने सहयोगी संयोजकों से अनुरोध करूंगा कि वे टाउन हाल में दो बजे से होने वाली सभा को रद्द कर दें और शाम को किसी पार्क में ही सभा रखें और उसी में सभी नेताओं को एकत्र करें। मुझे आशा है कि मेरी अपील व्यर्थ नहीं जाएगी।

सुभाष चन्द्र बोस

25 जुलाई 1923 को प्रकाशित।

6 अमृत बाजार पत्रिका के संपादक के नाम

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
9 8 23

विषय - बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के बारे मे।

महोदय

बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी के अनुरोध पर बुलाई गई बैठक के बारे मे जो विवाद उछाला गया है उस पर मुझे आश्चर्य है। क्या इसमे कोई सदेह है कि मत्री ने ऐसी बैठक करने की भावना का ही नहीं बल्कि नियमो का भी उल्लघन किया है? बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी का नियम 23 सामान्य बैठकों से सबध रखता है। उसमे सदस्यो को अधिकार दिया गया है कि वे मत्री की इच्छा के विरुद्ध भी बैठक बुला सकते हैं। नियम 24 का विरोध सूचना देने और बैठक करने के बीच का विरोध न होकर मत्री के अधिकारो और सदस्यों के बैठक करने के अधिकारों के बीच का विरोध है। मत्री ने 'आह्वान' शब्द का लाभ उठाया है और यह दलील पेश की है कि उन पर केवल इतनी ही बाध्यता है कि वे 15 दिन के अदर अदर अनुरोध पर बुलाई जाने वाली बैठक की सूचना दे देव। मैं कहना चाहूगा कि अगर उनकी व्याख्या सही भी मान ली जाए तो भी उन्होने 15 अगस्त की बैठक की सूचना अनुरोध अर्थात् 10 जुलाई से 15 दिन के अदर अदर नहीं दी। ऐसी व्याख्या के अतर्गत सूचना 31 को न देकर 30 को दी जानी चाहिए थी। इसलिए स्वय उन्हीं के अनुसार 15 अगस्त की बैठक अवैध है। इसी व्याख्या के अनुसार 30 तारीख को अनुरोधमूलक बैठक बुलाने का अधिकार अनुरोधकर्ताओ को मिल चुका था।

लेकिन ऐसी व्याख्या अर्थहीन है। नियम 24 में प्रयुक्त आह्वान' शब्द का अर्थ है बैठक आयोजित करना। सूचना का सवाल नियम 24 में कतई अभिप्रेत न होकर नियम 25 मे आता है। नियमो की योजना एकदम स्पष्ट है। जैसा कि मैंने पहले कहा है नियम 23 असाधारण बैठको को आयोजित करने से सबद्ध है। उसमे यह प्रावधान है कि मत्री अपने ही प्रस्ताव द्वारा जब कभी आवश्यकता हो ऐसी असाधारण बैठक का आयोजन कर सकता है। लेकिन अगर सदस्य यह जरूरी समझें कि बैठक बुलाई जानी चाहिए, तो उसकी मनमानी कार्रवाई को रोकने के लिए नियम मे यह व्यवस्था की गई है कि अगर कम से कम दो सदस्य अनुरोध पर हस्ताक्षर कर तो मत्री को ऐसी बैठक बुलानी पड़ेगी। क्या यह तर्क दिया जाता है कि मत्री जब चाहे तब बैठक बुलाकर अनुरोधमूलक बैठक के उद्देश्य को विफल कर सकता है? बात ऐसा नहीं है यह इसी नियम के अतिम भाग को देखने से पर्याप्त स्पष्ट हो जाता है। उस भाग म कहा गया है कि 'अगर अनुरोध के अनुसार बैठक बुलाने म मत्री असफल रहता है तो अनुरोधकर्ता स्वय बैठक बुला सकते हैं।' इस प्रकार यह पर्याप्त रूप म स्पष्ट है कि अनुरोधमूलक बैठक के मामले म अधिकार मत्री से लिया जाता है और अगर वह अनुरोध के अतर्गत 15 दिन क अदर-

अंदर बैठक नहीं बुलाता तो ऐसी बैठक अनुरोधकर्ता और केवल अनुरोधकर्ता ही बुला सकता है। अगर ऐसा न हो तो 'अनुरोधकर्ताओं द्वारा चाही गई बैठक' इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। यह कहना गैर-जरूरी है कि अनुरोधकर्ताओं का अधिकार ऐसी सूचना जारी करना नहीं है (जो निरर्थक हो), बल्कि बैठक आयोजित कराना है। यह भी ध्यान में रखना होगा कि इस मामले में अनुरोध का यह तकाजा था कि बैठक अनुरोध किए जाने की तिथि से 15 दिन के अंदर-अंदर हो। इसलिए इस मामले में 'अनुरोधकर्ताओं द्वारा बुलाई गई बैठक' ऐसी बैठक है, जो अनुरोध की तिथि के 15 दिन के अंदर-अंदर की गई हो।

मैं इस मुद्दे को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर दूं। बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी समिति ने संकल्प पारित किया कि अगर कोई व्यक्ति 31 मई के बाद कांग्रेस कमेटी का सदस्य बनता है, तो उसे कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में प्रतिनिधि होने या ऐसे प्रतिनिधियों के चुनाव में मत देने का अधिकार नहीं होगा। हमारे विचार से यह नियम मनमाना और अवैध है। इसलिए हमें यह अधिकार है कि हम ऐसे प्रावधान को हटाने के लिए प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक कराएं। अगर उप-खंड 24 में 'बुलाना' का अर्थ केवल सूचना देना है, तो मंत्री घोषित कर सकता है कि अनुरोधमूलक बैठक कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के बाद बुलाई जाएगी। इससे अनुरोधकर्ताओं के अधिकारों का पूर्णतः दमन हो जाएगा। यह कहना इस स्थिति का कोई निराकरण नहीं है कि मंत्री असंगत ढंग से काम नहीं करेगा। नियम में यह अभिप्रेत है कि मंत्री असंगत ढंग से काम कर सकता है और इसलिए उसमें इस स्थिति का सामना करने की व्यवस्था की गई है। अन्यथा, केवल इसी ही प्रावधान की आवश्यकता होती कि अनुरोधकर्ताओं को मंत्री का समाधान नहीं प्रस्तुत करता कि इस मौके पर 15 अगस्त एक असंगत तिथि नहीं है। यह सवाल कि तिथि संगत है या असंगत, अनुरोधकर्ताओं के बैठक करने के अधिकार से कोई वास्ता नहीं रखता और वे 11 तारीख को ऐसी बैठक करने जा रहे हैं।

लेकिन यह पूछा जा सकता है कि अनुरोधकर्ता 15 अगस्त की बैठकों में विचार-विमर्श के लिए क्यों नहीं सहमत होते। उत्तर स्पष्ट है। जिस चुनाव को अनुरोधकर्ता अवैध मानते हैं, वह अगर 15 अगस्त तक पूरा नहीं हो चुका होगा, तो कम से कम काफी आगे तो बढ़ ही चुकेगा। इसके अलावा मंत्री और परिषद् ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बंबई बैठक के बाद जिस ढंग से काम किया है उससे वे हमारा विश्वास खो चुके हैं। बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में उनमें से अनेक ने हमें यह आभास दिया कि वे इस्तीफा देने जा रहे हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं किया है। उन्होंने कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के लिए प्रतिनिधियों के चुनाव के जो नियम बनाए हैं, उनके द्वारा वे उन सबका चुनाव असंभव कर देना चाहते हैं जो 31 मई के बाद सदस्य बने हैं, हालांकि विशेष अधिवेशन देश की बदली हुई परिस्थितियों पर विचार करने के लिए बुलाया गया है। कुछ चुनाव-अधिकारियों ने मनमाने ढंग से बहुत से ऐसे लोगों के नाम काट दिए हैं कि हमें अब कार्यकारिणी पर विश्वास नहीं रह गया है। अगर अनुरोधकर्ता

अनुरोधमूलक बैठक बुलाने के अपने प्राप्त अधिकार का जिसके बारे में मैंने बताया है परित्याग कर देते हैं तो क्या गारटी है कि मत्री बैठक बुलाना एक और पखवाडे के लिए स्थगित नहीं कर दगे जिससे बैठक होने से पहले ही प्रतिनिधियो और बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी के चुनाव पूरे किए जा सक? अभी तक की स्थिति को देखते हुए ऐसे चुनाव 15 अगस्त से पहले ही पूरे हो सकते हैं। जनता को कृपया यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि जब मत्री ने 15 अगस्त को बैठक करने की सूचना दी तो उन्हे पूरी तरह मालूम था कि काग्रेस का विशेष अधिवेशन लगभग अगस्त के मध्य मे होने वाला है। उन्हे यह भी पता था कि अनुरोधकर्ताओ का एक उद्देश्य प्रतिनिधियो के निर्वाचन की कार्याविधि पर प्रश्नचिह्न लगाना था। इसलिए 15 अगस्त को बैठक देर से बुलाने मे उनका उद्देश्य स्पष्ट यह था कि अनुरोधकर्ताओ के उद्देश्य को विफल किया जाए और प्रतिनिधियो का चुनाव ऐसे ढग से कराया जाए, जिसे अनुरोधकर्ता सदेहास्पद और आपत्तिजनक मानते हैं।

इसके अलावा क्या कुछ उत्साही अपरिवर्तनवादी बाद मे यह नहीं आग्रह कर सकते कि चूकि मत्री को अनुरोधमूलक बैठक बुलाने का अधिकार नहीं है इसलिए 15 अगस्त की बैठक अवैध है और उस बैठक मे निर्णीत कदम उचित नहीं माने जा सकते? अनुरोधकर्ता अपने उद्देश्य की विफलता की इस आशकापूर्ण स्थिति का क्यो स्वागत करे?

जैसा कि मैंने सिद्ध किया है दोनो ही व्याख्याओ के अतगत मत्री अपने कर्तव्य के निर्वाह मे असफल रहे हैं। अनुरोधकर्ताओं को मत्री द्वारा 31 जुलाई की सूचना दिए जाने स पहले ही अनुरोधमूलक बैठक बुलाने का अधिकार मिल चुका था। इसलिए 11 अगस्त की बैठक वैध बैठक है और 15 अगस्त की बैठक बिल्कुल अवैध है। इसलिए मैं बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी के सभी सदस्यों से अनुरोध करता हू कि वे 11 अगस्त की बैठक मे शामिल हो।

सुभाष चन्द्र बोस

7 अमृत बाजार पत्रिका के सपादक क नाम

38/2 एल्गिन रोड

विषय अखिल चन्द्र दत्त और स्वराज पार्टी के बारे मे। 26 10 23

महोदय

यह बहुत खेद का विषय है कि मुझे कोमिल्ला के श्री अखिल चन्द्र दत्त के विरुद्ध कुछ लिखने के लिए लेखनी हाथ म लेनी पड रही है। लकिन श्री दत्त जिस ढग से प्रेस मे और जनता के बीच प्रचार करते रहे हैं उसने मुझे ऐसा करने क लिए विवश किया है।

अखबारों को भेजे गए अपने 20 अक्तूबर के पत्र मे श्री दत्त ने अनेक ऐसे तथ्यों को लिया है जिनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। इसलिए मैं उनके बयानों में

से केवल कुछ का जिक्र करके ही संतोष का अनुभव करूंगा। श्री दत्त कहते हैं, 'स्वराज कार्यालय में मेरे विरुद्ध षड्यंत्र चल रहा है।' जब श्रीयुत् एच. के. सरकार ने इस खबर का खंडन किया कि श्री दत्त त्रिपुरा निर्वाचन-क्षेत्र से स्वराज पार्टी के उम्मीदवार हैं, उस समय स्वराज पार्टी के प्राय: सभी सदस्य दिल्ली में थे। अपने बारे में मैं कह सकता हूं कि मैंने हेमन्त बाबू द्वारा खंडन के बारे में पहली बार दिल्ली से लौटने के बाद सुना। स्वयं श्री दत्त अपने पत्र में कहते हैं कि देशबंधु दास ने उनसे कहा कि उन्हें हेमंत बाबू द्वारा खंडन के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था और उन्हें खेद है कि ऐसी कोई बात हुई। मुझे आशा है कि श्री दत्त मानसिक आवेश की स्थिति में भी इस हद तक नहीं जाएंगे कि देशबंधु के उक्त ब्यान की सत्यता पर संदेह व्यक्त करें। तो फिर स्वराज पार्टी के सदस्यों के अंतर्गत लोगों में आम सहमति बहुत कुछ उनके पक्ष में थी।

मैंने अपने आपसे बार-बार पूछा कि श्री दत्त जैसे प्रतिष्ठावान व्यक्ति के लिए इतने नीचे झुकना कैसे संभव हुआ कि उन्होंने एक ऐसे मामले में गलत बयानों और आपत्तिजनक संकेतों का सहारा लिया, जिसे मैं अपेक्षाकृत बहुत मामूली समझता हूं। जनता के दृष्टिकोण से इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि स्थानीय परिषद् के लिए श्री आई.बी. दत्त चुने जाते हैं या श्री ए.सी. दत्त। मैं इन लोगों को जिस रूप में जानता हूं, उसके कारण मेरे मन में कोई शंका नहीं है कि इनमें से जो भी चुना जाएगा, वही परिषद् में जनता का पक्ष मजबूत करेगा। फिर भी ए. सी. दत्त की पूर्व सेवाओं का आदर करते हुए और कांग्रेस के उनके दीर्घकालीन संबंधों को देखते हुए हम सामूहिक रूप से उनके पक्ष में थे। हमें अनिच्छापूर्वक अपनी पसंद तभी बदलने को बाध्य होना पड़ा, जब हमें पता चला कि श्री दत्त दलगत अनुशासन का पालन करने के लिए इच्छुक नहीं हैं और वे पार्टी या जनता के हितों को अपने निजी रुझानों से ऊपर रखने को तैयार नहीं हैं। देशबंधु और श्री दत्त की भेंट के समय मैं मौजूद था और मैं कह सकता हूं कि श्री दत्त निजी कारणों के अतिरिक्त ऐसी कोई और दलील नहीं दे सके कि वे क्यों धारा सभा के लिए नहीं खड़े होना चाहते। श्री दत्त ने कहा कि स्थानीय परिषद् से कार्यनिवृत्त होकर वे अगर धारा सभा के लिए खड़े होंगे तो वे अपने मित्रों को नाराज कर देंगे और अपने विरोधियों के उपहास का लक्ष्य बनेंगे और उस दशा में कोमिल्ला में उनका जीना दूभर हो जाएगा। जब देशबंधु ने उनसे कहा कि शायद अपने अहं का प्रछन्न अहसास उन्हें स्थानीय परिषद् से स्वेच्छा से कार्यनिवृत्त होने से रोक रहा है तो उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझा। उस भेंट में जो भी उपस्थित था, उसे यह स्पष्ट समझ में आ रहा था कि दोनों दत्तों के बीच संघर्ष पूरी तरह से व्यक्तिगत था।

श्री दत्त की उम्मीदवारी के सवाल पर विचार किए जाने से पहले वे स्वराज पार्टी के सदस्य बन चुके थे। पार्टी के नियमों में यह अपेक्षा की जाती है कि सदस्य पूरी तरह पार्टी के अनुशासन को मानेंगे। अगर श्री दत्त सच्चे स्वराजिस्ट होते तो वे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की तरह निर्णय को खेल-भावना के साथ स्वीकार कर लेते। उनका यह काम उनके हृदय की विशालता का परिचायक होता। लेकिन चूंकि पार्टी ने या पार्टी के

नेता ने सही या गलत उनके पक्ष का समर्थन नहीं किया है उन्होने पूरी पार्टी पर इलजाम लगाया है कि वह उनके विरुद्ध षड्यत्र रच रही है।

श्री दत्त कहते है 'श्री दास अब यह उपयुक्त मानते हैं कि स्वराज पार्टी की कौंसिल द्वारा मेरे पक्ष म पहले ही से किए गए मनोनयन को रद्द कर दिया जाए, आदि। यह वक्तव्य बहुत अधिक गलत तस्वीर पेश करता है। जब देशबधु श्री दत्त से धारा सभा के लिए खडे होने की अपील कर रहे थे तो वे ऐसा अपनी ओर से नहीं कर रहे थे बल्कि पार्टी के सदस्यों के बहुमत की ओर से कर रहे थे। इसके अलावा श्री दत्त की उम्मीदवारी का आरभिक चरण में समर्थन स्वराज पार्टी की कौंसिल की किसी औपचारिक बैठक में नहीं बल्कि उसके सदस्यों के अनौपचारिक जमाव मे किया गया था इसलिए श्री दत्त यह नहीं कह सकते कि श्री दास अब यह उपयुक्त मानते हैं कि स्वराज पार्टी की कौंसिल द्वारा मेरे पक्ष में एहले ही से किए गए मनोनयन को रद्द कर दिया जाए। श्री दत्त यह इशारा करते हैं कि देशबधु ने कहा था कि वह धारा सभा के लिए तो अनिवार्य हैं लेकिन बगाल परिषद् के लिए उपयुक्त नहीं हैं। मैं नहीं समझता कि देशबधु ने बगाल परिषद् के लिए या धारा सभा के लिए श्री दत्त की उपयुक्तता पर कभी भी सदेह व्यक्त किया था। इसके अलावा मुझे इस बात पर भी गभीर सदेह है कि देशबधु ने कहा था कि स्थानीय परिषदों मे किसी भी रद्द आदमी को भेजा जा सकता है। जहा तक श्री आई बी दत्त का सवाल है मुझे विश्वास है कि देशबधु उन्हे रद्द आदमी नहीं मानते।

श्री दत्त ने देशबधु के सम्मुख सुझाव रखा कि धारा सभा म इदु भूषण को भेजा जाए। श्री दत्त ने कुछ कारण गिनाए (निस्सदेह अपने आप गढ कर) कि क्या वे धारा सभा के लिए इदु बाबू की उम्मीदवारी के पक्ष मे नहीं हैं। ये कारण जिन्हे यहा दुहराने की मुझे आवश्यकता नहीं है न वे श्री आई बी दत्त के लिए प्रशसा मक हैं न देशबधु दास के प्रति न्याय करते हैं। श्री दत्त ने सावधानी बरतते हुए उस वास्तविक और प्रमुख कारण की चर्चा नहा की जिसके रहते देशबधु जोर नहीं दे सके कि इदु बाबू को धारा सभा के लिए उम्मीदवार बनाया जाए। मुझे साफ तौर पर याद है कि देशबधु और श्री दत्त के बीच अतिम भेट के समय देशबधु ने श्री दत्त से कहा था कि इदु बाबू एक प्रकार के क्षय रोग से ग्रस्त हैं इसलिए डाक्टरो ने कडाई के साथ ताकीद की है कि वे समुद्र तल से दो हजार फुट से अधिक ऊचाई वाले किसी स्थान म न रहें। चूकि धारा सभा के सदस्यों को वर्ष के कुछ भाग मे शिमला म रहना पडता है इसलिए देशबधु इदु बाबू के सम्मुख वैसा प्रस्ताव नहीं रख सके क्योकि उससे आगे चलकर कभी उनकी जान पर ही बन आती।

श्री दत्त खुल्लमखुल्ला यह कहते हैं कि उनकी उम्मादवारी इसलिए रद्द कर दा गई कि उन्होंने पार्टी के कोष म पैसा नहीं दिया और इदु बाबू को केवल इसलिए स्वाकार किया गया कि उन्होंने स्वराज्य फड म धन दिया प्रतिनिधिया के खर्च के लिए। मैं श्रा दत्त को आश्वासन दे सकता हू कि त्रिपुरा के एक सज्जन से (जा श्रा आई बी दत्त नहीं थे) छोटी सी रकम प्राप्त हाने क अलावा त्रिपुरा के प्रतिनिधियों के लिए, जिनक

अपने साधन अपर्याप्त थे, पार्टी फंड से खर्चा दिया गया और श्री आई. बी. दत्त ने हमें किसी भी प्रकार से सहायता नहीं दी। इसलिए ऐसी बदनामी फैलाने वाली बात कहना इंदु बाबू के प्रति भी घोर अन्याय है, और स्वराज पार्टी के प्रति भी।

हमारी पार्टी की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। हमारा उद्देश्य लगातार यह रहा है कि जहां तक संभव हो दोनों ही दत्त महाशयों की सेवाओं का लाभ उठाया जाए। हमारे लिए एकमात्र समाधान यही था कि दोनों विरोधी उम्मीदवारों में एक से धारा सभा के चुनाव के लिए खड़ा होने का अनुरोध किया जाए। अगर इंदु बाबू शारीरिक दृष्टि से अक्षम न होते तो उनका धारा सभा के लिए खड़े होना और हमारा उस पर जोर देना कहीं ज्यादा आसान होता। यह बात श्री दत्त को बिल्कुल साफ-साफ बता दी गई थी और इसीलिए धारा सभा के लिए उनकी उम्मीदवारी का हमने स्वागत किया था।

मुझे साफ तौर पर याद है कि श्री दत्त ने देशबंधु से कहा था कि स्वराज पार्टी का प्रभाव कोई बहुत महत्व का नहीं है और चुनाव का नतीजा अन्य बातों पर निर्भर करेगा। पार्टी और उसके प्रमुख के बारे में उनकी ऐसी धारणा के कारण ही जब निजी पसंदगी या नापसंदगी के मामले में उनके अहं को चोट पहुंची तो उन्होंने इतनी आसानी से पार्टी के अनुशासन को तोड़ा और स्वराज पार्टी के सदस्यों के विरुद्ध एक अभियान, बल्कि मैं कहना चाहूंगा कि एक धर्मयुद्ध जैसा छेड़ दिया।

जब देशबंधु श्री दत्त से अंतिम बार मिले तो उन्होंने प्रायः चार या पांच घंटे तक उनसे तर्क-वितर्क किया था जिससे वे उनको धारा सभा के लिए खड़े होने के वास्ते राजी कर सकें। पार्टी के अनुशासन, उदारता तथा शिष्टाचार का यह तकाजा था कि वे देशबंधु के अनुरोध को मान लेते। अब ऐसा प्रतीत होता है कि श्री दत्त पार्टी के अनुशासन को मानने के लिए इच्छुक हुए बिना ही उसके सदस्य बन गए थे और शायद उनके सदस्य बनने का एकमात्र उद्देश्य आसन्न चुनाव के लिए अपनी स्थिति बेहतर करना था। मैं श्री दत्त को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि स्वराज पार्टी के अधिकांश सदस्यों का समर्थन उन्होंने केवल इसलिए खोया है कि उन्होंने सभी अनुरोधों के बावजूद अकारण हठधर्मी दिखाई।

श्री दत्त लांछन लगाते हैं या सुझाव देते हैं कि स्वराज पार्टी की उम्मीदवारी पैसे से खरीदी जा सकती है। मैं आदरपूर्वक श्री दत्त से अनुरोध करूंगा कि वे स्वराज पार्टी के उम्मीदवारों की सूची देख जाएं और उनकी आर्थिक स्थिति की पड़ताल करें। तब उन्हें संतोष हो जाएगा कि स्वराज पार्टी का समर्थन बाजार में बिकने वाला माल नहीं है।

27 अक्तूबर 1923 को प्रकाशित। सुभाष चन्द्र बोस

8. अमृत बाजार पत्रिका के संपादक के नाम

विषय--बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक के बारे में।

रविवार, 9 दिसम्बर 1923

महोदय,

बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक के बारे मे 1 और 3 दिसम्बर के 'सर्वेंट' में प्रकाशित रिपोर्टों मे कुछ गलत बयानियो की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

आरंभ मे ही मैं बता चुका हूं कि बैठक बी पी सी सी के कार्यालय में नहीं, बल्कि अलबर्ट इंस्टीट्यूट हाल में हुई थी।

पहली दिसम्बर की रिपोर्ट मे यह कहा गया है कि श्रीयुत् सी आर दास और उनकी पार्टी के अन्य कुछ सदस्यों ने कार्यकर्ताओं को भत्ता और 'सर्वेंट' को अनुवाद के बारे मे कुछ वाद-विवाद किया। मैं बताना चाहूंगा कि बहस फरीदपुर के श्रीयुत् यदुनाथ पाल ने शुरू की थी जो अपरिवर्तनवादी हैं और जो लेखा-परीक्षक की रिपोर्ट के कुछ मुद्दों के बारे में ब्यौरेवार जानकारी चाहते थे। यह बहस दोनों ही पक्षों के अन्य सदस्यों द्वारा जारी रखी गई और उन्होने बार-बार पूछताछ करते हुए अन्य मदो के बारे मे ब्यौरा जानना चाहा। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के हिसाब-किताब जैसे मामले की रिपोर्ट मे भी दलगत राजनीति का प्रवेश हुआ है। मैंने बैठक को बताया था कि मैं उस शाम ब्यौरेवार सूचना नहीं दे सकता जिसका कारण अंशतः यह था कि वाउचर लेखा-परीक्षक के पास थे और अंशतः यह कि लेखा उस अवधि का था जब मैं मंत्री नहीं था। इसलिए बैठक में मांगी गई पूरी जानकारी रखने के लिए मैंने समय की मांग की और इसलिए बैठक स्थगित करनी पड़ी। बहस के दौरान श्रीयुत् हरदयाल नाग ने यह प्रस्ताव किया कि लेखा स्वीकार कर लिया जाए जब कि एक अन्य अपरिवर्तनवादी श्रीयुत् पुरुषोत्तम राय ने प्रस्ताव किया कि लेखा पर विचार करने के लिए एक उप-समिति बना दी जाए। स्पष्टतः कोशिश की गई कि बहस रोक दी जाए। इसकी चर्चा करते हुए श्रीयुत् सी आर दास ने कहा था कि चूंकि लेखा पर पूरे वर्ष मे वास्तविक विचार-विमर्श केवल एक बार हुआ है, इसलिए श्रीयुत् नाग या श्रीयुत् पुरुषोत्तम राय मे से किसी का भी प्रस्ताव स्वीकार करके उसे रोक देना उचित नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से जोरदार प्रतिवाद करना चाहिए कि उसने बंगाल में जमा किए गए पैसे को अपने कोष मे ले लिया, जब कि उसे बी पी सी सी के कोष मे आना उचित होता। यह स्पष्ट था कि इस मुद्दे पर उन्हें दोनों ही पक्षों का समर्थन प्राप्त था और उन्होंने जो कुछ कहा, उसके पक्ष मे बर्दवान के अपरिवर्तनवादी सदस्य श्रीयुत् जगदीश सेन गुप्त तथा श्रीयुत् पुरुषोत्तम राय भी बोले।

बैठक स्थगित किए जाने के संबंध में मैं बता दूं कि यह अनिवार्य था, क्योंकि बैठक में जिस जानकारी की मांग उठी थी, उसे पूर्व-निर्दिष्ट कारणों से उसी शाम नहीं दिया जा सकता था। तब सवाल केवल इतना ही रह गया था कि कार्यसूची के अन्य विषयों को उसी शाम लिया जाए अथवा पूरी कार्यसूची को अगली बैठक तक के लिए स्थगित कर दिया जाए। तब रात के आठ बज चुके थे और कार्यसूची का अगला विषय उठाना प्रायः असंभव था, क्योंकि उस पर बहस में तीन घंटे लगने थे। बैठक शनिवार की जगह रविवार के लिए इसलिए स्थगित की गई, क्योंकि दोपहर बाद खिलाफत कमेटी की एक बैठक थी और उस दिन (शनिवार को) अध्यक्ष की रिपोर्ट पर विचार के लिए एक से अधिक सार्वजनिक सभाएं थीं। बैठक शनिवार को प्रातः नहीं हो सकी, क्योंकि मुझे लेखा-परीक्षक से परामर्श करने के लिए तथा बैठक द्वारा चाही गई पूरी जानकारी पाने के लिए समय चाहिए था।

यह कहना वाहियात और निश्चित रूप से अपमानजनक है कि अध्यक्ष को घेर-घारकर बैठक स्थगित करने के लिए मजबूर किया गया और मुझे आशा है कि सभी सहमत होंगे कि अध्यक्ष श्रीयुत् ललित मोहन दास ने वही किया, जिसे उन्होंने तत्कालीन परिस्थिति में उचित समझा। मुझे आश्चर्य है कि रिपोर्ट में इस अवांछनीय तथ्य का उल्लेख नहीं किया गया है कि अपरिवर्तनवादी पक्ष के कुछ सदस्यों ने बैठक को स्थगित करने के अध्यक्ष के अधिकार को असभ्य तथा अनियंत्रित ढंग से चुनौती दी। अध्यक्ष ने पीठ पीछे जिस भाषा का प्रयोग किया, उसकी चर्चा करने की आवश्यकता मुझे नहीं।

'सर्वेंट' के 3 दिसम्बर के अंक में प्रकाशित रिपोर्ट में विचित्र शीर्षकों के अंतर्गत कतिपय गलत बयान छापे गए। दक्षिण कलकत्ता से एक सदस्य को सहयोग सदस्य बनाने के मामले में अन्यों के अलावा सर्वश्री बी. चक्रवर्ती और बी. सी. पाल तथा श्रीयुत् हेमेन्द्र चन्द्र दास गुप्त के नाम विचारार्थ आए। श्री दास गुप्त को सहयोजित कर लिया गया, जिसका कारण अंशतः यह था कि वे उस क्षेत्र के एक प्रमुख और सक्रिय कार्यकर्ता हैं और अंशतः इसलिए कि यह पता नहीं था कि सर्वश्री चक्रवर्ती और पाल बी. पी. सी. सी. के सदस्य होने के लिए वास्तव में इच्छुक हैं या नहीं। मैं इससे भी आगे बढ़कर यह कह सकता हूं कि बैठक में कई सदस्यों का विचार यह था कि उनके (सर्वश्री पाल और चक्रवर्ती) के नाम केवल इसलिए प्रस्तावित हुए थे कि एक पक्ष की ओर से श्रीयुत् दास गुप्त के सहयोजन को विफल कर दिया जाए। मैं सर्वश्री चक्रवर्ती और पाल को आश्वासन दे सकता हूं कि अगर वे सचमुच बी. पी. सी. सी. के सदस्य बनना चाहते हैं तो मेरे सहित अनेक लोग हैं, जो अब भी उनके लिए पथ-प्रशस्त करके प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

यह स्पष्टीकरण भी आवश्यक है कि सर पी. सी. राय और श्रीयुत् श्याम सुन्दर चक्रवर्ती को क्यों नहीं चुना गया। श्री चक्रवर्ती का नाम बैठक में आया ही नहीं और इसलिए सदस्यों को मत देने का मौका नहीं मिला। उनका नाम बैठक में इसलिए नहीं आया, क्योंकि यह नहीं पता चल पाया था कि उनके वर्तमान रुख को देखते हुए वे बी.

पी सी सी के सदस्य होना चाहेंगे या नहीं।

सर पी सी राय का नाम मौलाना अबुल कलाम आजाद तथा अन्यो के साथ उत्तरी कलकत्ता के सहयोजन के लिए प्रस्तावित हुआ था। बैठक को यह निर्णय करना था कि दोनो में से, अर्थात सर पी सी राय की बजाय मौलाना आजाद को तरजीह देकर बी पी सी सी ने कोई गलती की। सर पी सी राय का नाम अन्य चुनाव अन्य-क्षेत्रों में सहयोजन के लिए प्रस्तावित किया जा सकता था। लेकिन इस मामले में भी यह पता नहीं था कि उनकी वास्तविक इच्छा क्या है और कई सदस्यो को, सही या गलत, यह धारणा थी कि उनके नाम का प्रस्ताव केवल पक्षधरता का एक कदम था। यह सच नहीं है कि श्रीयुत् सी आर दास ने सर पी सी राय के सहयोजन के विरुद्ध मत दिया।

यह सच नहीं है कि श्री दास ने कहा कि अगर एक भी विरोधी आवाज उठी तो वे अध्यक्ष-पद स्वीकार नहीं करेगे। मैं नहीं जानता कि श्री दास ने किसके सम्मुख यह घोषणा की। मुझसे अपरिवर्तनवादी पक्ष के सदस्यो ने पूछा था कि अगर श्री दास से अध्यक्ष-पद ग्रहण करने को कहा जाए तो क्या वे उसे स्वीकार करेंगे? मैंने जवाब दिया था कि मैं उनके रुख से पूर्णतया परिचित नहीं हू, लेकिन अगर कोई विरोधी आवाज न उठे तो मैं उनको अपनी इच्छा के विरुद्ध भी यह पद स्वीकार करने के लिए राजी करने को जिम्मेदारी ले सकता हू। मैं नहीं जानता कि इससे यह निष्कर्ष किस हद तक निकाला जा सकता है कि अगर एक भी विरोधी आवाज हो तो वे उक्त पद स्वीकार नहीं करेगे।

यह सही नहीं कि कार्यकारिणी परिषद् मे अपरिवर्तनवादी पक्ष के केवल पाच या छह सदस्य ही हैं। उनकी सख्या निश्चय ही इससे अधिक है और अगर जिन अपरिवर्तनवादी सदस्यों को चुना जाता है, वे पद लेना स्वीकार न करें तो इसका दोष बी पी सी सी के मत्थे नहीं मढा जा सकता। 24-परगना के चुनाव-विवाद के बारे मे यह कहना निश्चित रूप से गलत बयानी है कि अध्यक्ष श्री दास ने निर्णय दिया कि उप-समिति का फैसला उचित है। अध्यक्ष का निर्णय यह था कि उप-समिति को यह अधिकार था कि वह रिटर्निंग अफसर द्वारा कराए गए चुनाव को निरस्त कर दे, लेकिन इस मामले में उप-समिति ने चुनाव को निरस्त किया या नहीं, इस सवाल पर बैठक को निर्णय करना है। इस सबध में मैं कह सकता हू कि प्रस्तावक चाहते थे कि अध्यक्ष यह निर्णय दे कि क्या उप-समिति को चुनाव निरस्त करने का अधिकार है, और वे प्रश्न के गुण-दोष मे नहीं जाना चाहते थे।

अत मे, महोदय, मैं खेद और आश्चर्य प्रकट किए बिना नहीं रह सकता कि एक जिम्मेवार दैनिक पत्र में अशुद्धियो से भरपूर रिपोर्टें छापी जाए। चूकि बी पी सी सी की बैठको मे अखबार वालो को प्रवेश नहीं मिलता, यह आशा की जाती है कि जिम्मेवार दैनिक समाचारपत्र मत्री की प्रामाणिक रिपोर्ट की प्रतीक्षा करेंगे।

सुभाष चन्द्र बोस
मत्री, बी पी सी सी

9. अमृत बाजार पत्रिका के नाम

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
10 मार्च 1924

महोदय,

स्वर्गीय प्रो. श्री एन. घोष की स्मृति अक्षुण्ण बनाने के लिए जो प्रयास किया जा रहा है, मैं उसमें सम्मिलित होना चाहता हूं। यद्यपि मुझे सीधे उनका शिष्य होने का सौभाग्य कभी नहीं मिला, तथापि जब मैं प्रेसिडेंसी कालेज का छात्र था तब मुझे उनके संपर्क में आने का अवसर मिला था और मैं कह सकता हूं कि मुझ पर उनके रौब व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा था। उनको अपने जीवन-काल में व्यापक प्रसिद्धि इसलिए नहीं हो पाई कि वे एक सच्चे विद्वान् के अनुरूप बहुत शांत और संकोची स्वभाव के थे। फिर भी सभी साहित्यिक व्यक्ति और आम तौर पर छात्र समुदाय जिन्हें प्रसिद्धि और सच्ची गुणता के बीच अंतर की पहचान थी, उन्हें हमेशा ही बड़े आदर से देखते थे और भविष्य में भी देखते रहेंगे। जब मैं प्रेसिडेंसी कालेज में था तो मैं अन्य किसी प्राध्यापक को नहीं जानता था जो विद्वत्ता और शिक्षक-योग्यता के मामले में उनसे अधिक आदरास्पद रहा हो।

स्वर्गीय प्रोफेसर के चरित्र का एक और भी पक्ष है, जिसकी मुझे प्रत्यक्ष जानकारी रही है। विद्यार्थी के रूप में मैं कई दातव्य संस्थाओं से संबद्ध था और उस संबंध में जब कभी भी उनके पास गया, उनका प्रत्युत्तर बहुत ही सहृदयतापूर्ण रहा। प्राध्यापक के रूप में अपने पेशे के अन्य लोगों के विपरीत, उन्हें पदोन्नति या वेतन-वृद्धि की कोई चिंता नहीं सताती थी। उनके दर्शन मात्र से एक ऐसे विद्वान् का आभास मिलता था जो अपनी प्रिय पुस्तकों में डूबा हुआ हो।

यह सर्वथा उचित ही है कि उनकी स्मृति अक्षुण्ण बनाने के लिए उपाय किए जाएं और इस संबंध में मेरा विनम्र सुझाव है कि जब यथेष्ट धन जमा हो जाए तो उनकी एक आवक्ष प्रतिमा तैयार कराई जाए। यह स्मारक मेरी राय में प्रेसिडेंसी कालेज में नहीं, बल्कि किसी सार्वजनिक हाल या पुस्तकालय में रखा जाना चाहिए, जहां जनता की निर्बाध पहुंच हो सके। मुझे विश्वास है कि सभी लोग, जिनमें साहित्य से रुचि रखने वाले छात्र, शिक्षक और प्राध्यापक भी हैं, उस कोष में मुक्त-हस्त होकर धन देंगे जो स्वर्गीय प्रोफेसर घोष का समुचित स्मारक बनाने के लिए जमा किया जा रहा है।

19 मार्च 1924 को प्रकाशित। सुभाष चन्द्र बोस

10. बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के नाम

शुक्रवार, 25 अप्रैल 1924

महोदय,

अनेक व्यस्तताओं के कारण मैं बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री-पद के प्रति जिस पर प्रतिष्ठित होने का सौभाग्य मुझे कुछ समय पहले मिला था, न्याय नहीं कर पा रहा हूं। इसलिए मैं उस पद से त्यागपत्र दे रहा हूं। मुझे आशा है कि आप यथाशीघ्र इस रिक्त स्थान को भरने के लिए कमेटी की बैठक बुलाएंगे।

मैं हूं,
आपका विश्वसनीय,
सुभाष चन्द्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

11. कलकत्ता कार्पोरेशन के सचिव के नाम

38/2, एल्गिन रोड,
भवानीपुर, कलकत्ता
23 अप्रैल 1924

प्रिय महोदय,

मुझे मालूम हुआ है कि मेरा नाम कार्पोरेशन की आज तीसरे पहर की साधारण बैठक में मुख्य कार्यपालक अधिकारी के पद के लिए प्रस्तावित होने जा रहा है।

मैं कार्पोरेशन को आपके जरिए यह सूचित करना चाहता हूं कि मैं एल्डरमैन श्रीयुत् शरत चन्द्र बोस से रक्त से जुड़ा हुआ हूं, ये मेरे सगे बड़े भाई हैं।

मैं कृतज्ञ होऊंगा यदि आप यह पत्र कार्पोरेशन के महापौर के सम्मुख प्रस्तुत कर दें और कार्पोरेशन की आज तीसरे पहर की साधारण बैठक में इसे पढ़ने के बारे में उनसे आदेश प्राप्त कर लें।

आपका विश्वसनीय
सुभाष चन्द्र बोस

12. श्रीयुत् अक्षय कुमार डे के नाम

13, कालेज एस्क्वायर,
कलकत्ता कार्पोरेशन,
म्यूनिसिपल आफिस
24-9-24

प्रिय महोदय,

आपकी चिट्ठी यथासमय मिल गई थी। जहां तक 83, हैरिसन रोड का प्रश्न है, सचिन बाबू के लिए सर्वोत्तम बात यह होगी कि वे उप-कार्यपालक अधिकारी श्री जे.सी. मुखर्जी को लिखें जो बाजार संबंधी मामलों को निपटाते हैं। मैं भी उनसे बात कर लूंगा। मैं इस समय नहीं जानता कि मकान किराए पर मिल पाएगा या नहीं।

जहां तक बाबू रमेन्द्र कृष्ण बोस का प्रश्न है, मैं नहीं जानता कि आपका अभिप्राय किस पद से है। अगर पद 'रिवर सर्वेयर' का है तो यह मामला ड्रेनेज इंजीनियर के हाथ में है और ऐसे तकनीकी मामले में मुझे उनकी सिफारिश की पुष्टि करनी होगी। एक और भी स्थान था (टेम्पोरेरी सुपरवाइजर, ड्रेनेज विभाग: 200/- रु. वेतन पर) जिस पर ड्रेनेज इंजीनियर की सिफारिश से एक और व्यक्ति की नियुक्ति करके उसे भर दिया गया है। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आपका स्नेहाधीन,
सुभाष

13. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
24-11-24
दस बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

जैसी तुम्हारी इच्छा थी, मैंने 'द इंग्लिशमैन' और 'द कैथोलिक हेराल्ड' के विरुद्ध तुम्हारे नाम से हरेक से 50,000/- रुपये के हर्जाने का मानहानि का दावा दायर कर दिया है। दावे के कागजात श्री एन. एन. सरकार द्वारा तैयार किए गए। मैसर्स दत्त एंड सेन तुम्हारे अटार्नी के रूप में काम कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि मैंने तुमसे गत शनिवार को कहा था कि हमें मैसर्स दत्त एंड सेन को अपना वकील नियुक्त करना चाहिए।

मैं समझता हूं कि दावा तुम्हारे नाम से दायर करने के लिए तुम्हारा जुबानी कहना ही काफी है। लेकिन और ज्यादा सुरक्षा के ख्याल से मैंने मैसर्स दत्त एंड सेन को हिदायत दी है कि वे मेरे पक्ष में मुख्तारनामा तैयार कर दें और उस पर जेल में तुम्हारी सहमति

ले लें। वे शायद अगले तीन या चार दिन में तुमसे भेंट करने के लिए अनुरोध करेंगे।

दावे दायर करने का समाचार अखबारों में शायद कल प्रकाशित होगा। मुकदमों की प्रगति के बारे में अटर्नी तुम्हें समय समय पर सूचित करते रहेंगे। आशा है तुम स्वस्थ होगे। यहां सब ठीक है।

सस्नेह
शरत

14 शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास किया
अस्पष्ट
9/12

38/1 एल्गिन रोड
5 12-24
7 बजे सायं

प्रिय सुभाष

मुझे आशा थी कि तुम्हें 2 तारीख के बाद शीघ्र ही कलकत्ता से हटा दिया जाएगा और यही किया गया है। मुझे जानने की उत्सुकता है कि उन्होंने तुम्हें वहां किस प्रकार रखा है मेरा मतलब यह है कि तुम्हें रहने के लिए कैसी जगह दी गई है। मुझे आशा है कि यहां वाली जगह से वह ज्यादा खराब नहीं होगी। क्या तुम्हें गरम कपड़ों के बारे में कुछ और खबर मिली है। मुझे आशंका थी कि तुम्हें उनके अभाव में बहुत कष्ट होगा और इसलिए मैंने एक कोट एक ओवरकोट और एक दरी भेजी थी। ये कुछ सामान्य चीजें हैं जो तुम्हारे तब तक काम आएगी जब तक सरकार से सर्दियों के लिए कपड़े न मिल जाए।

क्या तुम्हें सरकार से भत्ते के बारे में और कोई खबर मिला है? निश्चय ही वे तुम्हें कलकत्ता से बाहर भेजकर भत्ता जरूर ही देंगे।

पिछली भेंट के दौरान हमने जिस विषय पर विचार किया था उसके बारे में मैंने श्री सरकार की सलाह लेना जरूरी नहीं समझा। मैं समझता हूं कि तुमने ठीक ही रुख अपनाया है।

तुमने जो दावा दायर किया है उसमें द इंग्लिशमैन ने अपना पक्ष प्रस्तुत किया है। लिखित बयान देने का समय अभी नहीं आया है। जैसे ही वह दिया जाएगा मैं उसकी

सार तुम्हें लिख भेजूंगा। 'द कैथोलिक हेराल्ड' ने अभी तक अपना पक्ष प्रस्तुत नहीं किया है।

मैं अभी तक यह विचार नहीं बना पाया हूं कि 'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध तुम्हें दावा दायर करना चाहिए या नहीं। नामी वकील व्यस्त रहे हैं और अभी तक मुझे उनसे परामर्श करने का मौका नहीं मिला है। अगर मुझे कानूनी सलाह तुम्हारे पक्ष में मिलती है तो मैं दावा दायर करने में नहीं हिचकिचाऊंगा।

मैंने बिड़लाओं के विरुद्ध मामले के बारे में दुर्गा खेतान से बातचीत की थी। उन्होंने कागजात देखने और फिर मुझसे मिलकर उस मुकदमे के संबंध में सुलह-समझौता करने की संभावनाओं पर विचार-विमर्श करने का दावा किया है। मैंने अटार्नी धीरेन मित्र से भी (जो श्री एच. एन. दत्त के साझेदार हैं) बातचीत की है और उन्होंने वादा किया है कि वे मामले पर गौर करेंगे और देखेंगे कि वे क्या कर सकते हैं। तुम जो किताबें चाहते थे, उन्हें मैं कुछ दिन में भेज दूंगा।

मैसर्स दत्त एंड सेन ने तुम्हारे विरुद्ध आरोपों की एक प्रति के लिए तथा तलाशी वारंट की भी एक प्रति के लिए श्री आर्मस्ट्रांग को लिखा है, लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं आया है।

मैं समझता हूं कि तुम सरकार से प्रति सप्ताह 'म्यूनिसिपल गजट' की एक प्रति के लिए मांग कर सकते हो। उसे देने से इंकार करने का कोई औचित्य नहीं दिखाई देता।

मैंने कार्पोरेशन के सेक्रेटरी को लिखा है कि वे तुम्हारा बकाया वेतन मुझे भेज दें। अभी तक वह मुझे नहीं मिला है।

जब तुम घर को पत्र लिखो तो अपने स्वास्थ्य, भोजन, कपड़े आदि के बारे में ब्यौरा लिखना।

मां यहीं हैं। वे ठीक हैं। शेष सभी ठीक हैं।

तुम्हारा अत्यंत स्नेही,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

15. शरत चन्द्र बोस के नाम

बरहमपुर जेल
सामवार,
8-12-24

प्रिय दादा,

मैं यहा गत बुधवार को आया, या यों कहा जाए कि लाया गया। मैं बिल्कुल ठीक हू।

मुझे खेद है कि मैं 'द इग्लिशमैन' और 'द कैथोलिक हेराल्ड' के विरुद्ध मानहानि के दावे के बारे म अपने वकीलों को निर्देश नहीं दे सकूगा और न मुकदमे की प्रगति के बारे में सूचनाए प्राप्त कर सकूगा। मेरे यहा स्थानातरण के पीछे क्या उद्देश्य है, यह मुझे दिन की रोशनी की तरह साफ दिखाई दे रहा है।

कृपया श्री रमैया से कह दे कि वे अलीपुर केद्रीय कारागार से उस कामकाजी मेज और कुर्सी को उठवा ले जिन्हे मैं काम म लाता रहा हू। मैं उन्हे अपने साथ नहीं लाया जैसा कि मैंने आरभ मे सोचा था। आप उनसे यह भी कह सकते हैं कि वे मुझे म्यूनिसिपल प्रशासन के बारे में कार्पोरेशन पुस्तकालय म उपलब्ध किताबें भेज दे।

गर्म कपडो के बारे मे आगे और कुछ नहीं हुआ है और मैं अपनी मूल योजना को यथावत रखे हुए हू।

मैं नहीं समझता कि मैं आपमे से किसी से भी कुछ समय तक मिल पाऊगा। मैं सप्ताह में कुल दो पत्र बाहर भेज सकता हू, यद्यपि कितने पत्र प्राप्त करू इस पर कोई प्रतिबध नहीं है।

मा इस समय कहा हैं? पिताजी तो, मैं समझता हू, कटक में हैं। मैं जानने को उत्सुक हू कि वकीलो ने 'द स्टेट्समैन' में छपे लेख के बारे मे क्या सलाह दी है।

मुझे 'म्यूनिसिपल गजट' का चौथा अक नहीं मिला है। मैं अवश्य ही चाहूगा कि यह मुझे नियमित रूप से मिलता रहे।

मैं यहा बिल्कुल ठीक हू।

आपका परम स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस सी बोस)

16. शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास किया, अस्पष्ट, 15/12 एस. पी.
15/12/24

38/2, एल्गिन रोड
12-12-24
8 बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारी 8 तारीख की चिट्ठी मिल गई है। मैंने तुम्हें 5 या 6 तारीख को बरहमपुर केंद्रीय कारागार के सुपरिंटेंडेंट की मार्फत पत्र भेजा था। मुझे आशा है कि अगर वह तुम्हें अभी नहीं मिला है, तो मिल जाएगा।

मैं 'द इंग्लिशमैन' और 'द कैथोलिक हेरल्ड आफ इंडिया' के विरुद्ध तुम्हारे दावे की प्रगति की सभी तरह की सूचना देता रहूंगा। 'द इंग्लिशमैन' प्रतिवादी के रूप में प्रविष्ट हो चुका है और प्रायः एक पखवाड़े में अपना लिखित बयान देगा। 'द कैथोलिक हेरल्ड' के नाम सम्मन अभी नहीं पहुंचा है, लेकिन एक-दो दिन में पहुंच जाएगा। अगर इन दोनों मामलों के बारे में तुम्हें अपने वकीलों को कोई खास हिदायत देनी हो तो तुम मुझे या 6, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट, कलकत्ता को सीधे लिख सकते हो। तुम्हारे वकीलों ने श्री आर्मस्ट्रांग को तुम्हारे विरुद्ध आरोप-पत्र की एक प्रति के लिए लिखा था, लेकिन श्री आर्मस्ट्रांग ने जवाब दिया है कि प्रति नहीं दी जा सकती। उन्होंने श्री आर्मस्ट्रांग को फिर लिखा है। मैं समझता हूं कि अधिकारी प्रति देने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि 1818 के रेगुलेशन-3 के अंतर्गत जिस व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया हो, उसे अपनी गिरफ्तारी के कथित कारणों के बारे में प्रतिवेदन देने का अधिकार है।

मैं श्री रमैया को लिख रहा हूं कि वे म्यूनिसिपल प्रशासन पर कुछ पुस्तकें तुम्हें भेज दें और अलीपुर जेल से तुम्हारा फर्नीचर भी उठवा लें।

हम बड़े दिन की छुट्टी में तुमसे भेंट करने की अनुमति लेने के लिए आवेदन करेंगे।

सरकार अचानक धनबाद चले गए। मैं उनसे 'द स्टेट्समैन' के लेख के बारे में सलाह नहीं कर सका। लेकिन वे शीघ्र ही वापस आएंगे और उनकी सलाह लेकर तदनुसार कार्यवाही करूंगा।

मैंने आज तीसरे पहर श्री जे. सी. मुखर्जी से तुम्हें 'म्यूनिसिपल गजट' भेजने के बारे में बातचीत की।

तुमसे गत 29 तारीख को मिलने के बाद मैंने मेदर को लिखा था कि तुम्हारी यह इच्छा है कि तुम्हारी अनुपस्थिति में किसी को कार्यवाहक मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर नियुक्त कर दिया जाए और कार्पोरेशन के काम में हर्जा न हो। कार्पोरेशन की एक विशेष बैठक आज तीसरे पहर हुई। 15 दिसम्बर से तीन महीने के लिए श्री जे. सी. मुखर्जी

को कार्यवाहक मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर नियुक्त कर दिया गया है और तुम्हारे लिए इस अवधि के वास्ते अवैतनिक छुट्टी मंजूर की गई है। श्री सतीश चन्द्र राय (विश्वविद्यालय के प्राध्यापक) श्री मुखर्जी की जगह स्थानापन्न डिप्टी एक्जीक्यूटिव अफसर नियुक्त किए गए हैं और श्री रशीद खां को द्वितीय डिप्टी एक्जीक्यूटिव अफसर नियुक्त किया गया है।

मां यहां हैं। वे काफी ठीक हैं। पिताजी कटक में हैं और सकुशल हैं। बाकी हम सब भी ठीक से हैं।

मैं 38/1, एल्गिन रोड में तुम्हारे बगीचे में सुधार करने का प्रयास कर रहा हूं। जब तुम लौटोगे, तुम वहां बहुत से गुलाब के पेड पाओगे — कम से कम मुझे यही आशा है। मुझे उम्मीद है कि सब कांटे ही कांटे नहीं होंगे, फूल भी होंगे ही।

बड़ामामा बाबू (श्री जे एन दत्त) तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे। जब वे आए तो मुझे उनका प्रिय उद्धरण याद आया

"काली बामुन, कोटा शूद्र बेंटे मुसलमान

घर जमाई, पौश्यपुत्र, सब बेटाई समान।'

सांवले ब्राह्मण, गोरे शूद्र, घर जमाई और दत्तक पुत्र, इनमें किसी को भी चुनने या न चुनने का सवाल नहीं उठता, सभी समान हैं।

मैं समझता हूं कि यह वर्तमान स्थिति पर और विशेष रूप से तुम्हारे संदर्भ में बहुत सटीक कथन है।

कृपया सप्ताह में एक बार अपने बारे में लिखते रहना। तुम्हें खाना खराब मिलेगा, गर्म कपड़े अपर्याप्त मिलेंगे तथा अन्य असुविधाएं भी होंगी, लेकिन मुझे आशा है कि इन सबके बावजूद तुम ठीक रहोगे। भगवान तुम पर कृपा करें।

श्री सुभाष चन्द्र बोस, तुम्हारा अत्यंत स्नेही,
बरहमपुर जेल। शरत
(शरत चन्द्र बोस, बैरिस्टर एट लॉ)

17. शरत चन्द्र बोस के नाम

पास किया गया, अस्पट, एस. पी.

19/12

बरहमपुर जेल
16-12-24

प्रिय दादा,

मुझे आपका 5-12-24 का पत्र कुछ दिन पहले मिल गया था और 12-12-24 का पत्र कल मिला।

1. गर्म कपड़े मिल गए। मुझे सरकार से सूचना मिली है कि निर्धारित अभिक्रम में संशोधन नहीं किया जाएगा। यह हैसियत और स्थिति के अनुसार बर्ताव है।

2. मैंने अलीपुर में निम्नलिखित चीजें छोड़ी थीं:- (1) कमोड, (2) टिफिन की डलिया जिसमें एक अलमूनियम का बर्तन था, और (3) टाइपराइटर तथा संलग्न वस्तुएं। कृपया उन्हें जेल से यथाशीघ्र उठवा लें। मैंने जेलर से कहा था कि वह इन वस्तुओं के बारे में आपको सूचना दे दे और मुझे आशा है कि उसने अब तक ऐसा कर भी दिया होगा। मैंने एक कामकाजी मेज, एक घुमावदार कुर्सी और एक नक्शा भी वहां छोड़ा है, जिन्हें मेरे कार्यालय भेजा जाना है।

3. मैंने अपने भत्ते के बारे में सरकार को एक और प्रतिवेदन भेजा है और उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

4. मुझे आशा है कि आप बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड तथा श्री एच.एन. दत्त, सालीसिटर के मामलों को देखना न भूलेंगे और प्रयास करेंगे कि कुछ किया जा सके।

5. यहां आने के बाद मुझे म्यूनिसिपल गजट की मेरी अपनी प्रति नहीं मिली है। जब मैं अलीपुर में था तो मुझे पहले तीन अंक मिले थे। कृपया रमैया से कहें कि वह गजट सीधे यहां भेजें।

6. आरोपों के बारे में मैं भी बंगाल सरकार को लिख रहा हूं कि एक प्रति दी जाए। मुझे नहीं मालूम कि जो आरोप मुझे पढ़कर सुनाए गए थे, उनकी लिखित प्रति देने में क्या आपत्ति हो सकती है।

7. मुझे जानकार प्रसन्नता हुई है कि मेरी अनुपस्थिति में एक कार्यवाहक मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर की नियुक्ति कर दी गई है।

कार्पोरेशन के काम में किसी भी वजह से खलल नहीं पड़ना चाहिए। कृपया मेयर महोदय से सलाह कर लें और कृपया मुझे लिखें कि क्या मैंने जो कुछ जुबानी कहा था, उसकी पुष्टि के लिए मुझे लिखित रूप में छुट्टी का आवेदन देना जरूरी है।

मुझे अधिक प्रसन्नता होती अगर श्री जे सी मुखर्जी की जगह पर श्री डी सी दत्त, कलेक्टर को उप-मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर नियुक्त किया जाता। वे निस्सदेह कार्पोरेशन के एक योग्यतम अधिकारी हैं।

मैं आपको सप्ताह मे एक बार लिखते रहने की कोशिश करूगा। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, मैं सप्ताह मे केवल दो पत्र लिख सकता हू, यद्यपि मैं कितने पत्र प्राप्त करू, इसकी सीमा निर्धारित नहीं है।

8 मुझे खुशी है कि आप मेरे बगीचे म सुधार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। मेरा इरादा बीचो-बीच मे बेडमिंटन कोर्ट बनाने का था। ऐसा लगता है कि आपने पूरे प्लाट का नए सिरे से निर्माण कर दिया है। कोई बात नहीं, क्योकि 38/2 म अगर पिछवाडे की जगह ठीक से साफ की जा सके तो हम बच्चो के लिए बेडमिंटन कोर्ट वहा बना सकते हैं।

9 मुझे अफसोस है कि शराब की दुकानों के बारे मे आपका प्रस्ताव लगातार स्थगित रखा जा रहा है। मुझे उस प्रस्ताव की नियति के बारे म जानने की उत्सुकता है। आशा है कि वह मुझे 'द स्टेट्समैन' मे पढ़ने को मिल जाएगा।

10 मैं जानने को उत्सुक हू कि इप्रूवमट ट्रस्ट के बारे म श्री एल एम सेन के प्रस्ताव का क्या बना? क्या वह अभी भी अधर म लटका हुआ है?

11 कृपया सतोष बाबू से कह दे कि जब मैं अलीपुर मे था तभी मुझे उनका लबा पत्र मिल गया था। मैं उन्हे शीघ्र लिखूगा। मैंने कर्ज सबधी जो ब्यौरा तैयार किया था, उसका क्या हुआ? क्या उसम ई जी पी या कार्पोरेशन द्वारा कोई सशोधन किया गया है? मुझे आशा है कि मशाटाला योजना सुरक्षित है।

12 यदि आप श्री स्टुअर्ट स्मिथ से मिलें तो उनसे कहे कि 'द स्टेट्समैन' में उनकी टिप्पणियों को बडे चाव से पढ़ता हू। अलीपुर छोडने के बाद कार्पोरेशन से मेरा सभी तरह से सपर्क टूट गया है। हाल म उनका लिखना कुछ अनियमित हो गया है, लेकिन मुझे आशा है कि वे भविष्य में और नियमित रूप से लिखते रहगे।

13 सरकार ने यहा के सभी बदियो के लिए पुस्तक आदि के वास्ते 30 रुपये महीने का महाधन स्वीकृत किया है। मैं नहीं जानता कि 30 रुपये महीने के अतर्गत भूखी आत्मा अपनी क्या मानसिक खुराक खरीद सकती है, विशेषत इसलिए भी कि रुचिया भिन्न-भिन्न होगी ही। दिलीप या क्षितीश विभिन्न लेखको से आसानी के साथ कुछ पुस्तकें जमा कर सकते हैं और उन्हें यहा राजनैतिक बदियो के लिए भेज सकते हैं। और भी दयनीय स्थिति इसलिए है कि यहा के कारागार से सनद्ध कोई पुस्तकालय नहीं है। प्रयास करने पर शरत चट्टोपाध्याय, जलधर सेन जैसे लेखको को राजी किया जा सकता है कि वे अपनी लिखी कुछ किताब भेट कर दे।

14 सरकार ने मेरे भोजन के लिए 6 रुपये 10 आने प्रतिदिन की मजूरी दी है। मैं इसे कतई अपर्याप्त पाता हू। जब मैं अलीपुर में था तो मैं काफी ज्यादा खर्च किया

करता था। मैं अपने भत्ते में वृद्धि के लिए सरकार को आवेदन देने वाला हूं।

15. नादादा अब कहां हैं और क्या वे काम से लग गए हैं? क्या मेरी गिरफ्तारी के बाद से दादा कलकत्ता आए हैं?

मुझे जानकार प्रसन्नता है कि बड़ामामा बाबू (श्री जे. एन. दत्त) ने मेरे बारे में पूछताछ की है और वे अपना सुपरिचित उद्धरण दुहरा रहे थे। वे कैसे हैं और मामी मां कैसी हैं?

मैं यहां बिल्कुल ठीक हूं। 'पत्थर की दीवारें बंदीगृह का निर्माण नहीं करतीं, न लोहे के सींखचें पिंजड़ा बनाते हैं' —कवि के ये उद्‌गार सचमुच कितने सच्चे हैं।

मैं कुछ सम-सामयिक अंग्रेजी और यूरोपीय (निस्संदेह अनूदित) साहित्य की पुस्तकें पढ़ना चाहूंगा।

आशा है, आप सभी सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

पुनश्च:

कृपया यंग एंड कंपनी से कहें कि वे यथाशीघ्र एक जोड़ा टेनिस खेलने के लिए जूते और एक जोड़ा खद्दर के स्लीपर (जैसे कि मैं पहना करता था) बना दें। गोपाली यह काम मेरे लिए कर देगा। यंग एंड कंपनी से केवल यह कहना होगा कि वह उन्हें बहुत कसा न बनाएं--जैसा कि अक्सर वह करते हैं। कुछ समय पहले उन्होंने मेरे लिए जो बनाए थे, वे बहुत कसे हैं और उन्हें ऊनी मौजों के साथ पहनना संभव नहीं है।

एस. सी. बो.

18 शरत चन्द्र घोस के नाम

ससर किया गया और पास किया गया अस्पष्ट

एस पुलिस
25/12

बरहमपुर जेल
24 12-24

प्रिय दादा

मुझे पिताजी का एक पत्र मिला है जिसमे वे कहते हैं कि आप पुरी जाएगे। इसलिए मैं नहीं जानता कि आप बडे दिन पर यहा आ सकेगे या नहीं।

मैं उन कारणो की कल्पना कर सकता हू, जिनसे प्रेरित होकर कार्पोरेशन ने मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर तथा डिप्टी एक्जीक्यूटिव अफसर के पदो के सबध में इतजाम किया। मुझे आशा है कि काम पूरे जोर शोर से चलता जाएगा।

मैं विजय काका को लिखना चाहता था जिससे उनसे पूछ सकू कि क्या आगामी चुनावो मे 24 परगना जिला बोर्ड के लिए खडे होना सभव होगा? मैं नहीं जानता कि मतदाता कैसे हैं और क्या जेल मे रहते हुए मैं उम्मीदवार हो सकता हू या नहीं। चूकि मैं सप्ताह मे केवल दो ही पत्र लिख सकता हू, इसलिए मैं उन्हे अभी तक नहीं लिख पाया हू। कृपया यह जानकारी उनसे प्राप्त कर मुझ तक यथासभव पहुचा दे।

अब खुरो कहा रह रहा है? मुझे आशा है कि वह सानद है।

अपने पिछले पत्र मे मैंने आपको राज्य की जेलो के बदिया के लिए पुस्तको के बारे मे लिखा था। मुझे विश्वास है कि अगर प्रयास किए जाए तो काफी अच्छी सख्या मे पुस्तक उनके लेखको से तथा अन्य लोगो से जमा की जा सकती हैं। आप इस सबध मे क्षितीश या दिलीप से सक्रिय होने को कह सकते हैं। हमें चूकि यहा अनिश्चित काल तक रहना है इसलिए मानसिक भोजन आवश्यक है।

मैं यहा सकुशल हू। अगर मैं मलेरिया से बचाव कर सकू तो मैं ठीक ही रहूगा। मैं जब तब कुनैन की खुराक लेता रहता हू।

बगाल सरकार को कपडे भत्ते आदि के बारे मे दिए गए मेरे प्रतिवेदन बेकार गए हैं। क्या आप समझते हैं कि वाइसराय को प्रतिवेदन भेजने का कोई लाभ होगा? मैं इन प्रतिवेदना से ऊब चुका हू, लकिन साथ ही बाद म यह नहीं कहा जाना चाहिए कि मेरी शिकायतें वाइसराय के सामने नहीं पेश की गई थीं जो अध्यादेशा और अधिनियमा को जारी करने के लिए अतिम रूप में जिम्मेवार हैं।

जब आप यहा आए तो कृपया अपने साथ कुछ पैसे लते आए यही कोई पचास या सौ रुपये। सुपरिटडट कोशिश म है कि एसा प्रबध हो जिससे हम

कालेज पुस्तकालय से जब चाहें पुस्तकें ले सकें। इस संबंध में डिपोजिट के लिए पैसों की जरूरत होगी।

आशा है, आप बिल्कुल ठीक-ठाक होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस. सी. बोस)

एस.सी. बोस महोदय,
बार-एट-लॉ

19. शरत चन्द्र बोस के नाम

पास किया
ए. बनर्जी
कृते एस. पुलिस
5-1-25

बरहमपुर जेल
3-1-25

प्रिय दादा,

आशा है, आप अब कलकत्ता वापस आ चुके होंगे।

मामा कल मुझे देखने आए थे। आप उनसे यथासमय सभी बातें सुनेंगे।

मुझे लगता है कि आपको मेरे विरुद्ध लगे आरोपों की प्रति के बिना ही काम चलाना होगा। सरकार ने मुझे सूचित किया है कि प्रति नहीं दी जा सकती। इस तरह इससे उस उत्तर की पुष्टि हो जाती है, जो मेरे वकीलों को श्री आर्मस्ट्रांग से मिला है।

मैं समझता हूं कि आपने पृथ्वी लोगों की सेवा समाप्त कर दी है। मुझे उसके लिए अफसोस है। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए और यह देखते हुए कि उन्हें किस प्रकार कष्ट उठाने पड़े हैं, मैं चाहता था कि आप उसे फिर काम से लगाने का तरीका खोज पाते। रमेश कहां है?

मैं यहां काफी ठीक हूं। आशा है, आप सभी सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस.सी. बोस)

एस सी बोस महोदय,
बार-एट-लॉ

पुनश्च

आप बाद मे मुझे कुछ अचार और 'भाजा मसाला' भेज सकते हैं।

एस सी बी

20. शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास किया, अस्पष्ट
एस पुलिस
15 1 25

38/2, एल्गिन रोड
11-1-25
11 बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

मैं पुरी से वापस आने के बाद से ही तुम्हे पत्र लिखने की बात सोचता रहा हू, लेकिन आज से पहले नहीं लिख पाया।

मुझे तुम्हारा 16 दिसम्बर का पत्र पुरी के लिए रवाना होने से पहले मिल गया था और 24 दिसम्बर का पत्र पुरी में मिला। तुम्हारा 3 जनवरी का पत्र परसा मिला।

1 गर्म कपडो और भत्ते के बारे मे

मैं समझता हू कि तुम्हे गवर्नर जनरल को प्रतिवेदन भेजना चाहिए, अन्यथा बाद में यह कहा जाएगा कि समुचित अधिकारी तक बात नहीं पहुचाई गई। कोई कारण नहीं कि तुम्हे तुम्हारे मकान का 450 रुपया किराया न दिया जाए।

2 अलीपुर जेल मे सामग्री

उन्होने कमोड, टाइप राइटर आदि भेज दिया है। लेकिन उनका भेजा हुआ कमोड वह नहीं है, जो यहा से भेजा गया था। पहले मैंने सोचा कि इस विषय म उन्हे लिखू लेकिन फिर मामला रफा-दफा मान लिया। रमैया कामकाजी मेज आदि ले आए हैं।

3 बिडला ब्रदर्स के साथ मामले की सद्भावनापूर्ण सुलह-सफाई की कोई सभावना नहीं है। वे स्थिति का पूरा-पूरा फायदा उठा रहे हैं। बाबू प्रभुदयाल हिम्मत सिह (सालीसिटर और म्यूनिसिपल सदस्य) ने, जिन्हे मैंने समझौते की बातचीत करने के लिए कहा था, मुझे बताया कि बिडला का विचार 10,000 रुपये का है। श्री एच एन दत्त ने अभी कुछ नहीं कहा है। मैंने धीरेन मित्र को फिर याद दिलाया है।

4. क्या तुम्हें म्यूनिसिपल गजट नियमित रूप से मिल रहा है। मैंने रमैया से कहा था कि वे ऐसा प्रबंध करें कि वह नियमित मिलता रहे।

5. तुम्हें तुम्हारे विरुद्ध आरोपों की प्रति न देने का कतई कोई औचित्य नहीं है। लेकिन दुबारा लिखना व्यर्थ है।

6. श्री डी.सी. दत्त (कलेक्टर, कार्पोरेशन) अगले अप्रैल में सेवा-निवृत्त हो रहे हैं। वित्त संपत्ति और सामान्य कार्य-समिति की पिछली बैठक में हमने कलेक्टर का पद विज्ञापित करने का फैसला किया।

7. हमने तुम्हारी बगिया में गुलाब की जो कलमें लगाईं, वे ठीक से चल रही हैं। बाद में हम बैडमिंटन कोर्ट बनाने की कोशिश करेंगे।

8. शराब की दुकान के बारे में मेरा प्रस्ताव शायद इस महीने विचार के लिए आए, लेकिन मुझे मालूम नहीं। मुझे आशा है कि मैं प्रस्ताव स्वीकार करा सकूंगा।

9. पुरी जाने से पहले मैंने संतोष बाबू से कहा था कि वे तुम्हें ऋण-निपटान और मंशाटोला योजना के बारे में लिख दें। मुझे मालूम हुआ है कि उन्होंने लिख दिया है।

10. मैंने स्टुअर्ट स्मिथ को तुम्हारा संदेश दे दिया था। उन्होंने उसको बहुत आदरपूर्वक स्वीकार किया और उत्तर में मुझे लिखा कि वे कार्पोरेशन के बारे में तब तक लिखते रहेंगे, जब तक 'द स्टेट्समैन' उसे प्रकाशित करता रहेगा।

11. मैंने तुम सबके लिए कुछ पुस्तकें प्राप्त करने के बारे में दिलीप को लिख दिया है। क्या उसने तुम्हें लिखा है?

12. नालू को अभी कहीं काम पर नहीं लगाया जा सका है। सुरेश कटक गया है। वह कल वापस आ जाएगा। मैं समझता हूं कि तुम्हें पता है कि उसने अपना काम छोड़ दिया है।

13. बड़ामामा बाबू (श्री जे.एन. दत्त) ठीक हैं और फूलफल रहे हैं। वे प्रत्येक वार्ड के लिए स्वास्थ्य एसोसिएशनों की म्यूनिसिपल योजना में रुचि ले रहे हैं और अपने वार्ड के लिए कुछ करने की कोशिश कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि उनके सुपरिचित उद्धरण में बहुत कुछ सच्चाई है। मैं भी उतना ही संदेही था, जितना तुम हो, लेकिन मैं दिनों-दिन मामा बाबू के उद्धरण की सच्चाई को महसूस कर रहा हूं।

14. क्या बुक कंपनी ने तुम्हें टेनीसन की कृतियों का संग्रह और कोष भेज दिया है?

15. सरकार ने श्री एस. सी. राय और रशीद खां को डिप्टी एक्जीक्यूटिव अफसर के पद पर नियुक्ति की मंजूरी दे दी है। दोनों ही ने पद संभाल लिया है।

16. विजय काका (बी. के. बोस) यहां परसों आए थे। उन्होंने बताया कि जिला बोर्डों के चुनाव अभी नहीं हो रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सर्वोत्तम बात यह होगी

कि *स्थानीय बोर्डों* की ओर से चुनकर प्रवेश किया जाए। तुम्हारी इसके लिए अर्हता है क्योंकि हम कोडलिया की भूमिका के लिए मार्ग शुल्क देते हैं। मैं यथासमय बताऊंगा कि हमे इस विषय म क्या करना है।

17 मैं तुम्हें प्राय एक सप्ताह मे एक साथ एक सौ रुपये भेजूगा जिससे तुम किताबें लेने के लिए कालेज पुस्तकालय में पैसे जमा कर सको।

18 तुम अपने चपरासिया और शौफर को जो 'बख्शीश' दिया करते थे वह अभी भी दी जा रही है।

19 कार्पोरेशन के वकील ने सेवा निवृत्ति से पूर्व अवकाश के लिए आवेदन किया है। यह मामला सपत्ति और सामान्य कार्य समिति की अगली बैठक मे आएगा।

20 चूकि श्री जे सी मुखर्जी तुम्हारे स्थान पर कार्य करने के लिए नियुक्त किए *गए हैं अत मैं समझता हू कि नियुक्ति करने का अधिकार उन्हे ही है।*

21 तुम्हे शीघ्र ही तुम्हारे जूते स्लीपर कपडे तथा अचार और 'भाजा मसाला' मिल जाएगे।

22 दावे

'द इंग्लिशमैन' अपना लिखित बयान अगले मगलवार को दाखिल करेगा। उसकी प्रति तुम्हे तुम्हारा वकील भेज देगा।

अभी तक 'द कैथोलिक हेराल्ड' का सम्मन तामील नहीं किया गया है क्योकि हमे ऐसा कोई नहीं मिला था जो उसके सपादक फादर गिल की शिनाख्त करता। अब मुझे शिनाख्त करने वाला एक व्यक्ति मिल गया है और थोडे समय बाद ही सम्मन तामील किया जाएगा।

'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध तुम्हारा दावा लगभग तैयार है। उसे अगले सप्ताह दायर कर दिया जाएगा।

मा कल यहां सुरेश के साथ आ रही हैं। पिताजी कटक मे हैं। वहा सब सकुशल हैं। आशा है तुम बिल्कुल ठीक होगे।

तुम्हारा सस्नेह
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

पुनश्च:

पृथ्वीश की सेवाएं सी. आर. दास के कहने से समाप्त की गईं, लेकिन मैं संतुष्ट नहीं था कि उसके विरुद्ध यह आरोप सिद्ध हो गया है कि वह ठेकेदार उग्र सिंह की मदद कर रहा था। मैं उसे कार्पोरेशन में रखने की कोशिश कर रहा हूं।

क्या मैं कार्पोरेशन से तुम्हारी पहली दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक की तनख्वाह ले लूं? 15 दिसम्बर से तुम्हारी छुट्टी मंजूर की गई थी। लेकिन कार्पोरेशन का प्रस्ताव यह था कि तुम्हें 15 दिसम्बर से तीन महीने की अवैतनिक छुट्टी की स्वीकृति दी जाती है, क्योंकि तुम जिस अवधि में काम नहीं कर रहे होंगे, उसके लिए वेतन लेने को अनिच्छुक हो। लेकिन उसे 15 तक की तनख्वाह के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया था। मुझे लिखो कि क्या करना होगा? मकान, किराया आदि के लिए पैसों की जरूरत है। लेकिन दूसरी ओर हमें सावधान रहना चाहिए कि बाद में ऐसी कोई टिप्पणी न की जाए कि तुमने उस अवधि का भी वेतन ले लिया है, जिसमें तुम काम नहीं कर रहे थे।

शरत चन्द्र बोस

21. शरत चन्द्र बोस के नाम

24-1-1925

प्रिय दादा,

मुझे आपका 11 तारीख का पत्र यथासमय मिल गया था। मैं आपको गत दो सप्ताहों से नहीं लिख पाया हूं।

आपके पत्र से ऐसा लगता है कि 'द स्टेट्समैन' के लेख के बारे में कानूनी सलाह ली जा चुकी है और उसी सलाह के मुताबिक दावे को तैयार किया जा रहा है। लेकिन उसे दायर करने से पहले मैं बार-बार सोचता और उतने अनुकूल निर्णय की आशा करता जितना 'द इंग्लिशमैन' के बारे में करता हूं। अगर हम एक मामले में सफल होते हैं तो उसका प्रभाव अगले मामले पर पड़ेगा। मेरे सामने इस समय 'द स्टेट्समैन' का लेख नहीं है, लेकिन मुझे कोई संदेह नहीं है कि आप परिस्थिति का सावधानी से जायजा लेंगे और सबसे अधिक उचित रास्ता अपनाएंगे।

पारिवारिक भत्ते के बारे में सरकार को भेजे गए अपने दूसरे प्रतिवेदन का कोई जवाब मुझे अभी तक नहीं मिला है। जैसा कि आप जानते हैं, पहली अर्जी का जवाब 'न' में था, लेकिन दूसरा प्रतिवेदन इस समय विचाराधीन है। आप दिसम्बर के कुछ दिनों का मेरा वेतन तब तक ना प्राप्त करें, जब तक मुझे कुछ उत्तर प्राप्त न हो जाए। के एच . . . कहां है और वह कैसा है? जहां तक पृथ्वीश का प्रश्न है, मुझे आशा है

कि आप पूछताछ करगे कि उसका कहा तक दोष है। अगर उसका कोई गभीर दोष नहीं है तो आप विचार करें कि क्या उसे चेतावनी देकर फिर से काम पर बहाल किया जा सकता है। कुल मिलाकर वह परिश्रमी तथा कर्तव्यनिष्ठ रहा है और इसीलिए उसके पहले अपराध पर उसके साथ नरमी का सुलूक करना चाहिए। उसी वेतन पर अन्यत्र ऐसा काम खोज पाना अगर असभव नहीं तो कठिन अवश्य ही होगा।

मुझे 'बगाली' यहा नियमित रूप से मिल रहा है। बडे दिन का अक जिसमें 32 पृष्ठ है, बहुत सज-धज के साथ निकला है। उसमें बहुत से चित्रों के साथ कई देशी उद्योगों के बारे में विवरण मिलता है। रविवासरीय अक में भी समय समय पर कला साहित्य अर्थशास्त्र और उद्योग पर लेख निकलते रहते हैं। आप कभी कभी बडे दिन वाले तथा रविवासरीय अकों को देख जाया करे।

अलीपुर जेल की चीजों के बारे मे मुझे आशा है कि आपको एक छोटा-सा टिफिन का डिब्बा भी मिला होगा जिसे मैंने घर भेजने के लिए वहा छोड दिया था।

मुझे म्यूनिसिपल गजट नियमित रूप से मिल रहा है। लेकिन वे मुझे न जाने क्यों कार्पोरेशन का कार्यवृत्त नहीं भेज रहे हैं।

जहा तक बिडलाओ के मुकदमे का सवाल है शायद श्री दास सहायक हो सके। यह आश्चर्य की बात ही है कि सालीसिटर श्री एच एन दत्त किसी सद्भावपूर्ण समझौते के प्रति इतने अनमने हैं।

मुझे सतोष बाबू का पत्र मिला है और मैंने उन्हे उत्तर दे दिया है।

मुझे शराब की दुकानो के सबध मे आपके प्रस्ताव को लेकर चिता है। मुझ आशा है कि आप उसे छोड नहीं दगे। मुझे कोई शक नहीं कि आप उसे स्वाकृत करा लगे।

मैंने हावडा पुल विधेयक के बारे में कार्पोरेशन कमेटी की रिपोर्ट देखी है और मैं उसका हार्दिक अनुमोदन करता हू। मुझे आशा है कि कार्पोरेशन ग्रैंड ट्रक नहर योजना का भी बिना किसी शर्त के निरनुमोदन करेगा। ग्रैंड ट्रक नहर योजना का स्रोत वही है जो 'स्पिल रिजर्वायर' योजना का स्रोत है और मेरी राय में दोनो ही योजनाए खर्चीला और व्यर्थ हैं। कृपया सतोष बाबू से कहे कि वे इस याजना क बारे में रुचि लकर उसके सबध मे यथावश्यक कार्रवाई करे। ग्रैंड ट्रक नहर योजना पर विचार विमर्श क दौरान विद्याधरी विशेष समिति के अध्यक्ष से बडी सहायता मिलेगी। कार्पोरेशन को ग्रैंड ट्रक नहर योजना के बारे मे विशेष दिलचस्पी है क्याकि नहर काशीपुर से होकर गुजरेगी और उस क्षेत्र की जल निकासी की व्यवस्था पर बुरा असर छोडगी।

मुझे बुक कपनी से टेनीसन की कृतियों का सग्रह और काप मिल गया है। मैंने सभी पार्सलों को यानी अचार भाजा मसाला जौंनी एड कपनी के जूतों कमलालय से वस्त्रो तथा घर से आए कपडो क एक और पार्सल को प्राप्त कर लिया है।

मुझे खुशी है कि मेरे चपरासियों और अर्दलियों को बख्शीश दिया जाना जारी है।

जहां तक 24-परगना के जिला बोर्ड के चुनाव का प्रश्न है, मुझे चिंता है कि मेरा नाम मतदाताओं में शामिल हो जाए और मुझे यह मालूम हो जाए कि मेरे यहां रहते मुझे चुनाव के लिए खड़े होने में कठिनाई तो नहीं होगी। शेष बातों के लिए मैं चुनाव के समय पर इंतजार तक सकता हूं। क्या मार्ग शुल्क पिताजी के नाम से दिया जा रहा है या संयुक्त परिवार के नाम से? अगर अंतिम बात सही है तो मैं नहीं समझता कि संयुक्त परिवार के प्रतिनिधि के रूप में मेरा नाम भी शामिल करने में कोई कठिनाई होगी। लेकिन पहली बात सही हो तो कुछ कठिनाई हो सकती है।

मुझे दावे का मूल प्रारूप और लिखित बयान तुम्हारे संलग्न पत्र के साथ मिल गया है। मुझे आशा है कि अब तक 'द इंग्लिशमैन' वाला मुकदमा हाईकोर्ट में विचारार्थ लिया जाएगा।

मैं यहां काफी ठीक हूं। आशा है, आप सब सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

22. तुलसी चन्द्र गोस्वामी का पत्र

पास किया
अस्पष्ट
एस. पी.
23.12

1, रेनी पार्क,
बालीगंज,
कलकत्ता
19 दिसम्बर 1924
4 बजे सायं

प्रिय सुभाष बाबू,

आपका 15 तारीख का पत्र अभी-अभी आया है। मैं आपसे भेंट के लिए मुख्य सचिव, बंगाल, को आवेदन कर रहा हूं।

मैंने इससे पहले आपसे मिलने की बात सोची थी। लेकिन मुझसे कहा गया था कि भेंट के मौके सीमित होते हैं, और इसलिए अगर मैं मिलना चाहूं तो आपके संबंधी एक मौके से वंचित रह जाएंगे।

मैं रविवार को कांग्रेस के लिए रवाना हो रहा हूं। उससे पहले आपसे मिलने के लिए आज्ञापत्र पाना असंभव है। इसलिए मैं समझता हूं कि मुझे आपसे भेंट का कार्यक्रम बेलगाम से वापसी तक स्थगित रखना होगा।

यह पूछना बेकार है कि आप कैसे हैं। मैं जानता हू कि आपका नैतिक साहस आपको नितात विरोधी परिस्थितियो मे भी जीवत और प्रसन्न बनाए रखता है। यह दुहराने की आवश्यकता नहीं कि सम्पूर्ण देश आपको कष्ट सहने वाला में एक महानतम व्यक्ति मानता है।

आपका सहृदय
टी सी गोस्वामी

23. शरत चन्द्र बोस के नाम

ब्रिटिश इडिया स्टीम नेवीगेशन कपनी लिमिटेड,
एस एस अरौंदा
बृहस्पतिवार, 29-1-1925

प्रिय दादा,

मैं यह पत्र माडले जेल की राह से लिख रहा हू। हमे आशा है कि हम कल सवेरे रगून पहुच जाएगे और उसी शाम को माडले के लिए रेलगाडी पकडगे जहा हम शनिवार को लगभग दोपहर के समय पहुच जाएगे। मुझे पता चला है कि रगून से माडले तक रेल से 19 घटे लगते हैं।

मुझे सोमवार (26 तारीख) को तीसरे पहर बरहमपुर मे बगाल सरकार का यह आदेश दिया गया है कि मुझे माडले जेल मे हस्तातरित किया जाना है। उसी रात अर्थात सोमवार को मुझे कलकत्ता लाया गया और रात मैंने लाल बाजार के हिरासती कक्ष म बिताई। मगलवार को बडे सवेरे हम जहाज पर सवार हुए और अब रगून के निकट पहुच रहे हैं।

मैं ठीक हू। मैं माडले जेल पहुचने पर आपको फिर लिखूगा। मैं इस पत्र के साथ-साथ कटक मे पिताजी को भी पत्र लिख रहा हू। मैं समझता हू कि मा अब कलकत्ता मे हैं। आशा है कि आप सब कुशल से होगे।

आपका अत्यत स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस सी बास)

24. शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास किया, अस्पष्ट
27/1
एस. पुलिस

38/2, एल्गिन रोड
24-1-1925
9 बजे सायं

प्रिय सुभाष,

मैं नहीं जानता कि तुम्हें मेरे पत्र मिले हैं या नहीं। मैंने तुम्हें दो पत्र भेजे हैं—पहला पुरी से लौटने के कुछ दिन बाद और दूसरा रजिस्ट्री द्वारा। रजिस्ट्री वाले पत्र में मैंने तुम्हें 'इंग्लिशमैन' वाले मुकदमे के संबंध में दावे और लिखित बयान की प्रतियां भी भेजी थीं।

मैं तुम्हारी ओर से चुप्पी पर चिंतित नहीं हूं। मुझे केवल यह जानने की उत्सुकता है कि क्या पत्र तुम्हारे पास ठीक से पहुंच गए हैं।

पिताजी यहां सरस्वती पूजा की छुट्टियों के दौरान आएंगे जो 25 तारीख से शुरू होती हैं। मां यहां हैं और सानंद हैं। आशा है, तुम सकुशल होंगे।

तुम्हारा स्नेहभाजन,
शरद चन्द्र बोस

25. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले जेल
12-2-1925

प्रिय दादा,

आपका 24-1-25 का पत्र कल ही मिला। यहां आने के बाद कार्पोरेशन से मेरा सभी तरह का संपर्क टूट गया है। मुझे न तो कार्पोरेशन के कार्यवृत्त मिले हैं, न 'म्यूनिसिपल गजट' . . . आप अगर शराब की दुकान संबंधी अपना प्रस्ताव जोर देकर आगे बढ़ाएंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी। वह एक जरूरी प्रस्ताव है और जनता उसका आदर करेगी।

एंताज अली नामक एक व्यक्ति ने इंजन ड्राइवर के पद के लिए आवेदन किया था—शायद कार्पोरेशन पंपिंग स्टेशन पर या कार्पोरेशन के एक वाटरिंग बोर्ड में। उसने अपनी अर्जी और प्रमाणपत्र आदि बांस की शक्ल के एक टीन के डिब्बे में रखकर दिया था। वे मेरे कार्यालय में मेरी मेज पर हैं या मेरी कुर्सी की बाईं तरफ कहीं हैं।

टीन का डिब्बा देखने में इतना हास्यास्पद है कि उस पर निगाह जरूर ही पड जाएगी। उस व्यक्ति ने मुझे लिखा है कि उसे उसके प्रमाणपत्र यथाशीघ्र लौटा दिए जाए। उनके बिना वह और कहीं किसी काम के लिए आवेदन नहीं कर सकता।

बजट का कार्यवृत्त स्थानीय पत्रों में प्रकाशित हुआ है और मैंने पाया है कि उसमें घाटा दिखाया गया है। इस पर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ है। सुधार के नए कार्यों को स्थगित करके खर्च में आसानी से कमी की जा सकती है — जिससे आय और व्यय को संतुलित किया जा सके। मुझे आशा है कि अंतिम रूप से स्वीकार करने से पहले कार्पोरेशन उसमें ठीक से 'कटौती' करेगा।

मैं समझता हू कि आप लोगों में से कुछ को 38/1 में जाकर रहना चाहिए अन्यथा वह स्थान साफ-सुथरा नहीं रखा जा सकेगा।

मैं स्थानीय अधिनियम की एक प्रति चाहता हू, जिसमें जिला बोर्डों के गठन का विवरण है।

मैं विजय काका से सहमत हू कि स्थानीय बोर्डों द्वारा चुना जाना अधिक सुविधाजनक है।

इस संबध में मैं यह भी कहना चाहूगा कि अगर मेरे जेल में रहते हुए विधान परिषद् का चुनाव होता है तो मैं कलकत्ता, उत्तर या दक्षिण चुनाव-क्षेत्र से खडा होना चाहूगा. व्यावहारिक कठिनाइयों के अलावा मैं नहीं समझता कि मेरे जेल में रहते हुए जिला बोर्ड या परिषद् के लिए चुनाव में मेरे खडे होने पर कोई कानूनी बाधा है।

* * * *

शहर की सडकों की दशा की जाच करने वाली समिति के सदस्य कौन-कौन हैं? मैं अपनी बात पेश करते हुए एक टिप्पणी समिति के लिए तैयार कर रहा हू और मुझे आशा है कि मैं उसे अगली डाक से भेज सकूगा।

* * * *

सेंसर द्वारा हटाया गया

जहा तक मेरे स्वास्थ्य का सबध है, अपने कारावास के दौरान पहली बार मेरी तबियत गडबडाई है। यहा आने के दिन से ही मुझे अनमनेपन और अनुत्साह का अनुभव हो रहा है और लगातार कब्ज है। यह यहा हम सबके साथ है। मुझे नहीं लगता कि यहा की जलवायु कभी भी हमारे अनुकूल होगी। मैं यहा तबादले के लिए बगाल सरकार को नहीं लिख रहा हू, क्योंकि मैं जानता हू कि उसका कोई फल नहीं होगा। माडले जेल बर्मा की एक सबसे ज्यादा स्वास्थ्यप्रद जेल मानी जाती है और माडले एक ऐसा स्थान है जहा, मुझे पता चला है कि, प्लेग और चेचक से, विशेषत प्लेग से बहुत अधिक लोग मरते हैं। अगर मेरी सूचना सही है तो पिछले साल यहा प्लेग से तीस हजार लोगों की जानें गई थीं।

फादर बनर्जी यहीं हैं। वे अब पक्के पिता बन गए हैं। उनके परिवार में एक की और वृद्धि हुई है एक बच्ची आ गई है जिसे मिलाकर दो संतान हो गई हैं। पुरनिया जग महाशय ने विश्वविद्यालय म प्रवेश ले लिया है और अब व खद्दर और गाधी टोपी में देश की खाक छानते हुए नहीं मिलते। तुम जानत हो कि मरा दृढ विश्वास है कि कुछ समय पहले खद्दर और गाधी टोपी पहनना एक फैशन बन गया था। कुछ सबसे ज्यादा तडीबाज लोग जिन्हे मैं जानता हू बयार के साथ पीठ देने और लोगो की नजरो में चढने के लिए इस पोशाक को अपनाते रहे हैं और शायद उनमें वैसी देशभक्ति नहीं रही है जैसी हमारे जैसे लोगों म मानी जाती है। यह कैसी दयनीय स्थिति रही है।

अच्छा अब मुझे पत्र समाप्त करना चाहिए। मेरा हार्दिक आभार और गहरी मित्रता तथा आदर स्वीकार करें। यदि मेरी पत्नी यहा होती तो वे भी मेरे उद्गारो मे सहभागिनी होतीं। मैं आपके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ तथा शीघ्र रिहाई की कामना करता हू।

सदैव आपका
सुधीर कु रुद्रा

27 शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1 एल्गिन रोड
24 2 1925
11 बजे रात्रि

प्रिय सुभाप

मुझे एस एस अरौंदा पर लिखा गया तुम्हारा 29 1 25 का पत्र मिल गया था लेकिन मैंने अभी तक उत्तर इसलिए नहीं दिया था कि माडले से तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में था।

अपने 31-1 25 के मा को लिखे गए पत्र में तुमने कहा है कि तुम मुझे अगले सप्ताह पत्र लिखोगे। तुम्हारी चुप्पी से हमको कुछ चिंता हो रही है। लकिन हमें आशा है कि तुम सानद हो।

मुझे ब्यौरे से बताओ कि वहा तुम्हारे लिए क्या प्रबंध किया गया है। रहने के लिए तुम्हे कैसी जगह दी गई है? खाना पीना कैसा है?

क्या इस तथ्य से कि तुम्हें अध्यादेश के अतर्गत नजरबद किया गया है रहने और खाने पीने की व्यवस्था में कुछ अतर पडा है।

क्या वहां तुम्हें कोई पुस्तक या पत्रिका पढ़ने को दी जाती है? क्या शारीरिक व्यायाम के लिए कुछ व्यवस्था है? हमारे परिवार में हाल में नए सदस्यों का प्रवेश हुआ है। सुनील को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई है—और सुरेश को भी।

सुरेश कटक गया है। उसके शिकारपुर उद्यान में भवन-निर्माण कार्य आरंभ कर दिया है।

सुधीर को अभी भी कोई काम नहीं मिल पाया है।

क्या तुम्हें अपने मकान के किराए के बारे में सरकार से कोई सूचना मिली है?

अगर तुम्हें और अधिक कपड़ों की जरूरत हो तो मुझे लिखो।

आशा है, तुम प्रसन्न होगे। हम सब सानंद हैं। पिताजी कटक में हैं। मां यहां हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

सुभाष सी. बोस महोदय,

पुनश्च:

मैं रमैया का पत्र संलग्न कर रहा हूं। यथावश्यक कर देना।

एस. सी. बी.

28. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
शनिवार, 28-2-1925
7 बजे सायं

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 12 तारीख का पत्र मुझे गत 26 तारीख, बृहस्पतिवार, को मिला। उस पत्र के मिलते ही मैंने श्री आर्मस्ट्रांग को यह जानकारी देने के लिए लिखा कि पत्र के मिलने में इतनी देरी किस लिए हुई? उन्होंने मुझे लिखा है कि पत्र भेजने में उनके कार्यालय में कोई अनावश्यक विलंब नहीं हुआ है। स्पष्टत: मांडले स्थित अधिकारियों ने पत्र समय से नहीं भेजा होगा।

मुझे तुम्हारा 20 तारीख का पत्र अभी मिला है। तुमने अपने स्वास्थ्य के बारे में विशेष रूप से कुछ नहीं लिखा है।

अपने 12 तारीख के पत्र मे तुमने कहा है कि तुम्हारी तबीयत माडले पहुचने के बाद से ही ठीक नहीं चल रही है। इसलिए मैंने माडले जेल के सुपरिटेंडेंट को तार भेजकर पूछा था कि तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है और मुझे कल रात जवाब मिला है कि तुम ठीक हो। लेकिन जब तक मैं तुमसे न जान लूगा कि तुम सानंद हो, तब तक आश्वस्त अनुभव नहीं करूगा।

खुफिया पुलिस की इंटेलिजेंस शाखा ने कार्पोरेशन की कार्रवाई के विवरण की प्रतिया तुम्हारे पास भेजने की अनुमति देने से इकार किया है। लेकिन 'म्यूनिसिपल गजट' भेजे जाने पर उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की है और अब वह तुम्हे नियमित रूप से मिलता रहेगा। 'म्यूनिसिपल गजट' की कुछ प्रतिया तुम्हें प्रेषित करने के लिए मेरे पास रखी हैं और उन्हे अगली डाक से भेज दिया जाएगा।

तुम्हारा 12 तारीख का पत्र एक जगह ससर हुआ था। लगभग 10 पक्तियों पर स्याही फेर दी गई है।

हम 38/1 में बने हुए हैं और तुम्हारे लौटने तक बने रहेंगे। अन्यथा, मकान और आस-पास की जगह रहने के योग्य नहीं रह जाएगी। मैं नहीं जानता कि मकान मालिक क्या करेगा। उसे निस्सदेह उस अवधि के लिए किराया प्राप्त करने का अधिकार है, जिस तक तुम उसे लेने को सहमत हुए थे। मैंने सोचा था कि किराया देने मे कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योकि सरकार से कम से कम इतनी आशा तो की ही जा सकती थी कि वह किराया दे देगी। लेकिन अब मैं पाता हू कि मेरा ऐसा सोचना गलत था।

तुम्हे फिर सरकार को लिखने की आवश्यकता नहीं है। मैं प्रयत्न कर देखूगा कि यहा क्या किया जा सकता है।

कार्पोरेशन के सबध मे — तुमने पिछली किस तारीख का 'म्यूनिसिपल गजट' प्राप्त कर लिया है ?

शराब की दुकानों के सबध में मैं अपना प्रस्ताव अवश्य ही पूरे जोर के साथ रखूगा। सभावना हो सकती है कि वह अगले सप्ताह तक पेश किया जा सके। अभी तक किसी सालीसिटर को तय करने के बारे में कुछ निश्चय नहीं हो पाया है। लेकिन आम राय यह प्रतीत होती है कि वकील कोई वरिष्ठ व्यक्ति होना चाहिए और सालीसिटर उसका सहायक। मैं इसके विरुद्ध हू, लेकिन वकील कौंसिलरों का बहुमत है और वे शायद जैसा चाहते हैं, करा लेंगे।

मैं रमैया को लिख रहा हू कि वह एताज अली मिस्त्री के प्रमाणपत्र वापस कर दे।

हा, यह घाटे का बजट है। बजट उप-समिति उस पर विचार कर रही है और मुझे विश्वास है कि वह खर्च मे कटौतिया कर सकेगी। मैं उप-समिति में नहीं हू, क्योंकि मेरे पास उस प्रकार के भारी काम के लिए समय नहीं है।

बिल—तुम्हारे कमलालय के और यंग एंड कंपनी के बिलों का भुगतान कर दिया गया है। ग्रेजुएट ब्रदर्स एंड फ्रेंड्स को तुमसे कुछ प्राप्त करना है। मैं उन्हें शीघ्र भुगतान का प्रबंध करूंगा।

जिलाबोर्ड—मैं स्थानीय स्वशासन अधिनियम की एक प्रति शीघ्र प्राप्त करके तुम्हें भेजूंगा।

पृथ्वीश—मुझे आशा है कि मेयर के नगर में वापस आने पर मैं पृथ्वीश को कार्पोरेशन में काम पर लगा सकूंगा।

डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर एस.सी. मित्र—श्री मित्र को दी गई वेतन-वृद्धि के लिए अन्य किसी की भी अपेक्षा मैं अधिक जिम्मेदार हूं। वे मेरा तथा संतोष बाबू का साथ देते रहे और हमने उनके वेतन-वृद्धि के मामले का समर्थन अन्य किसी भी बात की अपेक्षा उसके प्रति एक प्रकार की संवेदना से प्रेरित होकर किया। वे आग्रहपूर्वक अनुरोध करते रहे और उन्होंने हम पर जोर डाला कि हम सोचें कि वे अगले अक्तूबर में 55 वर्ष के हो जाएंगे।

तुम्हारे व्यय—अब तुम्हारे व्यय का भार किसी न किसी प्रकार उठाना होगा और तुम्हारी गिरफ्तारी की अवधि समाप्त होने पर सरकार को एक भारी बिल पेश करना होगा। जब तुम मुक्त हो जाओ तो तुम यह मामला जोर देकर उठा सकते हो और भारत मंत्री तक जा सकते हो।

आरोप-पत्र—मुझे आश्चर्य नहीं है कि अधिकारियों ने तुम्हारे विरुद्ध आरोपों के विषय में नोट भी लेने की अनुमति नहीं दी। मेरा विचार है कि उन्हें तुम्हारे विरुद्ध आरोपों की लिखित प्रति से इसलिए पढ़ना पड़ा कि तुम अब अध्यादेश के अंतर्गत बंदी हो। क्या रेगूलेशन-3 की जगह अध्यादेश कर देने से तुम्हारे प्रति व्यवहार में कोई अंतर आया है?

मुझे लिखो कि क्या तुम्हें व्यायाम करने और लोगों से मिलने-जुलने दिया जाता है? क्या तुम्हें कोई पुस्तकें दी गई हैं?

मैं पिताजी को लिख दूंगा कि तुम्हें भेजे गए पत्र 13, इलीशियम रो के पते पर प्रेषित किए जाएं।

तुम्हारे उच्च न्यायालय के मुकदमे—'द कैथोलिक हेराल्ड' ने खेद व्यक्त करते हुए अपना लिखित ब्यान दाखिल किया है। 'द स्टेट्समैन' के पास अभी ब्यान दाखिल करने के लिए समय है।

हम सब ठीक हैं। आशा है, तुम पहले से बेहतर होंगे।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

29. शरत चन्द्र बोस के नाम

प्राप्त

4-4-1925

माडले जेल

14-3-1925

प्रिय दादा,

पत्र लिखना अब मेरे लिए एक समस्या तथा एक प्रकार से दु स्वप्न जैसा बन गया है। दु स्वप्न का कारण वह नगी तलवार है जो पुलिस के सेंसर के रूप मे मेरे ऊपर कच्चे धागे से लटकती रहती है—पुलिस की निरकुशता स्वर्गीय जार की निरकुशता को भी आसानी से पछाडती रहती है। मुझे नहीं मालूम कि यह पत्र भी उसकी कैंची से बच पाएगा या नहीं, लेकिन लिखे बिना मैं नहीं रह सकता।

मैं यह पत्र बहुत कठिनाई के साथ लिख पा रहा हू, क्योंकि मुझे एक ऐसी बीमारी के प्रभाव से उत्पन्न दु स्वप्न तथा घोर आलस्य से उबरना पडा है, जिसे मैं सर्वोत्तम रूप में अजीर्ण-सह-फ्लू ही कह सकता हू। लेकिन यह सप्ताह का आखिरी दिन है और मुझे पत्र लिखने का जो भी छोटा-मोटा मौका मिले, उसे मैं खोना नहीं चाहता।

अब मुझे 'म्यूनिसिपल गजट' की प्रतिया मिलती जा रही हैं, लेकिन यह मेरी समझ मे नहीं आ रहा कि कार्पोरेशन का कार्यवृत्त क्यों मुझे नहीं दिया जा रहा है। पुलिस के दिमाग की दलीले अजीबोगरीब होती हैं। मुझे रगून के समाचारपत्रों से मालूम हुआ है कि मुझे तीन महीने की और भी छुट्टी दे दी गई है।

मुझे आशा है कि रमैया ने इजन ड्राइवर के पद के उम्मीदवार एताज अली के प्रमाणपत्र लौटा दिए हैं।

कृपया मुझसे सबद्ध सभी वाउचर, रसीदे आदि सुरक्षित रखना न भूले, क्योंकि मैं अपनी रिहाई के बाद—जो किसी न किसी दिन होनी ही है क्योंकि अधेरी से अधेरी घड़ी का भी अवसान होता है—इस मामले को लेकर भिडत करूगा। मुझे विश्वास है कि मैं भत्ता पाने का अधिकारी हू और मुझे बहुत मजबूत पक्ष प्रस्तुत करना है।

आप यह जानना चाहते हैं कि रेगूलेशन-3 से अध्यादेश मे परिवर्तन के कारण मेरे साथ व्यवहार मे कोई अतर आया है क्या, मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। मैं लगभग महसूस कर सकता हू कि दु स्वप्न मेरी रगो मे रेग रहा है और मेरी उगलियो को निष्क्रिय बना रहा है, क्योकि मैं उपर्युक्त कारणो से शारीरिक व्यायाम, लोगो से मिलने-जुलने आदि के बारे मे सवालो का जवाब नहीं दे सकता। मैं नहीं जानता कि पुलिस ससर मुझे यह कहने की अनुमति देगा या नहीं कि हमारे पास किताबें अपर्याप्त हैं और हम मानसिक

क्षुधा से पीड़ित है। अभी तक मुझे सरकारी खर्च से एक भी किताब नहीं मिली है। हैसियत के मुताबिक व्यवहार का कैसा बढ़िया नमूना है यह!

कृपया रमैया से कहें कि वह मुझे कार्पोरेशन के अवकाश, पेंशन और प्राविडेंट फंड के नियमों की एक प्रति भेज दें। विद्याधरी समस्या के संदर्भ में मैंने कार्पोरेशन कार्यालय के लिए दो या तीन पुस्तकें खरीदी थीं, जिन्हें मैं पढ़ना चाहता था। रमैया को उनके बारे में मालूम है। मैं उन पुस्तकों को चाहता हूं। अगर वे भेजी जा सकें तो आप थैंकर स्पिंक से कहें कि वह उन्हें भेज दें। एडम्स विलियम लिखित बंगाल की नदी-प्रणाली पर भी एक किताब है (रमैया को इसके विषय में भी पता है), जिसे मैं पढ़ना चाहता हूं। उसकी एक अतिरिक्त प्रति कार्पोरेशन पुस्तकालय में होगी। पुस्तकें सीधे मेरे पास न भेजकर, मेरे नाम से इलीसियम रो में खुफिया पुलिस के दफ्तर में भेजी जानी चाहिएं।

मैंने निश्चय किया है कि मैं बंगाल सरकार को मुझे बंगाल में स्थानांतरित करने के लिए आवेदन करूंगा, क्योंकि यह स्थान मेरे अनुकूल नहीं होगा।

मेरे यहां पहुंचने के दिन से ही मंदाग्नि मेरी सर्वोत्तम मित्र रही है और इस बीच सर्दी और बुखार ने भी हाजरी दी है। बुखार को स्थानीय फ्लू कहा जा सकता है—अंतर इतना ही है कि तापमान बहुत अधिक नहीं होता। लेकिन यह स्थानीय फ्लू भी उतना ही कष्टदायक होता है, जितना सामान्य फ्लू।

बाबू जितेन्द्रिय बोस ने एक बार अपने प्रिय काशीपुर को 'धूल का साम्राज्य' कहा था। मुझे विश्वास है कि उन्होंने धूल के असली साम्राज्य को नहीं देखा है, क्योंकि वही तो मांडले है। एक कवि ने कभी कहा था कि मृत्यु का वर्ष-पर्यंत कोई मौसम नहीं होता—मुझे विश्वास है कि मांडले में भी धूल का वर्ष-पर्यंत कोई मौसम नहीं होता, क्योंकि दुनिया के इस भाग को वर्षा कभी परेशान नहीं करती। मांडले की हवा में धूल होती है, इसलिए हमें सांस के साथ उसे ग्रहण करना ही होता है। वह भोज्य-पदार्थों में होती है, इसलिए उसे खाना ही होता है। वह हमारी मेज पर होती है—कुर्सी और बिस्तर पर होती है इसलिए उसके कोमल स्पर्श का अनुभव करना ही होता है। वह ऐसे-ऐसे बवंडर उठाती है कि दूर-दूर तक की वृक्षावलि और पर्वत-श्रेणियां भी अदृश्य हो जाती हैं और इसीलिए हमें उसके दर्शन सम्पूर्ण भव्यता में करने ही होते हैं। सारांश यह कि मांडले में धूल सर्वव्यापी है। इसलिए उसे एक प्रकार से भगवान का ही वैकल्पिक स्वरूप माना जा सकता है। प्रार्थी हूं कि परमप्रभु इस नए भगवान से हमारा त्राण करें।

कुछ दार्शनिक हमारे इस ग्रह को मनुष्य के आनंद के लिए निर्मित बताते हैं। मुझे कोई संदेह नहीं कि बर्मा एक ऐसा स्थल है, जहां ऐसे दार्शनिकों को सबसे अधिक संख्या में अनुयायी मिलेंगे। अगर यह विश्व और इसमें भी समग्र विश्व—मनुष्य के लिए बनाया गया है तो कोई भी चीज ऐसी नहीं है, जो खाद्य न हो। और आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि बर्मी आचार-संहिता के अंतर्गत किसी भी किस्म की ऐसी मछली नहीं है, जिसे खाया न जा सके। कौओं, बिल्लियों, कुत्तों और सांपों तक का रसोई में स्वागत होता है

और उन सभी को मनुष्य के उदर मे सुरक्षित स्थान मिलता है। इन क्षेत्रो मे भोज्य-पदार्थों के मामले में शायद ही कोई पक्षपात बरता जाता हो और कीडे, मकौडे भी यह शिकायत नहीं कर सकते कि उनकी उपेक्षा की जाती है।

इस स्थान की जलवायु शरीर को शिथिल कर देने वाली होती है और जोडों का कडापन या गठिया एक सामान्य बीमारी है। बर्मियो ने जिन्होने कई एक दृष्टियो से विस्मयजनक सभ्यता विकसित की है, एक प्रकार की मालिश की भी खोज की है जो इस बीमारी को ठीक करने का बहुत अच्छा उपाय है।

मैं शायद कुछ ज्यादा लबा पत्र लिखता जा रहा हू और मुझे यहीं कलम रोक देनी चाहिए। आशा है, आप सब सानद होगे।

आपका सस्नेहभाजन,
सुभाष
(एस सी बोस)

पुनश्च

मैं पिताजी को नहीं लिख रहा कि मैं यहा स्वस्थ नहीं हू। मैं नहीं चाहता कि मुझको लेकर वे चिंताकुल हों। आप उन्हे मेरे स्वास्थ्य के विषय में न लिखे।

एस सी बी
14-3-1925

30. शरत चन्द्र बोस के नाम का पत्र

38/1 एल्गिन रोड
28 मार्च 1925
आठ बजे प्रात

प्रिय सुभाष

तुम्हारा 14-3-25 का पत्र अभी मिला। बगाल सरकार के उप सचिव ने हाल मे स्थानापन्न मुख्य एक्जीक्यूटिव अफसर को लिखा है कि "सरकार कार्पोरेशन तथा उसकी महत्वपूर्ण समितियो के कार्यवृत्त और कार्यसूची की मुद्रित प्रतिया श्री सुभाष चन्द्र बोस को भेजने की अनुमति प्रदान करती है।' इसलिए तुम्हें इस अनुमति के रहते उक्त प्रतिया मिलती रहेगी।

मैंने पुलिस के डिप्टी इस्पेक्टर जनरल को लिखकर उनसे अनुमति मागी है कि मैं तुमसे ईस्टर के दौरान माडले में मिल सकू। अगर मुझे अनुमति मिल गई तो मैं आऊगा।

मैं अपने अगले पत्र में और ब्यौरेवार लिखूंगा।

क्या तुम्हारी पेट की बीमारी की शिकायत में कुछ सुधार हुआ है? क्या तुम्हारे लिए उन्होंने बंगाल के चावल का प्रबंध किया है?

आशा है, तुम्हारी हालत बेहतर होगी। हम सब सानंद हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

31. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
13-3-1925
9 बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा 27 तारीख का पत्र कल मिला। मांडले से मुझे तुम्हारे कुल तीन पत्र मिले हैं। शेष दोनों की तिथियां 12-2-25 और 20-2-25 थीं।

मुझे आशा है कि तुम्हें अब तक मेरे दो पत्र मिले होंगे। पहला मैंने गत 26 तारीख के, जिस दिन मुझे तुम्हारा 12 तारीख का पत्र मिला था, कुछ समय बाद लिखा था।

पिताजी यहां गत रविवार को आए थे। वे गत बुधवार को कटक चले गए, वे बिल्कुल ठीक हैं। मां यहां हैं और एक महीना और भी रहेंगी।

तुम्हारी बड़ीदीदी गत तीन सप्ताह से लगभग बिस्तर पर पड़ी हुई थीं। कोई गंभीर बीमारी नहीं थी और अब उनकी तबीयत दिनोंदिन सुधर रही है। उनकी पुरानी शिकायतें ही कुछ बढ़-चढ़कर वापस आई थीं—सरदर्द, धड़कन, बुखार, आदि।

तुमने यह नहीं बताया कि क्या मांडले में तुम्हें सामान्य सुविधाएं मिल रही हैं? शायद तुम्हारे 5-2-25 के पत्र में इस विषय में कुछ ब्यौरा रहा होगा। लेकिन जिस पत्र का उत्तर मैं दे रहा हूं, उससे मुझे मालूम हुआ कि उक्त पत्र रोक लिया गया है। मुझे नहीं समझ में आया कि उन्होंने पिताजी के नाम तुम्हारा 31-1-25 का पत्र क्यों रोक लिया। मुझे यह कभी समझ में नहीं आ सका कि अधिकारियों को इस तरह की छोटी-मोटी हरकतों से क्या फायदा मिलता है। लेकिन हमें उनको स्वीकार करना पड़ता है।

हम यहा ठाक हैं। आशा है कि तुम स्वस्थ हागे। मुझे जानने की उत्सुकता है कि वहा तुम्हें किसी का साथ मिला हुआ है या तुम एकदम अलग अलग हो।

तुम्हारा सस्नेह
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

श्रीयुत् सुभाष चन्द्र बोस

तुम्हारा मुकदमा— द कैथोलिक हेराल्ड वे लोग हमारी माग के अनुसार बिना शर्त माफी मागने और उसे प्रकाशित करने को तैयार हैं। मैंने उनसे कहा कि शुरूआत उनकी ओर से हुई थी जिसके बाद ही अन्य पत्रा ने उसे उठाया और मैं जब तक तुमसे स्पष्ट अनुमति न प्राप्त कर लू, उन्हें नहीं जाने दे सकता। मेरी राय है कि उन्हे हर्जाना अवश्य देना चाहिए।

एस सी बोस

32 शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले जेल
28 3 25

प्रिय दादा

मुझे आशा है आपको मेरे पत्र नियमित रूप से मिल रहे हागे।

एक और भी अनुभव है जो मेरे लिए बहुत नया सा है। मैं वन्य प्राणियों को देखने के लिए कभी चिडियाघर गया था लेकिन मुझे नहीं पता था कि मुझे स्वय भी चिडियाघर का निवासी बनना पडेगा। आप इस बात पर चकित होकर सर खुजा सकते हैं लेकिन यह सच है कि हम अब चिडियाघर के निवासियो की तरह हैं। इस जेल के वार्ड लकडी के लट्ठो या तख्तो से बने हैं ईंटों से नहीं। मुझे विश्वास है कि जब हमें रात मे ताले में बद कर दिया जाता है तो हम एक रोशनी वाले पिजडे मे चहलकदमी करते हुए मानव शरीर मे पशु जैसे लगते हैं। यह एक अजीब भावना जगाता है साथ ही जिसमे कुछ विनोद भाव है वह इस तजुर्बे का सुख उठाए बिना नहीं रह सकता। भगवान ही जानता है कि हमारा यह परिवतन किस परिणति तक पहुचेगा परतु मुझे आशा है कि यह प्रासगिकता हमें उस पूछ और पजो से फिर सयुक्त नहीं करेगी जिन्हें हम हमेशा के लिए छोड चुके हैं।

मैं ठीक ही हू।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

33. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
4-4-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा गत 21 तारीख का पत्र मुझे आज सवेरे मिला।

मैंने तुम्हारे बारे में पूछताछ करते हुए एक पत्र बंगाल सरकार (राजनीति शाखा) के उप-सचिव श्री ग्लैडिंग को लिखा था। उन्होंने मुझे आज सवेरे मिलने के लिए बुलाया और मेरी पूछताछ के बारे में बर्मा से मिले जवाब को मुझे दिखाया। उत्तर यह था कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है, तुम्हें अच्छा भोजन दिया जा रहा है और अच्छी जगह रहने का बंदोबस्त है और तुम्हारी तरफ से कोई भी शिकायत नहीं मिली है। मैंने उनसे कहा कि बर्मा से मिले पत्र में जिस रिपोर्ट का उल्लेख किया गया है, वह पहली मार्च की है और आज 4 अप्रैल है। उन्होंने इसे स्वीकार किया, लेकिन कहा कि चूंकि मैं मांडले जा रहा हूं, इसलिए मैं स्वयं ही स्थिति को देख सकूंगा। मैंने कहा कि मैं इस मामले को वापस लौटने तक यहीं छोड़ता हूं। साथ ही, मैंने यह भी कहा कि तुम्हारे पत्र में साफ तौर पर कहा गया है कि तुम डिस्पेप्सिया और फ्लू से पीड़ित हो।

मैं अगले शुक्रवार के जहाज से बर्मा के लिए रवाना हो रहा हूं और आशा करता हूं कि 14 तारीख को मांडले पहुंच जाऊंगा।

सुरेश अब मैचों के लिए जाने लगा है। फैक्टरी के लिए शिकारपुर गार्डन को चुना गया, क्योंकि वह भू-खंड अधिक उपयुक्त था और बगीचे में पेड़ भी अपेक्षाकृत कम संख्या में थे।

तुम्हारी बड़दीदी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यद्यपि पूरी तरह स्वास्थ्य-लाभ में लगभग दो सप्ताह और लगेंगे। कलकत्ता में गर्मी काफी शुरू हो गई है।

पिताजी पुरी में हैं और ठीक हैं। मां अभी भी यहां हैं, लेकिन शीघ्र पुरी जाएंगी। दोनों ही सकुशल हैं।

सुनील आगामी 9 मई को इंग्लैंड जा रहा है। मैं समझता हूं कि कलकत्ता में जब उसकी प्रैक्टिस जम रही है, वह कलकत्ता छोड़कर गलती कर रहा है। लेकिन वह जाने के लिए बहुत आतुर है। उसका कहना है कि वह हृदय रोग विशेषज्ञ के रूप में और ज्यादा प्रशिक्षण लेना चाहता है।

मैं अपने साथ पुराने दपखानी चावल और संदेश ले आऊंगा।

आशा है, तुम इस पत्र के मिलने के समय पहले से बेहतर होंगे। हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

34 शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1 एल्गिन रोड
22 4 25
बुधवार

प्रिय सुभाष

मैं सुखद् यात्रा के बाद यहा कल तीसरे पहर पहुचा। इस बार यात्रा म कोई कष्ट नहीं हुआ। समुद्र ऐसे शात था जैसे वह कोई झील हो।

क्या तुम्हारा बगाल के लिए तबादले का आवेदन कलकत्ता भेज दिया गया है?

माडले मे हमने जिन विभिन्न मामलों पर विचार किया था उनके बारे मे मैं शीघ्र श्री ग्लैडिग को लिखूगा। मैं नहीं जानता कि वे यहीं हैं या दार्जिलिग चले गए हैं।

कल वापस आने पर मुझे तुम्हारा 3 तारीख का पत्र मिला। लिफाफे पर एल्गिन रोड डाकखाने की 15 तारीख की मुहर पडी हुई थी।

तुम्हारे पत्र से मुझे मालूम हुआ कि तुमने दार्जिलिग चाय के लिए कहा है। दुर्भाग्यवश उसके बारे में न मुझे ख्याल रहा न तुम्हारी बड़ीदीदी को।

क्या दधखानी चावल खाकर तुम अच्छा महसूस कर रहे हो? मैं नहीं जानता कि तुम्हारा रसोइया उसे ठीक से पका पाएगा या नहीं। उसे एक से अधिक बार धोना होता है और तब सामान्य चावल की अपेक्षा तीन या चार बार उबालना होता है। यदि तुम अपने रसोइए को उपयुक्त निर्देश दे दोगे तो मुझे विश्वास है कि वह तदनुसार उसे पका सकेगा।
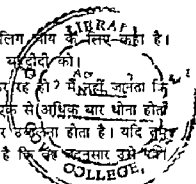
मेयर अभी भी नगर मे वापस नहीं आए हैं। उनके तीन या चार दिन म आने की आशा है। मैं उनसे सडकों की हालत और विद्याधरी नदी के बारे मे तथा म्यूनिसिपैलिटी की अन्य समस्याओ के बारे मे जिनका तुमने जिक्र किया था चर्चा करूगा। हम ठीक हैं। आशा है तुम भी ठीक होगे। शेष बातें अगले पत्र मे।

तुम्हारा सस्नेह
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

पुनश्च

अगर तुम्हे किन्हीं वस्तुओ या खाने पीने की चीजों की जरूरत हो तो तुम हमारे मित्र इस्माइल अत्तास (कयक के मरहूम हाजी अत्तास के पुत्र) को लिख सकते हो। तुम जो भी चाहोगे वे सहर्ष भेज देंगे। उनका पता नीचे दिया जा रहा है

इस्माइल एच एम अत्तास महोदय
द्वारा अब्दुल रहीम उस्मान एड कपनी
45 प्राइवेट लन
मोगल स्ट्रीट
रगून।

35. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
16-5-25

प्रिय दादा,

आपका 7-5-25 का पत्र मुझे 12 तारीख को मिला। आपका पत्र मिलने से पहले मैंने पी.एंड.ओ. के एक जहाज के यात्रियों की सूची में छोटो दादा का नाम देखा। मुझे नहीं मालूम था कि वे इतनी जल्दी रवाना हो जाएंगे। मुझे प्रसन्नता है कि उन्हें सर रास बिहारी घोष फेलोशिप प्राप्त हो सकी। वे वहां कितने समय तक रहेंगे? क्या वे अपना समय इंग्लैंड में बिताएंगे या यूरोप की प्रयोगशालाओं में काम करेंगे? क्या वे हमें पश्चिम में सार्वजनिक स्वास्थ्य से निपटने के उपायों पर सूचना और साहित्य भेज सकते हैं। हमारे जिला स्वास्थ्य अधिकारियों को पाश्चात्य नगरपालिकाओं में अपनाए जाने वाले तरीकों की बहुत कम जानकारी होती है। केवल डा. विश्वास ही ऐसे डी.एच.ओ. हैं जो विदेश गए हैं, लेकिन वे बहुत ही उलझे विचारों वाले हैं। मैं महसूस करता हूं कि भविष्य में हमें अपने कुछ सफाई अफसरों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजना जरूरी होगा। मैं अमरीका मे मलेरिया की रोकथाम के तरीकों के बारे में कुछ पढ़ता रहा हूं और मैं पढ़कर मुग्ध हो गया हूं।

मुझे हावड़ा पुल के बारे में शास्त्री का लेख मिल गया है। मैंने उसे अभी नहीं पढ़ा है, लेकिन मैंने कलकत्ता के पत्रों में उसका सारांश पढ़ा है। मुझे रमैया से और कोई किताब नहीं मिली है।

कलकत्ता का चावल अभी तक मेरे लिए बहुत हितकर नहीं रहा है, लेकिन मैं उसे खाना जारी रखना चाहता हूं। मेरा विश्वास है कि मेरी बीमारी का कारण और किसी बात की अपेक्षा यहां की जलवायु है।

अपने तबादले के बारे में मुझे बंगाल सरकार से अभी तक कोई सूचना नहीं मिली है। आशा है, आप सब स्वस्थ होंगे। मैं कुछ ठीक ही-सा हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस.सी. बोस)

पुनश्च:

शैलेश और संतोष ने परीक्षाएं कैसी दी हैं ? मेजबहू दीदी कैसी हैं?

36. दिलीप कुमार राय के नाम

माडले सेंट्रल जेल
2-5-1925

प्रिय दिलीप,

मुझे तुम्हारा 24-3-25 का पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वह मुझे इस बार तुम्हारे शब्दों में 'दुहरी छन्नी से छन कर' मेरे पास नहीं पहुचा, जिसकी मुझे और भी खुशी है।

तुम्हारे पत्र ने मेरे मर्म को इतनी गहराई से स्पर्श किया है कि समुचित प्रत्युत्तर के रूप मे कुछ लिख भेजना मेरे लिए आसान नहीं है। इसके अलावा मैं जो कुछ भी लिखता हू, उसे सेंसर के हाथों से गुजरना होता है और यह भी उत्साह को ठडा करने वाला है। कारण यह है कि कोई भी यह देखना नहीं पसद करता कि उसके गहनतम हार्दिक उद्‌गारों पर दिन की खुली रोशनी पड़े और ऐरे-गैरे पंचकल्याणी लोग उनकी छानबीन करने बैठें। इसलिए, पत्थर की दीवारों और जेल के सींखचों में बद मैं आज जो कुछ सोच रहा हू, जो कुछ अनुभव कर रहा हूं, उसका अधिकाश हमेशा के लिए शब्दातीत रहेगा।

तुम्हारे जैसे सवेदनशील व्यक्ति के लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि तुम इस बात पर क्षोभ महसूस करो कि इतने अधिक व्यक्तियो को अज्ञात आरोपो के लिए जेल में ठूंस दिया गया है। लेकिन चूंकि हमें इसको एक तथ्य के रूप में स्वीकार करना ही है, इसलिए हम क्यो न इस विषय को आध्यात्मिक दृष्टि से देखें?

मैं यह नहीं कह सकता कि मैं जेल मे रहना पसद करूगा, क्योंकि वैसा कहना विशुद्ध बकवास होगी। इस जेल का सम्पूर्ण वातावरण ऐसा है कि वह आदमी को आदमी नहीं रहने देता, उसे विकृत बना देता है। और मैं समझता हू कि यह बात कमोबेश सभी जेलो पर लागू होती है। मैं समझता हू कि अधिकाश बदी कारागार मे रहते हुए नैतिकता से गिर जाते हैं। इतनी अधिक जेलो मे मेहमानदारी करने के बाद मुझे स्वीकार करना होगा कि बदी-जीवन में आमूल-चूल सुधार करने की तत्काल आवश्यकता है और भविष्य मे मैं अपना यह दायित्व समझूगा कि ऐसे सुधार लाने मे सहायक बनू। भारतीय जेलो से सबद्ध नियम एक बुरे नमूने का बुरा अनुकरण हैं—यह नमूना है ब्रिटिश जेलों का और स्वय कलकत्ता विश्वविद्यालय लदन का एक बुरा अनुकरण है।

जिस बात की सबसे ज्यादा जरूरत है, वह है एक नया दृष्टिकोण जो बदी के प्रति सहानुभूति पर आधारित है। उसकी गलत वृत्तियो को मानसिक विकृति का चिह्न मानना चाहिए और तद्नुसार उपाय खोजे जाने चाहिए। जेल के उपायों के पीछे प्रेरणा सजा देने की होती है, जिसकी जगह सच्चे सुधार की प्रेरणा को नया मार्गदर्शन बनना चाहिए।

मैं नहीं समझता कि अगर मैं खुद जेल में बंदी के रूप में न रहा होता तो बंदी के प्रति सच्ची सहानुभूति की दृष्टि विकसित कर पाता। और मुझे रत्ती-भर भी संदेह नहीं है कि अगर हमारे कलाकारों और साहित्यकारों को बंदी-जीवन का कुछ नया अनुभव हो सके तो वे अनेक प्रकार से लाभान्वित होंगे। काजी नजरुल इस्लाम ने जेल में रहकर जो प्रत्यक्ष और सजीव अनुभव प्राप्त किया था, उसके कारण उनकी कविता को कितनी समृद्धि मिली, इसको हम शायद महसूस नहीं कर पाते।

जब मैं शांत भाव से सोचने बैठता हूं तो मुझे अपने भीतर यह आश्वस्ति मिलती है कि हमारे उत्तापों और हताशाओं की तह में कोई महान उद्देश्य सक्रिय है। अगर यह आश्वस्ति हमारे सचेत जीवन के प्रत्येक क्षण की अनुभूति बन सके तो क्या हमारी पीड़ा अपनी कसक खो नहीं देगी और क्या तहखाने में बंद होकर भी हम चरम आनंद की अनुभूति नहीं कर सकेंगे? लेकिन सामान्यत: यह अभी संभव नहीं है। इसीलिए आत्मा और शरीर के बीच वर्तमान द्वंद्व-युद्ध जारी रहेगा ही।

आम तौर पर एक प्रकार का दार्शनिक रुझान बंदीगृह के परिवेश में हमारे हृदय में बल का संचार करता है। जो भी हो, मैं अपने आपको उक्त स्थिति में पाता हूं और मैंने दर्शनशास्त्र का जो कुछ भी थोड़ा-बहुत अध्ययन किया है, उसने जीवन के संबंध में मेरी धारणा के साथ जुड़कर यहां मेरे प्रवास को सह्य ही बनाया है। अगर किसी व्यकित के पास चिंतन-मनन के लिए यथेष्ट विषय हों तो उसका कारावास, अगर उसका स्वास्थ्य जवाब न दे जाए, तो उसे कोई भी चोट नहीं पहुंचा सकता। लेकिन हमारी पीड़ा केवल आध्यात्मिक नहीं है और यही हमारी विवशता है, क्योंकि शरीर भी इस प्रक्रिया में संलग्न होता है जिससे आत्मा का रुझान अगर किसी दिशा में हो तो संभव है कि शरीर उसका साथ न दे पाए।

लोकमान्य तिलक ने अपना गीता का भाष्य कारावास के दौरान लिखा था। मैं निश्चय के साथ कह सकता हूं कि उन्होंने अपने दिन मानसिक प्रसन्नता में बिताए। लेकिन इतना ही निश्चित यह तथ्य भी है कि उनके असामयिक देहावसान का कारण यह भी था कि उन्हें छह वर्ष तक मांडले जेल में रहना पड़ा।

लेकिन एक बंदी को जिस प्रकार थोपे गए एकांत में अपने दिन बिताने पड़ते हैं, उसके कारण उसे जीवन की चरम समस्याओं पर विचार करने का मौका मिलता है। जो भी हो, अपने बारे में मैं यह दावा कर सकता हूं कि बहुत से अत्यंत जटिल सवाल, जो हमारे वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में भंवर की तरह चक्कर काटते रहते हैं, धीरे-धीरे समाधान की दिशा में बढ़ रहे हैं। अतीत में मैं जिन बातों को पहले की तरह कठिनाई से सुलझा पा रहा था, या जिन विचारों को केवल स्थापनाओं के तौर पर रख पाता था, वे अब दिनोंदिन अधिकाधिक स्पष्टता ग्रहण करते जा रहे हैं। अगर अन्य किसी कारण से नहीं तो कम से कम उक्त कारण से मैं अनुभव करता हूं कि कारावास के द्वारा मैं आध्यात्मिक दृष्टि से लाभान्वित होऊंगा।

आपने मेरी नजरबंदी को शहादत की संज्ञा दी है। यह महज इस बात का प्रमाण है कि आपकी प्रकृति म सहानुभूति का गहरा पुट है और आपका हृदय विशाल है। लेकिन चूंकि मुझमें--मैं आशा करता हू कि —कुछ विनोद प्रियता और सतुलन है, अत मैं शहादत की महान पदवी कैसे धारण करू? अहमन्यता और गरूर के प्रति मैं सोते-जागते सावधान रहना चाहता हू। इसमें मुझे कितनी सफलता मिलती है इसका निणय मेरे मित्रो को करना है। जो भी हो, जहा तक मेरा सबध है, शहादत एक आदर्श ही हो सकता है।

मैंने महसूस किया है कि जिस बदी को कारावास में लबा समय बिताना होता है, उसके लिए सबसे दुखद तथ्य यह है कि उसे बुढापा अनजाने मे ही आ दबोचता है। इसलिए उसे विशेष सावधान रहने की जरूरत है। *आप कल्पना नहीं कर सकते कि जो व्यक्ति लबी सजा काट रहा है, वह किस प्रकार असमय में ही शरीर और मन से जर्जर हो जाता है।* निस्सदेह इसके लिए अनेक कारण जिम्मेवार हैं, जैसे अच्छ भोजन और व्यायाम तथा अन्य सुविधाओ का अभाव, अलगाव बलात अधीनता का अहसास मित्रो की कमी, और अतिम, सगीत जैसी महत्वपूर्ण चीज का अभाव। कुछ रिक्तताओं को व्यक्ति आतरिक रूप मे भर सकता है लेकिन अन्य ऐसी हैं जिन्हे केवल बाहर से ही भरा जा सकता है। अगर इनसे किसी को वचित कर दिया जाए तो यह स्थिति बहुत-कुछ असमय वृद्धता का कारण बनती है। अलीपुर जेल में यूरोपीय बदियो के लिए प्रति सप्ताह सगीत का प्रबध किया जाता है। यहा हमारे जैसो के लिए एसी कोई व्यवस्था नहीं है। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि किसी बदी के लिए उसके मित्रो और सगे सबधियों की सदिच्छा और सहानुभूति उसकी जीवन-यात्रा का बहुत बडा सबल होता है। यद्यपि ऐसे व्यवहार का प्रभाव सूक्ष्म और आतरिक होता है, तथापि जब मैं आत्म-विश्लेषण करता हू तो पाता हू कि वह तनिक भी *अयर्थाथ* नहीं है। *राजनैतिक बदी और साधारण कैदी के जीवन की कठोरता के बीच एक अतर है। राजनैतिक कैदी आश्वस्त होता है कि जब वह कारावास से वापस जाएगा तो समाज उसको हाथों-हाथ लेगा सामान्य कैदी के बारे* में ऐसा नहीं है। मुझे यह वस्तुस्थिति सतोषप्रद नहीं लगती। आखिर कोइ सभ्य समुदाय इन दुखी लोगो के लिए क्या न सहानुभूति महसूस करे?

बदी-जीवन के अपने अनुभवो के बारे म मैं अपने विचार उडेलते हुए पत्रे पर पत्रे रगता जा सकता हू। लेकिन एक पत्र का कहीं न कहीं उपसहार करना होता है। अगर मुझमे अतिरिक्त पहल करने की ताकत बची होती तो मैं भारतीय जेलो के बारे में एक पूरी पुस्तक लिखता। लेकिन इस समय तो ऐसा कोई काम हाथ में लेने का बूता मैं अपने मे नहीं पाता।

मेरा यह विचार है कि जेल-जीवन का कष्ट शारीरिक से ज्यादा मानसिक है। जब अपमान और अवमानना के आघात अधिक निर्मम नहीं होते तो बदी-जीवन की पीडाओ को सहना अधिक कठिन नहीं होता। लेकिन वे ऐसे आघात पहुचा कर जो हम अपने कुठाजनक एव अवसादपूर्ण परिवेश के प्रति सजग रखें हम याद दिलाते रहते हैं कि

हमें अपने बाह्य अस्तित्व को चटपट भुलाकर अंदर ही आदर्श-आनंददायी दुनिया में नहीं खो जाना है।

आपने लिखा है कि यह सोचकर आपका मन अधिकाधिक अवसाद से भर उठता है कि किस प्रकार हमारी धरती ऊपर से भीतर तक मानवता के आंसुओं से गीली है। लेकिन ये सभी विषाद और कष्ट के ही आंसू नहीं हैं--इनमें करुणा और स्नेह के अश्रुबिंदु भी शामिल हैं। अगर आपको विश्वास हो कि आनंद के समृद्ध ज्वार अंततः आपकी प्रतीक्षा में हैं, तो क्या आप कष्ट और पीड़ा के संकुल मार्गों से होकर गुजरने से बचना चाहेंगे? जहां तक मेरा सवाल है, मुझे निराशा या पस्तहिम्मती का कोई कारण नहीं दिखाई देता। इसके विपरीत मैं यह महसूस करता हूं कि दुख और कष्टों से हमें प्रेरणा मिलनी चाहिए कि हम उच्चतर पूर्णता के लिए साहस बटोर कर आगे बढ़ें। क्या आप सोचते हैं कि अगर कोई चीज हमें बिना कष्ट और संघर्ष के मिल जाती है तो उसका कोई स्थाई मूल्य होगा?

आपको भेजी पुस्तकें मुझे मिल गई हैं। मैं इन्हें वापस नहीं कर पाऊंगा, क्योंकि यहां उन्हें पढ़ने वालों की संख्या काफी है। कहने की शायद आवश्यकता नहीं कि अगर ऐसी और भी पुस्तकें मिल सकें तो उनका स्वागत होगा। वैसे भी तुम्हारा चुनाव सदा ही सुंदर होता है।

सस्नेह,
सुभाष

37. दिलीप कुमार राय का पत्र

34, थिएटर रोड,
कलकत्ता
15 मई 1925

प्रिय सुभाष,

लिफाफे पर परिचित लिखावट देखकर मुझे जो प्रसन्नता हुई, उसे मैं इस पत्र में शब्दों द्वारा व्यक्त करने की अपर्याप्त कोशिश न करूं तभी ठीक होगा। संसर की संदेहपूर्ण छानबीन और सभी तरह की हार्दिक भावनाओं के प्रति उसकी उपेक्षा सच्चे से सच्चे भावनात्मक उफान को भी रोकने वाली हो सकती है। इसलिए अगर यह पत्र कहीं-कहीं कुछ श्रमसाध्य-सा लगे तो मुझे आशा है कि तुम मेरी विवशता को समझ सकोगे, है कि नहीं?

मैंने सचमुच ही बडी राहत की सास लेते हुए तुम्हारे सुदर पत्र को बार-बार पढा। मुझे उसके अक्षर-अक्षर मे तुम्हारा व्यक्तित्व झाकता हुआ मिला और इससे उस भौतिक दूरी की पीडा कुछ सह्य हो सकी, जो हमारे बीच आज उपस्थित है। पत्र का काम यही होना चाहिए कि वह ऐसी दूरियों की क्षतिपूर्ति कर सके, अर्थात् उसे पत्र-लेखक के व्यक्तित्व का कुछ अश प्राप्तकर्ता के सम्मुख प्रस्तुत कर सकना चाहिए। अगर ऐसा न हो तो पत्र, पत्र नहीं कहलाएगा। तुम्हारा पत्र इस कसौटी पर खरा उतरा है, हालाकि उसमे कमिया हो सकती हैं। इसलिए मैं तुम्हारी करुणा के लिए तुम्हे धन्यवाद देता हू—यूरोपीय ढर्रे पर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण हार्दिकता से।

मैं इसे तुम्हारी करुणा ही मानता हू। और इस तथ्य से कि मैं तुम्हारी मित्रता पाने का दावा करता हू, पत्र-लेखन की तुम्हारी करुणा कम नहीं हो जाती। एक महान फ्रेंच लेखक ने कितने सुदर रूप मे कहा है, 'प्रत्येक व्यक्ति प्रेम का पात्र है, उसे छोडकर जो अपने बारे मे सोचता है कि वह ऐसा पात्र है।' जिस किसी ने भी मैत्री की मधुरता का स्वाद एक बार भी चखा है, वह उसके लिए एक गहन अनुभव रहा है—और मैं मानता हू कि ऐसी मैत्री पवित्रतम प्यार का ही पर्याय है। इस तरह जब सच्चे प्यार की महिमा इतनी अधिक है तो तुम्हारे जैसे मित्र का सच्चा प्यार कितना प्रेरणाप्रद होगा, इसकी कल्पना की जा सकती है। क्योकि विषादपूर्ण सच्चाई यह है कि प्राय व्यक्ति जिसका आदर करता है, उसे शायद ही पा सकता हो। जब ये दोनो साथ-सग मिल जाए तभी हम उस गहनतम सगीत के स्वर सुन पाते हैं जो प्यार से जन्मता है। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?

लोग कष्ट पाए इससे मुझे परेशानी नहीं होती। कुछ कष्ट ऐसे होते हैं, जो हम शुद्ध बनाते हैं। लेकिन कुछ अन्य ऐसे भी होते हैं, जो हमे ऊपर नहीं उठाते—कम से कम उनके दुखद प्रभाव को देखते हुए तो हमें यही कहना पडता है। ऐसे दुखात दृष्टातो मे हैं पागलपन, कुछ आनुवशिक बीमारिया और हमे पीस देने वाली गरीबी। मैं तुम्हारे लिए दोस्तोवस्की की एक पुस्तक 'ब्रदर्स कारमम्जोव' भेजूगा। मैंने अब तक जितने भी वैचारिक उपन्यास पढे हैं या पढूगा, उनमे यह सबसे अधिक महान है। उसमें तुमको देखने को मिलेगा कि मजे हुए कलाकार की दिल दहला देने वाली लेखनी द्वारा कुछ उन दुखद घटनाओं का चित्रण है, जिनका मैंने जिक्र किया है। मैं नहीं समझता कि किसी राजनैतिक बदी का जीवन कोई बहुत बडी दुखात घटना है, अगर उसे युवावस्था के अनेक वर्ष कारावास में न गुजारने पडे हो, विशेषत अगर कोई तुम्हारी तरह दार्शनिक प्रवृति वाला व्यक्ति हो। लेकिन बदी ऐसी चितक वृत्ति वाला न हो तो? मेंटरलिंक ने कहीं उचित ही कहा है कि जीवन की विषादपूर्ण घटनाओ के प्रति हमारे दृष्टिकोण द्वारा यह तय होता है कि वह हमे उठाने वाली हैं या गिराने वाली। सुकरात अपने पुत्र को खोकर एक नई ऊचाई पाता है, पर डिक कार्टर नहीं जो ऐसी ही ट्रैजेडी से अपना मानसिक सतुलन खो बैठता है। कुछ ऐसी 'ट्रैजेडिया' होती हैं जिनके साथ मेरे लिए सगति बिठाना कठिन होता है। शायद किसी दिन मैं वैसा कर सकू, पर अभी तो मैं महान

प्रकाशित होगी, मैं उन्हें भेजूगा। इसके अतिरिक्त मैं कुछ अग्रेजी पुस्तकें भी भेजूगा जिन्हें पढकर मुझे लाभ हुआ है और जिनके सबध में मुझे विश्वास है कि तुम्हें भी रुचिकर लगेगी। मैं अगले सप्ताह के शुरू में एक महीने के लिए दार्जिलिंग जा रहा हू, जहा मैं सी आर दास का मेहमान रहूगा। लेकिन तुम मुझे यहा के पते पर बराबर लिखते रह सकते हैं।

कल नीरेन, धूर्जटि और मैंने तुम्हारे बारे मे चर्चा की। तुम्हारा पत्र बहुत पसद किया गया। मुझे विश्वास है कि तुम ऐसे पत्र कभी-कभी लिखते रहोगे। मैं क्षितीश से कभी-कभी मिलता रहता हू और जब भी हम मिलते हैं, बहुत-सी दार्शनिक बातो पर चर्चा करते हैं।

मैं बर्ट्रैंड रसल के जीवन-दर्शन का विहगावलोकन करते हुए एक निबध लिखने की तैयारी कर रहा हू। इसलिए मैं उनकी कुछ पुस्तके दुबारा पढ रहा हू। उनकी ताजा पुस्तक 'व्हाट आई बिलीव' बढिया है, यद्यपि नैतिकता के सबध में उनके कुछ विचार तुम्हे चौंकाने वाले साबित होगे। मैं बहुत जल्द वह पुस्तक तुम्हें भेजूगा। क्या तुम मुझे रसल की 'प्रासपैक्ट्स आफ इडस्ट्रियल सिविलाइजेशन' और 'आइकेरस' भेज सकते हो? मैं उन्हें अपने निबध के लिए सदर्भ के रूप में पढना चाहता हू। वे यहा मेरे पास नहीं हैं, अन्यथा मैं उन्हें न मागता।

मेरी स्नेहपूर्ण सद्भावनाओं के साथ

तुम्हारा अपना
दिलीप (कुमार राय)

38 शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
7-5-25

प्रिय सुभाष,

मुझे आज तीसरे पहर पिताजी का एक पत्र तुम्हारे नाम मिला। उसे मैं साथ में भेज रहा हू।

सुनील इग्लैंड जाते हुए कल बबई के लिए रवाना हो गया। उसे अपने ही प्रिय विषय के अध्ययन के लिए सर रास बिहारी घोष फेलोशिप मिली है और उसने अपनी आय में से बचत करके वहा के खर्चे के लिए अच्छी खासी रकम बनाई है।

हमने माडले मे जो विचार-विमर्श किया था उसके सदर्भ में विभिन्न बातों के बारे मे मैंने श्री ग्लैडिंग को लिखा है। मैंने उन्हें 24 तारीख को लिखा और आठ दिन बाद

मुझे उनका उत्तर मिला कि वे इन शर्तों की छानबीन कर रहे हैं। मैं अगले शनिवार को उन्हें फिर याद दिलाते हुए पत्र भेजने का विचार कर रहा हूं।

मुझे नहीं मालूम कि इन दिनों मांडले में कैसी गर्मी है। मुझे आशा है कि अभी वहां भट्ठी जैसा नहीं तप रहा होगा।

मैंने रमैया से कहा है कि वे पुस्तकें भेज दें जो तुम्हें चाहिएं। क्या उसने भेज दीं हैं? क्या तुमने हावड़ा पुल के बारे में श्री शास्त्री का लेख प्राप्त कर लिया है।

मैंने 'म्यूनिसिपल गजट' के संपादक को भी लिख दिया है कि वह विद्याधरी विशेष समिति की अंतरिम रिपोर्ट प्रकाशित कर दें, जिससे जनता को रिपोर्ट की छानबीन करने का मौका मिले।

क्या तुम्हारे पेट की हालत में कुछ भी सुधार हुआ है?

क्या बंगाल भेजे जाने के बारे में तुम्हारे पत्र का सरकार से कोई जवाब मिला है?

हम सब काफी ठीक हैं। आशा है, तुम सकुशल होंगे।

सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

39. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
11-5-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 25 अप्रैल का पत्र मुझे 8 तारीख को मिला। तुम्हारा तार मुझे नहीं दिया गया, न यही सूचना दी गई कि तुम्हारा तार आया है, लेकिन उसे रोक लिया गया है। मांडले से लौटने के बाद मैंने श्री ग्लैडिंग को जो पत्र लिखा था, उसमें शिकायत की थी कि यह उचित नहीं है कि जिनके नाम पत्र आते हों उन्हें यह सूचना न दी जाए कि उनके पत्र रोक लिए गए हैं। मुझे अभी तक श्री ग्लैडिंग का कोई जवाब नहीं मिला है और मुझे नहीं मालूम कि मिलेगा भी या नहीं। मैं आज याद दिलाते हुए पत्र लिख रहा हूं।

अपनी नजरबदी के बारे मे तुमने जो कानूनी मुद्दा मुझको पेश किया है उसके बारे मे स्थिति इस प्रकार है तुम्हें आरभ मे रेगूलेशन के अतर्गत पकडा गया था और फिर तुम्हें माडले भेजने के पहले सूचित किया गया था कि तुम्हारी नजरबदी अध्यादेश के अतर्गत है, जिसकी अवधि निस्सदेह छह महीने की थी। लेकिन इसी बीच बगाल आपराधिक सशोधन अधिनियम पारित किया गया और तुम्हें इस अधिनियम के प्रावधानो के अतर्गत नजरबद माना जाता है। मैं इस मामले पर बारीकी से विचार कर रहा हू और अगर मुझे कोई कानूनी खामी नजर आई तो मैं कार्रवाई करने से हिचकिचाऊगा नहीं। इस सबध मे और बातें मैं अपने अगले पत्र मे लिखूगा।

तुमने अपने पत्र में अपने स्वास्थ्य के विषय मे कुछ नहीं लिखा। क्या गर्मी का तुम्हारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है? क्या तुम्हारा हाजमा कुछ भी ठीक हुआ है?

श्री सी आर दास की शारीरिक हालत मे कोई सुधार नहीं हुआ है। वे आज तीसरे पहर पबना के लिए रवाना हो गए और वहा एक-दो दिन रहने के बाद दार्जिलिग जाएगे। वे सरकार के भवन 'स्टेप असाइड' में ठहरेगे।

हम सब ठीक हैं। आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

अत्यत स्नेहपूर्वक,
शरत

40 शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
22-5-25
शुक्रवार

प्रिय दादा

आपका 11-5-25 का पत्र मुझे गत मगलवार को मिला।

आप जानते हैं कि मुझे पहले भारत सरकार के आदेश पर 1818 के रेगूलेशन-3 के अतर्गत गिरफ्तार और नजरबद किया गया था। माडले भेजने के तुरत पहले मुझे अध्यादेश के अतर्गत बगाल सरकार का एक आदेश दिया गया। अध्यादेश के प्रावधानो के अतर्गत मुझे बर्मा भेजने के लिए (जो मेरे प्रात से बाहर है) सपरिषद् गवर्नर जनरल की अनुमति ले ली गई थी, लेकिन स्वय आदेश बगाल सरकार से आया था। दूसरे शब्दो मे, बगाल सरकार के आदेश ने भारत सरकार के आदेश को अपदस्थ किया, जो मुझे गैर-कानूनी और अनियमित लगता है। अगर बगाल सरकार का आदेश मुझे मिलने से पहले भारत सरकार का आदेश वापस ले लिया गया होता तो स्थिति शायद बिल्कुल कानून-सम्मत होती।

उक्त गैर-कानूनी स्थिति और भी गंभीर इसलिए हो गई कि 24 अप्रैल 1925 को अध्यादेश की अवधि समाप्त हो जाने के बाद मुझे कोई नया आदेश नहीं दिया गया। इसमें संदेह नहीं कि नया अधिनियम नजरबंदों पर लागू होता है। लेकिन मैं नहीं सोचता कि इससे नया आदेश तामील किए जाने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। नए अधिनियम के प्रावधानों की ओर मेरा ध्यान अध्यादेश की समाप्ति के कई दिन बाद तक नहीं दिलाया गया और ऐसा तभी किया गया जब मैंने जेल-अधिकारियों से मांग की कि या तो मुझे रिहा किया जाए या मेरी नजरबंदी का औचित्य बताया जाए। केवल किसी कानून का सरकारी आदेश का होना मात्र तब तक प्रभावी नहीं माना जा सकता, जब तक उसे मेरी जानकारी में न लाया गया हो। उदाहरण के लिए रेगूलेशन-3 के अंतर्गत वारंट पर हस्ताक्षर 27 अप्रैल 1924 को किए गए थे, लेकिन वह तब तक प्रभावी नहीं हुआ जब तक 25 अक्तूबर को उसकी जानकारी मुझे नहीं दी गई। इसलिए मैं नहीं सोचता कि नया अधिनियम अध्यादेश की समाप्ति के बाद मुझे नया आदेश दिए जाने की आवश्यकता को समाप्त करता है।

इसके अलावा, नए कानून में एक धारा यह है कि कानून सम्पूर्ण बंगाल पर प्रभावी होगा। मैं अब बंगाल में नहीं हूं, इसलिए यह कानून मुझ पर किस तरह लागू होता है?

निष्कर्षतः मैं सोचता हूं कि सरकार की स्थिति मजबूत नहीं है।

मुझे अब तक वकीलों से सलाह करने या किसी अदालत में कार्रवाई के लिए जाने की सुविधा यहां नहीं मिली है। जेलों के इंस्पेक्टर जनरल यहां कुछ ही दिनों में आने वाले हैं और तब मैं उनसे कहूंगा कि वे मुझे आवश्यक सुविधाएं दें।

हमारा खाने-पीने की चीजों का सवाल अब भी हल नहीं हुआ है।

कृपया राज्य परिषद् (कौंसिल आफ स्टेट) के लिए चुनाव से संबद्ध नियमों की एक प्रति भिजवा दें। क्या आपने पता किया है कि मैं मतदाता हूं अथवा होने की योग्यता रखता हूं। अगर ऐसा है तो मुझे निश्चित करना होगा कि मेरा नाम मतदाता-सूची में शामिल किया जाए। अगर आप सब लोग सोचते हैं कि मुझे राज्य परिषद् के लिए चुनाव में खड़ा होना चाहिए तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। जो भी हो, अगर मैं मतदाता हो सकता हूं तो मैं अपना नाम मतदाता-सूची में शामिल कराऊंगा।

बंगाल के लिए तबादले के बारे में मैंने जो आवेदन दिया था, उसका कोई उत्तर अभी तक मुझे नहीं मिला है।

मैं पाता हूं कि डी. ई. सतीश मित्र डी. ई.-3 के पद के अपने काम के अलावा स्टोर सुपरिंटेंडेंट के रूप में भी काम करेंगे। मैं समझता हूं कि उन पर काम का बहुत बोझ पड़ गया है और यह चुनाव बहुत सुखकर नहीं है।

कृपया बुक कंपनी या किसी अन्य पुस्तक विक्रेता से कहें कि वह मुझे निम्नलिखित पुस्तकें भेज दे : (1) लार्ड रोनाल्डसे लिखित 'हार्ट आफ आर्यावर्त', (2) सर एस. एन. बनर्जी लिखित 'ए नेशन इन मेकिंग' (मैं समझता हूं कि लार्ड रोनाल्डसे ने भारत

पर एक और भी पुस्तक कुछ समय पहले लिखी है। अगर यह सही है तो आप उसे भी भेजने के लिए कह दे), और (3) नरेन्द्र एन ला कृत 'एनशिएट हिंदू पालिटी'।

कार्पोरेशन के कार्यवृत्त से मुझे पता चला है कि असिस्टेंट सेक्रेटरी के पद के लिए तीन मामलों की सिफारिश की गई है। मैं समझता हू कि तीनों मे तमीजुद्दीन सर्वोत्तम रहेगे।

छोटीबहू दीदी अब कैसी हैं ? गोपाली और सती ने परीक्षा में कैसा किया है ? अब गोपाली क्या करने का विचार कर रहा है ? शायद वह इजीनियरिंग की पढाई करेगा।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस सी बोस)

41. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
बुधवार
27-5-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 16 तारीख का पत्र कल मिला। इससे पहले मुझे दो अन्य पत्र मिले थे जिनकी पहुच की सूचना मैं समझता हू कि मैंने तुम्हे नहीं दी है।

मुझे जानकर दुख हुआ कि तुम गठिया से पीडित हो। मैंने अभी तुम्हारी इस नई बीमारी के बारे मे पिताजी को कुछ नहीं लिखा है, जिससे वे घबरा न जाए। लगता है कि माडले तुम्हारे लिए उपयुक्त स्थान नहीं होगा। वहा काफी लबे समय तक रहकर परख की जा चुकी है।

मैं वास्तव में नहीं जानता कि तुम्हारे तबादले के आवेदन का क्या हुआ है। ग्लैडिंग ने मुझे 13 तारीख को लिखा था कि इस सरकार को ऐसा कोई आवेदन नहीं मिला है।

मैंने माडले जेल के सुपरिंटेडेट को कुछ समय पहले तार भेजकर 25 अप्रैल के बाद तुम्हारी वहा नजरबदी के बारे में अपनी राय बता दी थी और उससे अनुरोध किया था कि वह तुम्हें सूचना दे दे। क्या तुम्हे वह सदेश नहीं मिला है ? मैं नहीं सोचता कि तुम्हे इस मामले पर और ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत है, क्योंकि नए अधिनियम के अनुसार सरकार को यह अधिकार है कि ऐसे मामलों को ठीक कर सके।

सुनील इंग्लैंड में एक वर्ष रहना चाहता है। वह हृदय रोग विशेषज्ञ सर टामस लेविस के मार्गदर्शन में और अधिक प्रशिक्षण पाना चाहता है। जब वह रवाना हुआ था तो उसका कोई इरादा नहीं था कि वह महाद्वीप प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षण लेवे।

हां, मैं तुमसे सहमत हूं कि हमें कार्पोरेशन में और ज्यादा सुयोग्य स्वास्थ्य अधिकारी चाहिए। कठिनाई यह है कि सही ढंग के लोग मिलते नहीं। इंग्लिश डी.पी.एच. डिग्री वाले डाक्टर तो मिल जाते हैं, लेकिन डा. बिस्वास-सहित जिन लोगों को मैंने देखा है वे स्तर से काफी नीचे के हैं।

रमेश फिर मोटर वैहिकिल्स विभाग के बारे में संतोष बाबू की रिपोर्ट तथा कार्पोरेशन के कुछ अन्य कागजों के बारे में, जो तुम्हारे पास हैं, पूछ रहा था। उन्हें यथाशीघ्र वापस कर देना।

सरकार को नए ऋण के बारे में उत्तर का मसौदा तैयार करने के लिए हमने वित्त और ई.सी.पी. कमेटी की एक विशेष बैठक आज सवेरे की। रामरतन बाबू ने, जो दार्जिलिंग में हैं, तार भेजा है कि हमें कार्पोरेशन को शीघ्र से शीघ्र उत्तर भेज देना चाहिए। शायद उन्होंने वहां कुछ अधिकारियों से भेंट की है और ऋण के प्रश्न पर विचार-विमर्श किया है।

गोपाली और रुबी ने अपनी-अपनी परीक्षाओं में काफी अच्छा प्रयास किया है। मैं नहीं समझता हूं कि वे अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होंगी।

सुधीर कल जमशेदपुर जा रहा है, जहां वह टेक्निकल इंस्टीट्यूट में अपना नया पद ग्रहण करेगा। उसे पहली जून को ज्वाइन करना ही है।

सुरेश कुछ दिन के लिए कलकत्ता आया हुआ है, जिससे वह कटक स्थित अपने माचिस के कारखाने के लिए कुछ चीजें खरीद सके। वह भी कल वापस जाएगा।

तुम्हारी मेजोबहू दीदी अब ठीक हैं। हम अगले शुक्रवार को पांच या छह दिन के लिए कुर्सियांग जाने का विचार कर रहे हैं। अगला मंगलवार और बुधवार छुट्टी के दिन हैं और मैं इसका लाभ उठाना चाहता हूं। मुझे सी.आर. से मिलने का भी मौका मिल जाएगा। वे दार्जिलिंग में हैं और मुझे बताया गया है कि उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है।

आशा है, तुम पहले से अच्छे होगे। हम सब सानंद हैं।

तुम्हारा अत्यंत स्नेहपूर्वक,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

श्री सुभाष चन्द्र बोस

42. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले
शनिवार
30-5-1925

प्रिय दादा,

मुझे कुछ समय से आपका कोई समाचार नहीं मिला है। हो सकता है कि आपके पत्र रोक लिए गए हो।

मुझे रमैया से कुछ पुस्तके मिली हैं, लेकिन नदियो के बारे मे एडम्स विलियम की पुस्तक से सलग्न नक्शा मुझे मिला है। नक्शे के बिना पुस्तक बिल्कुल बेकार होगी। कृपया रमैया से कहें कि नक्शा यथाशीघ्र भेज दिया जाए।

मुझे जानने की उत्सुकता है कि आप सब कैसे हैं। जब आप सतीष बाबू से मिले तो उनसे कहे कि वे मुझे कार्पोरेशन से सबद्ध मामलों के बारे में लिखे। लगता है कि उन्होंने पत्र-व्यवहार एकदम बद कर दिया है।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस सी बोस)

43. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
6-6-1925

प्रिय दादा,

आपका 27-5-25 का पत्र मुझे 2-6-25 को मिला।

कृपया यदि सभव हो तो आप पिताजी को मेरे स्वास्थ्य के बारे में कुछ न लिखे। मैंने उन्हे अब तक इसके सिवा और कुछ नहीं लिखा है कि यहा की जलवायु मेरे लिए अनुकूल नहीं है। उन्हें चिता मे डालने से कोई लाभ नहीं होगा। मैंने तबादले के लिए अपना आवेदन 22 अप्रैल को भेज दिया था। उसे बर्मा में ही आई जी प्रिजन्स के कार्यालय में अथवा सेक्रेटरी के यहा रोक लिया गया होगा। आपका आखिरी पत्र मिलने के बाद मैंने उन्हें स्मरणपत्र भेजा है, जिसमें अनुरोध किया है कि मेरा आवेदन जितना शीघ्र सभव हो आगे भेज दिया जाए।

जी हां, मुझे आपके द्वारा सुपरिंटेंडेंट को भेजा गया तार मिल गया है या यों कहूं कि सुपरिंटेंडेंट ने वह तार मुझे पढ़कर सुना दिया है।

मैं कार्पोरेशन के कागजात अगले सप्ताह अवश्य ही भेज दूंगा। कृपया रमैया को यह सूचना दे दें।

मैं अखबारों के जरिए ऋण संबंधी प्रश्न की जानकारी रख रहा हूं। मुझे आशा है कि रामरतन बाबू सरकार को उसकी स्वीकृति देने के लिए राजी कर लेंगे—अन्यथा गतिरोध पैदा हो जाएगा।

सेजदादा को उनके माचिस के कारखाने की शुरुआत कब से हो जाने की आशा है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि मेजोबहू दीदी अब स्वस्थ हैं। मुझे आशा है कि आप सप्ताह-भर की यात्रा पर कुर्सियांग गए होंगे और आप सबने उस प्रवास से आनंद पाया होगा।

आधुनिक औद्योगिक स्थितियों के अंतर्गत, मैं नहीं सोचता कि किसी को एक ही उद्योग पर अपने भविष्य को दाव पर लगा देना उचित है। अगर संभव हो तो यह हमेशा ही वांछनीय है कि संबद्ध उद्योगों को भी हाथ में लेना चाहिए, जिससे छीजन का उपयोग किया जा सके—विज्ञापन और ऊपरी खर्चे साझे के हो सकते हैं और मितव्ययिता की खातिर संयुक्त खरीद और संयुक्त बिक्री का प्रयास किया जा सकता है। अगर ऐसे संबद्ध उद्योग आरंभ किए जाएं तो माचिस-निर्माण के लिए जरूरी कुछ वस्तुओं को शायद स्थानीय तौर पर तैयार किया जा सकता है और इससे माचिस के निर्माण-व्यय को कम किया जा सकता है। गोपाली को अपने भविष्य के कार्य का निश्चय करते हुए इन सभी बातों पर विचार कर लेना ठीक होगा। अगर यह काम न करना हो तो मैं समझता हूं कि उसकी विशेष रुचि मोटर इंजीनियरिंग में है। सी. आर. अब कैसे हैं?

आशा है, आप सब सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस.सी. बोस)

44. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
13-6-25

'तुम्हे लिखने के बाद मुझे सरकार से सूचना मिली है कि उसने बगाल भेजे जाने के मेरे आवेदन को नामंजूर कर दिया है। बर्मा में पहुचने के बाद से मेरा वजन 10 पौंड घट गया है।'

45. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
26-6-25

प्रिय सुभाष,

स्पष्ट कारणों से मैं अब तक तुम्हे नहीं लिख पाया था। देशबधु के निधन का समाचार इतना स्तब्ध कर देने वाला था कि हमे नहीं अहसास हो रहा था कि हम हैं कहा। अब हम कोशिश कर रहे हैं कि उनकी महानता के अनुरूप स्मारक बनाने के लिए पैसा एकत्र करें।

श्रीमती दास यह आघात साहसपूर्वक सहन कर रही हैं। निस्सदेह उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, लेकिन चिता की कोई बात नहीं है। इस मौके पर महात्माजी की उपस्थिति एकाधिक रूप में बडी सहायक रही है।

मैं रविवार को उन विभिन्न मामलो पर तुम्हे लिखने की कोशिश करूगा जो जन-मन को आदोलित कर रहे हैं। तुम अपने पेशाब की परीक्षा तुरत करवा लो और रीढ मे दर्द के बारे में कैप्टन स्मिथ की सलाह ले लो। इस ओर से लापरवाही न हो। मैंने पिताजी को इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है।

हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा अत्यत स्नेहपूर्वक,
शरत

46. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
19-6-25

प्रिय दादा,

कल के रंगून के अखबारों ने हमें अपने नेता के अचानक और दुखद निधन का समाचार दिया। हम सब उससे स्तब्ध रह गए और मेरी आंखों के आगे अंधेरा-सा छा गया है। मैं नहीं जानता कि इसका असर दूर होने में कितना समय लगेगा।

कुछ समय तक जो आम शोक व्यक्त किया जाता रहेगा, उसके बीच हमें एक बात नहीं भूलनी है। सभी महत्वपूर्ण कागजात सावधानी से सुरक्षित रखने चाहिए। जब हम पिछली बार अलीपुर केंद्रीय जेल में साथ-साथ थे तो वे एक पुस्तक लिख रहे थे, बल्कि कहूं कि — भारतीय राष्ट्रवाद का दर्शन विषय पर लिखने के लिए सहायक सामग्री एकत्र कर रहे थे। भारतीय राष्ट्रवाद और जीवन-दर्शन पर उनके कुछ विचारों से मेरा परिचय है। अगर मुझे उनके नोट्स मिल जाएं तो हो सकता है कि मैं उनकी सहायता से कुछ निश्चित चीज तैयार कर सकता हूं। मैं कह सकता हूं कि और कोई भी उस सामग्री का मुझसे ज्यादा अच्छी तरह उपयोग नहीं कर पाएगा। इसके अलावा दिवंगत आत्मा के जीवन पर प्रकाश डालने वाले सभी कागजात और पत्रों को सावधानी से सुरक्षित रखा जाना चाहिए। समय आने पर उनकी जीवनी लिखी जाएगी और अगर उन्हें अभी सुरक्षित नहीं रखा गया तो सामग्री एकत्र करने का काम दुगुना कठिन हो जाएगा। इस अवस्था में मैं किसी भी पारिवारिक सदस्य को इन सांसारिक मामलों पर कुछ लिखना नहीं चाहता। लेकिन आप सुधीर बाबू (एस. सी. राय) को अलग ले जाकर इनके बारे में कह सकते हैं। यह भी जरूरी नहीं है कि शोक प्रकट करने के रूप में उनके परिवार के सदस्यों को भेजे गए सभी तार और पत्र सुरक्षित रखे जाएं।

जहां तक राज्य परिषद् के चुनाव का सवाल है, इस समय जरूरी यह है कि यह निश्चित रूप में पता लगाया जाए कि मैं मतदाता हो सकता हूं या नहीं और अगर मैं हो सकता हूं, तो मेरा नाम मतदाता-सूची में शामिल किया जाए। मैं खड़ा होऊं या नहीं, मेरे नाम को मतदाता-सूची में सम्मिलित करना वांछित है। रंगून के समाचारपत्रों में श्री दास की अचानक मृत्यु के कारणों के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। ऐसा लगता है कि स्वयं सुधीर बाबू को पता नहीं चल पाया कि उनकी हालत गिरती जा रही है। क्या यह दिल का दौरा था? मैं इन सब समाचारों के लिए बेताब हो रहा हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
(एस. सी. बोस)

श्री एस सी बोस महोदय,

38/1, एल्गिन रोड,

कलकत्ता।

पुनश्च

कृपया दिलीप को 34, थिएटर रोड पर एक चिट भेजकर कहिए कि मुझे उनकी भेजी किताबें मिल गई हैं और उन्हें अगले सप्ताह लिखूंगा।

एस सी बी

47. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
2-7-1925

प्रिय दादा

आपकी लंबी चुप्पी से मुझे प्राय चिंता होने लगी है।

कुछ समय पहले कार्पोरेशन में एक संकल्प पारित हुआ था कि डालगोलों को वार्ड सं 2 से हटाकर मानिकतला की सीमा मे एक निर्धारित स्थान मे स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए। मैंने नगर के विस्तार के प्रश्न पर कुछ विचार किया है और मैं इस विचार तक पहुचा हू कि मानिकतला को रिहायशी क्षेत्र के रूप म विकसित किया जाना चाहिए। अगर एक बार वहा का रुका पानी ठीक से निकाल दिया जाता है और इंप्रूवमेंट ट्रस्ट वर्तमान पुलो की जगह और चौडे तथा सुविधाजनक पुलो की व्यवस्था कर देता है तो मुझे विश्वास है कि मानिकतला का रिहायशी क्षेत्र के रूप में तेजी से विकास होने लगेगा और मुझे विश्वास है कि अधिक से अधिक 10 वर्ष में मानिकतला काफी स्वास्थ्य वर्द्धक स्थान हो जाएगा। इसलिए मुझे संदेह है कि डालगोलो या अन्य तरह की गदगी का मानिकतला मे स्थानांतरित किया जाना स्वागत योग्य माना जाएगा। अधिक आशंका यह है कि जब तक मानिकतला स्वस्थ स्थान बनेगा, डालगोले और एक गभीर परेशानी का कारण बन जाएगे और नागरिक विस्तार के लिए बहुत बाधक बनगे इसलिए डालगोलों को भविष्य म कहा बनाया जाए, इस पर पुन विचार करना आवश्यक है।

दूसरा गभीर विचार का प्रश्न है वार्ड स 8 के चमडे के गोदाम। अगर उन्हे हटाना है तो उन्हे भविष्य में कहा रखा जाए, इस प्रश्न पर बडी सावधानी से विचार करना होगा। इन समस्याओ का समाधान नगर के विस्तार की हमारी परिकल्पना तथा कलकत्ता को हम भविष्य में क्या बनाना चाहते हैं इस पर निर्भर करता है।

जेलों के इन्सपेक्टर जनरल यहां कुछ दिन पहले आए थे। उन्होंने पूछा कि क्या मुझे विश्वास है कि मेरी मंदाग्नि मात्रा से अधिक भोजन लेने के कारण नहीं है? मैंने कहा कि खुराक के भत्ते में 50 प्रतिशत कमी किए जाने के बाद शायद यह प्रश्न पूछना समीचीन ही है। उनके बारे में कोई कुछ भी क्यों न सोचे, वे अपने विचारों पर जमे रहने वाले लोगों में हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट में लिखा है, जो हाल ही में प्रकाशित हुई है, कि किसी के जेल में लंबे समय तक रहने पर उसका स्वास्थ्य सुधर जाता है। उसे मैंने आंखें मल-मलकर पढ़ा। क्या उस पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता है। आई. जी. ने यह सुझाव भी दिया कि मुझे निरोगी होने के लिए उपवास करना चाहिए (लगता है कि सरकारी नौकरी में भी महात्मा गांधी के शिष्य मौजूद हैं!) मैंने कहा कि मैंने कोशिश की थी पर उससे मैं ज्यादा कमजोर हो गया . . . . सेंसर द्वारा काटा गया . . . .

इस व्यक्तिगत विषय को मैं यहीं समाप्त करूं। मैं आपके अगले पत्र की प्रतीक्षा उत्सुकता से करूंगा, जिसमें आपने अधिक प्रकाश डालने की बात कही है। मैंने अभी तक श्रीमती दास को नहीं लिखा है — मैं आरंभिक आघात का प्रभाव क्षीण हो जाने की प्रतीक्षा में हूं। लेकिन मैंने भोम्बल को लिखा है और आज की डाक से मुझे उत्तर भी मिल गया है।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

48. शरत चन्द्र बोस का पत्र

35/1, एल्गिन रोड
15-7-25
7 बजे सायं

प्रिय सुभाष,

मुझे सचमुच बहुत दुख है कि मैं पत्र-व्यवहार के मामले में इतना अनियमित रहा हूं। मैं समझता हूं कि मैंने इससे पहले तुम्हें 26 जून को लिखा था। देशबंधु के प्रयाण के बाद से मैं विभिन्न मामलों में इतना व्यस्त रहा हूं कि मुझे तुम्हें यहां की सभी गतिविधियों की जानकारी देते रहने के अपने दायित्व के प्रति लापरवाही बरतनी पड़ी है। परंतु मुझे विश्वास है कि तुम्हें स्थिति का अहसास है। और इसलिए मैं अपनी चुप्पी के बारे में कुछ भी नहीं कहूंगा।

तुम्हारे 19 जून के पत्र से यह साफ हो गया है कि तुम्हें मेरा 17 जून का जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम भेजा गया वह तार नहीं मिला, जिसमें देशबंधु के निधन की सूचना दी गई थी। वह तार मांडले में 17 जून के तीसरे पहर तक अवश्य पहुंच गया होगा

और मुझे नहीं समझ मे आता कि अगर उसे तुम्हारे आगे पश किया जाता तो कौन-सी आफत वरपा हो जाती।

मैंने तुम्हारा 19 तारीख का पत्र श्रीमती दास और भोम्बल को दिखाया। देशबधु ने अलीपुर जेल मे जो सामग्री तैयार की थी, वह श्रीमती राय के पास है और उसे सावधानी के साथ, सुरक्षित रखा जाएगा। श्रीमती दास ने मुझे यह भी कहा था कि वे सभी शोक सदेश सुरक्षित रख रही हैं।

देशबधु की मृत्यु का कारण क्या है, यह हमेशा के लिए अनिश्चित रहेगा। डा डी एस राय (होम्योपैथ) का, जो दार्जिलिग में उनकी चिकित्सा कर रहे थे विचार था कि उन्हें रुक-रुककर ज्वर आने की शिकायत थी और उन्होने इसे बहुत मामूली-सा रोग समझा। मेरा अपना विश्वास है कि मुख्य बात गुर्दे की खराबी थी जिसे डा राय भाप नहीं सके। उनके मूत्र में एसीटोन और अल्ब्यूमिन पाया गया और मृत्यु से तीन दिन पहले उनके पावों में सूजन आ गई थी। पैरो की सूजन की ओर डा राय का ध्यान आकृष्ट किया गया, लेकिन उन्होने यह विश्वास नहीं किया कि कोई गभीर बात है। एक बात निश्चित है कि साधारण बुखार से इतनी शीघ्र उनका देहात नहीं हो सकता था अगर गुर्दे की गडबडी न हुई होती (जिसका दुर्भाग्य से पता नहीं लग पाया)। कुछ लोगो का कहना है कि दार्जिलिग की ऊचाई ने उन्हे मौत की ओर धकेल दिया। इसे मैं नहीं मानता क्योकि यह अन्य तरह की गडबडी न होकर केवल अचानक दिल के दौरे का मामला न था। जब 2 जून को मैंने उनसे विदा ली तो मुझे आभास नहीं हुआ कि अत इतनी निकट है। पहली जून को वे श्रीमती दास के साथ कुर्सियाग आए और गिद्दा पहाड में हमारे साथ कुछ घटे बिताए। काश, कि मैं कुर्सियाग मे उनका चित्र खींच सकता।

श्रीमती दास यह आघात साहसपूर्वक सहन कर रही हैं। मैं अक्सर उनके पास जाता हू और कुछ घटे वहा बिताता हू। वे और उनके पति का व्यवहार हमारे प्रति इतना अच्छा रहा है कि मैं नहीं सोच पाता कि उनकी उदारता का ऋण मैं कैसे चुकाऊ।

तुम्हे जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने भोम्बल को 'फारवर्ड' के प्रबध विभाग मे 200 रुपये प्रति माह पर रख लिया है। भोम्बल ने माहिनी बाबू से पत्रिका की एजेंसी भी ले ली है और उससे भी उसे कुछ आय होने की आशा है। अगर उसने जमकर काम किया तो मुझे विश्वास है कि वह जीवन-यापन के योग्य पर्याप्त धन कमा सकेगा। फारवर्ड में उसे लिए जाने के विचार का मैंने स्वागत किया, क्योकि उससे उसे पहले की अपेक्षा अधिक जमकर काम करने की आदत पडेगी। यह सुझाव वास्तव में रागामामा बाबू की ओर से आया और मैंने उसे तुरत मान लिया।

माथुर को देशबधु से जो उदार व्यवहार मिला उसे देखते हुए उसने बहुत निराश किया। उसने न 148 से कुछ मूल्यवान चीजें चुरा लीं और अपने मालिक से आख चुराकर भाग निकला। इसलिए उसके बारे में तुम्हें अब और सोच विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

भोम्बल को हाजरा रोड पर एक उपयुक्त मकान मिल गया है और उसने उसे पहली अगस्त से किराए पर ले लिया है। किराया जरा कुछ अधिक तो है, लेकिन मैंने उससे कहा है कि वह ले लेवे (हालांकि उसके दयालु मित्रों ने अनुग्रहपूर्वक सलाह देने में कोई कोताही नहीं की थी), क्योंकि श्रीमती दास को किसी असुविधाजनक मकान में नहीं ले जाया जा सकता था।

देशबंधु जिन पदों पर प्रतिष्ठित थे, उन्हें भरने के संबंध में हाल में काफी उत्तेजना रही है। अंततः यह निर्णय किया गया है कि महात्मा गांधी की सलाह पर जे. एन. सेनगुप्त तीनों ही पदों पर रहेंगे। मेरे निजी विचार से देशबंधु जिन पदों पर थे, उन सब पर एक ही व्यक्ति को रखना एक बड़ी गलती है। लेकिन महात्माजी का निर्णय मान लिया गया।

जिन विद्यार्थियों को तुमसे आर्थिक सहायता मिल रही थी, वे अभी भी उसे ठीक से पाते जा रहे हैं। उस ओर से तुम्हें निश्चित रहना चाहिए। मैंने विपिन तथा अन्यों से कह दिया है कि वे तुम्हें तुम्हारे प्रवास के दौरान परेशान न करें और अपनी सभी मांगें मेरे आगे बिना झिझक के पेश करें।

अब मैंने तुम्हारे 26 जून तक के सभी पत्रों में उठाए गए मुद्दों के उत्तर दे दिए हैं। मुझे तुम्हारा 2 तारीख का पत्र आज सवेरे मिला। हरिचरण कल शाम आया था और उसने मुझे तुम्हारा पत्र दिखाया था। मैं अनिल बाबू से बात कर लूंगा और कोशिश करूंगा कि हरिचरण का भत्ता बढ़ सके। वह इसका उपयुक्त पात्र है। अगर सेवक समिति के मित्र वृद्धि की अनुमति नहीं देते तो मैं स्वयं 15 रुपये महीने तक की सहायता देकर खुशी महसूस करूंगा। मैं नहीं जानता कि वह इसे किस रूप में देखेगा—हो सकता है कि वह औरों पर निर्भर होना पसंद न करे। मैं उससे बात करने के बाद तुम्हें लिखूंगा कि क्या हुआ है।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जेलों के इंस्पेक्टर जनरल ने यह विचार रखा है कि तुम्हारी शारीरिक बीमारियों का कारण आवश्यकता से अधिक खुराक लेना हो सकता है। इसके बारे में कम से कम यह तो कहा ही जा सकता है कि उसका निदान मौलिक है। ऐसी मौलिकता के लिए उसे पुरस्कार अवश्य दिया जाना चाहिए।

मुझे अफसोस है कि मैं भूल गया कि किस संदर्भ में मैंने तुम्हें लिखा था कि मेरे अगले पत्र में और ज्यादा रोशनी डाली जाएगी। मैंने बार-बार याद करने की कोशिश की है, लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली है।

मैं इस बार सितम्बर के आरंभ में कलकत्ता से बाहर नहीं जा रहा हूं। अवकाश के दिनों में मैं कुछ पैसे अर्जित करने की कोशिश करूंगा, क्योंकि मुझे उनकी बहुत सख्त जरूरत है। मैंने कुर्सियांग अक्तूबर में जाने का निश्चय किया है। पिताजी अभी भी तय नहीं कर पाए हैं कि वे छुट्टियां कहां बिताएंगे। अभी तो उनका विचार भुवनेश्वर के लिए बन रहा है।

अपने पिछले दो पत्रों में तुमने अपने स्वास्थ्य के विषय में कुछ नहीं लिखा है।

मुझे रीढ में दर्द को लेकर कुछ चिंता हो रही है। क्या तुम कडवे तेल की मालिश कर देखोगे? उसकी तुम्हें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

हम सब ठीक हैं। आशा है, तुम पहले से अच्छे होगे।

तुम्हारा अत्यंत स्नेहपूर्वक,
शरत
सुभाष चन्द्र बोस

49. वासंती देवी के नाम

माडले सेंट्रल जेल
6-7-1925

श्री चरणेषु मा,

आज आपकी घोर विपत्ति की इस घडी मे हम कुछ कारारुद्ध बंगवासी आपके निकट सांत्वना के कुछ शब्द प्रेषित कर रहे हैं। जिस विपत्ति ने आज आपको अभिभूत किया है, उससे अधिक महान विपत्ति किसी महिला के जीवन मे और कोई नहीं हो सकती। जिस शोक ने आज आपके हृदय को आच्छन्न किया हुआ है, उसकी अपेक्षा और कोई भी गभीर शोक एक हिंदू नारी के जीवन को आच्छन्न कर सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि इस दुर्दिन में हम आपके और आपके परिवार के निकट नहीं हैं। विपत्ति के घने कुहासे को चीरकर, शोक के अवरुद्ध द्वार को भेदकर यदि हमारे हृदय की वाणी आपके चरणो तक पहुच सके तो हम अपने को धन्य पाएगे।

जो प्रयाण कर गए हैं, वे हमारे नितात अपने थे। आज आबाल, वृद्ध, नर-नारी, यानी समस्त भारतवासी शोक में डूबे हुए हैं—लेकिन सबसे अधिक शोक-संतप्त है, बगाल का तरुण वर्ग।

उनके आत्मीय स्वजन—उनके बाल्य-कैशोर्य, तरुणाई और प्रौढावस्था के सगी-साथी आज उनके लिए आसू बहा रहे हैं। साहित्य और कला-जगत के महारथी, यहा तक कि सभी क्षेत्रों के भाव-प्रवण व्यक्ति आज उनके शोक में निमग्न हैं। तथाकथित अस्पृश्य जाति के अभागे लोग उनको याद कर हाहाकार कर रहे हैं, जिनके लिए उन्होंने अपना सचित धन एव सपत्ति का मुक्त-हस्त से वितरण कर दिया—जिनकी सेवा में उन्होंने अपने प्राण, मान, स्वास्थ्य और आयु को उत्सर्ग कर दिया—वे देशवासी आज उनके शोक से अवसन्न हैं। लेकिन बगाल के तरुण वर्ग ने उनके लिए अपनी जीवन-संपत्ति अर्पित

कर दी जो उनकी भव्य पताका के तले एकत्र हुआ, जिसने दुख में और सुख में, अंधेरे में और उजाले में उनके आदेशों का पालन किया—संग्राम में प्रवृत्त होकर जिसने कभी तो विजय के गौरव को प्राप्त किया और कभी कारा की जंजीरों को चूमा—जिसने नैराश्य की रजनी हो, अथवा सफलता का प्रभात—कभी उनका साथ नहीं छोड़ा—जिसने उनमें पिता, सखा और गुरु का अपूर्व समावेश पाया—आज उस समस्त तरुण वर्ग की क्या अवस्था है, इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

देशबंधु अब नहीं हैं। यशोमंडितपूर्ण सूर्य की भांति वे जीवन के मध्याह्न में अस्त हो गए। सिद्धिदाता का वह वरद पुत्र दिव्य विजय-मुकुट से मंडित होकर भारत के विशाल कर्म क्षेत्र से दिव्य लोक की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गया। आत्यंतिक त्याग का जीवन जीने के बाद आज उन्होंने अमृत्व की प्राप्ति की है। किंतु हमारे बाहर और भीतर, हमारे अंत:स्थल में आज एक शून्यता व्याप्त है। जहां तक दृष्टि जाती है, मेघ पर मेघ उमड़ते दिखाई देते हैं, उस तिमिर की प्राचीर को भेदकर आलोक को प्रवेश करने के लिए तिल पर भी स्थान नहीं मिल पा रहा है।

एक और दिन की घटना हमें याद आती है—जिस दिन बंगाल के आकाश पर घनी घटाएं छा गई थीं, बंगाल के वीर केसरी को कारागृह में बंद कर दिया गया था, उस दिन नैराश्य के अंधकार को चीरकर एक अपूर्व मोहिनी मूर्ति अभय का वरदान देती हुई महाशक्ति के रूप में बंगाल के कर्म-क्षेत्र में अवतीर्ण हुई थी। उस दिन बंगवासियों ने अपने सच्चे स्वरूप को पहचाना था, उस दिन बंगवासियों ने आपको देश का नेता ही नहीं, बल्कि देश-माता के रूप में प्रतिष्ठित किया था। उस गौरव को, उस आनंद को, उस उन्माद को बंगाल कभी भूल नहीं सका है, भूल नहीं सकेगा। उस दिन बंगवासियों ने आपको जिस भक्ति, श्रद्धा और मान-सम्मान के सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया था, आज भी बंगवासियों के हृदय में आपकी वही प्रतिष्ठा अटूट है। उस दिन से आप केवल चित्तरंजन की ही माता नहीं थीं, बल्कि बंग-माता बन गई थीं।

इसलिए हमारा निवेदन है कि विपत्ति की इस घड़ी में आप ही हमें शक्ति, साहस और सांत्वना देंगी, नैराश्य के जिस निविड़ घनांधकार में आज समग्र देश निमग्न है, जिस विषाद और हाहाकार से आज सोनार बांग्ला भूमि श्मशानवत् बन गई है, उसके बीच आपके सिवा और कौन नूतन आलोक विकीर्ण करेगा, नई शक्ति देगा और नूतन उत्साह का संचार करेगा? जिस आह्वान द्वारा आपने एक दिन बंगवासियों की शिरा-शिरा में नवजीवन का संचार किया था, उसी आह्वान द्वारा आप एक बार फिर बंगवासियों को जगाएं। जिस मंत्र-बल से आपने एक दिन बंगाल के घर-घर में प्राण-प्रतिष्ठा की थी, उसी मंत्र के साथ महाशक्ति के रूप में आप फिर एक बार हमारे मध्य अवतीर्ण हों। बस उसी मुहूर्त में अवसाद मिट जाएगा—प्राणों में नूतन प्रेरणा, नूतन उद्यम, नूतन उत्साह बस जाएगा—आशा की अरुण किरणों के प्रसार से दसों दिशाओं में फिर हर्ष मुस्कुराने लगेगा। बंगाल के सभी तरुण हृदय आपके चरणों में अर्घ्य अर्पित करेंगे, आपसे आशीर्वाद

आशीर्वाद प्राप्त कर कर्म-क्षेत्र मे जय-युद्ध छेड देंगे और इस प्रकार अर्जित जयमाला से आपको विभूषित कर गा उठेंगे 'वदे मातरम!'

माडले सेंट्रल जेल
6-7-25

इति—आपके सेवक वृद,
श्री सत्येन्द्र चन्द्र मिश्र
श्री विपिन विहारी गागुली
श्री ज्योतिष चन्द्र घोष
श्री जीवन लाल चट्टोपाध्याय
श्री मदन मोहन भौमिक
श्री सुरेन्द्र मोहन घोष
श्री सतीश चन्द्र चक्रवर्ती
श्री हरीशकुमार चक्रवर्ती
श्री सुभाष चन्द्र बोस

सेवा में—
श्रीमती चितरजन दास
148, रसा रोड, साउथ,
कलकत्ता।

50. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
17-7-25

प्रिय दादा,

आपकी लबी चुप्पी से मुझे चिता होने लगी है—मेरा यह विचार बन रहा है कि आपके पत्र रोके जा रहे हैं।

प्राय 10 दिन पूर्व हमने श्रीमती दास को एक सयुक्त शोक सदेश भेजा था। मैं नहीं समझता कि वह उत्तर देने की स्थिति मे होगी और अगर वे उत्तर नहीं देना चाहतीं तो हम उन्हे उसके लिए कष्ट भी नहीं देना चाहेगे। लेकिन हमे यह जानने की उत्सुकता है कि उन्हे पत्र मिला है या नहीं।

मुझे अभी-अभी सर टेमनी बनर्जी की पुस्तक 'ए नेशन इन मेकिंग' मिली है, लगता है, इसे पढना काफी दिलचस्प होगा।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

51. हरिचरण बागची के नाम*

मांडले सेंट्रल जेल
3-7-1925

मुझे आपके तीन पत्र मिल गए हैं। मुझे जवाब देने का मौका नहीं मिला, इसके अलावा मैं अस्वस्थ भी चल रहा हूं। मेरा कोई काम करने को जी नहीं चाहता (पढ़ने को भी नहीं)। इससे पहले मैं सप्ताह में दो पत्र लिख सकता था—अब शायद मैं एक ही लिखूं। परिणामस्वरूप पत्र दो या तीन महीने तक इकट्ठे होते जाते हैं—क्योंकि मुझे जवाब देने का मौका नहीं मिलता।

समाज सेवा विभाग का मुख्य उद्देश्य है, गरीबों को कुछ काम कर सकने योग्य बनाना—उसका उद्देश्य केवल संगठित रूप में दान देना नहीं है। जो लोग सहायता चाहते हैं, उनके मन में यह बात बिठा देनी होगी कि बिना प्रत्युत्तर के दान लेना व्यक्ति के आत्म-सम्मान के विरुद्ध होता है। इसलिए अगर सहायता पाने के बाद कोई आदमी काम नहीं करना चाहता तो अच्छा होगा कि सहायता न दी जाए। लेकिन इस संदर्भ में एक या दो बातों पर विचार करना होगा—

(1) जिसे सहायता मिल रही है, उसे काम के लिए कुछ फुरसत होनी चाहिए। उदाहरण के लिए अगर किसी विधवा को कोई सहायता मिली है, लेकिन घर के काम-काज निपटाने के बाद अगर उसके पास काम के लिए समय नहीं रहता, तो अन्य काम के बारे में जोर नहीं दिया जाना चाहिए। हमें देखना बस यह है कि सहायता पाकर कोई आलसी न बन जाए। इस दृष्टि से स्थानीय पड़ताल के द्वारा जानकारी एकत्र की जानी चाहिए। अगर किसी व्यक्ति के पास समय भी है और शक्ति भी और वह काम नहीं करना चाहता तो उसे सहायता देना आलस्य को बढ़ावा देने जैसा होगा और ऐसा नहीं होना चाहिए।

(2) जो शारीरिक दृष्टि से अयोग्य हैं या जिनके घर में काम करने वाला और कोई सदस्य नहीं है, उनसे काम की मांग करना उचित नहीं होगा।

(3) अगर आप लोगों से काम लेना चाहते हैं तो चुनाव बहुविध होना चाहिए। कारण यह है कि सभी लोग सभी तरह के काम ठीक से नहीं कर सकते। आपको आसान कामों से शुरुआत करनी चाहिए, जैसे पुराने अखबारों से थैलियां बनाना—बाद में ज्यादा मुश्किल काम दिए जा सकते हैं।

(4) आप जिनसे काम लेना चाहते हैं, उनको प्रशिक्षण की सुविधा अवश्य देनी चाहिए। कुछ लोगों को जब तक प्रशिक्षण न दिया जाए, तब तक वे कुछ किस्म के कामों से बचने की कोशिश करते हैं और उन्हें लेने पर सहमत नहीं होते। लेकिन अगर

* मूल बांग्ला से अनूदित।

एक बार उन्हें काम की सिखलाई मिल जाए तो उनमे धीरे-धीरे दिलचस्पी पैदा हो जाएगी।

हम भिखारियो का राष्ट्र बना दिए गए हैं, इसलिए भिक्षुक-वृत्ति को रातों-रात नहीं बदला जा सकता। अगर आप यह आशा करते हैं कि भीख की आदत एक दिन में फुर्र हो जाएगी तो आपके हाथ निराशा ही लगेगी। सामाजिक सेवा के लिए अनत धैर्य चाहिए।

कुल मिलाकर आपका कार्यक्रम इस प्रकार होगा आप नया कच्चा माल (जैसे अखबार, रुई या कौडी, आदि) जुटाएगे। जो लोग आपसे सहायता पाते हैं, वे बदले मे उस कच्चे माल से चीजे तैयार करेगे। उन चीजो की बिक्री की जिम्मेदारी आपकी होगी। आपको विभिन्न दुकानो से बातचीत करके उन्हे बिकवाना होगा। जब चीजो की बिक्री हो जाए और ऊपरी खर्चे निकाल दिए जाए तो मुनाफा होगा, वह (कम से कम अशत) सहायता के वितरण मे होने वाले खर्च को पूरा करने के लिए पैसे देगा। हमेशा ही सार्वजनिक दान पर निर्भर करने के बजाए, आपको सोसायटी की कुछ स्वतत्र आय का प्रबध करना चाहिए। यह सब निस्सदेह समय और श्रम साध्य है।

पुस्तकों के लिए पैसा खर्च करने की बजाए आप कोशिश करें कि लेखको तथा औरो से पुस्तकें एकत्र की जा सके।

कृपया अनिल बाबू से कहिए कि पुस्तकालय के लिए किताब गड्ड-मड्ड ढग से जमा करने की जगह किसी विधि के अनुसार चलें। जो किताबे आपको नि शुल्क मिल जाती हैं, उन्हे भी आप अवश्य स्वीकार करे। फिर भी कोई तरीका होना चाहिए। सबसे पहले आप सुपरिचित बाग्ला अग्रेजी और यूरोपीय साहित्यिक कृतियो को प्राप्त करें। फिर आप भारत, इग्लैंड तथा विश्व के अन्य देशो से सबधित इतिहास की पुस्तके जमा करे। फिर विज्ञान और महापुरुषों की जीवनियो को उपलब्ध कर। साथ ही, अर्थशास्त्र, राजनीति, कृषि और वाणिज्य विषया की पुस्तको की ओर ध्यान दे। अगर आप उपर्युक्त सभी विषयो की पुस्तके एक साथ सग्रहीत कर सकते हैं तो अच्छा होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक विषय पर कुछ न कुछ किताबे होनी चाहिए, जिससे किसी भी रुचि वाले व्यक्ति को कुछ न कुछ पढने को मिल जाए। सस्ते उपन्यास रखना जरूरी नहीं है—लेकिन अच्छे उपन्यास होने चाहिए। हमे छोटे पैमाने पर एक आदर्श पुस्तकालय बनाना चाहिए।

अगर आपको किसी दूर जगह से सूत खरीदना पडेगा तो आप बुनाई विभाग को नहीं बनाए रख सकते। आपको कोशिश करनी चाहिए कि सूत वे ही लाग कातकर दें जिन्हे राहत-सहायता मिलती है या जो सोसायटी के सदस्य हैं। अगर सूत का कुछ अश भवानीपुर म या उसके आसपास नहीं तैयार किया जाता तो आपके प्रयासों का कोई फल नहीं निकलेगा। आपको कुछ और बातों की ओर भी ध्यान देना होगा। अगर सूत स्थानीय लोगा द्वारा तैयार किया जाता है तो यह प्रमाण होगा कि उन्हे इस सस्था से सच्चा लगाव है। अगर स्थानीय आबादी की सहानुभूति न मिले ता कोई भी सस्था बहुत समय तक काम नहीं कर सकती।

आपके आसपास की जगहों में भी लोग मिलेंगे जो सूत तो कातते होंगे, लेकिन उसे बेचेंगे नहीं। अगर आप उनके सूत से धोतियां या साड़ियां तैयार करा सकें तो वे कताई का सिलसिला जारी रखेंगे। पहले बहुत से लोग इस प्रकार से धोतियां और साड़ियां बनवाया करते थे। मैं नहीं जानता कि अब स्थिति क्या है। लेकिन मैं महसूस करता हूं कि सोसायटी में ऐसा प्रबंध होना चाहिए कि अन्य लोगों से मिले सूत से धोतियां और साड़ियां बनाई जा सकें।

(5) कृपया निश्चित करें कि सूत सदस्यों के घरों में तैयार किया जाए। चिर-मंगल कामनाओं सहित।

सुभाष चन्द्र बोस

52. दिलीप कुमार राय के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
25-6-25

प्रिय दिलीप,

मेरे पिछले पत्र के बाद मुझे तुम्हारे दोनों ही पत्र—6 और 15 मई तथा 15 जून के—मिल चुके हैं।

मुझे तुम्हारी भेजी हुई किताबों का पार्सल भी मिल गया है, केवल तुर्गनेव की पुस्तक 'स्मोक' नहीं मिली है। पार्सल, दफ्तर में खोला गया था, इसलिए मैं सुपरिंटेंडेंट से कहूंगा कि वह जांच करें।

मैं बर्टेंड रसल की पुस्तक 'प्रास्पेक्ट्स आफ इंडस्ट्रियल सिविलाइजेशन' बरहम्पुर में ही छोड़ आया था। उसे वहां से मुझे भेजा गया है। जेल के मेरे बहुत से साथी उसे पढ़ने को उत्सुक थे। लेकिन बर्टेंड रसल की किताब 'फ्री थाट एंड आफिशियल प्रोपेगेंडा' मेरे पास नहीं है। तुमने उसे भेजा ही नहीं था, क्यों? यह सही है या नहीं?

दिलीप, तुमने मेरे लिए इन किताबों का चुनाव किया, इसके लिए मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूं। हम सबको आशा है कि भगवान की कृपा से जो काम तुमने उठाया है, वह भली-भांति आगे बढ़ता जाएगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि तुम्हारी लेखनी से जो कुछ भी लिखा जाएगा, उसे मैं पूरे आदर के साथ पढ़ता रहूंगा। लेकिन अपनी किताबों की छपाई-सफाई की ओर भी ध्यान देना, क्योंकि किसी भी पक्ष में कोई त्रुटि नहीं रह जानी चाहिए।

तुम कल्पना कर सकते हो कि आजकल मेरे मन को कौन से विचार आवृत्त किए हुए हैं। मैं समझता हूं कि अब सभी के मनों पर एक ही विचार का आधिपत्य है : हमारे महान देशबंधु का निधन। जब मैंने पहले-पहल यह समाचार अखबारों में देखा

तो मुझे अपनी आखों पर विश्वास नहीं आया। लेकिन यह हृदय विदारक समाचार सचमुच सही है। सचमुच हमारा राष्ट्र कुग्रहों के फेर मे पड गया है।

मेरे मन को इस समय जो विचार मथित कर रहे हैं वे शब्द नहीं पा सकेंगे यद्यपि कभी-कभी मन मे आता है कि इन्हे छपाकर कुछ राहत पाऊ लेकिन वे इतने पवित्र और मूल्यवान हैं कि उन्हे अजनबी आखो के सामने नहीं पहुचाया जा सकता—और संसार तो अजनबियो से भी कहीं गया-बीता है। इसलिए मैं इतना ही कहूगा कि देश के लिए इस हानि की पूर्ति नहीं हो सकती और बगभूमि के तरुणो के लिए तो यह क्षति महान विपत्तिकारी और हिला देने वाली है।

मैं अपने आपको निधन की व्यथा से अवसन्न पाता हू, क्योकि मैं स्वय को यादों की दुनिया में उस दिवगत महापुरष के इतने स्पष्ट निकट पाता हू कि मेरे लिए उनके महान गुणों का विवेचन करते हुए कुछ भी लिख पाना फिल्हाल सभव नहीं है। मुझे आशा है कि जब समय आएगा तो मैं विश्व को उसका अश दशन करा सकूगा जिसकी झलक मैंने उनके निकट होकर उनके जीवन क्षणा मे पाई है और भी बहुत से ऐसे लोग होगे जो मेरी तरह यद्यपि उनके विषय म बहुत कुछ जानते होगे फिर भी कुछ लिखने से इसलिए सकोच कर रहे होगे कि कहीं उनसे उनके अद्वितीय उदार व्यक्तित्व के यशगान में चूक न हो जाए।

अगर तुम यह कहते हो कि दुख दर्द की अतिम परिणति यातना में नहीं होती तो मैं तुमसे सहमत हू। जीवन के कुछ ऐसे दुखद प्रसग होते हैं—जैसे वह जिसकी चर्चा मैंने अभी की है—जिनका मैं अभिनदन नहीं कर सकता। मैं न तो सत हू, न मूर्ख इसलिए मैं यह घोषणा नहीं कर सकता कि मुझे सभी तरह से सताप स्वीकार्य है। साथ ही मुझे अक्सर ठहरकर सोचना पडा है कि कुछ ऐसे अभागे लोग भी होते हैं (हो सकता है कि वे सौभाग्यशाली सिद्ध हो) जो लगता है कि किस्मत के हर तरह के आघात का लक्ष्य होते हैं। लेकिन अगर मात्रा का सवाल अलग भी रखा जाए तो भी मैं कह सकता हू कि अगर कुछ लोगो की किस्मत दुखा के प्याले को तलछट तक खाली करते जाना है तो अधिक अच्छा नहीं होगा कि वह दुख के उस द्रव को आत्म-समर्पण की भावना से स्वीकार करे। क्योकि अगर हम यह मान ले कि ऐसी भावना चीन की दीवार की तरह किस्मत के प्रहारा को सहन करने मे सफ्ल न भी हो ता भी उस क्रम मे उससे सहनशीलता की हमारी स्वाभाविक शक्ति बहुत अधिक बढ जाएगी। जब रसल कहते हैं कि ऐसी भी दुखद स्थितिया होती हैं जिनसे व्यक्ति अगर चाहे अपना बचाव कर सक्ता है तो वह केवल सासारिक व्यक्तियो की बात करते हैं। क्योकि मेरा विश्वास है कि अगर कोई निष्कलक सत या उसका ध्रुव विलोम मसखरा और मूर्ख व्यक्ति है ता यह स्वीकार नहीं करेगा कि ऐसा वक्तव्य उसका अपना भी हो सकता है।

लेकिन मुझे सदेह है कि तुम्हारी यह धारणा सही है कि जो लोग न दार्शनिक हैं न विचारशील वे यातना म यातना के सिवा और कुछ नहीं देखते। क्योकि जो दार्शनिक

नहीं हैं (मैं अमूर्त दृष्टिकोण से उन्हें ऐसा कहता [illegible] उनको [illegible] क [illegible] क। है जिसे वे सदा बनाए रखना चाहेंगे और जिससे पूजा के पात्र की तरह प्यार करेंगे। जब ऐसे लोगों को दुख और दर्द का सामना करना पड़ता है तो वे अपने प्रिय आदर्श से साहस और आशा की उपलब्धि करते हैं। मेरे साथ जेल-जीवन की यातना को सहन कर रहे लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो न विचारक हैं, न दार्शनिक और फिर भी वे पीड़ा को शांति से सह रहे हैं, धीरोदात्त नायकों की तरह भी रह रहे हैं। वे सामान्य अर्थों में भले ही दार्शनिक न हों, लेकिन आप उन्हें वैचारिकता के विश्व में अपरिचितों की श्रेणी में शायद ही रख पाएं। शायद यही बात विश्व-भर के ऐसे लोगों पर कमोबेश लागू होती है, जो स्वभाव से कर्मठ होते हैं।

आपराधिक मनोविज्ञान के अध्ययन से मेरी आंखें बहुत खुल गई हैं। जब 1922 में मुझे कारावास का दंड दिया गया था तो मेरे अहाते में एक अपराधी नौकर के रूप में काम किया करता था। उन दिनों मैं और देशबंधु एक कक्ष में रहा करते थे। उनका हृदय उस वृद्ध को देखकर द्रवित हो गया, यद्यपि वह पुराना शातिर था और आठ बार पहले भी सजा भुगत चुका था। उसके बावजूद उसने देशबंधु के प्रति अवचेतन में खिंचाव महसूस किया और जो बढ़ता गया और अंततः वह उनसे अत्यधिक संसक्त अनुभव करने लगा। जब देशबंधु की रिहाई होने को हुई तो उन्होंने उससे कहा कि वह अपनी सजा की मियाद खत्म होने पर सीधा अपने घर जाए और अपने पहले के अपराधकर्मी साथियों की छाया तक अपने ऊपर न पड़ने दे। बेचारे ने इस आदेश को सिर-आंखों पर रखा और बाद में वही किया जो उससे कहा गया था। तुमको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जो आदमी जीवन-भर अपराध-वृत्ति वाला रहा था, वह हमारे महान नेता के घर में अब लगातार रह रहा है तथा यद्यपि कभी-कभी वह पिछली आदत के फेर में पड़ जाया करता है, लेकिन कुल मिलाकर आज वह पहले की अपेक्षा बदला हुआ आदमी है और शेष लोगों के साथ मिलकर काफी निर्दोष जीवन बिता रहा है। मुझे कोई शक नहीं कि वह उन कुछ लोगों में है, जिनको इस निधन से सबसे गहरा आघात लगा है। कुछ लोगों का कहना है कि किसी व्यक्ति की महानता की सर्वोत्तम कसौटी ही होती है उसके छोटे-छोटे कार्यों को, छोटी-छोटी बातों को देखना-परखना। अगर आप देश के प्रति उनकी सेवाओं को अलग हटाकर भी परखें तो इस कसौटी से भी देशबंधु एक महान आत्मा ठहरते हैं।

मैं इधर-उधर भटक गया हूं . . . और मैंने अभी भी तुम्हारे पत्र का पूरी तरह जवाब नहीं दिया है। लेकिन अगर मुझे आज की डाक से यह चिट्ठी भेजनी है तो मुझे यहीं रुक जाना होगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम मेरे समाचार जानने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हो। शेष अपने अगले पत्र में।

तुम्हारा स्नेहभाजन,
सुभाष

53. दिलीप कुमार राय के नाम

द्वारा डी आई जी , आई बी, सी आई डी , बगाल
13, इलीसियम रो,
कलकत्ता।

माडले जेल
11-9-25

प्रिय दिलीप,

तुम्हे भेजा गया मेरा पिछला पत्र अधूरा ही रह गया था और मेरा विचार था कि मैं अगले सप्ताह उसी विषय को एक अन्य पत्र में लूगा। लेकिन एक ऐसी भयावय विपत्ति आ पडी जिसने हम सबको झकझोर कर रख दिया। आज भी मुझे नहीं सूझ रहा कि मेरी क्या स्थिति है और अन्य मेरे सहयोगियों की हालत भी प्राय ऐसी ही है—यद्यपि मेरे मामले में एक ऐसी व्यक्तिगत क्षति के कारण जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती, मेरी पीडा और गहरी है और मेरे सताप का आवरण दुहरा है। व्यक्तिगत क्षति की भावना कालातर में धुधली हो सकती है, लेकिन मुझे विश्वास है कि जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाएगा सार्वजनिक क्षति की गुरुता अधिक से अधिक उजागर होती जाएगी। उनकी प्रतिभा इतनी बहुमुखी थी और उनके कार्यकलाप इतने बहुविध थे कि बहुत बडे और विभिन्न क्षेत्रो के लोग उनके निधन के आघात को महसूस करेगे। मैं उनकी आलोचना यह कहकर किया करता था कि उन्होने जरूरत से ज्यादा पचडे अपने पल्ले बाध रखे हैं, लेकिन सर्जनशील प्रतिभाए अपने आपको व्यावहारिक अथवा तार्किक सीमाओ से आबद्ध नहीं करतीं और मुझे कोई सदेह नहीं है कि जीवन की परिपूर्णता और अनुभूति के कारण ही उन्हें हमारे राष्ट्रीय जीवन की इतनी विभिन्न दिशाओ में पुनर्निमार्ण करने की प्रेरणा मिली।

आप सबको कम से कम यह अवसर मिला कि आप अपनी अतिम श्रद्धाजलि अर्पित कर सके और अब भी आप लोग उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए कुछ कर सकने का सतोष पा सकते हैं। लेकिन भगवान ने ऐस सकट की घडी में हम सुदूर माडले के कारागार मे रखकर हमारे मन मे नितात असहायता की भावना भर दी है। मैं अभी भी अपना सतुलन केवल इसीलिए बनाए रख सका हू कि मेरा स्वभाव अत्यत आशावादी होने का है। जब किसी की अतरात्मा इस प्रकार झकझोर दी गई हो तो उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए समुचित शब्द पा सकना कठिन होता है और इसीलिए अब मैं अन्य विषय की चर्चा करूगा।

तुमने अपनी किताबो के बारे मे कितना काम पूरा कर लिया है ? क्या वे प्रेस म हैं ? तुम कब तक उनके प्रकाशित हो जाने की आशा करते हो। भारतीय सगीत के पुनरुत्थान और लोकप्रियता की आवश्यकता पर तुम (अन्य प्रातो के लाभ के लिए) अग्रेजी मे क्या नहीं एक पुस्तक लिखते ?

मैंने कुछ समय पूर्व रद्रा को उनकी क्षति पर अपनी सवेदना व्यक्त करते हुए पत्र लिखा था। अभी तक मुझे उत्तर नहीं मिला है। क्या तुम्हे उनके पत्र मिलते रहते हैं ?

क्या तुम अपने महान पिता श्री की पुस्तकों का एक सेट मुझे भेज सकते हो? हम उन्हें एक बार फिर पढ़ना चाहते हैं। अगर तुम भेज सको तो तुम उन्हें सीधे इस जेल के सुपरिंटेंडेंट को केवल एक पत्र के साथ (जिसमें पुस्तकों के नाम दिए हुए हों) भेजो, जिसमें उन्हें पुस्तकों को भेजने के बारे में सूचना हो। हमारे सभी पत्रों को कलकत्ता आफिस के जरिए आना होता है, लेकिन जेल सुपरिंटेंडेंट को यह अधिकार है कि वह पुस्तकों को सेंसर कर सके। इसलिए यह साहित्य तुम सीधे उन्हें भेजकर समय की बचत कर सकते हो। प्रसंगतः क्या तुम्हें तुर्गनेव के 'स्मोक' को खोज निकालने में सफलता मिली है? मुझे कलकत्ता की सी. आई. डी. ने सूचना दी है कि उन्हें ऐसी कोई पुस्तक नहीं भेजी गई थी। अगर वह किताब सचमुच खो गई तो मुझे अफसोस होगा।

यद्यपि यहां का जलवायु मेरे अनुकूल नहीं है, तथापि मैं दिनोंदिन अधिकाधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। जो समस्याएं मेरे लिए असंभव प्रतीत होती थीं, उनका समाधान अब सन्निकट लगता है। मैं एकांत तथा दूरी के प्रति कृतज्ञ हूं कि उनके कारण मुझे वह तटस्थ दृष्टि मिली है जो हमारी अनेक समस्याओं के समाधान के लिए अनिवार्य है। अगर मैं शारीरिक दृष्टि से अधिक स्वस्थ होता तो मैं अपने देश से इस बलात निष्कासन का और ज्यादा लाभ उठाता, लेकिन जैसी कुछ स्थिति है, उसमें मुझे अब भी आशा है कि मुझे अपने यहां के प्रवास का पूरा फायदा मिलेगा। बर्मा अनेक दृष्टियों से एक बहुत बढ़िया देश है और बर्मी-जीवन तथा सभ्यता का मेरा अध्ययन मुझे अनेक नए विचार दे रहा है। बर्मी लोगों की अनेक कमियों के बावजूद मैं उन्हें चीनियों की तरह सामाजिक दृष्टि से काफी आगे बढ़ा हुआ मानता हूं। उनमें जो कमी सबसे ज्यादा दिखाई देती है, वह है पहल करने की भावना का भाव जिसे बर्गसां ने 'प्राणिक ऊर्जा' कहा है—प्राणों का वह आवेग जो सभी बाधाओं को पछाड़ दे और प्रगति के पथ पर अग्रसर हो जाए। उन्होंने एक परिपूर्ण सामाजिक लोकतंत्र का विकास कर लिया है—प्रसंगतः, यहां स्त्रियां किसी भी यूरोपीय देश के मुकाबले अधिक शक्तिशाली हैं—लेकिन, दुख की बात है कि यहां की क्षीणकारी जलवायु ने लगता है कि उनकी पहल करने की पूरी शक्ति को सोख लिया है। एक ऐसे देश में, जहां की आबादी अधिक नहीं है, फसलों की बहुतायत ने बर्मा के निवासियों को शताब्दियों से आरामतलब बना रखा है, जिसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ है कि शरीर और मन की शिथिलता बर्मियों के जीवन पर हावी हो गई है। लेकिन मुझे विश्वास है कि एक बार यदि अपनी पहल करने की क्षमता का पर्याप्त विकास कर लें तो उनकी प्रगति की कोई सीमा नहीं रहेगी।

तुम्हें शायद मालूम है कि बर्मा में पुरुषों तथा स्त्रियों में साक्षरों का प्रतिशत भारत के किसी भी भाग की अपेक्षा अधिक ऊंचा है। इसका कारण स्थानीय तथा बेहद सस्ती प्राथमिक शिक्षा-प्रणाली है, जो पुजारियों के जरिए संचालित होती है। बर्मा में आज भी प्रत्येक लड़के से आशा की जाती है कि वह कुछ माह के लिए पीले वस्त्र धारण करेगा। इस प्रथा का न केवल शैक्षिक और नैतिक महत्व है, बल्कि इससे समानता की भावना भी पनपती है, क्योंकि इस प्रकार अमीर और गरीब का साथ हो जाता है। इस प्रकार

प्राथमिक शिक्षा की इतनी व्यापक पद्धति काम करती है, जिसके लिए शायद ही कुछ भी खर्च करना पडता हो।

अपने पिछले पत्र मे लगता है कि तुमने यह मान लिया है कि जो लोग दार्शनिक नहीं हैं, उन्हे अपने कारावास के दौरान यातना सहते जाने का ही शाप मिला है। यह बात पूरी तरह सच नहीं है। ऐसे लोग भी हैं, जो किसी न किसी आदर्शवाद से प्रेरित हैं, लेकिन अन्यथा वे दार्शनिक नहीं हैं। विगत विश्व-युद्ध म असख्य लोगों ने अपार कष्ट सहे, क्योंकि उनके मन में दार्शनिकता का अभाव था। जब तक ऐसा आदर्शवाद मौजूद हो, तब तक मेरा विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति यातना को समत्वभाव से सहन कर लेगा और उसमें सुख का भी अनुभव करेगा। निस्सदेह जिसकी दार्शनिक प्रवृत्ति है, वह अपनी पीडा को उच्चतर उद्देश्यों की उपलब्धि का साधन बना सकता है और इस प्रकार अपने व्यक्तित्व को समृद्ध कर सकता है। लेकिन यह सच नहीं है कि हम सबके अदर कहीं न कहीं दार्शनिक प्रच्छन्न है और जहा पीडा का स्पर्श मिला, वहा दार्शनिक प्रवृत्ति जागृत हो जाएगी।

फिल्हाल मैं इतना ही कहना चाहूगा कि मुझे आशा है कि तुम शीघ्र उत्तर दोगे। तुम्हे मेरा प्यार और शुभाकाक्षाए। सभी मित्रों को मेरी याद दिला देना।

डी के राय महोदय,
34, थिएटर रोड,
कलकत्ता।

मैं हू,
तुम्हारा शुभाकाक्षी,
सुभाष

54 दिलीप कुमार राय का पत्र

बनारस
27-9-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारे पिछले दो पत्रो का उत्तर नहीं दिया जा सका है। तुम्हारा पिछला पत्र मुझे कुछ ही दिन पहले भागलपुर में मिला था, जहा मैं कल तक अपने एक काका के यहा ठहरा हुआ था।

तुम शायद ही यह अनुमान कर सको कि पहले के किसी भी समय की अपेक्षा अब तुम्हारे साहसिक पत्र हमें कितनी मजबूती का अहसास कराते हैं। हम सब तुम्हारी ओर आशा से निहार रहे हैं कि तुम्हीं भविष्य के हमारे प्रिय राजनैतिक नेता बनोगे—

नहीं, मेरे इस कथन पर तुम अविश्वास की मुस्कान मत बिखेरो, अपनी विनम्रता को यह न कहने दो कि उसे तुम्हारे व्यक्तित्व के प्रति यह महत् प्रशस्ति मान्य नहीं है। मैं ठीक कहता हूं कि इस पीढ़ी के हम लोगों को तुम पर ऐसे व्यक्ति के रूप में आस्था है, जो हमारा नेतृत्व कर सकता है और सो भी किसी सुदूर भविष्य में नहीं। मैं नहीं जानता कि आज के समय में, जब हमारी प्रिय से प्रिय आशाएं धूलिसात हो रही हैं, हम सबका जो तुम्हारे प्रशंसक सुहृद हैं, तुमसे ऐसी चाहभरी आशाएं करना तुम्हें कोई वास्तविक विश्रांति देगा या नहीं। क्योंकि हो सकता है कि तुम हमारी ओर से ऐसी आशाओं का कारण तुम्हारे प्रति हमारी स्नेहपूर्ण मित्रता को बताओ। फिर भी मैं सोचता हूं कि निराशा की घड़ियों में हार्दिक प्रशंसा हमारी सहायता अवश्य करती है। एक मित्र के नाते तुम्हारे प्रति मेरे मन में जो प्रशंसा का भाव है, उससे इस विश्वास की पुष्टि होने दो।

हां, मैं कल्पना कर सकता हूं कि हमारे प्रिय नेता के आकस्मिक प्रयाण का गहरा आघात तुम्हें पहुंचा होगा, क्योंकि तुम उन्हें हम सबकी अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी तरह जानते थे। मेरा उनसे कुछ घनिष्ठ परिचय केवल गत मार्च में पटना में हुआ था, जब वे अपने भाई न्यायमूर्ति पी. आर. दास के अतिथि थे। उनके आचरण की मधुरता के कारण मेरे मन में उनके प्रति गहरा स्नेह उत्पन्न हो गया था। तुम शायद जानते हो कि मैं किसी महापुरुष के सार्वजनिक जीवन की अपेक्षा उसके वैयक्तिक चरित्र को ही अधिक महत्वपूर्ण मानता हूं। किसी महान व्यक्ति का सार्वजनिक व्यक्तित्व महान हो सकता है, उसका योगदान शायद उसके देशवासियों के लिए और ज्यादा महत्व का हो सकता है (हालांकि इस पर तर्क-वितर्क की गुंजाइश है)। लेकिन उसका निजी जीवन उसके मनुष्यत्व के सार-भाग को व्यक्त करता है—उसे उसके सच्चे रंग में पेश करता है। मैं उनके व्यक्तित्व का निकट से दर्शन कर मुग्ध हो गया—और इसी भाव-विभोरता को मैंने हमेशा ज्यादा महत्व दिया है। मेरी स्मृतियों के संचार में उनके व्यक्तित्व की सुगंध अभी तक व्याप्त है। उन्होंने मुझे दार्जिलिंग अपने साथ प्रवास के लिए आमंत्रित किया था। और मुझे दुख इसी बात का है कि मैंने हीला-हवाला किया। इस तरह मैंने एक बहुत बड़ा मौका खोया, जो मेरी हानि थी, और जो विशुद्धतः एक दुखांतिका बन गई। मुझे वे ऐसे महान व्यक्ति लगे थे, जो परदेसी को भी स्वदेशी के रंग में रंगने का सामर्थ्य रखता हो और राह चलतों को भी अपना बना लेता हो। इस दृष्टि से उनमें और रोमां रोलां में बहुत ज्यादा समानता है।

जहां तक मेरी किताब का सवाल है, मैंने पहला निबंध—जो रोमां रोलां के बारे में है—पूरा कर लिया है। अब मैं रसल तथा श्री अरविंद पर अपने लेखों के लिए मसाला इकट्ठा कर रहा हूं। मैं हाल में 'आर्य' पत्रिका में श्री अरविंद के दार्शनिक विचारों को पढ़ता हूं और मैं कहूंगा कि विश्व में अब तक जितने भी रचनात्मक विचारक एवं मौलिक दार्शनिक हुए हैं, उनमें वे एक सर्वोच्च कोटि के हैं। उनके बारे में मैं जो निबंध लिखूंगा, उसमें एक मुख्य बात उपर्युक्त स्थापना की पुष्टि होगी। तुम शायद खेद व्यक्त करोगे कि उन्होंने दर्शन के लिए राजनीति को त्याग दिया। मुझे याद है कि एक समय मैं भी इसी

प्रकार से अफसोस किया करता था। लेकिन धार्मिक और दार्शनिक कार्यकलाप के प्रति एसी सदेहावस्था के औचित्य पर अब मुझे अधिकाधिक शका होने लगी है। यह एक बहुत बृहत् विषय है लेकिन हो सकता है कि हम इस पर निकट भविष्य म कभी विचार करें। मैं जैसा तुम्हें जानता हू, भली भाति कल्पना कर सकता हू कि उनके प्रति तुम्हारा रख क्या होगा। लेकिन मेरा विचार दिनोदिन यह बनता जा रहा है कि कोई देश चाहे जितने नीचे क्यो न गिर चुका हो (जैसे कि हम निस्सदेह गिरे हैं) कुछ न कुछ साधक या भक्त होने चाहिए, जो अपना जीवन सभ्यता के मदिर में सस्कृति और चितन की जोत जगाए रखने के लिए समर्पित करे। जो लोग *उपयोगितावाद या व्यावहारिकता* को ही सर्वोच्च स्थान देते हैं वे शायद यह कहकर ऐसे लोगो की गतिविधियो को अह केंद्रित (?) कहकर भर्त्सना करेगे कि कहा तो राष्ट्र पर सकट है और वह दिनोदिन मुरझाता जा रहा है कहा यह सब साधना? लेकिन अगर हम जो कुछ करने के योग्य हैं उसकी तो उपेक्षा करे और यह सोचे कि देश हित की सच्ची आकाक्षा ही यथेष्ट है तो मुझे सदेह है कि कालातर में हम उस आकाक्षा की पूर्ति कर पाएगे। मुझे महान डेनिश आलोचक राउदा के एक कथन का स्मरण हो आया है। उसने कहा है कि चाहे कुछ भी कहा जाए, अतत सर्वोच्च कोटि के सास्कृतिक कार्यकलाप तथा विश्व के महान व्यक्तियो का योगदान सभी की धरोहर बनेगे—और उनको प्रकटत बनना ही चाहिए, उन्हे एक सीमित समूह की जो अपने को विशिष्ट पात्र समझे थाती नहीं होना चाहिए। इसलिए क्या मैं यह न समझू कि हम अपने देश और मानवता के प्रति अपने पवित्रतम दायित्व का *निर्वाह तभी कर सकेंगे जब बौद्धिक दृष्टि से अपनी सर्वोच्च उपलब्धि करे तथा* सच्चे अर्थो मे अपने निजत्व को प्राप्त करे? (आशा है तुम यह न सोचोगे कि मैं छोटे मुह बडी बात कह रहा हू)। रोमा रोला भी इसी बात का समर्थन करते हुए कहते हैं हमारा पहला कर्तव्य महान होना तथा धरती पर महानता का पक्ष सबल बनाना है। मुझे कुछ कुछ सदेह है कि तुम इस कथन को कहीं परोपकार की जगह अहकार से अधिक प्रेरित न समझ लो। लेकिन मुझे न जाने क्या विश्वास है कि तुम देर सबेर मेरे विचार से सहमत हो सकोगे। लेकिन इस सबध में बस इतना ही।

मैं सोचता हू कि मैंने तुम्हे स्मोक पुस्तक भेजी ही नहीं। इसलिए चिता दूर कर दो। मुझे रसल की किताब प्रोस्पैक्ट्स आफ इडस्ट्रियल सिविलाइजेशन वापस मिल गई है। क्या तुम सुविधानुसार उनकी पुस्तक फ्री थाट एड आफिशियल प्रोपेगैंडा तथा *आइकेरस आन फ्यूचर आफ साइस भेज दोगे? उनकी आवश्यकता* मुझ रसल के बारे मे अपने निबध के लिए पडेगी।

मैं हरिदास चटर्जी को लिख रहा हू कि वे पिताजी की कृतिया भेज द। मुझे विश्वास है कि तुम्हे वे इस पत्र के मिलने के एक पखवाडे बाद प्राप्त हो जाएगी।

मुझे बर्टैंड रसल से एक लबा पत्र मिला है जिसमे उन्होने हमारे देश की यात्रा पर आने की तीव्र इच्छा व्यक्त की है। मैं कोशिश करने जा रहा हू कि कलकत्ता सानेट में यह प्रस्ताव स्वीकृत हो जाए कि उन्हें तीन वर्ष के लिए वैतनिक कुलपति के रूप

में भारत आने के लिए निमंत्रित किया जाए। लेकिन मुझे संदेह है कि वे लोग उन्हें आने की अनुमति देंगे या नहीं।

मैं हाल में एक महान योगी से मिला हूं, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया है। लेकिन उसके बारे में मैं इस पत्र में नहीं लिख सकता। वह अद्भुत व्यक्ति है और उसमें बहुत दूरदर्शिता एवं गहराई है। उसकी शक्तियां चमत्कार की हद को छूने वाली हैं। श्री अरविंद अपने आपको जिस कार्य के लिए तैयार कर रहे हैं, उसके बारे में उसका बहुत उच्च अभिमत है।

कृपया शीघ्र से शीघ्र लिखो कि तुम्हें यह पत्र मिल गया है या नहीं।

मैं इस समय कुछ दिन के लिए तुलसी के घर में रुक रहा हूं। यहां हम सभी एक खुशमिजाज समूह हैं। संगीत सुनते-सुनाते हैं। काश, कि तुम भी यहां होते। तुम्हें बेहद प्रसन्नता मिलती।

मैं अब लगभग एक महीना राजपूताने की सैर करना चाहता हूं। मुझे बताया गया है कि वहां कुछ बहुत बढ़िया संगीतज्ञ हैं। संगीत संबंधी मेरी गतिविधियां अच्छी खासी चल रही हैं।

मैं क्षितीश से कभी-कभी मिलता हूं। वह कार्पोरेशन में कठोर परिश्रम के साथ काम कर रहा है और बताता है कि वहां तुम्हारा अभाव लोगों को बहुत खटकता है।

इस समय तो बस इतना ही है। मेरा हार्दिक स्नेह और 'विजया' का स्नेहालिंगन स्वीकार करो। मेरा हृदय पखेरू बनकर तुम्हारी ओर उड़ रहा है।

सस्नेह,
दिलीप कुमार राय

55. बर्मा की जेलों के आई. जी. के नाम

मांडले जेल
8-7-25

प्रिय महोदय,

अर्ल विंटरटन ने कामन्स सभा में जो यह बयान दिया है कि 'मांडले जेल में निवास की स्थिति स्वास्थ्यप्रद और आरामदेह है', उसके संबंध में मैंने आपका ध्यान, जब यहां आप दौरे पर आए थे, उस स्नानघर की दुर्दशा की ओर खींचा था, जिसका प्रयोग हम पिछले पांच महीने से कर रहे हैं। तब मुझसे कहा गया था कि नया स्नानघर बनाने का

काम प्राय तुरत शुरू किया जाएगा। लेकिन अभी तक यह शुरूआत नहीं हुई है। जैसा कि आप जानते हैं, इस स्नानघर की छत और दीवार घास की चटाई की बनी हैं। जब कभी मेह पडता है तो न सिर्फ पानी अदर आ जाता है बल्कि चटाइयो से बहुत बुरी भभक भी उठती है। मैं नहीं जानता कि यह काम सार्वजनिक निर्माण विभाग करेगा या कोई ठेकेदार। जो भी हो, अब समय आ गया है कि इस सबध म अवश्य कुछ किया जाए। हम कृतज्ञ होंगे, यदि आप सार्वजनिक निर्माण विभाग के चक्के कुछ तेजी से चलवाए।

आपका,
एस सी बोस

56. बर्मा की जेलों के आई जी के नाम

माडले सेंट्रल जेल
8-7-25

प्रिय महोदय,

कामन्स सभा में 9 जून या उसके आसपास अर्ल विंटरटन ने माडले जेल म रखे गए बगाल के राजनैतिक बदियों के बारे मे जो बयान दिया था उसम लॉन टेनिस का भी जिक्र आया था। लेकिन हम यहा कोई लॉन नहीं देखते जिस पर टेनिस खेल सके और इसीलिए हमें यह सुनकर आश्चर्य होता है कि अर्ल विंटरटन जैसे उच्च अधिकारी ने कामन्स सभा में गलत बयान दिया।

निस्सदेह एक टेनिस कोर्ट यहा है, लेकिन मुख्य जेल की मेहरबानी से उसका निर्माण इतने खराब ढग से हुआ है कि जरा-सी बौछार होते ही वह पानी म डूब जाता है और इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। अगर उसे सीमेंट से बनाया गया होता तो न केवल वह कहीं बेहतर ढग का होता बल्कि प्रत्येक बौछार के बाद वह जल्द सूख भी जाता।

अर्ल विंटरटन के बयान मे बेडमिंटन का भी जिक्र आया है लेकिन बैडमिंटन कोर्ट पिछले प्राय दो महीने से मरम्मत-तलब हालत में है, जिसके कारण खेल नहीं हो पा रहा है।

पिंग-पाग की भी चर्चा की गई है। हमे पिंग-पाग खेलने के लिए समुचित मेज कभी दी ही नहीं गई। खाने की मेज से ही पिंग-पाग की मेज का काम निकालना पडा। लेकिन वह मेज भी जगह-जगह चिटकी हुई है और उसकी सतह इतनी ऊबड-खाबड है कि हमें पिंग-पाग का खेल बद कर देना पडा।

अर्ल विंटरटन द्वारा दिए गए बयान की शब्दावली इतनी होशियारी से चुनी गई है कि उससे लोगों पर यह प्रभाव पड़ता है कि हम बहुत ही आराम से रह रहे हैं। इसे लिखने का मेरा उद्देश्य इसके विपरीत तस्वीर का ही एक पहलू पेश करना है।

यहां मैं एक और मामले की भी चर्चा कर दूं। काफी पैसा खर्च करके कुछ समय पहले तालाब खोदा गया था, जो स्नान की सुविधा देने के लिए था। आरंभ में विचार यह था कि तालाब को ताजे पानी से भरा जाए और प्रतिदिन ताजा पानी दिया जाए, जिससे पानी के लगातार बहते रहने के कारण उसमें कोई प्रदूषण न उत्पन्न हो पाए। लेकिन व्यवहारत: जब एक बार तालाब को भर दिया जाता है तो प्रतिदिन शायद ही ताजा पानी दिया जाता है। नतीजा यह होता है कि जल्द पानी दूषित हो जाता है और तालाब को काफी जल्दी-जल्दी खाली करना पड़ता है तथा हम उसका उपयोग प्रतिमाह केवल कुछ ही समय के लिए कर सकते हैं।

मैंने सुपरिंटेंडेंट का ध्यान इस ओर खींचा है, लेकिन उसका कोई खास असर नहीं हुआ। मुख्य जेलर का कहना है कि और ज्यादा पानी का बंदोबस्त नहीं किया जा सकता। यह बात सही नहीं है — जब तालाब एक बार खाली हो जाए तो उसे लगभग तीन दिन में भरा जा सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रतिदिन इतने पर्याप्त पानी का प्रबंध किया जा सकता है कि पूरे तालाब का एक तिहाई हिस्सा भरा जा सके। लेकिन अगर एक बार तालाब पूरी तरह भर दिया जाए तो हमें प्रतिदिन के लिए उससे कहीं कम मात्रा में पानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, अगर पानी की रोज सप्लाई होती रहे तो तालाब का पानी अधिक समय तक ताजगी बनाए रख सकता है और इसलिए तालाब को खाली करने की अवधि लंबी हो जाती है तथा अंतत: इससे पानी की बचत भी होती है।

मुख्य जेलर—जैसा कि सभी जानते हैं—शुरू से ही तरणताल के विचार के विरुद्ध रहा है और अपनी कुटिलता से काम लेकर उसने इस योजना को प्राय: विफल बनाने में सफलता पाई है।

मुझे आशा है कि मैं यह स्पष्ट कर सका हूं कि यहां हमारा आराम से रहना केवल सरकार द्वारा कुछ वस्तुओं या परियोजनाओं को मंजूरी देने पर निर्भर नहीं है। अगर स्थानीय अधिकारी चाहें तो वे सरकार के अच्छे से अच्छे इरादों को भी विफल कर सकते हैं, जैसा कि अक्सर होता भी रहा है। अगर सरकार सचमुच चाहती है कि हम आराम से रहें तो इसके लिए यह देखना आवश्यक है कि उसके आदेशों का पालन मातहत अधिकारियों द्वारा निष्ठापूर्वक और आदेश की भावना के अनुसार किया जाता है।

मैं हूं,
आपका,
एस. सी. बोस
(मांडले जेल में रखे गए बंगाल
के राजनैतिक बंदियों की ओर से)

57 वासनी देवी के नाम

माडल सेंट्रल जल
10 7 25

मा

मैंने अभी तक आपको कुछ लिख सकने का प्रयास नहीं किया था क्योंकि जो मैं लिखना चाहता था उसे व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे और मेरी उगलिया में कलम नहीं थम रही थी जैसे हाथ को लकवा मार गया हो। जब मैंने पहले पहल यह समाचार अखबारो में देखा तो मुझे अपनी आखो पर विश्वास ही नहीं हुआ। तब फिर मैंने वही समाचार सभी पत्रों में पढा तो मुझे सच्चाई के आगे सर झुकाना ही पडा। उन्होने स्वय ही मुझे लिखा था कि वे दो या तीन महीने में स्वास्थ्य लाभ कर लेंगे और फिर काम में जुट जाएगे। हम सबको आशा थी कि वे अपना अधूरा काम पूरा करके रहेंगे। लेकिन अचानक यह वज्रपात हुआ। अगर किसी व्यक्ति पर गाज गिरे तो वह कुछ देर के लिए अपने शरीर और मन की शक्ति खो देता है—लेकिन ऐसे वज्रपात से जो पक्षाघात होता है वह आसानी से दूर नहीं होता।

मेरे मन में सबसे पहले यह बात आई कि अब मैं बहुत दूर बर्मा म हू। मुझे अपनी अतरात्मा की प्रेरणा के अनुसार कुछ कर सकने से रोक दिया गया है। यह एक ऐसा सताप है जिसे मैं कभी भूल नहीं पाऊगा। मुझे कारागार—यह लौह द्वार और ये असख्य सींखचे—पहले कभी भी इतने घृणास्पद नहीं लगे थे। मैंने सोचा था कि मैं एक तार भेजकर अपने अतरतम की पीडा को व्यक्त करू—लेकिन यह सोचकर वैसा नहीं किया कि वह एक पारपरिक तरीका मात्र होगा।

मैं उनसे अतिम बार अलीपुर जेल म मिला था। मुझे तब मालूम हो चुका था कि मुझे बरहमपुर जेल मे स्थानातरित किया जाने वाला है। उनसे विदा लेते हुए उन्हे प्रणाम करने के बाद मैंने कहा था 'मैं शायद लबे समय तक आपसे नहीं मिल पाऊगा।' वे हसे थे और उन्होंने कहा था 'अर नहीं रे म तुम सबको ज्यादा समय तक कारागार में नहीं रहने दूगा।' मैं भला कैसे अनुमान लगा सकता था कि मेरे शब्द इतने सही निकलेगे। भाग्य ने कैसा विचित्र खिलवाड किया है।

मैंने 6 जून को उन्हे यह पत्र भेजा था—क्या वह उन्हें मिला था? मुझे उनका अतिम पत्र यहा मिला। वह पत्र और उसके शब्द मेरे प्रति उनके प्यार की अतिम अभिव्यक्ति थे। उसके जवाब म मैंने 6 जून को अपना पत्र लिखा था और उसे दार्जिलिग के पते पर भेजा था।

कुछ दिन पूर्व हम सबने एक सयुक्त पत्र लिखा था और उसे 148 रसा रोड के पते पर भेजा था। हमे जानने की उत्सुकता है कि वह पत्र आपको मिल गया है या नहीं। अगर आपकी मन स्थिति अनुकूल न हो तो आपको केवल औपचारिकता के नाते प्रत्युत्तर देने की जरूरत नहीं है। हमारे लिए उसकी पहुच की सूचना ही पर्याप्त होगी।

उनके मित्रों और अनुयायियों में से कुछ उनके गुणों का स्मरण करते हुए लिखते रहे हैं। लेकिन हम गुणगान करने के अधिकारी अपने को नहीं पाते। हम उनके इतने निकट थे और उनके हृदय की उदारता को इतनी गहराई और विशालता के साथ अनुभव करते थे कि वह अनुभूति ही हमें हतप्रभ कर देती है और हमारी लेखनी से शब्द नहीं निकल पाते।

मुझे आशा है कि जो लोग वहां हैं, उन्होंने आपको सांत्वना देने के अपने कर्तव्य का निर्वाह किया होगा। क्या मेरे पास क्षमता है कि मैं आपको सांत्वना दूं। मुझे स्वयं ही ढाढस की जरूरत है। इसलिए मैं इतना ही कहूंगा कि भगवान आपको बल दे और धैर्य प्रदान करे।

मैंने भोम्बल को लिखा था और उसने उत्तर भी दे दिया है। अगले सप्ताह मैं उससे फिर मिलूंगा।

मैं नहीं जानता कि अगर मैं मुक्त होता तो मेरी सेवाओं का कोई उपयोग होता या नहीं। न मुझे यही मालूम है कि मेरी सेवाओं की कोई जरूरत होगी या नहीं। लेकिन इस बात में कोई संदेह नहीं है कि तब मैं कुछ सेवा करने का मौका पा सकूंगा। वह मौका मैं इस समय नहीं पा रहा हूं। यह बात मेरे मन में बार-बार उठ रही है। ऐसा लगता है कि सीलबंद दरवाजों से टकरा कर मेरी अपूर्ण आकांक्षाएं तथा व्यर्थ प्रयास बार-बार मेरी ओर लौट रहे हैं। जब मनुष्य अक्षम बना दिया जाता है तो वह जाने-अनजाने भगवान की शरण में जाता है। इसलिए मैं पुनः प्रार्थना करूंगा कि वह आपको शांति और शक्ति दे। कृपया मेरे अत्यंत विनम्र हृदय-उद्गार स्वीकार कर मुझे आशीर्वाद से कृतकृत्य करें।

आपका प्रिय पुत्र,
सुभाष
(द्वारा डी. आई. जी., सी. आई. डी.,
13, इलीशियम रो, कलकत्ता)

58 शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
22-7-25

प्रिय दादा,

लबी चुप्पी के बाद आपका पत्र पाकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। मैं आप सबकी कुशल-क्षेम जानने के लिए आपको तार भेजने की बात सोच रहा था।

मैं नहीं जानता कि आप कितने व्यस्त हैं और इसलिए सोचता हू कि जब आपके पास समय की कमी हो तो आप किसी अन्य से कह दे कि वह पत्र लिख दे। नहीं, मुझे देशबधु के निधन के बारे मे कोई भी तार नहीं मिला। मुझे तब तक नहीं मालूम हो पाया कि ऐसा कोई तार आया है, जब तक मुझे आपका 15-7-25 का पत्र नहीं मिला, जिसमें आपने उसका जिक्र किया है।

देशबधु को होम्योपैथी में इतना गहरा विश्वास था कि उन्हें किसी अन्य चिकित्सा-पद्धति का मौका देने के लिए राजी नहीं किया जा सका। लेकिन श्यामदास कविराज का विचार है कि उनके मित्रों और परामर्शदाताओ पर यह इलजाम आता है कि उन्होने उनको आयुर्वेदिक औषधियो को लेने से वचित रखा।

मैंने रगून के अखबारो में पढा कि 'फारवर्ड' का देशबधु विशेषाक बहुत सफल रहा। कृपया उसकी एक प्रति चीफ सेक्रेटरी को भेद दें और अनुरोध कर दे कि वह मुझे भेज दी जाए। 'फारवर्ड' स्वीकृत पत्रो की सूची में नहीं है और इस विशेषाक के लिए बगाल सरकार से विशेष अनुमति लेना आवश्यक होगा।

'फारवर्ड' के निदेशक मडल मे देशबधु का स्थान कौन लेने जा रहा है? क्या मडल में कोई अन्य नाम हाल मे जुडे हैं?

प्रसगत 'फारवर्ड' के नए सपादक—श्री पी के चक्रवर्ती—कौन सज्जन हैं?

मेयर के चुनाव के बारे मे कुछ नहीं कहना चाहता—लेकिन मुझे सचमुच प्रसन्नता है कि निर्णय चाहे जो हो मतदान के समय भारतीय सदस्यों में प्राय पूरी तरह मतैक्य था।

जी हा, इस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स अपने क्षेत्र मे एक तरह से शोधार्थी भी हैं। उनकी हाल की एक खोज—जो वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट म छपी है—यह है कि जेल में लबे समय तक निवास से व्यक्ति का स्वास्थ्य सुधर जाता है। क्या मौलिकता की उपलब्धि इससे अधिक कुछ हो सकती है?

मुझे आशा है कि आप अपने कामों के भारी बोझ के बीच अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा नहीं करेंगे। इलाज की अपेक्षा बचाव का उपाय बेहतर होता है और आपको तब तक प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, जब तक पानी गले तक न आ जाए। . . .

मैं गंभीरतापूर्वक बांग्ला साहित्य का अध्ययन शुरू करने जा रहा हूं। लेकिन मेरे पास यहां किताबें नहीं हैं—मैं सरकार से आवेदन करते-करते ऊब गया हूं और उनका अनुदान बहुत अल्प मात्रा में मिलता है। मैं बुक कंपनी में अपना खाता खोलना और अपनी ही ओर से सीधे उसे किताबों का आर्डर देना चाहता हूं।

अपनी रिहाई के बाद मैं बुक कंपनी की रकम चुका दूंगा और वे तब तक का ब्याज भी ले सकते हैं।

यहां पहले की अपेक्षा मौसम कुछ अधिक ठंडा है और मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं। अगस्त में शायद हमें गर्मी के मौसम का एक और झोंका सहन करना पड़े। अगर सर्दी आने तक यह ठंडक बनी रही तो मुझे आशा है कि मैं जमकर पढ़ाई कर सकूंगा। आप मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिंता न करें।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

59. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
10-8-25
7 बजे सायं

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा 22 जुलाई का पत्र 5 अगस्त को मिला।

तुम्हारा पत्र मिलते ही मैंने 'फारवर्ड' के कार्यालय से कहा कि वह 'देशबंधु विशेषांक' आर्मस्ट्रांग को इस अनुरोध के साथ भेज दे कि वह तुम्हें प्रेषित कर दिया जाए। मैं यह पूछना बाद में भूल गया कि वह भेज दिया गया है या नहीं, लेकिन मेरा विश्वास है कि वह चला गया होगा। मुझे इसकी सूचना आज रात को गंगानाथ बाबू से मिल जाएगी।

अभी हमने तय नहीं किया है कि देशबंधु की जगह, 'फारवर्ड' के निदेशक-मंडल में किसको लिया जाए। गत वार्षिक बैठक में हमने श्री गोस्वामी, श्री चन्द्र और श्री नलिनी रंजन सरकार को मंडल में लिया था। इस तरह अब कुल छह निदेशक हैं — तीन शेष हैं — पंडित मोतीलाल नेहरू, बाबू प्रभुदयाल और स्वयं मैं।

भोम्पल ने अभी तक मुझे यह नहीं बताया है कि वह 'फारवर्ड' में काम करेगा या नहीं। वह जवाब देने से पहले अपने संबधियों से सलाह करना और इस मामले पर सावधानी से विचार करना चाहता है। मैं समझता हू कि अगर वह काम करने लगे तो इसके लिए अच्छा ही होगा।

अभी 'फारवर्ड' के सपादक श्री पी के चक्रवर्ती हैं। सत्यबाबू बहुत अच्छी तरह उभर कर आ रहे हैं। मैं समझता हू कि वे सर्वश्रेष्ठ सपादकीय लेखक हैं।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि पिताजी की तबियत काफी ठीक है। उन्हे अभी भी दर्द तो है, लेकिन मुझे आशा है कि वह शीघ्र दूर हो जाएगा।

मुझे इस वर्ष कठोर परिश्रम तो करना पडा है, लेकिन मेरा स्वास्थ्य काफी ठीक है। मैंने अभी-अभी बुक कपनी को लिखा है कि वह तुम्हे लार्ड रोनाल्डसे की सभी किताबे भेज दें। मैंने उन्हे यह भी सूचित किया है कि तुम उन्हें समय-समय पर उन किताबों की सूची भेजते रहोगे, जो तुम्हें चाहिए और उनसे कहा है कि वे उस सूची के अनुसार किताब तुम्हे भेजते रहें।

मुझे जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा स्वास्थ्य अब पहले से ठीक है। हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

60. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले
5-8-25

प्रिय महोदय,

मुझे अपने भाई से पता चला है कि गत 17 जून को उन्होने आपको एक तार भेजकर अनुरोध किया था कि मुझे श्री सी आर. दास के दिवगत होने का समाचार दे दिया जाए। अभी तक मुझे आपसे यह जानकारी नहीं मिली है कि ऐसा कोई तार आपको मिला था या नहीं, और अगर तार आपको नहीं मिला तो मैं अपने भाई को यह लिखना चाहता हू कि वह इस मामले की ओर पोस्ट मास्टर जनरल का ध्यान आकर्षित करें। मैं आपका आभारी होऊगा, यदि आप मुझे बताए कि ऐसा कोई तार आपको गत 17 जून को या उसके आसपास मिला था या नहीं।

आपका
एस सी बोस

61. वर्मा की जेलों के आई.जी. के नाम

मांडले
5-8-25

प्रिय महोदय,

मैं नहीं समझता कि मैंने आज तक आपका ध्यान शुद्ध रूप में किसी व्यक्तिगत बात की ओर आकर्षित किया है। लेकिन अब मैं विवश होकर ऐसा कर रहा हूं। आपको शायद स्मरण होगा कि जब मैं आपसे पहली बार मिला था, लगभग छह महीने पहले, तो हमने खुराक के भत्ते के बारे में विचार-विमर्श किया था और मैंने कहा था कि मैं अपने निजी मामले को लेकर कोई दवाव नहीं डालना चाहता, यद्यपि मैं महसूस करता हूं कि उसमें वृद्धि आवश्यक है। मैंने तब यह स्पष्ट कर दिया था कि मैं चाहता हूं कि पहले आम भत्ते में परिवर्तन किया जाए, और जब वैसा हो जाए तो मैं अपना निजी मामला पेश करूंगा। तब से मैंने पूरा एहतियात बरता है कि मैं अपने बारे में कुछ न कहूं। लेकिन मुझे खेद है कि मुझसे कुछ पूछे बिना मेरे खुराक भत्ते पर अग्रिम विचार किया गया है। आपको मालूम है कि मांडले में बंगाल के किसी भी स्थान की अपेक्षा मूल्य बढ़े हुए हैं। इस तथा अन्य तथ्यों के कारण आपको मानना पड़ा कि आम खुराक भत्ते में वृद्धि आवश्यक है। मेरे मामले में भी यही बातें लागू होती हैं, इसलिए मैं नहीं समझ पाता कि आपने यह सिफारिश बंगाल सरकार से कैसे की कि मेरा खुराक भत्ता ज्यों का त्यों रखा जाए।

आपको शायद पता है कि कानून के तहत सरकार बाध्य है कि वह हमारे जीवन-यापन के निमित्त हमारी हैसियत और जीवन-स्तर के अनुसार प्रबंध करे। मैं उस जीवन-स्तर की बात नहीं कर रहा, जो मुझ पर एक मुक्त व्यक्ति के रूप में लागू होता है, क्योंकि आप इस स्थिति में नहीं हैं कि उसकी प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर सकें। लेकिन यह स्पष्ट है कि भत्ते को निर्धारित करते हुए बंगाल सरकार के सामने एक विशेष जीवन-स्तर था और उसने ऐसे भत्ते का निर्धारण किया, जिसके सहारे मैं उक्त स्तर के अनुसार रह सकूं। एक विशेष जीवन-स्तर को स्वीकार करते हुए और तदनुसार एक विशेष भत्ते का निर्धारण करते हुए, मैं समझता हूं कि बंगाल सरकार के पास अपने निर्णय तक पहुंचने के लिए पर्याप्त कारण रहे होंगे। जब मैं अलीपुर में था तो मेरे खुराक भत्ते पर औसत खर्च लगभग 10 रुपये प्रति खुराक था। मेरा विश्वास है कि उसकी पुष्टि इस जेल के सुपरिंटेंडेंट (कैप्टन स्मिथ) ने अलीपुर न्यू सेंट्रल जेल के सुपरिंटेंडेंट से कर ली है। दिसम्बर 1924 में मेरे बरहमपुर जेल में स्थानांतरण के बाद दर 6 रुपये 10 आने प्रति खुराक निश्चित की गई थी। मेरे मांडले में स्थानांतरण के बाद पहले कुछ महीनों में कोई निश्चित दर नहीं रही। इसलिए मुझे कोई असुविधा अनुभव नहीं हुई। लेकिन जब से आम दर 3 रुपये प्रति खुराक निश्चित की गई है, तब से मेरे लिए 6 रुपये 10 आने प्रति खुराक से काम चलाना असंभव हो रहा है। मूल्य यहां अधिक होने के कारण यह स्पष्ट है कि मैं उस स्तर के अनुसार तब तक नहीं रह सकता, जिसका अभ्यास मुझे

अलीपुर सेंट्रल और बरहमपुर जेलो में था, जब तक भत्ता बढ़ाया न जाए। मैं नहीं समझ पाता कि आपने जिस सिद्धात को अन्य लोगों के मामले मे स्वीकार किया है, उसे आप मेरे मामले मे क्यों लागू नहीं कर सकते।

मैं यह कहना चाहूगा कि आपका कर्तव्य उस जीवन-स्तर को बनाए रखना है, जिसकी आदत हमें बगाल की जेलो में थी। कौन-सा जीवन-स्तर ठीक है यह एक ऐसा सवाल है, जिसका सबध बर्मा सरकार से न होकर, बगाल सरकार से है। बगाल सरकार ने *कुछ विशेष कारणों से मेरे मामले मे एक विशेष स्तर को स्वीकार किया था।* इसलिए उचित यही है कि जब तक मैं बर्मा में हू, मुझे उस स्तर का लाभ दिया जाए जिसे सरकार ने तब स्वीकार किया था, जब मैं बगाल में था और उस उद्देश्य से काफी वृद्धि आवश्यक है। इसे मेरी धृष्टता न माना जाए, अगर मैं कहू कि आपके पत्र सख्या 10529/103 सी में खुराक के बारे में जो उल्लेख किया गया है, वह बिल्कुल असगत है। लेकिन इसके बारे मे मैं अपने अगले पत्र में लिखूगा।

मुझे खेद है कि यहा मेरे आने के छह महीने बाद मुझे आपको खुराक भत्ते के बारे में लिखना पडा। लेकिन अभी सरकारी काम-काज का पहिया इतना धीमा घूमता है, तो इसके लिए जिम्मेदार निश्चय ही मैं नहीं हू।

आपका,
एस सी बोस

62. मांडले सेंट्रल जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले सेंट्रल जेल
7-8-25

प्रिय महोदय

हम निम्नलिखित सदेश तार द्वारा महामहिम बर्मा के राज्यपाल महामहिम बगाल के राज्यपाल तथा भारत के वाइसराय और गवर्नर जनरल को भेजना चाहते हैं। हम आभारी होंगे, यदि आप इसे शीघ्र से शीघ्र भेजने के आदेश देवें।

आपके,
माडले जेल के बगाली
राजबदी तथा नजरबदी

1 महामहिम राज्यपाल, बर्मा, रगून।

2 महामहिम राज्यपाल, बगाल, कलकत्ता।

3 महामहिम भारत के वाइसराय और गवर्नर जनरल दिल्ली।

तार से जाने वाला संदेश :

स्थानीय जेल अधिकारियों के अत्यधिक अपमानजनक और शर्मनाक व्यवहार, भत्ते में कटौती तथा अन्य शिकायतों के कारण हमें विवश होकर आज सवेरे से भूख हड़ताल करने की घोषणा करनी पड़ रही है। अनुरोध है कि हमारी शिकायतों की शीघ्र जांच की जाए।

मांडले सेंट्रल जेल के बंगाली
राजबंदी तथा नजरबंदी

(इस पत्र तथा तार संदेश का प्रारूप सभी बंदियों की ओर से सुभाष चन्द्र बोस ने तैयार किया था)।

63. बर्मा सरकार के मुख्य सचिव के नाम

मांडले जेल
10-8-25

प्रिय महोदय,

हमें पता चला है कि बंगाल सरकार ने भारत सरकार की स्वीकृति के लिए सिफारिश की है कि प्रत्येक राजबंदी और नजरबंदी के लिए बिस्तर, कपड़ों आदि के वास्ते 225 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष रखा जाए। यह स्पष्ट नहीं है कि इस राशि के अंतर्गत गरम कपड़े भी शामिल हैं या नहीं। यह भी पता नहीं चला है कि यह राशि किस आधार पर निर्धारित की गई। उक्त राशि उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एकदम अपर्याप्त है, जिसके लिए वह रखी गई है तथा अगर गरम कपड़ों को भी शामिल किया गया है, तो और भी ज्यादा अपर्याप्त है। हमने मांडले के जलवायु तथा जिन स्थितियों में हम रहते हैं उनको ध्यान में रखकर ब्यौरेवार हिसाब लगाने की कोशिश की है कि हममें से प्रत्येक के लिए कुल कितने पैसों की जरूरत होगी। इस संबंध में हम ध्यान खींचना चाहेंगे कि हमें लकड़ी के तख्तों से बने कक्षों में रखा गया है, जो गर्मी में लू और धूल से तथा सर्दी में ठंडी हवाओं से बचाव के साधन नहीं बन सकते।

हमें नहीं मालूम कि बंगाल सरकार ने भारत सरकार को उक्त सिफारिश यहां की सरकार के सुझाव या सलाह पर की है या नहीं। हमें यह जान कर खेद होगा कि बर्मा सरकार ने कोई सुझाव या सिफारिश की, क्योंकि हमसे हमारी जरूरतों के बारे में कोई भी पूछताछ नहीं की गई है।

तुलना करने पर प्रथम दृष्टि में आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि कपड़ों की सूची बंगाल सरकार द्वारा पहले तैयार की गई और एक सर्कुलर के रूप में विभिन्न जेलों

को भेजी गई सूची की अपेक्षा अधिक बढ-चढकर है। लेकिन इस सबध में हम यह बताना चाहते हैं कि उस सूची के अनुसार पूरी तरह कभी काम नहीं किया गया। उसमें स्थानीय सुपरिंटेंडेंट द्वारा हमेशा घट-बढ की जाती रही। इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। बगाल सरकार की सूची में खेल-कूद की पोशाक का कोई जिक्र नहीं है, जब कि टेनिस खेलते समय पहने जाने वाले जूते आदि बगाल में नियमित रूप में दिए जाते रहे। अगर इस विषय मे कोई सदेह हो कि जिन चीजो का जिक्र सूची में नहीं है, उन्हे बगाल की जेल मे दिया जाता था या नहीं, तो इस सदेह का निवारण बडी आसानी से कपडों को उस सूची को देखकर किया जा सकता है, जो हमें सरकारी खर्च पर मिले थे और जिन्हें हम स्थानातरित होने पर माडले ले आए थे। अगर हमे माग पर चीज दी गई लेकिन उन्हें मानक सूची म दर्ज नहीं किया गया, तो यह निश्चय ही हमारी गलती नहीं है। हम उस समय किसी सूची की परवाह तब तक नहीं करते थे जब तक हमें हमारी माग पर चीजे मिलती जाती थीं, क्योंकि हम जानते थे कि ऐसी सूची वास्तविक रूप में लागू करने के लिए कम तथा औपचारिकता पूरी करने के लिए ज्यादा तैयार की जाती थी।

हमने स्वय अपनी सूची को पाच खडों मे इस प्रकार बाटा है :

अनुसूची 'ए' — सूती कपडे

अनुसूची 'बी' — गर्म कपडे

अनुसूची 'सी' — सामान्य पोशाक

अनुसूची 'डी' — खेल-कूद की पोशाक

अनुसूची 'ई' — बिस्तर

हमारी सूची मे प्रत्येक मद पूरे वर्ष की जरूरत को दर्शाती है। उत्तर बगाल सरकार की सूची में उन वस्तुओ का उल्लेख है, जिन्हे एक बार में दिया जाना हो। अधिकाश मामलों में नवीकरण जरूरी है इसलिए सतही तौर पर देखने से पूरे वर्ष के लिए तैयार की गई सूची, एक बार मे दी जाने वाली वस्तुओ की बगाल सरकार की सूची की अपेक्षा कहीं ज्यादा बढी-चढी प्रतीत होगी।

हम यह महसूस करते हैं कि ओवरकोट, गलीचा जैसी वस्तुए बढिया क्वालिटी की हों तो उनके नवीकरण की आवश्यकता कई साल तक नहीं पडेगी। इसलिए हमारा सुझाव है कि अगर सरकार चाहती है तो वह ऐसी चीजों की सूची तैयार करे, जिन्हें सालाना खर्च के अतर्गत शामिल न किया जाए, लेकिन जिनका नवीकरण जब जरूरत हो तब कर दिया जाए। शेष जिन चीजो का नवीकरण समय-समय पर या वार्षिक होना चाहिए, उनको ही सालाना खर्च के लिए हिसाब करते हुए शामिल किया जाना चाहिए। हमने इन चीजो को, जो हमारी राय म, समय-समय पर यथावश्यक नवीकरण के लिए एक अलग सूची मे रखी जा सकती हैं, लाल स्याही से रेखाकित कर दिया है और 'ए' का निशान डाल दिया है।

हमने जो मूल्य दिखाए हैं, वे आनुमानिक हैं और उस मूल्य पर आधारित हैं, जो अब से पहले लिया गया था। अगर हमने कोई बात गलत उद्धृत कर दी हो तो हम उसमें सुधार को स्वीकार करने को तैयार हैं।

संक्षेप में, हमारे अनुमान इस प्रकार हैं :

'ए'	सूती कपड़े	128 रुपया 4 आना
'बी'	गर्म कपड़े	311 रुपया 8 आना
'सी'	सामान्य पोशाक	131 रुपया 12 आना
'डी'	खेल-कूद की पोशाक	81 रुपया 6 आना
'ई'	बिस्तर	116 रुपया

यह भी स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए कि क्या उन चीजों को, जिनका कोई संबंध कपड़े या बिस्तर से नहीं है, उस मद में वर्गीकृत किया जाना चाहिए या नहीं। हमारी राय है कि ऐसा कोई वर्गीकरण नहीं किया जाना चाहिए और यह उचित नहीं होगा कि कपड़े और बिस्तर के लिए निर्धारित धन-राशि को अन्य चीजों के लिए खर्च किया जाए।

उपर्युक्त बातों को देखते हुए हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि 225 रुपये की रकम कपड़ा, बिस्तर आदि के लिए एकदम अपर्याप्त है। इसलिए हमारा अनुरोध है कि उक्त भत्ते में वृद्धि की जाए।

हम हैं,
मांडले जेल के बंदी

उपर्युक्त पत्र लिखे जाने के बाद हमें सूचना मिली है कि भारत सरकार ने बंगाल सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

एस. सी. बी.
13-8-25

64. शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास किया
अस्पष्ट
डी आई जी, पुलिस, आई बी

38/1, एल्गिन रोड
27-7-25
6 बजे साय

सेंसर किया और पास किया
अस्पष्ट
10/8
डी आई जी, आई बी, सी आई डी

प्रिय सुभाष,

विश्वास है कि तुम्हें मेरे पिछले पत्र अब मिल गए होंगे।

मुझे तुम्हारा 17 तारीख का पत्र 24 तारीख को मिला। गोपाली और सती अपनी-अपनी परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हुए हैं। सती को बगाल टेक्निकल इस्टीट्यूट में (माध्यमिक विभाग के प्रथम वर्ष में) प्रवेश मिल गया है। वह आई एस सी डिप्लोमा के लिए फिर से कोशिश नहीं करना चाहता था। गोपाली ने पुन बगवासी कालेज में प्रवेश लिया है।

कल रात मैं श्रीमती दास के निवास पर गया था। उन्हे तुम्हारा सयुक्त पत्र मिल गया है, जिसको उन्होने बहुत सराहा है। उन्हें तुम्हारा पत्र भी मिल गया है। वे जब उत्तर देने की मन स्थिति म होगी तो जवाब दगी। कल मैंने उन्हें बेहतर स्थिति में पाया।

मुझे अब याद नहीं कि मैंने बुक कपनी को लिखा था कि वह तुम्हें लार्ड रोनाल्डसे की नई किताबें भेज दे। लेकिन मैं ऐसा प्रबध करूगा कि वे तुम्हे जल्द मिल जाए। सर तैमेनी की पुस्तक दिलचस्प है, लेकिन मुझे उसका नाम 'नेशन इन मेकिंग' (निर्माणोन्मुख राष्ट्र) उसमे वर्णित विषय के उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। वह वास्तव में उनकी अपनी ही आत्मकथा है।

आशा है, तुम बेहतर अनुभव कर रहे होंगे। हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

65. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले सेंट्रल जेल
18-8-25

प्रिय दादा,

मुझे लबे समय से आपका पत्र नहीं मिला है। लगता है कि इधर आप काफी व्यस्त रहे हैं।

मैंने कलकत्ता कार्पोरेशन के सेक्रेटरी को वे पांच फाइलें भेज दी हैं, जो मेरे पास थीं। वे इस प्रकार हैं : नमक संबंधी फाइल-1, चना संबंधी फाइल-1; भूसा संबंधी फाइल-1 तथा मोटरगाड़ी विभाग के बारे में दो फाइलें—कुल पांच फाइलें। मैंने नमक, चना तथा भूसे के बारे में टिप्पणियां भी लिखी हैं, जो उपयोगी हो सकती हैं। मोटरगाड़ी विभाग के बारे में जो रिपोर्ट श्री संतोष कु. बसु ने लिखी थी, वह यहां मेरे पास नहीं है। मैंने सावधानी से खोज की है, लेकिन वह मुझे यहां नहीं मिली। जहां तक मुझे याद आता है, वह रिपोर्ट मुझे नहीं भेजी गई थी। अगर कहीं और न हो तो वह कार्पोरेशन स्ट्रीट में मेरे कार्यालय की मेज पर हो सकती है।

कृपया रमैया से कहें कि उसने अब तक जो किताबें भेजी हैं, उनकी सूची प्रेषित कर दे। मैं जानना चाहता हूं कि कार्पोरेशन कार्यालय से भेजी गई सभी किताबें मुझे मिल गई हैं या नहीं।

कुछ समय पहले आपने मुझे लिखा था कि आपने बुक कंपनी को मुझे कुछ किताबें भेजने के लिए कहा है। मुझे अभी भी किताबें नहीं मिली हैं।

मैं उन किताबों की सूची भेज रहा हूं, जो मुझे बुक कंपनी से चाहिएं। वे इन्हें अलग-अलग किश्तों में भेज सकते हैं। यह जरूरी नहीं है कि सभी किताबें एकमुश्त भेजी जाएं।

हमें बर्मा सरकार से सूचना मिली है कि हमें अपने ही खर्च से वाद्य-यंत्रों का प्रयोग करने की अनुमति नहीं दी जाएगी, क्योंकि उससे इस जेल का अनुशासन भंग होगा—लेकिन सुपरिंटेंडेंट ने स्वयं हमारे सामने इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स से कहा था कि उसे कोई आपत्ति नहीं है।

उच्च न्यायालय अवकाश के लिए कब बंद होगा। क्या आपने अपने कार्यक्रम के बारे में अंतिम निर्णय कर लिया है? मुझे पता चला है कि आप पूजा वाले सप्ताह में कोडलिया जाएंगे। हम यहां दुर्गा पूजा समारोह मनाने की तैयारी कर रहे हैं।

19-8-25

आपके 27-7-25 और 10-8-25 के पत्र मुझे कल मिले। मैं नहीं समझ पाया कि पहले पत्र में डाकखाने की मुहर 27-7-25 की लगी है और फिर भी वह इतनी देर बाद मिला। मैं इसके बारे में डी. आई. जी. को लिख रहा हूं।

आपका 27-7-25 का पत्र पाने से पहले ही मुझे रंगून के अखबारों से पता चल गया था कि श्रीमती दास को हमारा पत्र मिल गया था। उस पत्र के कुछ अंशों का अनुवाद 'एसोसिएटेड प्रेस' के तार द्वारा रंगून के अखबारों को भेजा गया था। लेकिन अनुवाद मुझे बहुत अच्छा नहीं लगा।

मुझे 'फारवर्ड' का देशबंधु विशेषांक मिल गया है। यह काफी अच्छा निकला है और इससे प्रकाशकों की प्रतिष्ठा बढ़ी है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि पिताजी का स्वास्थ्य अब बेहतर है। वे अवकाश कहां बिताने का विचार कर रहे हैं?

यहां का मौसम अब कुछ-कुछ अस्थिर है, लेकिन कुल मिलाकर ठंडा है। मुझे आशा है कि शीत ऋतु के आगमन तक गर्मी लौटकर नहीं आएगी। जैसा कि मैंने आपको अपने पिछले पत्र में लिखा था मैं अब पहले से कुछ बेहतर महसूस कर रहा हूं।

आशा है, आप सब सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

श्री एस सी बोस
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

66. शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय के नाम

माडले जेल
12-8-25

पूज्यवर,

मैंने मासिक 'बसुमति' में आपकी 'स्मृतिकथा' को तीन बार पढ़ा और वह मुझे बहुत सुंदर लगी। मानव-चरित्र की आपकी पैठ निस्संदेह बहुत गहरी है, देशबंधु से अपने घनिष्ठ परिचय और आत्मीयता में आपने जो रस और सत्य पाया उसे आप व्यक्त कर सके और सो भी अनेक छोटी-छोटी घटनाओं तथा प्रसंगों के चमत्कारी विश्लेषण द्वारा— इसी क्षमता के कारण आप इतनी सुंदर रचना प्रस्तुत कर सके।

जो लोग अंतरंग थे, वे अपने मन में न जाने कितनी पीड़ा को प्रसुप्त पाते हैं। हमारी अनेक गोपन कथाओं को शब्द देकर आपने न केवल सत्य के उद्घाटन में सहायता दी है, बल्कि हमारे मन का भार भी हल्का किया है। निस्संदेह 'एक पराधीन देश का सबसे बड़ा अभिशाप यह है कि मुक्ति के संग्राम में हमें परदेसियों से भी कहीं अधिक अपने ही लोगों से अधिक संघर्ष करना होता है।' इस उक्ति के पीछे जो निर्मम सत्य है, उसे कार्यकर्ताओं द्वारा गहराई से महसूस किया गया है और अब भी किया जा रहा है।

आपके लेख के निम्नलिखित शब्दों ने मुझे सबसे अधिक गहराई से स्पर्श किया — 'जिसे मनुष्य सबसे ज्यादा प्यार करता है और जिसके वह निकटतम है, उसकी याद से हृदय में गहन आलोड़न होता है—यह है जो अनुभव हो रहा है।' हम जो उसके साथ थे, अपने तीखे विषाद को शब्द नहीं दे पा रहे हैं; न हम उसे औरों के लिए अभिव्यक्त करना चाह रहे हैं। 'सचमुच, क्या कोई अपनी गहनतम भावनाओं की अभिव्यक्ति, अजनबियों से कर सकता है? अगर वे उपहास करें तो वह सह्य हो सकता है, लेकिन अगर वे उसके अभ्यंतर आशय को ही न हृदयंगम कर सकें तो यह असह्य स्थिति होती है और जैसा कि कहा गया है, यह महसूस होता है, 'अरसिकेषु—रस निवेदनम् शिरसि मा लिख'।'

एक और बात भी जो आपने लिखी है, मुझे बहुत अच्छी लगी। 'हम सब देशबंधु का काम कर रहे थे।' मैं सचमुच ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूं जो उनके विचारों से सहमत नहीं थे, लेकिन जो उनकी विशाल-हृदयता के चुंबकीय आकर्षण के कारण उनके लिए कार्यरत हुए बिना रह नहीं सकते थे। और वे भी मतैक्य न होने के बावजूद सभी के प्रति प्रेम-भाव रख सकते थे। मैंने उन्हें मानव-चरित्र को सामान्य सामाजिक कसौटी पर कसते हुए कभी नहीं देखा। उनका विश्वास यह था कि हमें मनुष्य को गुन-दोष समन्वित मानकर स्वीकार करना चाहिए और उसे प्यार देना चाहिए—और यह विश्वास उनके जीवन का आधार था।

बहुत से लोग सोचते हैं कि हम उनके अंधानुयायी थे। लेकिन वे अपने प्रमुख सहयोगियों से ही सबसे ज्यादा झगड़ते रहते थे। जहां तक मेरा सवाल है, मैं कह सकता हूं कि मैंने उनसे असंख्य प्रश्नों पर टक्कर ली। लेकिन मैं जानता था कि मैं चाहे जितना टकराऊं, मेरी निष्ठा और श्रद्धा अडिग रहेगी और मैं उनके प्यार से कभी वंचित नहीं होऊंगा। उनको यह भी आस्था थी कि चाहे जितने कष्ट और संकट आएं, वे मुझे अपने से दूर नहीं जाने देंगे। हमारे झगड़े मां (वासंती देवी) के बीच-बचाव से सुलझ जाते थे। लेकिन अफसोस कि हमारा वह सहारा अब नहीं रहा जिस तक हम अपनी शिकायतें पहुंचा सकते थे और जिनसे हम अपना असंतोष व्यक्त कर सकते थे।

आपने एक स्थल पर कहा है—'एक भी व्यक्ति, एक भी निधि, एक भी समाचार-पत्र उनके पक्ष में नहीं है, जो नगण्य हैं वे भी देशबंधु के प्रति दुर्वचन निकालें—यह कैसी दुर्दशा!' उन दिनों की स्मृतियां मेरे मन में आज भी ताजी हैं—जब गया कांग्रेस के बाद हम कलकत्ता लौटे थे तो बंगाल के सभी अखबारों में असत्य और अर्ध-सत्यों की बाढ़-सी आ गई थी। हमारे पक्ष में कुछ कहना तो दूर रहा, वे हमारा दृष्टिकोण प्रकाशित तक नहीं करते थे। तब तक स्वराज्य फंड प्रायः पूरी तरह निःशेष हो चुका था। जब पैसे की सख्त जरूरत थी, फंड में पैसे थे ही नहीं। जिस घर में कभी लोगों की भीड़ उमड़ा करती थी, उसकी ओर से एक-एक कर सबने, मित्रों ने और अमित्रों ने—मुंह मोड़ लिया। इस तरह हम मुट्ठी-भर लोग किसी न किसी प्रकार काम करते

रहे। बाद में जब उस घर की पहले वाली प्रतिष्ठा लौट आई तो बाहरी और अवसरवादी लोग फिर अपने जौहर की ललक लेकर मैदान में आ डटे—हम काम की बात करने का मौका तक नहीं मिल पा रहा था। बाहरी लोगों को नहीं मालूम और शायद कभी मालूम भी नहीं होगा कि फड को बनाने के लिए कितना जी-तोड परिश्रम किया गया, कैसे हमें अपना ही अखबार चलाना पडा, और कैसे जनमत को अपने पक्ष में किया गया। लेकिन जो हमारे महान आदोलन का प्रवर्तक, नेता और गुरु था, वह उसकी अतिम परिणति से पूर्व ही विलुप्त हो गया है। उनका पार्थिव शरीर उनकी आतरिक आग और बाहरी काम के भार का दुहरा दबाव सहन नहीं कर पाया।

बहुतों का यह मत है कि उनके सेवा-कार्य का उद्देश्य था, मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सब कुछ उत्सर्ग कर देना। लेकिन मैं जानता हू कि उनका लक्ष्य इससे भी ऊचा था। वे मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने पूरे परिवार को उत्सर्ग कर देना चाहते थे। और इसमें उन्हे काफी हद तक सफलता मिली। 1921 की गिरफ्तारियो के दौरान उन्होने अपने मन में दृढ-सकल्प कर लिया था कि वे अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को कारागार भेजेगे और स्वय भी उनके साथ शामिल हो जाएगे। जब तक वे अपने पुत्रों को गिरफ्तारी के लिए न भेजें, तब तक वे दूसरों के बेटों को नहीं भेज सकते—मेरे विचार से यह उनके आदर्शों के सदर्भ में बहुत ज्यादा सकीर्ण विचार था। हम जानते थे कि उन्हें शीघ्र पकडा जाएगा। इसलिए हमने कहा कि अपनी गिरफ्तारी से पहले अपने बेटे को गिरफ्तारी के लिए भेजना बिल्कुल अनावश्यक है और हम तब तक किसी महिला को गिरफ्तारी के लिए पेश न होने देंगे, जब तक एक भी व्यक्ति जेल से बाहर बच रहा है। लबी बहस के बाद भी कोई निर्णय नहीं लिया जा सका—हम किसी भी तरह उनकी धारणा को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अत मे उन्होंने कहा, 'यह मेरा आदर्श है—इसका पालन होना ही है।' इस पर हमने प्रतिवाद के साथ आदर्श को शिरोधार्य किया।

उनकी बेटी विवाहिता थी—उस पर उनका कोई अधिकार या दावा नहीं था और इसलिए वे उसे जेल नहीं भेज सकते थे। छोटी पुत्री की मगनी हो चुकी थी और इस विषय में बडी तेज बहस हुई कि क्या उसे जेल जाने के लिए कहा जा सकता है। वे ऐसा करना चाहते थे और बेटी भी बहुत चाहती थी कि वह ऐसा करे, लेकिन बाकी सभी लोगों की राय थी कि उसे जेल नहीं जाना चाहिए। कारण यह था कि एक ओर तो वह बीमार थी और दूसरी ओर उसकी मगनी हो चुकी थी, और विवाह भी शीघ्र होने वाला था। इस मामले में देशबधु को आम राय के आगे झुकना पडा। अतत यह तय हुआ कि भोम्बल सबसे पहले जेल-यात्रा करेगा और उसके बाद बासती देवी और उर्मिला देवी तथा स्वय वे, जब भी आह्वान होगा, जाने के लिए तैयार रहेंगे।

बाहर क्या हुआ, इसके विषय में सभी को विदित है। लेकिन उन कार्यों के पीछे कौन-सी भावनाए थीं, कौन से आदर्श थे, क्या प्रेरणाए थीं, इसका अनुमान लोगों को था—क्योंकि वे सब आम जनता की नजर से ओझल थे? उनका मिशन केवल उन्हीं

तक सीमित नहीं था, उसके अंतर्गत पूरा परिवार ही शामिल था। मेरी राय है कि किसी महापुरुष की महानता बड़ी-बड़ी घटनाओं की अपेक्षा छोटे-छोटे प्रसंगों द्वारा अधिक अभिव्यक्त होती है। मैंने 'वसुमति' के आषाढ़ और श्रावण माह के अंकों में देशबंधु के सहयोगी कार्यकर्ताओं द्वारा लिखे गए लेखों को ध्यान से पढ़ा है। अधिकांश लेख प्रायः सतही हैं और घिसी-पिटी शब्दावली से युक्त हैं। केवल आपने छोटे-छोटे प्रसंगों के जरिए देशबंधु के सही व्यक्तित्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसलिए मैं कैसे कहूं कि आपके लेख को पढ़कर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई—मैंने देशबंधु के शिष्यों और सहयोगियों से इससे अधिक की आशा की थी। अच्छा होता कि वे कुछ लिखते ही नहीं।

कभी-कभी मेरे मन में मेरी इच्छा के विरुद्ध भी यह विचार उठने लगता है कि देशबंधु के देशवासी और अनुयायी उनके असामयिक निधन के लिए अंशतः उत्तरदायी हैं। अगर उन्होंने उनका भार कुछ हद तक बंटाया होता, तो शायद उनके लिए यह जरूरी न होता कि वे काम का इतना बड़ा बोझ उठाएं, जो जानलेवा बन जाए। लेकिन हमारे तौर-तरीके ऐसे हैं कि जब हम किसी को नेता मान लेते हैं तो हम उस पर इतना ज्यादा बोझ डाल देते हैं और उससे इतनी आशाएं लगाने लगते हैं कि उसके लिए उस भार को वहन करना या उन समस्त आशाओं की पूर्ति करना मानवीय क्षमता की दृष्टि से असंभव हो जाता है। हम सभी राजनैतिक दायित्व नेता के हाथों सौंपकर आत्मतुष्ट होकर बैठ जाते हैं।

खैर, मैंने जहां से पत्र की शुरूआत की थी, वहां से कहीं और ही बहक गया। यह केवल मेरी ही नहीं, बल्कि यहां मौजूद हम लोगों की इच्छा तथा अनुरोध है कि आप अपने संस्मरणों की तरह ही देशबंधु से संबंधित अन्य अनेक प्रसंगों के विषय में लिखें। आपकी मूल सामग्री बहुत जल्द समाप्त होने वाली नहीं है और इसलिए हमें कोई आशंका नहीं है कि उसकी कमी पड़ जाएगी। और अगर आप लिखेंगे तो सुदूर मांडले कारागार के मुट्ठी-भर बंगाली राजबंदी आपके लेखों को बहुत रुचि और आदर से पढ़ेंगे, इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं।

मैं शायद यहां बहुत समय तक नहीं रहूंगा। लेकिन मुझे अब मुक्ति की वैसी अभिलाषा नहीं रह गई है। जब मैं कारागार से बाहर जाऊंगा तो मुझे जो समस्याएं की शांति चारों ओर से घेर लेंगी, उनकी आशंका से मेरा मन घबरा उठता है। मैं यहां किसी न किसी तरह अपने दिन गुजार रहा हूं—अंशतः सुख से, अंशतः दुख से, और यादों तथा स्वप्नों के बीच। मैं नहीं कह सकता कि इस पिंजरे की लौह-शलाकाओं से सर टकराने पर जो पीड़ा महसूस होती है, उसमें आनंद का कोई अंश नहीं है। उस पीड़ा के पीछे से यह अनुभूति झांक उठती है कि यह मेरा अपनी मातृभूमि के प्रति प्यार था जो मुझे यहां ले आया है। इसीलिए तो, मेरे विचार से, अगर दिल खून के आंसू रोता है तो उसमें भी हमें सुख की कुछ पुलक मिलती है, कुछ शांति मिलती है और मिलता है यह अहसास कि कुछ उपलब्धि हुई है। मेरी मनःस्थिति इस समय ऐसी नहीं है कि मैं उस निराशा, चिन्ता और दारिद्र्य का सामना कर सकूं, जो बाहर मेरी प्रतीक्षा में है।

अगर मैं यहा नहीं होता तो मैं महसूस नहीं कर पाता कि अपनी 'सोनार बाग्ला' भूमि से मुझे कितना प्यार है। मुझे कभी-कभी लगता है कि कवींद्र रवींद्र ने निम्नलिखित पंक्तियां मानो बंदियो की भावनाओ को दृष्टि मे रखकर ही लिखी थीं

आमार सोनार बाग्ला, आमि तोमाए भालोबासी
चिर दिन तोमार आकाश, तोमार बातास
आमार प्राणे बाजाए बाशी
(हे मेरे सोनार बाग्ला देश, मैं तुम्हें प्यार करता हू
तुम्हारा आकाश, तुम्हारी हवाए
चिर दिन मेरे प्राणो मे
बशी-सी निनादित रहती हैं।)

जब कभी, एक क्षण के लिए भी, बगाल का इंद्रधनुषी सौंदर्य मेरे मन पटल पर उभरता है तो मुझे अनुभव होता है कि यह सब कष्ट सहना और मांडले आना सार्थक हो गया है। पहले कौन सोचता था कि बग-भूमि मे, उसके जल म उसके आकाश में, उसकी वायु मे इतना सौंदर्य घुला हुआ है।

मैं नहीं जानता कि मैंने यह पत्र क्यो लिखा है। मुझे पहले यह नहीं सूझा कि मैं आपको लिखू। लेकिन आपके लेख पढने के बाद मेरे मन मे कुछ विचार उठे और मैंने उन्हे लिख दिया। और जब वे लिखे गए तो मैंने सोचा कि क्यो न उन्हें भेज दिया जाए? कृपया हम सबके प्रणाम स्वीकारे। अगर आप चाहे तो उसके उत्तर दें। मैं अपने आपमें इतना आत्म-विश्वास अनुभव नहीं कर रहा हू कि आपसे उत्तर की माग करू। लेकिन अगर आप उत्तर देना चाहे, और इस आशा से कि आप चाहगे—मैं नीचे अपना पता दे रहा हू

द्वारा डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
13, इलीसियम रो,
कलकत्ता।

67. मांडले सेंट्रल जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

प्रिय महोदय, 18-8-25

मैं आपको कलकत्ता कार्पोरेशन की कुछ फाइल भेज रहा हू, जिन्हे सेक्रेटरी, कलकत्ता कार्पोरेशन, 5, कार्पोरेशन स्ट्रीट, कलकत्ता प्रेषित किया जाना है। उन्हे सी आई डी के द्वारा या सीधे, जैसा आप चाहें—भेजा जा सकता है। जो भी हो, मैं आभारी होऊगा, यदि आप आदेश दे कि फाइलो को ठीक से पैक करके भेजा जाए। ये कागजात महत्वपूर्ण हैं और इनका रास्ते मे खो जाना या इन्हें नुकसान पहुचना ठीक नहीं होगा।

आपका,
एस सी बोस

68. डी. आई. जी., सी. आई. डी., बंगाल के नाम

मांडले जेल
19-8-25

प्रिय महोदय,

मैं आपको एक लिफाफा भेज रहा हूं जो अपनी कहानी आप कह देगा। अंदर रखे गए पत्र पर 27-7-25 तारीख पड़ी है। डाक की मुहर और आपके हस्ताक्षरों में भी यही तारीख अंकित है। जब आपने पत्र को पास कर दिया था तो स्पष्ट है कि बाद में 10-8-25 को किसी अन्य अधिकारी ने भी इसे सेंसर किया था। यह पत्र मुझे कल यानी 18-8-25 को मिला और इसके साथ मुझे इसको भेजने वाले का 10-8-25 का पत्र भी मिला। आभारी होऊंगा, यदि आप इस मामले की छानबीन करें।

आपका,
एस. सी. बोस

संलग्न :

एक लिफाफा

एस. सी. बोस

69. नृसिंह चिंतामणि केलकर के नाम

(इस पत्र को सेंसर द्वारा इस आधार पर रोक लिया गया था कि इसे 'सरकार के विरुद्ध आलोचनात्मक' पाया गया था—संपादक)

मांडले सेंट्रल जेल,
अपर बर्मा
20-8-25

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको लिखने की सोचता रहा हूं, जिसके कारण केवल यह रहा है कि मैं आप तक ऐसी जानकारी पहुंचा दूं कि जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहां गत जनवरी से कारावास में हूं। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) में मुझे मांडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास-काल का अधिकांश भाग मांडले जेल में ही गुजारा था। जब तक मैं यहां सशरीर आ ही नहीं गया, तब तक चहारदीवारी में यहां के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता रहस्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने, मेरी नम्र राय में, उन्हें शंकर और रामानुज जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे, वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने वार्ड की तरह वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहां पहुंचने के कुछ ही क्षण बाद मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में, अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात अनुपस्थिति के बावजूद, मुझे पवित्र स्मृतियां राहत और प्रेरणा देंगी। ऐसी अन्य जेलों की तरह यह जेल भी कुरूप, नीरस और अरुचिकर है, लेकिन मेरे लिए यह एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहां भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम सभी जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहां एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने-जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सांत्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहां रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया। और ये भेंटें भी पुलिस और जेल-अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुंचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा, उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन बहुत मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में आगे बढ़ रहा है।

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा, उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहां थे, मांडले का मौसम तब भी प्राय: ऐसा ही रहा होगा, जैसा कि वह आजकल है। और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहां का जलवायु शिथिल कर देने वाला और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाला है और धीरे-धीरे पर अटूट रूप में वह व्यक्ति की जीवनी-शक्ति को सोख लेता है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना अधिक कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएं सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी-

छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की-सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं। वे 'गीता' की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसीलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उनके बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय-समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूं कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था और हर बार मैंने अपने आपसे पूछा कि 'अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।' यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वो जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना बंदी-जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है, सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। दास-वृत्ति ठुकरानी होती है और फिर भी मानसिक संतुलन अडिग बनाए रखना होता है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छा-शक्ति का वरदान मिला था, उस बंदी-जीवन के शक्ति-हननकारी प्रभावों से बच सकता था, उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग-निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

अगर किसी को प्रत्यक्ष अनुभव पाना है कि इतने ज्यादा प्रतिकूल, शक्तिहारी और दुर्बल बना लेने वाले वातावरण में लोकमान्य के 'गीता भाष्य' जैसे प्रकांड पांडित्यपूर्ण एवं महान ग्रंथ की रचना करने के लिए कितनी प्रबल इच्छा-शक्ति, साधना की गहराई एवं सहनशीलता अपेक्षित है, तो उसे जेल में आकर रहना चाहिए। जहां तक मेरी अपनी बात है, मैं जितना ही इस विषय में चिंतन करता हूं, उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूं। आशा करता हूं कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आंकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद—इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और फिर भी जिसने अपनी समस्त बौद्धिक क्षमता एवं संघर्ष-शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी-जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था। और अगर मैं कहूं तो मेरा विश्वास है कि जैसे देशबंधु के शरीरांत का क्रम अलीपुर केंद्रीय कारागार में आरंभ हो गया था, वैसे ही लोकमान्य ने जब मांडले को अंतिम नमस्कार किया था, तो उनके जीवन के

दिन गिने-चुने ही रह गए थे। निस्सदेह यह एक गभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषो को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मे यह भी सोचता हू कि क्या वह दुखद दुर्भाग्य किसी न किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक,
आपका स्नेहभाजन
सुभाष सी बोस

20-8-25
श्रीयुत् नृसिह चितामणि केलकर,
पूना।

70. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
24-8-25
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बगाल।

38/1, एल्गिन रोड
22 अगस्त 1925

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा पहली तारीख का पत्र 11 तारीख को मिला।

मैंने रमैया से कहा है कि वह तुम्हे भेजी गई किताबो की पूरी-पूरी सूची तुमको भेज दे।

हा, मैंने 'बसुमति' के आषाढ अक में राखाल दास का लेख देखा है। इसमे वर्णित तथ्य सही हैं। लेख मे वैयक्तिक सस्मरणों की बहुतायत है और इसीलिए वह और ज्यादा दिलचस्प बन गया है।

मेरा विश्वास है कि मैं तुम्हे लिख चुका हू कि मैं 29 मई को कुर्सियाग गया था और वहा 2 जून को उनसे अतिम बार मिला था। उन्हें जिस किसी ने भी देहावसान से तीन दिन पहले देखा था, उसे विश्वास ही नहीं हो सकता था कि उनका अत इतना सन्निकट है। हमने विविध विषयो पर बातें की थीं और अगर तुम कभी भी देशबधु की जीवनी लिखो तो मैं तुम्हे उनके जीवन के अतिम कुछ दिनो के बारे मे अच्छी सामग्री दे सकता हू।

मैं 'नारायण' का ग्राहक तो था लेकिन यह नहीं कह सकता कि मैं उसे बहुत ज्यादा पढता था। मैं नहीं समझता कि 'नारायण' का पूरा सैट हमारे पास है। घर में कुछ छुट-पुट प्रतिया पडी होगी। क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हारे लिए पूरा सैट खोज निकालू?

मैं बाबू गिरिजा शंकर राय चौधरी से हाल ही में नहीं मिला हूं। मैं नहीं कह सकता कि उनका विचार देशबंधु की जीवनी लिखने का है या नहीं।

श्री पृथ्वीश चन्द्र राय ने कुछ समय पूर्व घोषणा की थी कि वे देशबंधु की जीवनी लिखना चाहते हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि उस घोषणा की ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

बुक कंपनी ने मुझे लिखा है कि उसने तुम्हें लार्ड रोनाल्डसे की रचनाएं प्रेषित कर दी हैं। उनका पत्र संलग्न है।

क्या तुम्हारे पास आर्थर ग्रिफिथ्स की असहयोग के बारे में पुस्तक है? वह मुझे यहां पुस्तकालय में नहीं मिली।

मुझे सूचित करो कि तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है। हेमंत कुमार सरकार को उत्तर देते हुए सरकार ने कहा कि जब से तुम वहां ले जाए गए, तब से अब तक तुम्हारा वजन 10 पौंड बढ़ा है। मैं समझता हूं कि तुमने मुझे प्रायः दो माह पूर्व लिखा था कि तुम्हारा वजन 6 पौंड घटा है।

तुमने अपनी बड़ीदीदी को जो पत्र लिखा है, उसे मैंने दिलचस्पी से पढ़ा है।

हम सब ठीक हैं। मैं अभी तय नहीं कर सका हूं कि कलकत्ता से कब जाऊंगा।

तुम्हारा सस्नेह,

शरत

71. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड

29-8-25

9 बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 15 तारीख का पत्र अभी मिला। ढाका जा रहा हूं। वहां मैं तीन दिन रहूंगा और ख्याल है कि शुक्रवार को सवेरे वापस आ जाऊंगा। मेरे प्रतिवादी के वकील सर विनोद मित्र और सुधीर राय हैं।

मैंने रमैया से कह दिया है कि वह तुम्हें कार्पोरेशन कार्यालय से भेजी हुई पुस्तकों की सूची तैयार करके तुमको प्रेषित कर दे।

मैं तुम्हारे द्वारा भेजी हुई किताबों की सूची बुक कंपनी को भेज रहा हूं। मैं उनसे कहूंगा कि वे किताबें तीन किश्तों में भेज दें।

मैं समझता हू कि मैं दुर्गा पूजा के बाद ही कुर्सियाग जाऊगा। एकमात्र विकल्प है—पूर्व बगाल की स्टीमर द्वारा यात्रा।

हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा अत्यत स्नेहपूर्वक,
शरत
3-9-25

72. मांडले सेंट्रल जेल के सुपरिंटेडेट के नाम

प्रिय महोदय, 3-9-25

श्री पेनफोर्ड ने हमे अभी-अभी यह सूचना भेजी है कि बगाल सरकार दुर्गा पूजा के लिए कोई अतिरिक्त धन नहीं स्वीकृत कर सकेगी। इससे गभीर स्थिति उत्पन्न हो गई है, क्योंकि उक्त उत्सव मनाना हमारे लिए अनिवार्य है। हम इस मामले पर आपसे तथा डी सी से कल सवेरे अवश्य ही बात करना चाहते हैं। इसलिए हम आभारी होगे, अगर आप डी सी से हमारी ओर से अनुरोध करें कि वे अवश्य आए। यह मामला इतना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक दिन बहुमूल्य है। हमें इस पर भी प्रसन्नता होगी कि आप गैर-सरकारी विजिटर से अनुरोध करे कि वह यथाशीघ्र यहा पधारें।

हमें आशा है कि इस बीच प्रतिमा-निर्माण का काम रोका नहीं जाएगा।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस
(राजबदियो व नजरबदियो की ओर से)

73. विभावती बोस के नाम

मा दुर्गा सदा सहाय

माडले जेल
11-9-25

प्रिय मेजबहू दीदी,

मुझे आपका पत्र पाकर अपार हर्ष हुआ। मुझे इस बात से प्रसन्नता हुई कि आपको मेरा पत्र रुचिकर लगा, क्योंकि मुझे कभी-कभी चिता सताने लगती है कि कहीं सुदीर्घ कारावास के फलस्वरूप मैं हसने-हसाने की अपनी बात तो नहीं भूल रहा हू। शास्त्र का कथन है 'रसो वे स ', अर्थात् परमात्मा सर्वव्यापी आनद-स्वरूप है। इसलिए अगर कोई विनोद की आदत भुला देता है तो वह, निस्सदेह जीवन के सार-आनद को ही खो

देता है, तब उसका जीवन निरर्थक बन जाता है, जिसमें कोई प्रसन्नता शेष नहीं रह जाती और विषाद घर कर लेता है। अगर मेरे पत्र आपको खुशी पहुंचाते हैं, तो मैं यह मानूंगा कि दूसरों को प्रसन्न कर सकने की क्षमता मैंने अभी भी नहीं खोई है। विश्व की महानतम विभूतियों, जैसे देशबंधु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि ने जीवन के अंतिम दिनों तक, बल्कि उस दिन तक भी जब उनको प्रयाण करना था, हंसने-हंसाने की बात और सहज प्रसन्नता का दामन नहीं छोड़ा। यही आदर्श है, जिसका अनुकरण हमें करना चाहिए।

खैर, जाने दीजिए, अब मैं उपदेश देना बंद करता हूं और कथा-कहानियों पर आता हूं। यहां ऐसी-ऐसी घटनाएं घट चुकी हैं कि जब आप उनके बारे में सुनेंगी तो आपको शायद लगेगा कि मैं कोई उपन्यास या नाटक सुना रहा हूं। हमारे मलय को अचानक रिहा कर दिया गया और वह स्वगृह के लिए प्रस्थान कर गए हैं। उन्हें सात वर्ष की कैद की सजा मिली थी और उन्होंने साढ़े तीन वर्ष कारावास में बिताए। नए सरकारी रेगुलेशनों के अनुसार लंबी सजा वाले कैदियों को उनके द्वारा आधी सजा भुगतने के बाद रिहा किया जा सकता है। इस नियम के अनुसार एक दिन अचानक खबर आई कि मलय को अगले दिन मुक्त कर दिया जाएगा। आप उस व्यक्ति की मनःस्थिति की कल्पना कर सकती हैं, जिसे अभी आधी सजा भुगतनी शेष हो और अचानक समाचार मिले कि वह कल से मुक्त वायु में सांस लेगा। जब सहसा ऐसे लोगों की यादें और छवियां किसी के मनःपटल पर कौंध जाएं जिन्हें उसने न जाने कब से नहीं देखा-सुना हो और न जाने कब तक देखने-सुनने की आशा न हो, तो ऐसा व्यक्ति शायद हर्ष से पागल हो उठेगा। हमने आशा की थी कि मलय सहसा अपनी रिहाई का समाचार पाकर खुशी से नाच उठेगा। लेकिन जब उसने वैसा नहीं किया तो हमें महसूस हुआ कि वह एकदम अभिभूत हो गया है। जब उससे पूछा गया कि वह कैसा अनुभव कर रहा है तो वह बस इतना ही कह सका, 'कौंदे, कौंदे', अर्थात् 'अच्छा, अच्छा'।

रिहाई से एक दिन पूर्व मैंने उसे अपने पास बुलाया और उसके परिवार के बारे में पूरी जानकारी चाही। उसने कहा कि उसके दो पत्नियां, दो लड़कियां और तीन बेटे हैं। एक पत्नी निःसंतान है। बहुत लंबे समय से, यानी कोई चार साल से, उसे उनकी कोई खबर नहीं मिली है। इसलिए रिहाई के समय उसे यह चिंता हो रही है कि सब कुशल-मंगल है या नहीं। वे जीवित हैं या नहीं, और जीवित हैं तो क्या सकुशल हैं— यही विचार हर समय बना रहता था। लेकिन जब उसकी रिहाई होने ही वाली थी, एक ओर तो वह यह सोचकर खुश था, दूसरी ओर उसके मन में तरह-तरह के चिंताजनक विचार प्रवेश कर रहे थे। इसी कारण से उसे रिहाई की खबर पाकर भी बहुत ज्यादा उल्लास नहीं अनुभव हुआ।

फिर मैंने उसकी सामाजिक स्थिति का पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह एक गांव में जमींदार या उनका राजा है। किसी समय वह लोग स्वाधीन थे और बर्मा के राजाओं से स्वाधीनता के लिए लड़े थे। बाद में ब्रिटिश लोगों ने उन पर अधिकार जमा लिया। इस बीच, लगभग सात वर्ष पूर्व, उनको ब्रिटिश शासकों ने टैक्स न देने के सवाल

पर टक्कर हो गई। उस लडाई मे दोनो ही पक्षों के बहुत से लोग मारे गए। अत म उसने हार मान ली और भाग निकला। लगभग तीन वर्ष तक अज्ञातवास में रहने के बाद उसे और उसकी मा को एक सौतेले भाई की धोखेबाजी के कारण पकड लिया गया। उसके भाई को आजीवन कारावास और उसे सात वर्ष की कैद की सजा दी गई।

इसके बाद मलय ने मुझे अपने शरीर पर घाव दिखाए जो युद्ध भूमि मे उसे मिले थे। इस पर हमने बर्मा के इतिहास मे खोजबीन की और पाया कि उसने जो बताया है, वह सच है। उसकी रिहाई के बाद मुझे अन्य कैदियो से पूछ-ताछ करने पर पता चला कि उसका कहा एक शब्द भी मिथ्या नहीं था।

जब हमें यह पता चला कि हमने एक गाव के राजा से मेहतर का काम लिया था तो बहुत लज्जा आई। अत मे हमने पूछा कि उसने यह काम क्यो स्वीकार कर लिया। उसने बडे दुख के साथ कहा, 'मैं कर भी क्या सकता था? जेल के आदेश ही ऐसे थे। क्या वहा मैं मनुष्य के रूप मे रह रहा हू? मुझे कुत्ता बना दिया गया है। जब मैं मुक्ति पाऊगा तब फिर आदमी बन जाऊगा।'

उसकी दुखगाथा सुनने के बाद हमने उससे पूछा कि भविष्य में वह क्या करना चाहता है। काफी विचार के बाद उसने कहा — 'मैं अभी कुछ तय नहीं कर पाया हू। मैं नहीं जानता कि मेरा सौतेला भाई फिर दुश्मनी पर उतारू होगा या नहीं, क्योकि मेरी अनुपस्थिति में सपत्ति का सुख वही उठा रहा था। भगवान न करे, लेकिन लगता है कि मेरे भाग्य मे अभी भी ढेर-सी मुसीबते हैं।'

जब वह जेल से बाहर जा रहा था तो हमने पूछा कि क्या वह घर पहुच कर हमे भूल जाएगा? उसने भर्राए गले से कहा 'जब तक मेरी सास मे सास है, मैं आपके प्यार को नहीं भूलूगा—और मैं आपके बारे मे अपने बच्चो को और नाती-पोतो को बताऊगा।'

अब आप ही बताइए कि यह कहानी सच्ची लगती है या उपन्यास जैसी। अग्रेजी की एक कहावत है कि सच्चाई काल्पनिक कथा से अधिक विचित्र होती है। ऐसी ही है यह सच्चाई।

मैं, बर्मी भाषा अच्छी तरह नहीं सीख पाया हू—बस सामान्य बातचीत करने योग्य सीख ली है। बर्मी-बदियो मे कुछ या तो अग्रेजी या हिदुस्तानी जानते हैं और हम बर्मी को समझने के लिए उन्हीं की मदद लेते हैं। कुछ कठिनाई होते हुए भी कुल मिलाकर हम काम चला लेते हैं।

टेनिस कोर्ट होने के कारण हमें शारीरिक व्यायाम का कुछ मौका मिल जाता है अन्यथा शायद मैं गठिया का मरीज बनकर घर लौटता। लेकिन फिर भी लगता है कि गठिया के चिन्ह हमारे अदर प्रकट होने लगे हैं। पहले हम बेडमिटन खेल सकते थे। मैं बेडमिटन को लडकिया का खेल समझता था और इसीलिए कभी उसे खेलता नहीं था। लेकिन कारागार में हर चीज उलट-पुलट जाती है और इसलिए हम फिर अपने

बचपन के दिनों की ओर लौटे तथा बेडमिंटन खेलना शुरू किया। मुझे स्वीकार करना होगा कि शुरू-शुरू में मुझे कुछ झेंप आई। लेकिन जैसा कि शास्त्रों ने कहा है—'अभावे शालि चूर्णो वा शर्करा च गुड़ तथा।' शक्कर न मिले तो पंजीरी में गुड़ डाल लो। इसलिए अन्य खेलों की सुविधा न होने पर हमें बेडमिंटन से संतोष करना पड़ा। हम हर समय जेल के भीतर की एक छोटी जेल में रहते हैं। हमें अपने वार्ड के बाहर के किसी व्यक्ति से मिलने की छूट नहीं है। अधिकांश जेलों में हमें जो वार्ड अलाट किए जाते हैं, वे इतने ही लंबे-चौड़े रहे हैं कि हम बेडमिंटन ही खेल सकें। यहां कुछ ज्यादा जगह है, इसलिए टेनिस खेलना संभव हो सका है। फिर भी, एक दिक्कत यह है कि गेंद अक्सर उछल कर दीवालों के उस पार या बाहर चली जाया करती है। जो गेंद दीवालों से टिप्पा खाती है, वह लौटकर कोर्ट में आ जाती है। परंतु कुछ न होने से तो इतना भी होना अच्छा ही है—ना मामा से अच्छा काना मामा।

तालाब में और पानी भरने का कोई उपाय नहीं है। कारण यह है कि अगर थोड़ा सा भी ज्यादा पानी भरा जाए तो वह उमड़कर निकास वाली नाली से बह निकलता है। और समय-समय पर हमें तालाब को खाली करके उसे ताजे पानी से भरना होता है। वास्तव में कोई कारण नहीं कि हम इसे जलाशय न कहकर तालाब कहें। लेकिन अपने आपको यही कहकर हम तसल्ली दे लेते हैं कि हम पोखर में नहा रहे हैं।

यहां दुर्गा पूजा के लिए तैयारियां हो रही हैं। हमें आशा है कि हम यहां मां की पूजा कर पाएंगे। लेकिन खर्चे के बारे में अधिकारियों से झगड़ा चल रहा है। देखें कि क्या होता है। कृपया पूजा के वस्त्र यहां भेजना न भूलें—हमें यहीं तो आखिर 'बिजोया दशमी' मनानी है।

हमारे होटल में सभी कुछ मिल जाता है। अभी पिछले दिनों हमारे मैनेजर ने जलेबियां खिलाईं और हमने उसे हार्दिक आशीर्वाद दिया कि वह सदा ही जेल के अंदर रहे। कुछ समय पहले उसने हमें रसगुल्लों का आनंद दिया था, गुल्ले यद्यपि रस में खूब डूब-डूब कर रहे थे, परंतु उनके भीतर रस का संचार नहीं हो पाया था और अगर आप उन्हें फेंक कर किसी को मारते तो डर था कि उसकी हड्डी टूट जाएगी। फिर भी हमने उन वज्र-कठोर रसगुल्लों को गले से नीचे बिना एक भी आंसू बहाए उतार दिया और कृतज्ञतापूर्वक मैनेजर के दीर्घ-कालीन जीवन की कामना की।

हम बंगाली हैं और इसीलिए हम बंगाली ढंग से खाना पकाते रहे हैं। मैनेजर इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि पपीता सब्जियों की साम्राज्ञी है—और इसलिए पपीता सर्वव्यापी है, शोरबे में, कढ़ी में, चटनी में, अन्यत्र सभी जगह। और चूंकि हमारा मैनेजर नीम हकीम भी है, उसने यह फतवा दिया है कि आप जितना ही अधिक पपीता खाएंगे, आपका हाजमा उतना ही अच्छा रहेगा। सीधे शब्दों में कहा जाए तो एक जैसी चीजों का ही घोल-मेल रोज चलता रहता है। हमें यहां बंगाली भोजन बनाने के लिए सामान्य चीजें उपलब्ध नहीं हैं। सब्जी के लिए बस पपीता, बैंगन, पालक—फिर बैंगन और पपीता।

भगवान को धन्यवाद है कि मुझे भेड और मुर्गी का मास (मटन और चिकेन) खाने की आदत है, इसलिए मुझे मैनेजर के प्रयास की प्रशसा करनी ही पडेगी—अगर ऐसा न किया जाए तो क्या परिणाम होगा, यह कोई भी सोच सकता है।

अगर मैं यह न लिखू कि हमारे बार-बार अनुरोध करने पर मैनेजर ने हमें — 'ढोंकार डालना', 'छेनार कलिया' और 'छेनार पुलाव' खिलाया, तो यह हमारी अकृतज्ञता मानी जाएगी। इसलिए हम सब उसका गुणगान करें। जिनका काम ही कीचड उछालना है, उन्हें भी उसकी बदनामी नहीं करनी चाहिए।

आपने बगीचे के बारे मे पूछा है। यहा का बगीचा बडी ही शोचनीय हालत मे है। हमने कुछ फूलों के बीज बोए थे, लेकिन दीमकों और अन्य कीडो की कृपा से वे अधिक उगे ही नहीं। जो थोडे से पेड बचे रहे उन्हें मुर्गियों ने साफ कर दिया। परिणामस्वरूप अब बस सूरजमुखी तथा उसी के जैसे एक या दो अन्य प्रकार के पौधे बच रहे हैं। कुछ पौधे रजनीगधा के भी हैं, लेकिन उनमें सुगधि का नाम नहीं। समय-समय पर मैं सुगंधि और सगीत के अभाव का अनुभव करता रहता हू। लेकिन कोई करे भी तो क्या?

दुनिया के इस हिस्से म अच्छी चाय नहीं मिलती—इसलिए हमने व्यापारी से कहा है कि यह कलकत्ता से मगाकर दे। यहा उपलब्ध लिप्टन या ब्रुकबाड की चाय पीने योग्य नहीं होती और उसका आयात इग्लैंड से किया जाता है। मैंने अपने पिछले पत्र म खलवट्टे के बारे मे लिखा था। कविराजजी की औषधियो के सेवन के लिए मुझे एक अच्छा खलवट्टा चाहिए और कृपया शैलेन काका से कह कि व मुझे चाय के किसी अच्छे व्यापारी का पता लिख भेजें। हम दार्जिलिग की 'आरेज पेको ब्राड' चाय पीते हैं। हम स्थानीय व्यापारी से कहेंगे कि वह कलकत्ता म उसी विशेष ब्राड के लिए आर्डर दे।

यहा की हिल्सा मछली अत्यत अद्भुत होती है। वह ठीक गगा मे पाई जाने वाली हिल्सा जैसी दिखती है। लेकिन स्वाद में वह बगाल या गगा की हिल्सा जैसी कतई नहीं होती। यह कहना मुश्किल हो जाता है कि हम कौन-सी मछली खा रहे हैं। झींगा मछली यहा मिल तो जाती है, लेकिन उसके दाम बहुत ज्यादा होते हैं।

मुझे आशा है कि घर म सब कुशल-मगल हैं। काची मामा अब कहा हैं? उनकी प्रक्टिस कैसी चल रही है? कृपया मेज दादा से कह कि मैंने जो पैसे मगाए थे, उन्हें भेज दे। क्या दुर्गा पूजा के समय आप हमारे ग्राम-निवास जाएगी? मेरे त्रितीय सचिन के बारे में क्या हुआ? वह शायद अब कटक में हैं। क्या अरुण और गौरा के विवाह तय हो गए हैं? बडी दीदी और उनका परिवार कैसा है? आपका स्वास्थ्य कैसा है?

आपने मेरे वस्त्रों के बारे मे पूछा है। क्या आपको नहीं मालूम कि हम सम्राट के मेहमान हैं? फिर भला हमें किसी चीज की कमी कैसे हो सकती है? अगर कोई

कमी रह जाएगी तो साम्राज्य की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा। क्या ऐसा भी संभव हो सकता है?

आपने मेरे स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहा है। दिन किसी न किसी तरह बीतते ही जा रहे हैं। गर्मी में काफी परेशानी रही थी और स्वास्थ्य गिर गया था। मैंने स्थानांतरण के लिए आवेदन किया, लेकिन वह स्वीकार नहीं हुआ। अधिकारी शायद यह सोचते होंगे कि मैं बीमारी का बहाना कर रहा हूं, या वे मुझे बेहद अहसानफरामोश मान रहे होंगे, आखिर सरकार मुझे यहां निःशुल्क खाना दे रही है, कपड़े दे रही है और मैं उसका कृतज्ञ होने की जगह स्थानांतरण के लिए तड़प रहा हूं। जो भी हो, अब मुझे स्थानांतरण नहीं चाहिए। गर्मी अब कम हो गई है और इसलिए मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं। अगर मंदाग्नि की शिकायत और न बढ़ी तो आशा है कि सर्दियों में मेरी तबीयत ठीक रहेगी। हम यहां से बर्मा के सम्राट का महल देख सकते हैं। और हम जिस कारागार में रखे गए हैं, वह उसके दुर्ग का ही एक भाग है। मुझे अक्सर अपने अतीत के गौरव का स्मरण हो आता है और जब मैं अपनी वर्तमान अवस्था पर विचार करता हूं, तो बरबस आंखों से आंसू निकल पड़ते हैं। भारत क्या था— और आज वह कहां है।

मैंने यहां बहुत कुछ सीखा-समझा है और इस लिहाज से काफी लाभ उठाया है। प्रभु की जो इच्छा हो, उससे शुभ ही होगा। यहां आने के बाद मैं महसूस कर सका हूं कि मुझे अपने देश से कितना गहरा प्यार है।

कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आपका,
सुभाष

74. डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी., बंगाल के नाम

13, इलीसियम रो, कलकत्ता
12–9–25

प्रिय महोदय,

मुझे सुपरिंटेंडेंट से सूचना मिली है कि मैंने जो पत्र 20 अगस्त को श्री एन. सी. केलकर, एम.एल.ए. (पूना) को लिखा था, उसे आपके द्वारा इस आधार पर रोक लिया गया है कि उसमें सरकार के कामों की आलोचना की गई है। मुझे कुछ आश्चर्य है, क्योंकि मैं नहीं सोचता कि मैंने कोई ऐसी बात लिखी थी, जिस पर आपत्ति की जा

सकती थी। जो भी हो, मैं कृतज्ञ होऊंगा अगर आप वह पत्र मुझे वापस कर दें, जिससे मैं उन अशों को हटा दू जो किसी भी रूप मे आपत्तिजनक लगते हों। अगर यह करने के बाद भी पत्र आपको आपत्तिजनक लगे तो आप उसे फिर रोक सकते हैं।

आपका,
एस सी बोस

75. शरत चन्द्र बोस का पत्र

3/82, एल्गिन रोड
12-9-25

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा 27 अगस्त का पत्र 8 तारीख को मिला। तुमने अखबारों में पढा होगा कि मैं ढाका वक्फ सपत्ति के मुकदमे के सिलसिले में ढाका गया था। मेरे विरुद्ध वकील सर विनोद थे। मैं समझता हू कि वहा मेरा अच्छा प्रभाव पडा।

मैं इस महीने से पहले कलकत्ता नहीं छोड रहा हू। मैं व्यावसायिक व्यस्तताओ के कारण यहा नहीं रुका हू। *मैं अपने गाव कोडलिया में कुछ काम शुरू करना चाहता* हू— जैसे दातव्य चिकित्सालय, प्राथमिक पाठशाला, चरखा आदि। मैं मा और पिताजी के आने की प्रतीक्षा कर रहा हू। हम दुर्गा पूजा वाले सप्ताह मे काम की शुरूआत कर देंगे।

मैं जानता हू कि तुम इस बात के सख्त खिलाफ हो कि मैं अपनी छुट्टिया यहा खराब करू। लेकिन मैं तुम्हे विश्वास दिला सकता हू कि मैं बहुत स्वस्थ अनुभव कर रहा हू और अगर मैं पहाड पर महज 40 दिन बिताऊ, तो उतना मेरे लिए पर्याप्त होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने माडले स्थानातरण के बाद के अपने वजन का पूरा ब्यौरा भेजा है। उससे मुझे सरकारी बयानों का पर्दाफाश करने में सहायता मिलेगी।

हा, मैंने तुम्हारी पुस्तकों की सूची बुक कपनी को भेज दी है। मुझे आशा है कि उन्होने तुम्हें किताब भेजना शुरू कर दिया होगा।

जैसा कि तुमने इच्छा व्यक्त की है, सोमवार को तार द्वारा 300 रुपये का मनीआर्डर तुम्हारी जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम रवाना कर दूगा।

जब तुम रोनाल्डसे की पुस्तकें समाप्त कर लो, तो अगर तुम सुविधा से भेज सको, तो उन्हे मेरे पास भेज दो। मैं उन्हे पढना चाहता हू। क्या तुम्हारे पास आर्थर ग्रिफिथ्स

की पुस्तक 'रिसरेक्शन आफ हंगरी' है?

हम सब कुशल से हैं। आशा है, तुम बेहतर होंगे।

प्यार पूर्वक,

तुम्हारा स्नेहपूर्वक,
शरत

76. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
21-9-25

प्रिय महोदय,

मैं कृतज्ञ होऊंगा, अगर आप मेरे लिए मांडले के डिप्टी कमिश्नर से कौंसिल आफ स्टेट के लिए चुनावों के नियम-विनियमादि की पुस्तिका की एक प्रति मंगा दें या कुछ समय के लिए उपलब्ध कर दें।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

77. पेनफोल्ड के नाम

मांडले जेल
21-9-25

श्री पेनफोर्ड,

बर्मा के महामहिम राज्यपाल के नाम एक प्रतिवेदन भेजा जा रहा है। इसकी एक प्रति मेरी 'बुक' में है, इसे आप आज भेज सकते हैं, मैं आपके कार्यालय के लिए एक प्रति तैयार कर सकूंगा।

एस. सी. बी.

78. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेट के नाम

माडले जेल
21-9-25

प्रिय महोदय,

हम कृतज्ञ होगे, अगर आप हमारी ओर से शुक्रवार को शाम 4 30 बजे एक चाय पार्टी में, जो दुर्गा पूजा के उपलक्ष्य में दी जा रही है, डिप्टी कमिश्नर, बर्मी मजिस्ट्रेट और गैर-सरकारी बर्मी जेल-निरीक्षकों को आमत्रित कर दें। हमारा निमत्रण निस्सदेह आपके लिए भी है और हमे आशा है कि आप उसे स्वीकार करेंगे।

चूकि श्री उमेश चन्द्र झावेरी, जो दूसरे निरीक्षक हैं, खाने-पीने के मामले में कट्टर हैं और इस अवसर पर शायद वह कठिनाई महसूस करे, इसलिए हम उनके लिए बृहस्पतिवार को तीसरे पहर चाय पार्टी का प्रबध कर रहे हैं।

आप हमारी ओर से जो पत्र लिखें, उसमें यह भी लिख दें कि इस औपचारिक निमत्रण के अलावा अगर कोई भी सज्जन चाहे और समय निकाल सके, तो पूजा के दिनों मे, अर्थात 24, 25, 26 और 27 तारीख को, उनके यहा किसी भी समय पर आने से हमें अत्यत प्रसन्नता होगी। यह सभव है कि उनमें से कुछ, जैसे श्री झावेरी, स्वय पूजा समारोह को अधिक देखना चाहेगे।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस
(राजनैतिक बदियो की ओर से)

79. बासंती देवी के नाम *

माडले जेल
25-9-25

श्री चरणेषु,

मुझे बहुत समय से आपका कोई समाचार नहीं मिला है। आप कैसी हैं? आपके बारे में एकमात्र समाचार मुझे घर से आए पत्रो से मिलते हैं। खबर पाने का और कोई जरिया नहीं है। मुझे आशा थी कि भोम्बल समय-समय पर मुझे जानकारी देता रहेगा, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहा है। मैंने उसे काफी दिन पहले पत्र लिखा था, लेकिन जवाब अभी तक नहीं आया है। हो सकता है कि यह 'आखों से दूर-दिल से दूर' वाला मामला हो और इसीलिए उसने मुझे कोई सूचना देना आवश्यक न समझा हो। और एक

प्रकार से, हमारा अस्तित्व है ही कहां? महात्माजी के अनुसार हम नागरिक दृष्टि से 'मृत' हैं। यह स्वीकार करता हूं, लेकिन फिर भी मन बेचैन हो जाता है और बाहर की जानकारी पाना चाहता है। अगर सब कुछ यों ही घटित होता रहा तो कुछ समय बाद नागरिक दृष्टि से 'मृत' होने के सिवा और चारा ही नहीं रह जाएगा?

आज महाष्टमी है। आज के दिन बंगाल के घर-घर में दुर्गा की प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है। हम भाग्यशाली हैं कि हम उन्हें इस कारागार में भी पा सके। इस वर्ष हम श्री दुर्गा की पूजा यहीं करेंगे। मां शायद हमें भूली नहीं और इसीलिए उनकी पूजा-अर्चना का आयोजन करने का यहां भी अवसर मिल पाया, यद्यपि हम इतनी दूर पड़े हैं। वे परसों हमसे विदा ले लेंगी और हम साश्रु नयन देखते रहेंगे। एक बार फिर पूजा के आलोकित और प्रफुल्लित वातावरण को कारागार का अंधकार और मृत परिवेश लील लेगा। मैं नहीं जानता कि यह क्रम कितने वर्ष और चलेगा। लेकिन अगर मां वर्ष में एक बार भी इसी तरह आती रहें तो मैं समझता हूं कि कारावास का जीवन बहुत असह्य नहीं हो पाएगा।

जब तक यह पत्र आपके पास पहुंचेगा, विजयदशमी समाप्त हो चुकेगी। विजया के दिन हम सब आपको सादर अपने प्रणाम प्रेषित करेंगे। अगर मेरे अंतरतम की श्रद्धा-भक्ति का अर्घ्य आप तक पहुंचे और प्रतिदानस्वरूप आपका नीरव आशीर्वाद मुझे मिले तो मैं अपने को धन्य मानूंगा।

इति !

आपका सेवक,
सुभाष

प्रति :

श्रीमती बासंती देवी,

2, बेलतला रोड,

कलकत्ता।

80. मुख्य जेलर के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
26-9-25

कृपया यह किताब, स्वामी विवेकानंद की कृतियां, जिनमें राजयोग का वर्णन है, आप सुपरिंटेंडेंट तक पहुंचा दें।

एस. सी. बोस

81. दिलीप कुमार राय का पत्र

बनारस
30-9-25

प्रिय सुभाष,

मैं परसो एक ऐसे प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास गया जो जैसा कि मुझे बताया गया था, सही जन्मलग्न देने पर किसी व्यक्ति के बारे में अद्भुत बात बता सकता है। मैंने इस पर विश्वास नहीं किया था। लेकिन परसों मैं बेहद प्रभावित हुआ जब उसने केवल *भृगु संहिता को देखकर, जिसके विषय मे तुमने सुना ही होगा, तुम्हारे बारे में बाते बताईं।* क्या हुआ, यह मैं बताता हू। अभी तीन ही दिन पहले एक लबा पत्र भेजने के बाद इतनी शीघ्र ही यह पत्र भेजने का यही कारण है।

मैं वहा अपने दो मित्रों के साथ गया और तुम्हारी कुडली अथवा राशिचक्र उसको दिया, जिसे मैंने तुम्हारे एक मित्र से प्राप्त किया था। उस व्यक्ति ने कुछ पुराने पीले कागज खोजे ,जिन पर उक्त राशिचक्र के अनुकूल सस्कृत श्लोक मुद्रित थे। मैंने तुम्हारा नाम केवल एस बोस बताया। वह तुम्हारे बारे में और कोई बात नहीं जानता था और मैंने तब तक कोई अन्य सकेत नहीं दिया, जब तक उसकी बाता की सत्यता प्रकट नहीं हो गई। वह जैसे-जैसे श्लोक पढ़ता गया ,मैंने एक कागज पर करीब तीस बाते दर्ज कीं जिनके अतर्गत तुम्हारी आम प्रकृति और भविष्य का खाका आ जाता था। मैंने इसलिए इन्हे दर्ज किया कि तुम्हे इनमे अवश्य ही दिलचस्पी होगी। उसने निम्नलिखित सामान्य बाते तुम्हारे और तुम्हारे जीवन के बारे मे बताई

(1) गोरा रग, (2) अच्छी कद-काठी, (3) सुन्दर व्यक्तित्व, (4) अग्रेजी और यूरोपीय विद्या मे पारगत, (5) एक बार यूरोप यात्रा की है, (6) एक ऊचो सरकारी नौकरी मिली, (7) एक कठिन परीक्षा पास की, (8) बहुत सहृदय स्वभाव, (9) विदेशियों के विरद्ध कोई दुर्भावना, (10) एक या दो भाइयो की मृत्यु सभव, (11) 28 वर्ष के बाद एक बहुत सुन्दर लडकी से ब्याह, (12) 30 या 32 की आयु में पुत्र-प्राप्ति, (13) देश-देशातर कीर्ति, (14) एक बार फिर यूरोप यात्रा पर जाएगे, (15) चरित्र की पवित्रता के लिए विख्यात, (16) पिता प्रभावशाली व्यक्ति, (17) मुक्त-हस्त दान करने वाले ,(18) स्वभाव से साधुता की ओर झुकाव, (19) 70 या 71 वर्ष तक की आयु, (20) धार्मिक और ईमानदार, (21) अनुचित प्रेम सबध से वितृष्णा (22) 28 और 30 वर्ष की आयु के बीच 'आत्मकष्ट सह मृत्युवत्', (23) 29 वर्ष की आयु में रिहाई, (24) 29 और 32 वर्ष के बीच विवाह, (25) 31वे वर्ष मे समृद्धि (26) 27 और 29 वर्ष के बीच कारावास, और (27) पवित्र भावना से मुक्त।

मैं समझता हू कि तुम्हारे चरित्र की उक्त रूपरेखा अद्भुत है। कम से कम मैं तो ऐसा ही सोचता हू।

फिलहाल इतना ही लिखूगा।

मैं कल आगरा जा रहा हूं और फिर वहां से राजपूताने की यात्रा पर निकल जाऊंगा। लेकिन तुम मुझे मेरे कलकत्ता के पते पर लिख सकते हो, जो इस प्रकार है : 34, थिएटर रोड।

मेरा सर्वोत्तम स्नेह स्वीकारो,

सदैव प्यारपूर्वक तुम्हारा,
दिलीप

82. दिलीप कुमार राय के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
9-10-25

प्रिय दिलीप,

यह मत सोचो कि मेरी दृष्टि संकीर्ण या अनुदार है। मैं अवश्य ही 'अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई' में विश्वास करता हूं। लेकिन उससे मेरा तात्पर्य विशुद्ध भौतिक भलाई नहीं है। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि सभी कार्य या तो उत्पादक होते हैं या अनुत्पादक। लेकिन यह सवाल कि कौन से कार्य वास्तव में उत्पादक होते हैं, वितंडावाद को जन्म देता है। कम से कम मैं तो कला और ऐसी ही अन्य गतिविधियों को अनुत्पादक नहीं मान सकता और न दार्शनिक चिंतन और आध्यात्मिक साधनों को व्यर्थ या निष्फल कार्य मानता हूं। मैं स्वयं भले ही कलाकार न होऊं और सच यही है कि मैं नहीं हूं—लेकिन इसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूं, बल्कि प्रकृति अथवा कह लो कि भगवान जिम्मेवार हैं। निस्संदेह अगर तुम यह कहो कि मैं इस जन्म में वह सब काट रहा हूं जो मैंने पिछले जन्म में बोया था, तो मैं हार मान लेता हूं। इस बात को यहीं रोक कर संक्षेप में कहूं कि मैं एक कलाकार क्यों नहीं बन पाया, इसका कारण यह है कि मैं बन नहीं सका। लेकिन यह भी ध्यान में रखो कि यह बात सच नहीं है कि अगर हम सामान्य व्यक्ति हैं तो हम कला का आनंद नहीं उठा सकते और मैं सोचता हूं कि अगर कोई परिष्कृत प्रकृति का व्यक्ति हो तो उसके लिए कला की सही समझ विकसित कर सकना बहुत कठिन नहीं होता।

तुम्हें खेदपूर्वक लंबी सांसें लेने में अपना समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि जब शेक्सपीयर के शब्दों में, 'चारों ओर तहलका मचा हुआ है तो तुम संगीत की साधना में अपने दिन व्यर्थ गंवा रहे हो'। सम्पूर्ण देश को अपने संगीत की धारा से परिप्लावित कर दो, मेरे मित्र, जिससे हम जीवन के उस सहज उल्लास को फिर प्राप्त

कर सकें जिसे हम खो चुके हैं। जिसके जीवन के ताने-बाने में सगीत के सूत्र नहीं हैं, जिसका हृदय सगीत के स्वरो से थिरक नहीं उठता वह यह आशा नहीं कर सकता कि उसे जीवन मे किसी महत् वस्तु की उपलब्धि होगी। कार्लाइल का कहना था कि जिस व्यक्ति की शिराओं मे सगीत नहीं समाया हुआ है, वह कोई भी दुष्कृत्य कर सकता है। यह बात सही हो या नहीं, मुझे यह विश्वास है कि जिसमे सगीत से अभिभूत होने की क्षमता नहीं है, वह चितन और कर्म की ऊचाइयो को कभी नहीं पा सकता। हमारी कामना है कि आनद—विशुद्ध और अकारण आनद—हमारे रक्त की एक-एक बूद मे थिरक उठे क्योकि हम तभी सृजनशील बनते हैं, जब आनदातिरेक हों और सगीत से अधिक आनदप्रद और क्या चीज हो सकती है?

लेकिन हमें कलात्मक तथा ऐसे ही अन्य आनद को गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए भी सुलभ बनाना चाहिए। छोटे-छोटे विशेषज्ञ-समूहो में सगीत के बारे में गहन अनुसधान निस्सदेह चलता रहेगा, लेकिन साथ-साथ सगीत को जन-समुदाय के आध्यात्मिक आधार के रूप में भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए। जिस प्रकार कला के उच्चादर्श पर्याप्त शोध के अभाव से बौने रहते हैं, उसी प्रकार कला भी जब जन-मानस से कट जाती है तो मुरझाने लगती है और उसे ऐसा रूप दे दिया जाता है जिस तक सभी की पहुच नहीं हो पाती। मैं समझता हू कि कला लोक-सगीत और लोक-नृत्य के जरिए जीवन से जुडी हुई हैं। कला और जीवन के दो महाद्वीपों के बीच अलघ्य खाई पाश्चात्य सभ्यता ने निर्मित की है और उसे पाटने के लिए उसने कुछ भी प्रयास नहीं किया है। हमारी 'जात्राए', 'कथाकाता', कीर्तन* आदि इन दिनो प्राय अतीत के अवशेषो के रूप में बचे रह गए हैं। अगर हमारे कलाकार और सगीतज्ञ कला और जीवन के बीच सेतु बाधकर उसे पुनर्जीवित नहीं करते तो जीवन कितना निरर्थक और नीरस हो जाएगा, इसकी कल्पना मात्र से मन कपित हो उठता है। तुम्हें याद होगा कि मैंने तुमसे एक बार कहा था कि मैं मालदा के गभीरा सगीत की सुदरता से कितना अभिभूत हुआ था। उसमे सगीत और नृत्य का अत्यत उल्लासपूर्ण मणिकाचन योग है। मैं बगाल के अन्य किसी ऐसे प्रदेश को नहीं जानता जहा ऐसा योग देखने मे मिलता हो। लेकिन अगर उसमें नए जीवन का सचार न किया जाए तथा अगर बगाल के अन्य भागो के लोग उसे न अपनाए, तो वह निश्चय ही शीघ्र मरणासन्न हो जाएगा। तुम्हे कम से कम एक बार तो वहा जाना ही चाहिए, जिससे तुम कम से कम बगाल के लोक-सगीत म नए प्राणो का सचार कर सको। लेकिन मैं तुम्हे सचेत कर देना चाहूगा कि गभीरा म तुम्हे किसी भी तरह की जटिलता अथवा वैभव नहीं मिलेगा। उसकी अपनी विशिष्टताए हैं—उसकी सहजता और सादगी मे। मैं समझता हू कि हमारे लोगों का लोक सगीत और

* जात्रा—लोक-नाटक जो खुले में एक पडाल में अभिनीत होता है जहां कोई रगमच नहीं होता और दर्शक तथा अभिनेता एक ही समतल स्थान में रहते हैं। कीर्तन—भक्तिभावपूर्ण नृत्यपरक सगीत जिसके मुख्य पात्र कृष्ण और राधा होते हैं। कथाकाता—पौराणिक गाथाएं या दतकथाएं, जिन्हें बीच बीच में गीतों के साथ [illegible] करते हैं।

नृत्य अभी भी केवल मालदा में ही शेष हैं। इसलिए जो लोग लोक-कला के पुनरुत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं, उन्हें अपना प्रयास वहीं से आरंभ करना चाहिए।

लोक-संगीत और लोक-नृत्य की दृष्टि से बर्मा एक अद्वितीय देश है। यहां विशुद्ध देसी नृत्य और संगीत पूरे जोर पर है। वह लाखों लोगों को आनंद प्रदान करता है तथा सुदूर ग्रामों के अंतःस्थल तक गहरे पैठ गया है। अपने भारतीय संगीत की विधि-शैलियों को हृदयंगम करने के बाद तुम बर्मी संगीत का भी अनुशीलन कर सकते हो। हो सकता है कि यह विकसित संगीत न हो, किंतु बिना पढ़े-लिखे लोगों को प्रसन्नता प्रदान करने की उसकी क्षमता ने मुझे प्रभावित किया है। मुझे बताया गया है कि इनका नृत्य भी बहुत सुंदर होता है। इसके अतिरिक्त यहां की कला विशिष्ट वर्गों के लिए ही नहीं है, क्योंकि मैं समझता हूं कि बर्मा में जाति-प्रथा नहीं है (जिसके परिणामस्वरूप कला का प्रसार सर्वत्र हो गया है) और इसका कारण शायद यह भी है कि इस देश में लोक-संगीत और लोक-नृत्य का सदा ही प्रबलता के साथ प्रचलन रहा है। इसीलिए यहां के सामान्य लोगों की भारतीयों की अपेक्षा सौंदर्य की पकड़ अधिक गहरी रही है।

तुमने देशबंधु के विषय में जो कुछ भी लिखा है, वह मेरे ही मन की बातें हैं और मैं इससे भी सहमत हूं कि किसी व्यक्ति की अंतर्निहित उदारता उसकी व्यक्त सार्वजनिक गतिविधियों और उपलब्धियों की अपेक्षा उसके जीवन के निजी, छोटे-छोटे प्रसंगों द्वारा अधिक प्रकट होती है। वस्तुतः मैंने उन्हें अपना गहरा लगाव और श्रद्धापूरित प्यार इसलिए तो दिया ही था कि राजनीति में मैं उनका अनुयायी था, इसलिए और भी कि मैं उनके व्यक्तिगत जीवन के काफी निकट परिचय में आ सका था। सच पूछा जाए तो अपने सहयोगियों और अनुयायियों के अलावा उनका और कोई परिवार नहीं था। एक बार हम कारागार में साथ-साथ आठ महीने तक रहे, दो महीने तो एक ही कक्ष में और छह महीने तक अगल-बगल के कक्षों में। इस प्रकार उन्हें बहुत निकट से देखने के बाद मैंने उनके चरणों में शरण लेने का संकल्प किया था।

श्री अरविंद के विषय में तुमने जो लिखा है, उसको पूरी तरह नहीं तो अधिकांशतः मैं ठीक मानता हूं। वे एक ध्यानी हैं और मैं महसूस करता हूं कि वे विवेकानंद से भी अधिक गहराई तक पहुंचते हैं, हालांकि विवेकानंद के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। इसलिए मैं तुमसे सहमत हूं कि व्यक्ति समय-समय पर और कभी-कभी लंबी अवधि के लिए निर्जन एकांत में मौन रहकर ध्यान में डूबा रह सकता है। लेकिन इसमें एक खतरा भी है। अगर व्यक्ति जीवन और समाज की हलचल से बहुत समय तक कटा रहे तो यह आशंका है कि उसके व्यक्तित्व का क्रियाशील पक्ष जड़ बन जाएगा। निस्संदेह यह बात उन मुट्ठी-भर लोगों पर लागू नहीं होती, जो असाधारण प्रतिभा वाले सच्चे जिज्ञासु हैं, लेकिन मेरी समझ से सामान्य व्यक्तियों को, बहुसंख्यक लोगों को, अपनी साधना का मुख्य आधार सेवा-भाव के साथ कर्म में प्रवृत्ति को बनाना चाहिए। अनेक कारणों से हमारा राष्ट्र कर्म के क्षेत्र में बिना ठहरे हुए निश्चलता की ओर लुढ़कता रहा है, इसलिए हमारी आज की आत्यंतिक आवश्यकता यह है कि 'रजस' का, कर्तव्य का इंजेक्शन हमें दुहरी मात्रा में दिया जाए।

मैं तुम्हारे इस कथन से भी सहमत हू कि हममें से प्रत्येक को अपनी क्षमताओ का पूर्णतम विकास करने का प्रयास करना चाहिए। वास्तविक सेवा यही है कि हमारी रचना के अतर्गत जो कुछ सर्वोत्तम है, उसको हम समर्पित करे। जब तक हमारे स्वधर्म को अपनी परिपूर्णता प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक हमें सच्ची सेवा के लिए समर्पित होने का अपना सहजात अधिकार उपलब्ध नहीं होगा। इमर्सन के शब्दों मे, हमारा स्वरूप-निर्धारण भीतर से होना चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम सबको एक ही राह पर चलना होगा, हालाकि यह सभव है कि एक ही आदर्श हम सबके लिए प्रेरक बने। कलाकार की साधना वही नहीं है जो कर्म-योगी की है, जैसे कि ध्यान-योगी की साधना वही नहीं है जो विद्वान की है, यद्यपि मेरे विचार से अतिम रूप में उन सबका ध्येय एक ही है। लेकिन आत्म-साक्षात्कार के व्यावहारिक क्षेत्र मे मैं पृथक-पृथक क्षमताओ के लोगो को एक ही भूमि मे सक्रिय बनाने के पक्ष मे नहीं हू। जो व्यक्ति अपने प्रति सच्चा है, वह शायद ही कभी मानवता के प्रति मिथ्या भाव रखता हो। प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति ही सकेत-वाहिका होगी कि उसका रास्ता क्या होगा किस भाग से उसकी आत्म-शोधन और आत्म-प्रसाद की माग पूरी होगी। अगर हममे से प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजि क्षमता एव प्रवृत्ति के अनुसार अपनी पूर्णता को प्राप्त करे तो सम्पूर्ण राष्ट्र के जीवन में एक नया सूर्योदय हो सकता है। यह वास्तव में सभव हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपनी साधना के किसी चरण में ऐसा जीवन बिताए जो सतही तौर पर स्वार्थपूर्ण और आत्म-केद्रित लगे। लेकिन जब वह उस चरण से गुजर रहा हो तो उसे जनमत को नहीं, बल्कि अपनी अतरात्मा की आवाज को सुनना चाहिए। जनमत को तब तक अपना निर्णय नहीं देना चाहिए, जब तक उसकी साधना की चरम परिणति का परिणाम प्रकाशित न हो जाए? निष्कर्षत जब तुम आत्माभिव्यक्ति के सच्चे मार्ग को चुनो तो तुम्हें जनमत की परवाह नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार, तुम देखते हो कि हम दोना के विचार एक-दूसरे से उतने दूर नहीं हैं, जितना तुम सोचते हो।

स्नेहपूर्वक सदैव तुम्हारा
सुभाष

83. दिलीप कुमार राय का पत्र

लखनऊ
21-11-25

प्रिय सुभाष,

अनेक धन्यवाद, विशेषत तुम्हारे 9-10-25 के अतिम लिखे पत्र के लिए अत्यत कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद। तुम्हारे पत्र और तुम्हारा व्यक्तित्व मुझे जो प्रेरणा देते हैं, उनकी समयक कल्पना तुम शायद ही कर सको। मेरी इस प्रकृति के लिए तुम मुझे क्षमा करना कि मुझे जिनसे भी सर्वाधिक हितकर लाभ प्राप्त होता है उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कभी-कभी तुम्हारे शब्दा मे, कुछ अधिक 'मुक्त-हस्त' हो जाता

हूं। तुम्हें संस्कृत की यह कहावत मालूम होगी 'स्वभावो दुरतिक्रमः', अपनी प्रकृति से ऊपर उठ पाना किसी के लिए भी कठिन होता है। इसलिए पत्र लंबा हो जाने पर तुम्हारा क्षमाप्रार्थी होना एकदम अनावश्यक था। तुम्हें तो कम से कम यह बोध होना ही चाहिए था।

मैं सार रूप में तुम्हारी इस बात से सहमत हूं कि कला को गरीबों और दलितों के द्वार तक पहुंचाना चाहिए। मैंने अक्सर सोचा है कि हम तथाकथित आभिजात्य वर्ग के लोग प्रायः अपने आपको यह समझाने का जोखिम मोल लेते रहते हैं कि कला को केवल कुछ सौभाग्यशाली लोगों की ही एकांत थाती होना चाहिए। ऐसा करते हुए हम प्रायः भूल जाते हैं कि जो कला केवल एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित होने लगती है, वह अंततः मृत-प्रायः हो जाती है—यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसके संबंध में टाल्सटाय की कटूक्तियां और तीक्ष्ण व्यंग्य इतने प्रसिद्ध हो चुके हैं। अभी पिछले दिनों मैं इंग्लैंड के एक कला-समीक्षक का *'मसीही धर्म और कला'* के बारे में निबंध पढ़ रहा था। उसने भी ऐसी ही बात लिखी है : "कला तब तक बहुत फल-फूल नहीं सकती जब तक वह जनता के जीवन से बद्धमूल न हो और लोक-रुचि द्वारा पल्लवित-पुष्पित न हो। यह एक छोटे से वर्ग के हाथ का खिलौना बन जाएगी तो कुछ प्रतिभा-संपन्न लोग चोटी तक पहुंचने का प्रयास भले ही करें, सामान्यतः उसका ह्रास होता जाएगा।'

मैं तो यही मानता हूं और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे भी यही विचार हैं (वस्तुतः तुमने अपने पिछले पत्र में इसी आशय की कोई बात कही है)। लेकिन मुझे लगता है कि समस्या जितनी सरल दिखती है, वास्तव में उतनी है नहीं। इसके बारे में हम और विस्तार से कभी विचार करेंगे, लेकिन यहां मैं कुछ मुख्य आपत्तियों की चर्चा करना चाहूंगा जो इन दिनों मेरे मन में घुमड़ती रहती हैं।

कला को—सर्वोच्च कला को—अर्थात प्रथमतः तो किसी भी प्रकार सार्वभौम अथवा सामान्य भी नहीं होती। यही कारण है कि प्रत्येक सभ्य समाज में कला के नाम पर कृत्रिम और छद्म का इतना अधिक बोल-बाला है। मेरे एक मित्र, इस विश्वविद्यालय के श्री रोनाल्ड मोरान ने एक बार मुझसे कहा था कि यूरोप में जिसे अक्सर अभिनव अथवा सर्वहितैक कला की संज्ञा मिलती है और जिसे बड़ी संख्या में लोग चाव के साथ अपनाते हैं, उसे देखकर उन्हें कितनी ज्यादा वितृष्णा होती है। उन्होंने कहा था कि जब कि एक ओर यूरोप की तथाकथित आधुनिक कला के सस्ते और भद्दे ऐंद्रिक संवेदन अधिकांश लोगों को आमतौर पर इतने ज्यादा भाते हैं जिसे देखकर उन्हें बड़ी पीड़ा महसूस होती है, दूसरी ओर उत्कृष्ट कला, जो उन्हें उदात्तता की असंदिग्ध अनुभूति कराती है, इन लोगों के हृदय का शायद ही कभी स्पर्श कर पाती हो। ऐसा ही अनुभव हम सबको भी अवश्य हुआ होगा। तुम इस पर कहोगे : 'लेकिन मेरे दोस्त, लोगों की रुचि भी तो बनानी होगी।' परंतु कठिनाई यह है कि क्या ऐसी रुचि बनाना इतना आसान काम है, जब कि हम देखते हैं कि आज विश्व के अधिकांश लोकतंत्री देशों की हालत कितनी गई-बीती है? यद्यपि मैं यह मानने को तैयार हूं कि कुल मिलाकर कालांतर में स्थिति

अवश्य सुधरेगी और बदलेगी लेकिन यह सब कुछ कहने-सुनने के बाद क्या यह नहीं लगता कि सवाल लोगों की मनोवृत्ति का है? मैं यह नहीं कहता कि इस विचार को लेकर तर्क-वितर्क (नहीं) किया जा सकता है। हमारी दुनिया मे कौन-सा ऐसा विचार है जिस पर ऐसा न किया जा सकता हो? मेरे कहने का आशय इतना ही है कि जो नितात आशावादी व्यक्ति है उसे भी जीवन में कभी न कभी तब गभीरतम विचार करने के लिए बाध्य होना पडता है जब कि वह पाता है कि उसके अनुसार जो वस्तु-स्थिति वाछनीय है उसमें और जो प्रस्तुत है उसमें प्राय लगातार चौडी होती जाने वाली खाई (पडती दिखाई देती) है और इसका कोई कारण उसे स्पष्ट नहीं हो पाता। अच्छी कला की सभी जगह अवहेलना होती है तथा मैट गूल्ड, राइडर हैगार्ड पाचकौडी डे पाल द लाक तथा इसी स्तर के दो कौडी के अन्य व्यावसायिक लेखक छाए हुए हैं और दिनों दिन छाते जा रहे हैं। एक महान निराशावादी ने सभ्यता की परिभाषा करते हुए कहा है कि वह मानव-समाज मे लगातार घटित होता जाने वाला ऐसा परिवर्तन है जिसका प्रत्येक पग समग्र मानवीय यत्रता के परिमाण को कुछ और बढा देता है।

कुछ ही दिन पूर्व मैं जीवन की ऐसी विरूपताओं को देखकर बहुत अनुतप्त था कि श्री अरविंद के ग्रथ मेरे हाथ लगे। उनकी 'दिव्य जीवन' नामक अद्भुत पुस्तक में मुझे ऐसा मरहम मिला जिसने मेरी प्रश्नाकुल एव आहत आत्मा का उपचार किया। उन्होने अतिम रूप में मुझे आश्वस्त किया कि मानव प्रसन्नता अपनी समग्रता मे वृद्धिगत है यद्यपि धरती के किसी एक भौगोलिक खड को देखकर सभव है कि हमारा निष्कर्ष इसके विपरीत हो। लेकिन मैं इस बडे सवाल को अपने इस पत्र में नहीं उठाना चाहूगा। मैं तुमसे केवल यह कहना चाह रहा था कि जिस प्रकार मेरा यह सदेह अभी मिटा नहीं है कि सर्वोच्च कला को अविलब लोकप्रिय बनाया जा सकता है या नहीं—हमारे सम्मुख ग्रहणशीलता का बडा सवाल मुह बाए खडा है और जिसे हम आदर्शवाद की सज्ञा देते हैं उस मार्ग का यह एक बडा अवरोध है।

श्री अरविंद ने पिछले वर्ष मुझसे कहा था कि उनके सामने भी कभी ऐसी समस्या थी और मैं उन्हीं के शब्द प्रस्तुत कर रहा हू

'जब मैं योग साधना के लिए यहा आया उन्होने मुझसे पाडिचेरी में कहा तो मैंने उसे इस उद्देश्य से आरभ किया कि मानवता की सम्पूर्ण प्रकृति को बदला जा सके विश्व का रूपातरण किया जा सके बुराइया को जडमूल से नष्ट किया जा सके। लकिन मुझे बाद म पता चला और मेरा भ्रम दूर हो गया—कि मैंने वे सब आशाए उस समय नितात अज्ञान के कारण लगाई थीं। इस सबध में हम जो कह सकते हैं वह यह है कि जो कुछ भी हमें अनुभूत हो उसे हम अन्य लोगो को जिनमे ग्रहणशीलता हो अशत दे सकते हैं। लेकिन यह सप्रेषण अनुभूति के बाद भी हमेशा बहुत सरल नहीं होता। हमें जो कुछ अनुभव प्राप्त हो रहा है उसके साथ साथ उसका सप्रेषण तभी सभव है जब अनुभव करने वाले व्यक्ति मे विशिष्ट प्रकार की क्षमता हो। कारण यह है कि कुछ व्यक्ति ग्रहणशील तो होते हैं किंतु उपलब्धि को औरो तक सप्रेषित नहीं कर सकते। कुछ

ही लोग ऐसे होते हैं जो ग्राह्यता में भी सक्षम होते हैं और संप्रेक्षण में भी। इसी तरह हर किसी में ग्रहणशीलता नहीं होती। इसलिए इस समस्या का समाधान आसान नहीं है। आप कर ही क्या सकते हैं? तब से मैंने यह अनुभव किया है कि लोग विकास के विभिन्न चरणों में हैं और इसलिए दुनिया की बुराइयों को दूर करने के लिए कोई एक सार्वभौम रामबाण औषधि नहीं हो सकती, जैसा कि इतिहास के क्रम में बार-बार प्रमाणित हो चुका है . . .'

मैं उपर्युक्त तर्क के विरुद्ध कुछ सोच पाने की कितनी ही चेष्टा करने के बावजूद श्री अरविंद की धारणा को अकाट्य पाता हूं। इसे मैंने विशेष रूप से कला के विषय में सही पाया है। मैंने असंख्य अवसरों पर पाया है कि जो संगीत-लहरी कुछ चुने हुए लोगों को स्वर्गिक आनंद में विभोर कर देती है, वहां अधिकांश अन्य लोगों को सपाट और प्रायः अर्थहीन लगती है। यथार्थ जगत में यह दारुण तथ्य कभी मेरे आदर्शवाद और जीवन के प्रति आशावादिता को चोट पहुंचाया करता था। लेकिन फिर भी मैं सोचता हूं कि उसने मुझे अपनी भावुकतापूर्ण काल्पनिक प्रवृत्ति से, जो भ्रमभंग की बजाए यथार्थ से आंख मूंद लेने को अधिक पसंद करती थी, छुटकारा दिलाकर मेरी साहसिकता को और बलवान बनाया है। अब मैं 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते' कहते हुए अथवा यह कहते हुए अधिक शक्तिमत्ता का अनुभव करता हूं कि—

यत्करोपि यदश्नासि यज्जुहोपि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम ॥

गीता—अध्याय 9, श्लोक 27

(इसलिए, हे अर्जुन! तू जो कुछ कर्म करता है, जो कुछ खाता है, जो हवन करता है, जो कुछ दान देता है, जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर)

मुझे लगता है कि मैं अब, जब कि मैं हाल में आदर्श और यथार्थ विश्व के बीच टकराव से उत्पन्न भ्रमभंग से गुजर चुका हूं, ऐसे अद्भुत वचनों की महानता को पहले से अनंत गुना अधिक अच्छी तरह हृदयंगम कर पाता हूं।

मुझे प्रसन्नता है कि हम अन्य बातों पर सहमत हैं (यह नहीं है कि हम आखिरी मुद्दे पर सहमत नहीं हैं—क्योंकि मैं यह महसूस करता हूं कि हममें सहमति है, अंतर बस इतना है कि तुम अपने साधारणीकरण को उस ढंग से नया रूप नहीं दे पाए हो जैसा देने के लिए मुझे हाल में विवश होना पड़ा है)।

मैंने तुम्हारे मानसिक परिदृश्य को कभी भी संकुचित नहीं कहा है। तुम चाहो भी तो कभी भी संकीर्ण नहीं हो सकते। तुम देश की तथाकथित भलाई के नाम पर एक संकीर्ण देशभक्त अथवा जनोत्तेजक वक्ता होना भी चाहो तो तुम्हारा आधार तुम्हें उसकी अनुमति नहीं देगा। ऐसा कहते हुए मैं तुम्हारी खुशामद नहीं कर रहा हूं क्योंकि मेरा दिनोंदिन यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि हम अपने नियंता आप नहीं हैं—हालांकि इच्छा-स्वातंत्र्य के प्रति मैं पूरी तरह अविश्वासी नहीं हूं। लेकिन इस पर हम फिर कभी विचार करेंगे, जब तुम हमारा प्यार भरा स्वागत स्वीकार करने आओगे। तुमने एक बार

मुझे अत्यत सुदर शब्दों में लिखा था कि तुम एक प्रकार से अधिकाधिक यह अनुभव करते जा रहे हो कि हमारे अधिकतम उतार-चढाव वाले तथा असगत कार्य-कलाप के पृष्ठ मे भी कोई न कोई उच्चतर शक्ति अथवा गति काम करती रहती है।

अतत मैंने राजपूताने की अपनी यात्रा पूरी कर ली है। तुम्हे जानकर प्रसन्नता होगी कि हर जगह लोगो ने मेरा स्वागत जिस उत्साह और हार्दिकता से किया है, उसकी मैं कुछ वर्ष पूर्व कल्पना कर नहीं सकता था। लेकिन इस समस्त स्वागत-सत्कार से मुझे उन योगिराज के वचनों का स्मरण हो आता है, जिनकी मैंने चर्चा की है उन्होने कहा था कि मैं अपने आपको सदा याद दिलाता रहू कि सभी कुछ किसी उच्चतर उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त पूर्व निर्धारित ढग पर घटित होता चलता है—(तुम्हारे उक्त कथन से इसकी आश्चर्यजनक समानता है)। मैं महसूस करता हू कि इस चेतावनी ने अनेक अवसरो पर, जब आशका थी कि मैं अनजाने ही आत्मश्लाघा अथवा अहमन्यता के फेर में पड जाऊ, मेरा बहुत बचाव किया है। इस दृष्टि से तुम्हारी विनम्रता ने भी दृष्टात रूप मे मुझे बहुत सहारा दिया है।

मैं नहीं सोच पा रहा हू कि क्या मैं तुम्हें यह पत्र तुरत भेज दू। कारण यह है कि मुझे बताया गया है कि तुम्हे शीघ्र कहीं नजरबदी के लिए कलकत्ता ले जाए जाने की बात है। इसलिए मैं सोचता हू कि मैं कुछ दिन इतजार कर लू।

तुम अपने स्वास्थ्य के विषय मे क्यो कुछ नहीं लिखते? मैं नहीं जानता कि तुमने अपने उस पत्र को 'बगवाणी' में एक महीना पूर्व प्रकाशित होने के बाद देखा है या नहीं, जो तुमने शरत बाबू को लिखा था। उसने मुझे और अनेक अन्य पाठको को गहराई तक छुआ है। यह सोचकर बहुत पीडा होती है कि हम तुम्हारी मानसिक अवसन्नता की इस घडी मे तुम्हारे काम नहीं आ सकते। और मैं समझता हू कि ऐसे मौको पर मात्र शाब्दिक सहानुभूति बहुत अपर्याप्त हुआ करती है।

मेरा हार्दिक प्यार स्वीकार करो।

तुम्हारा सस्नेह,
दिलीप

पुनश्च 28-12-25

प्रिय सुभाष,

मैंने काफी समय तक प्रतीक्षा की। लेकिन तुम्हे अभी भी रिहा नहीं किया गया है। इसलिए मैं यह पत्र तुम्हे भेज रहा हू।

मुझे बहुत-सी बात और भी लिखनी थीं, लेकिन फिलहाल ये 12 पृष्ठ ही यथेष्ट होगे।

मैं इस्टीट्यूट मे आगामी 5 तारीख को एक दातव्य कार्यक्रम का आयोजन करने जा रहा हू और विश्वास है कि यह भी पहले की तरह सफल होगा। तुमने अनिल बाबू से इसके विषय में सब कुछ सुन ही लिया होगा।

मैं तुम्हारे पत्रों को रवींद्रनाथ को भेजने का लोभ संवरण नहीं कर पाया। उन्होंने उत्तर में मुझे तुम्हारे पत्र की प्रशंसा में चार पृष्ठ लिख भेजे हैं। उन्होंने सचमुच मुझे बहुत सुंदर पत्र लिखा है, जिसे मैं कभी तुमको दिखाऊंगा।

हार्दिक प्यार के साथ,

सदैव सस्नेह,
दिलीप

84. पेनफोल्ड के नाम

मांडले सेंट्रल जेल
2-10-25

मैं बंगाल के बंदी श्री विजय कृष्ण घोष की ओर से यह आवेदन भेज रहा हूं। कृपया इस आवेदन तथा सम्मन को संबद्ध अदालत में भेज दें।

कृपया उक्त अदालत को 17 रुपये का मनीआर्डर भी भेज दें और मनीआर्डर पर संबद्ध मुकदमें की संख्या तथा बंदी का नाम लिख दें। 17 रुपये तथा मनीआर्डर का कमीशन उन पैसों से ले लिया जाए जो कार्यालय में मेरे नाम पर जमा हैं। उक्त कार्य के लिए मैं सुपरिंटेंडेंट की अनुमति पहले ही ले चुका हूं।

एस. सी. बोस

85. मुख्य जेलर के नाम

मांडले जेल
5-10-25

मुख्य जेलर,

मैं समझता था कि आपको यह जानकारी है कि किसी अदालत में पेश मुकदमे के प्रतिवादी को यह छूट है कि वह अदालत के लिए कोई भी लिखित बयान दे सके। इसलिए अगर ऐसे लिखित बयान से आप छेड़-छाड़ करते हैं, तो इसके परिणामों के लिए आप ही जिम्मेवार होंगे। लिखित बयान गोपनीय होते हैं। अदालत के कागज प्रकाशन के लिए नहीं होते।

मैंने विजय घोष से संबद्ध कागजात 2 तारीख को कार्यालय भेजे थे। आज 5 अक्तूबर है, लेकिन वे कागजात अभी तक आगे नहीं भेजे गए। इस बीच मैंने तीन बार प्रभारी जेलर को याद दिलाया है (दो बार लिखित रूप में और एक बार जुबानी)। अगर कागजात और पैसा समय पर अदालत में नहीं पहुंचता और फलस्वरूप एकतरफा डिग्री हो जाती है, तो अनिवार्य हरजाना कौन देगा?

एस. सी. बोस

86. शरत चन्द्र बोस का पत्र

गिद्दा पहाड,
कुर्सियाग, 6-10-25

प्रिय सुभाष,

हम यहा पहली तारीख को पहुचे। पिताजी कटक वापस चले गए हैं। उनकी कचहरिया कल से खुल गईं। मा कलकत्ता मे रुक गई हैं क्योंकि डाली का वहा आना अपेक्षित है और अरुणा के विवाह की बातचीत चल रही है।

मैं ढाका गया था, जहा मुझे रिसिवर के लिए एक आवेदन के विरुद्ध दलीले देनी थीं। मेरे मुकाबले में सर बी सी मित्र और सुधीर राय थे। मुझे कहते हुए प्रसन्नता होती है कि मैं सफल रहा। मैं नहीं जानता कि मेरे मुवक्किल मामले की अगली सुनवाई के समय फिर मुझे मिलेगे या नहीं। लेकिन उसमे अभी बहुत देर है।

मैं सूर्योदय देखने के लिए परसो टाइगर हिल गया था। क्या ही भव्य दृश्य था। मैं कुर्सियाग से मोटरकार मे बडे सवेरे 2 30 बजे चला और लगभग 4 बजे घूम पहुच गया। घूम से मैं घोडे पर गया। गवर्नर भी सूर्योदय देखने के लिए आए हुए थे। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था। मैं नहीं जानता था कि वे इतने अधिक दयनीय व्यक्ति दिखते हैं। आश्चर्य नहीं कि उनके कार्यकलाप और आचरण इतनी मूर्खता से युक्त रहे हैं।

हा, हम पूजा वाले सप्ताह म कोडलिया गए थे। हमारा चिकित्सालय आरभ हो गया है और मैंने सुना है कि हमने जिस डाक्टर को नियुक्त किया है उसका अच्छा प्रभाव पडा है। अगर चिकित्सा सहायता-कार्य सफल रहता है तो यह ग्राम-पुनर्निर्माण की ओर हमारी बडी सफलता होगी।

दादा और बड़दीदी अवकाश का अधिकाश समय कटक, पुरी और भुवनेश्वर में बिताएगे। नामामा बाबू कटक मे हैं। बाग बाजार मे एक मकान लिया है। नतूनमामा बाबू का स्वास्थ्य बहुत गिर रहा है। उन्होने शाम बाजार में मकान लिया है।

हा, बडामामा बाबू अपने वार्ड स्वास्थ्य एसोसिएशन के बहुत स्फूर्तिप्रद सेक्रेटरी सिद्ध हुए हैं।

काचो 38/2 मे रह रहा है। उसका सर्जरी का काम-धाम वैलेसली स्ट्रीट के ऊपरी फ्लैट में होता है, जो प्राय धरमतल्ला चौरस्ते के निकट है। तुम घर की पहचान शायद कर सकोगे। वह दो मजिला मकान है जिसमे पहले रिट्ज बोर्डिंग या रिट्ज होटल था।

मुझे आशा है कि तुम्हें 200 रुपये मिल गए होंगे। मैंने उन्हें तार-मनीआर्डर द्वारा भेजे थे। तुम्हारे मुख्य जेलर को वे 22 सितंबर को मिल गए थे, जैसा कि तार-मनीआर्डर पर प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर से प्रकट है।

सप्रेम हमारे विजयाशीश और शुभाकांक्षाओं के साथ,

सस्नेह,
शरत
(शरत चन्द्र बोस)

87. शरत चन्द्र बोस का पत्र

गिद्दा पहाड़,
कुर्सियांग, 8-10-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 25 सितंबर का पत्र कल मिला।

कोडलिया के लोग ग्राम-पुनर्निर्माण की हमारी योजनाओं में रुचि ले रहे हैं। बाबू कालीचरण घोष और बाबू मनीन्द्र एन. घोष उस समिति के सदस्य हैं, जो हमने बनाई है। कालीचरण बहुत निष्ठावान कार्यकर्ता हैं और उन्हीं से मुझे सभी आवश्यक जानकारी मिली है। हमने अभी स्कूलों का काम हाथ में नहीं लिया है, लेकिन चिकित्सा सहायता की हमारी योजना जैसे ही पूरी तरह चालू हो जाएगी, हम स्कूलों के काम की भी शुरूआत कर देंगे। कलकत्ता से भेजे गए अपने पिछले पत्र के साथ मैंने अखबार की एक कतरन भी भेजी थी, जिससे पता चलता है कि कौन-सा काम शुरू किया गया है।

हमें जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने वहां दुर्गा पूजा मनाई। पुरोहित का काम किसने किया?

हमने तुम्हारे और मांडले में निर्वासित तुम्हारे साथियों के लिए नौ धोतियों तथा नौ चादरों का एक पार्सल भेजा है। विश्वास है कि पार्सल विजया के दिन से पूर्व ही पहुंच गया होगा।

तुम्हारी मेजोबद् दीदी को आशा नहीं थी कि तुम इतनी शीघ्र वापस आओगे, हालांकि तुम्हारे आने की अफवाह यहां बहुत गर्म थी।

मुझे दुख है कि अभी तक जामिनी कविराज श्यामदास की अपेक्षा अधिक सफल रहे हैं। मैंने श्यामदास की सहायता करने की कोशिश की और इसमें कुछ हद तक सफल भी रहा। लेकिन अगर मैं किसी मौके पर गैरहाजिर रहा तो बातें उसके विरुद्ध गईं। लेकिन

मुझे अब भी आशा है कि हम एक अच्छा आयुर्वेदिक कालेज स्थापित करने की देशबंधु की योजना को कार्यान्वित कर पाएंगे।

मैं यहां 6 या 7 तारीख तक रहूंगा। मैं इस महीने केवल एक दिन के लिए 'फारवर्ड', की दूसरी वार्षिकी में सम्मिलित होने के उद्देश्य से जाऊंगा।

मैंने पिछले महीने की 18 तारीख को ग्लैडिंग को तुम्हें 'फारवर्ड' भेजने के बारे में लिख दिया था, लेकिन मुझे अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है।

आशा है कि तुम सब स्वस्थ होगे। हम सब ठीक हैं।

लिखो कि आगामी सर्दियों के लिए तुम्हें क्या कपडे चाहिए।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

श्रीयुत् सुभाष सी बोस

88 शरत चन्द्र बोस का पत्र

गिद्दा पहाड
कुर्सियांग 9-10 25

प्राप्त

20-10-25

उत्तरित

23-10-25

एस सी बी

प्रिय सुभाष,

मैंने अपने पिछले पत्र मे जिस कतरन की चर्चा की थी वह भेज रहा हूं।

डाक्टर ने वास्तव में इस महीने की पहली तारीख को काम शुरू किया। सेजोजेठा महाशय और पिताजी उस दिन कोडलिया गए और पिताजी ने मुझे लिखा कि डाक्टर का अच्छा प्रभाव पडा।

आशा करनी चाहिए कि डाक्टर का उत्साह शिथिल नहीं पडेगा।

आज लिखने को कुछ नहीं है। आशा है कि तुम ठीक हो।

तुम्हारा सस्नेह
शरत

श्रीयुत् सुभाष सी बोस

संलग्न : समाचार की कतरन।

ग्राम-पुनर्निर्माण

कोडलिया स्थित केंद्र,
24-परगना

कोडलिया में श्रीयुत् जानकी नाथ बोस के निवास पर महाष्टमी के दिन (25 सितंबर को) 'मां ओ देश' विषय पर, श्रीयुत् ज्ञानांजन नियोगी के भाषण के साथ ग्राम-पुनर्निर्माण कार्य का श्रीगणेश किया गया। श्रीयुत् ज्ञानांजन ने लगभग ढाई घंटे तक भाषण दिया और उन्होंने बीच-बीच में लैटर्न स्लाइडें भी दिखाईं। उनके भाषण का बड़ा प्रभाव पड़ा। उपस्थित महानुभावों में सर्वश्री उमाचरण घोष, जानकी नाथ बोस (ग्राम पुनर्निर्माण समिति के अध्यक्ष) सुरेन्द्र नाथ सील (समिति के सचिव एवं कोषाध्यक्ष), कालीचरण घोष (सहायक सचिव), तारा प्रसन्न बोस (सहायक कोषाध्यक्ष), अमूल्य कुमार नंदी, बंकिम चन्द्र रायचौधरी, मनीन्द्रनाथ घोष, डा. काशीनाथ चटर्जी (समिति द्वारा नियुक्त चिकित्सा अधिकारी), बी. एन. दत्त (फारवर्ड से संबद्ध), एच. सी. सिन्हा (फारवर्ड से संबद्ध), प्रियनाथ बोस, सतीश चन्द्र बोस, शरत चन्द्र बोस तथा अन्य लोग थे। कुल लगभग 500 पुरुष और लगभग 200 महिलाएं उपस्थित थीं। सादे कपड़ों में कुछ पुलिस वाले भी मौजूद थे।

दशमी के दिन श्रीयुत् जानकी नाथ बोस के निवास पर एक दवाखाना खोला गया। उसका नामकरण श्रीयुत् जानकी नाथ बोस की स्वर्गीय माता कामिनी दास के नाम पर किया गया। कोडलिया के एक सबसे अधिक वयोवृद्ध निवासी श्रीयुत् उमाचरण घोष ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। ग्राम पुनर्निर्माण समिति के सचिव एवं कोषाध्यक्ष ने एक संक्षिप्त भाषण दिया जिसमें उन्होंने समिति के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और यह बताया कि दवाखाना किस लिए खोला जा रहा है। इसके बाद अध्यक्ष ने संक्षेप में यह बताया कि कोडलिया तथा पड़ोस के चार ग्रामों—हरिनवी, मालंच, महिनगर तथा चिंगरीपोटा के निवासियों से किसी प्रकार का सहयोग अपेक्षित है।

दवाखाने के लिए औषधियां और उपकरण मैसर्स बट्टो कृष्टो पाल एंड कंपनी ने लागत मूल्य पर सप्लाई किए।

डा. काशीनाथ चटर्जी एक अक्तूबर 1925 से काम शुरू कर देंगे।

आशा की जाती है कि यह केंद्र शीघ्र ही अन्य ग्रामों के लिए अनुकरणीय केंद्र बन जाएगा।

89. बर्मा सरकार के मुख्य सचिव के नाम

मांडले जेल
14-10-25

प्रिय महोदय,

कुछ समय पूर्व हमने वस्त्रों के लिए भत्ते के सवाल पर आपको एक प्रतिवेदन भेजा था। तब से हमें अब तक इस विषय में आपका कोई उत्तर नहीं मिला है। अब सर्दी के दिन निकट आ रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि हमें अविलंब पर्याप्त गर्म कपड़े दिए जाएं। इस उद्देश्य के लिए बिस्तर और कपडों की मद में दिया जाने वाला 225 रुपये का भत्ता बहुत अपर्याप्त है। इसलिए जब तक हमें यह सूचना न मिले कि कपडों के लिए भत्ते में वृद्धि की गई है, तब तक हमारे लिए आवश्यक गर्म कपडे खरीदना संभव नहीं होगा। हम बहुत कृतज्ञ होंगे, यदि आपके यहां से इस संबंध में हमें जल्द सूचना मिल सके।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस और एस सी मित्र
(राजबंदियों की ओर से)

90. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

14-10-25

प्रिय महोदय,

हम कृतज्ञ होंगे, यदि आप बर्मा के इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स से या अन्य किसी स्रोत से वर्ष 1924 के लिए बंगाल के जेल प्रशासन की रिपोर्ट की एक प्रति और जेल आयोग की रिपोर्ट की एक प्रति मंगा दें।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

91. बिहार और उड़ीसा के पोस्ट मास्टर जनरल के नाम

मांडले जेल
14-10-25

प्रिय महोदय,

मैं आपको एक पत्र का लिफाफा भेज रहा हूं, जिस पर लगी डाकखाने की मुहरें अपनी कहानी आप कह रहीं हैं। पत्र पुरी में लिखा गया था और वहीं डाक में डाल दिया गया था, जैसा कि डाकखाने की मुहर से स्पष्ट है। पत्र कलकत्ता भेजा गया था, इसलिए यह नहीं समझ में आता कि उस पर कटक के डाकखाने की मुहर कैसे पड़ी हुई है। जाहिर है कि पत्र को कटक में रोक लिया गया था, जिसके फलस्वरूप वह मेरे पास देर से पहुंचा। मैं आभार मानूंगा, यदि उक्त अनियमितता की जांच कराई जाए।

आपका,
एस. सी. बोस

92. बंगाल सरकार के राजनैतिक विभाग के प्रभारी सदस्य के नाम

मांडले जेल
14-10-25

प्रिय महोदय,

चौथ अगस्त 1925 को मैंने एक पत्र श्री नृसिंह चिंतामणि केलकर को लिखा जिसे, आई.बी. बंगाल के डी. आई. जी. पुलिस ने इस आधार पर रोक लिया था कि उसमें सरकार की गतिविधियों की आलोचना है। इस पर मैंने डी. आई. जी. को लिखा था कि पत्र मुझे वापस कर दिया जाए जिससे और बारीकी से देखने पर जो अंश मुझे आपत्तिजनक लगे उसे मैं हटा दूं। उत्तर में मुझे सूचित किया गया था कि जो पत्र आई. बी., सी. आई. डी. द्वारा रोके जाते हैं वे उनके लिखने वालों को नहीं लौटाए जाते और यह भी कहा गया था कि यह पहले ही बता दिया गया है कि श्री केलकर के नाम मेरा पत्र किस जगह आपत्तिजनक है। मैं आपसे निम्नलिखित आवेदन करना चाहता हूं :

1. जहां तक मुझे मालूम है, पत्र में कोई भी आपत्तिजनक स्थल नहीं था और मेरा अनुरोध है कि आप उस पत्र को पढ़ने के बाद अपनी राय इस विषय में दें।

2 यह पहला मौका नहीं है कि मेरे पत्र रोके गए हैं इसलिए मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि राजबंदियों और नजरबंदियों के हित में पालिटिकल डिपार्टमेंट को यह परिभाषित कर देना चाहिए कि 'आपत्तिजनक' शब्द का ठीक-ठाक आशय क्या है। मेरा पत्र कहा आपत्तिजनक था, इसके विषय में मुझे सिवाय इस बात के कि उसमें सरकार की गतिविधियों की आलोचना है, और कोई बात सूचित नहीं की गई है। 'सरकारी गतिविधियों की आलोचना' एक बहुत अस्पष्ट कथन है और अगर उसे व्यापक अर्थ दिया गया तो पत्र-लेखन असभव-सा हो जाएगा। उदाहरण के लिए अगर कोई राजबंदी या नजरबंद व्यक्ति लिखता है कि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है या किसी स्थान-विशेष का जलवायु उसके अनुकूल नहीं है तो इसे सरकार की आलोचना इसलिए मान लिया जाएगा कि सरकार ने उसे ऐसी जगह ला रखा है।

3 मैं नहीं जानता कि जो पत्र रोक लिए जाते हैं, उन्हे क्या नहीं लौटाया जाता, विशेषत जब उन्हे लौटाए जाने के लिए अनुरोध किया गया हो। जिस पत्र को किसी राजबंदी या नजरबंद ने लिखा है, उसका स्वामी पत्र-लेखक है, न कि सरकार। और मुझे नहीं लगता कि कानून के अंतर्गत सेंसर को उन पत्रों के अलावा जो राज-द्रोहात्मक हो, अन्य पत्रों को जब्त करने का अधिकार है।

इसलिए मेरा अनुरोध है कि सरकार सदिच्छापूर्वक आदेश जारी करे कि जब पत्र रोके जाए, तो उन्हे उनके लेखकों को वापस कर दिए जाए।

मैं हू,

आपका विश्वस्त

एस सी बोस

93. संतोष कुमार वसु के नाम

माडले

16-10-25

द्वारा डी आई जी आई बी, सी आई डी, बंगाल

13 इलीसियम रो

कलकत्ता।

प्रिय संतोष बाबू,

जब से आपने लिखना बंद किया तब से मैंने आपको पत्र नहीं लिखा है और अगर एक बहुत आवश्यक दबाव न आ पड़ता, तो मैं यह पत्र नहीं लिखता। यह भी मैं कुछ झिझक के साथ ही लिख रहा हू।

आपको निस्संदेह उन सब गतिविधियों की जानकारी है, जिनका संबंध आयुर्वेद विलयन समिति से है। जब श्यामदास वाचस्पति के वैद्यशास्त्र पीठ को अनुदान देने का सवाल पहली बार उठा था तो कुछ सदस्यों ने प्रति-प्रस्ताव रखा (मैं समझता हूं कि बाबू नृपेन्द्र नाथ वसु ने) कि कालेजों का विलयन कर दिया जाए और इस उद्देश्य से एक समिति बनाई जाए। वास्तव में पीछे से सूत्रधार थे कविराज यामिनी भूषण राय और उनके हाथ की कठपुतलियां थीं—नृपेन बाबू, योगेश बाबू, राम प्रसाद तथा अन्य। यामिनी कविराज को आशा थी कि अगर तीनों कालेजों का विलय हो गया तो वे उसमें प्रायः सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाएंगे। उनके पक्ष में यह अवश्य कहा जाना चाहिए कि उन्होंने कार्पोरेशन के प्रायः प्रत्येक सदस्य को अपने पक्ष में रखने के लिए उससे बातचीत की और कौंसिलरों को प्रभावित करने तथा उन पर जोर डालने के लिए कोई भी उपाय उठा नहीं रखा। उन्होंने पिताजी के जरिए, जिन्हें वे पहले से जानते थे, मुझसे संपर्क किया। आपको तो मालूम ही है कि मैं खरी-खरी कहने वाला व्यक्ति हूं और मुझे यह नहीं आता कि कोई अपने पक्ष-समर्थन के लिए मुझे राजी करे, विशेषतः ऐसी हालत में जब वह ऐसा अप्रत्यक्ष तरीकों से करना चाहे।

अगर विलयन हो गया तो कोई न कोई तो शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करेगा ही। सवाल यह है कि इस मामले में किसे यह जगह मिलनी चाहिए। यामिनी कविराज के विरुद्ध मुझे तीन आपत्तियां हैं। उनके जैसे छिछले ज्ञान वाले लोग कभी भी प्राचीन आयुर्वेदिक प्रणाली को पुनरुज्जीवित नहीं कर सकते। मुझे यहां तक संदेह है कि उन्हें आयुर्वेद में सच्ची निष्ठा है भी या नहीं। दूसरे, एक चिकित्सक के रूप में उनका आचरण स्पष्ट नहीं है जो उनके चरित्र का परिचायक है। जो वरिष्ठ चिकित्सक अभी भी अपनी प्रैक्टिस के लिए दलालों पर निर्भर करता है, वह शायद ही विश्वसनीय व्यक्ति कहा जा सके। वह स्वयं अपनी कविराजी में आयुर्वेद और एलोपैथी के विचित्र सम्मिश्रण हैं। तीसरे, जो भी व्यूह-रचना करते हैं, उनमें वह ईमान और सच्चाई से काम नहीं लेते, बल्कि मैं तो उन्हें सम्पूर्णतः *निष्ठा-च्युत* कहूंगा। उनका अपना एक गुट है—*अष्टांग आयुर्वेद गुट*, जो चाहता है कि नया कालेज स्थापित हो और वह उसके सर्वेसर्वा बन जाएं। इससे उन्हें तीन फायदे होंगे :

(1) वह मुख्यतः कार्पोरेशन के खर्चे से और बिना किसी परेशानी के एक कालेज की स्थापना करेंगे, (2) वह कालेज के सर्वेसर्वा बन सकेंगे और इस तरह कविराजी की अपनी साख तथा प्रसिद्धि बढ़ाकर अधिक धन कमा सकेंगे, और (3) कार्पोरेशन का संरक्षण—संपूर्ण संरक्षण—प्राप्त कर वह अन्य संस्थाओं को, अगर उन्होंने विलय की बात स्वीकार न की, और इस तरह यामिनी गुट की प्रमुखता स्वीकार न की तो, कुचल सकेंगे। यह स्पष्ट है कि अगर कार्पोरेशन ने नई संस्था बनाई तो उसे शेष सभी संस्थाओं को दी गई अपनी संरक्षकता वापस लेनी होगी जिसका उन संस्थाओं पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

विलयन का प्रस्ताव दरअसल यामिनी गुट की ओर से आया है जो शेष सभी संस्थाओं को कुचल देना चाहता है तथा नए कालेज मे अपना सिक्का जमाकर अपनी वरीयता स्थापित करना चाहता है। और ये वे लोग हैं, जिन्होंने असहयोग आंदोलन के आरंभ होने पर देशबंधु के आह्वान को ठुकरा दिया था।

वैद्यशास्त्र पीठ की स्थापना देशबंधु ने की थी और मेरा विश्वास है कि रचनात्मक कार्य की एक संस्था के रूप में उसका बहुत मूल्य और संभावनाएं हैं। उस कालेज के प्रिंसिपल कविराजों मे एक सर्वाधिक विज्ञ महानुभाव हैं जिनके आचरण में सस्ती व्यावसायिकता कहीं छू भी नहीं गई है और जो अपनी प्रेक्टिस बढाने के लिए दलालों का सहारा नहीं लेते। वे प्राचीन-पद्धति के एक पक्के कविराज हैं जिन्होंने अपने मन की खिडकियां नए विचारों के लिए भी उन्मुक्त रखी हैं और जो सर्वथा निर्दोष चरित्र तथा दिखावे से रहित पवित्रता के धनी हैं। मैं नहीं सोच पाता कि भविष्य के कविराजों को तैयार करने के लिए उनसे अच्छा कोई और व्यक्ति मिल सकता है। लेकिन अपने पक्ष में प्रचार करने और खुशामद की कला में वे पारंगत नहीं हैं और यही कारण है कि यामिनी गुट के प्रति आज लोगों का इतना झुकाव हो रहा है।

श्यामदास कविराज ने अब तक कालेज को अपने ही पैसो से बनाए रखा है और अगर जनता या कार्पोरेशन उनकी सहायता के लिए आगे नहीं आते तो उनके लिए आगे काम चलाना कठिन हो जाएगा। स्वाभाविक है कि विलयन को वह स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि उसका उद्देश्य और परिणाम यामिनी गुट की ताकत और आधिपत्य को हवा देना होगा और अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अगर नई संस्था मे यामिनी गुट को नियंत्रण स्थापित करने का मौका नहीं मिलेगा तो वह विलयन को स्वीकार नहीं करेगा।

हममें से जिन लोगो को देशबंधु के अनुयायी होने का सौभाग्य मिला है वे प्रतिज्ञाबद्ध हैं कि देशबंधु द्वारा स्थापित संस्थाओं के हित मे और उन्हे बनाए रखने के लिए कार्य करें। क्या हमारे कार्पोरेशन के सदस्य इस दायित्व के प्रति सजग हैं?

अगर उचित शर्तों पर विलयन संभव नहीं दिखता तो अधिक अच्छा होगा कि तब तक तीनो कालेजों को अलग-अलग अनुदान दिया जाता रहे, जब तक सद्‌बुद्धि और न्याय का बोलबाला न हो।

यामिनी कविराज इस बात का ढिंढोरा पीट रहे हैं कि उन्होंने नए कालेज के लिए 50,000 रुपये दिए हैं। लेकिन अगर पैसो को ही महत्वपूर्ण मान लिया जाए तो श्यामदास कविराज ने भी अपने पास से बडी-बडी धन राशियां लगाकर वैद्यशास्त्र पीठ को संचालित रखा है और मैं नहीं समझता कि उदारतापूर्वक दान देने मे श्यामदास किसी से भी पीछे रहेंगे।

अगर आपको मेरे किसी कथन पर संदेह हो तो आप वैद्यशास्त्र पीठ जाकर स्वयं

देख सकते हैं। अगर आप फोन करके श्यामदास कविराज से संपर्क कर लें तो वे खुशी से आपको सब कुछ दिखाएंगे। यद्यपि श्यामादास प्राचीन-पद्धति के कविराज हैं, तथापि उन्होंने वैद्यशास्त्र पीठ के पाठ्यक्रम में भौतिक विज्ञान, रसायन, शरीर विज्ञान आदि का समावेश किया है।

मैं जानता हूं कि आप जिस काम को भी उठाते हैं उसे पूरी निष्ठा से संपन्न करते हैं और तब तक विश्राम नहीं लेते जब तक काम पूरा न हो जाए। कविराज श्यामादास के उन पत्रों से, जिनमें ताजा जानकारी दे दी गई है, मुझे बहुत व्यथा हुई और मैंने सोचा कि अगर मामले को आप अपने हाथ में ले लें तो कुछ न कुछ अच्छा परिणाम अवश्य निकलेगा।

आशा है कि आप सानंद होंगे। मैं ठीक ही हूं। विजया की हार्दिक बधाइयां।

सस्नेह,
सुभाष सी. बोस

पुनश्च:

आप इस मामले पर ब्रज बाबू से बात कर सकते हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य समिति के अध्यक्ष हैं।

अगर मैंने मूल पत्र में कोई कड़ी बात लिख दी हो तो कृपया क्षमा करेंगे।

एस. सी. बी.

94. शरत चन्द्र बोस का पत्र

गिद्दा पहाड़,
कुर्सियांग, 18-10-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 2 तारीख का पत्र 16 तारीख को मिला।

मैंने यौजक रमैया को भेज दिए हैं। मैंने उसे तुम्हारे पत्र के संगत अंश भी लिखकर भेज दिए हैं।

मैंने श्रीयुत् किरण शंकर राय को भी लिख दिया है कि अगर कौंसिल आफ स्टेट की मतदाता-सूची में तुम्हारा नाम न हो तो वे तुम्हारी ओर से दावा दाखिल कर दें और इस उद्देश्य से हस्ताक्षरित खाली पर्चियां भेज दी हैं।

सुनील का लंदन का पता है—86, साउथ हिल पार्क, हैम्स्टेड, लंदन, एन. डब्ल्यू. 3 मैं 'फारवर्ड' के द्वितीय वार्षिक समारोह में भाग लेने के लिए 24 तारीख को कलकत्ता

जा रहा हू। कलकत्ता से मैं तुम्हे 100 रुपये भेजूगा। मैं कुर्सियाग 26 को लौट आऊगा।

क्या मैंने तुमको लिखा है कि सरकार ने तुम्हें 'फारवर्ड' भेजने की माग स्वीकार नहीं की है?

हम सब ठीक हैं। आशा है कि तुम स्वस्थ होगे। प्यार और शुभकामनाओ के साथ

सस्नेह
शरत

95. माडले के डिप्टी कमिश्नर के नाम

माडले जेल
5-11-25

प्रिय महोदय,

अगर आप हमारे यहा शीघ्र से शीघ्र पधारे तो हम कृतज्ञ होंगे। हमे जेल के कार्यवाहक सुपरिंटेडेट को लेकर कुछ कठिनाइयो का सामना करना पड रहा है, जिनका परिणाम अप्रिय हो सकता है। अगर आप मामले मे बीच-बचाव कर सके तो आपकी मध्यस्थता का स्वागत होगा।

आपका विश्वस्त
एस सी बोस
(राजबदियो और नजरबदियो की ओर से)

96. मुख्य जेलर के नाम

माडले
10 30 प्रात
9-11-25

प्रिय महोदय

कुछ समय से मैं देख रहा हू कि यहा आने वाले पत्र कार्यालय मे दो या तीन दिन के लिए रोक लिए जाते हैं। आज सवेरे ही हमें जो पत्र मिले वे शनिवार को आ चुके थे और जो हमें उसी दिन मिल जाने चाहिए थे। क्या आप कृपया हम बताएगे कि कार्यालय से हमारे सहन तक पत्रों के पहुचने में यह अनावश्यक देरी क्यो हो जाती है? अगर हमें ये शनिवार को मिल जाते तो हम उनके उत्तर आज की डाक में भेज

सकते थे। जब कि अब हमें उनके जवाब भेजने के लिए अगले शनिवार तक इंतजार करना होगा।

कलकत्ता सी. आई. डी. द्वारा भेजा गया एक तार यहां शनिवार को पहुंच गया था, लेकिन वह मुझे अभी-अभी दिया गया है। क्या मैं पूछूं कि अगर तार को दो दिन तक अनावश्यक रूप से रोक रखना है तो उसे कलकत्ता से भेजने का क्या फायदा है? अगर यह तार समय पर प्रकाशन के लिए कलकत्ता नहीं पहुंचता तो मैं झगड़ा खड़ा करूंगा।

आपका,
एस. सी. बोस

97. मुख्य जेलर के नाम

मांडले जेल
11-11-25

प्रिय महोदय,

पत्रों और तारों के देरी से मिलने के संबंध में मैंने जो नोट भेजा था, कृपया उसका उत्तर दें। हम उसे बहुत गंभीर मामला मानते हैं। आप जानते हैं कि कुछ समय पहले इसी मामले पर गड़बड़ी हुई थी और इसे सुपरिंटेंडेंट ने संतोषजनक रूप में सुलझा दिया था। मुझे नहीं समझ में आता कि आप फिर क्यों झगड़ा पैदा कर रहे हैं।

आपका,
सुभाष

98. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
11-11-25

अत्यावश्यक

प्रिय महोदय,

मुझे आशा है कि अब तक आपको मालूम हो चुका होगा कि पिछले दो या तीन सप्ताहों से हमारे पत्र हमें प्रत्येक डाक से दो दिन की देरी से मिल रहे हैं। हम सभी को यह अधिकार है कि हमें पत्र यहां पहुंचते ही मिलें। हम सबकी अपनी-अपनी निजी

चिताए हैं और इसके अतिरिक्त कारोबारी मामले भी हैं। इसके अतिरिक्त मैं और श्री मित्र कौंसिल आफ स्टेट के चुनावो में भी उम्मीदवार हैं और इस नाते हमे अपने चुनाव एजेंटों समर्थकों तथा रिटर्निंग अफसरो से प्रत्येक सप्ताह नियमित पत्र व्यवहार करना होता है। पत्रों के मिलने मे देरी के कारण हम सबद्ध वापसी डाक से चिट्ठिया नहीं भेज पाते जिससे हमे बहुत असुविधा का सामना करना पडता है। मुझे यहा तक सोचना पडता है कि यह विलब कौंसिल आफ स्टेट की मेरी उम्मीदवारी के प्रति दखलदाजी है।

जहा तक मुझे मालूम है राजबदियो से सबद्ध हर चीज न केवल गोपनीय मानी जाती है बल्कि उसे इस प्रकार निर्दिष्ट भी किया जाता है। अगर पत्र एक लिफाफे मे आते हैं जिस पर गोपनीय लिखा हो तब भी जेल कर्मचारियो को ऐसा प्रबध करना होता है कि वे हमे उसी प्रात मिल जाए। मुझे आशा है कि आप इस मामले की अविलब छानबीन करेगे।

आपका विश्वस्त
एस सी बोस

99 बर्मा की जेलो के आई जी के नाम

द्वारा सुपरिंटेडेट
माडले जेल
13 11 25

प्रिय महोदय

सर्दियों के लिए कपडो के मामले मे मैं आपको यह सूचित करना चाहता हू कि अब तक मुझे निम्नलिखित वस्त्र मिल चुके हैं

1	गद्दा	1
2	ऊनी शाल	1
3	स्पोर्टिंग कोट	1 दर्जी के यहा
4	ओवर कोट	1
5	फलालैन की कमीजे	2 (ये नाप मे ठीक नहीं हैं और मेरे किसी काम की नहीं हैं)
6	टोपी	
7	मोजा	1 जोडी
8	मफलर	

आगामी शीत ऋतु के लिए मेरी आवश्यकताएं इस प्रकार हैं:

1. दो पूरे-पूरे सूट/कोट, वेस्ट कोट, पैंट
2. ऊनी अंडरवेस्ट 2
3. ऊनी मोजे 2
4. फलालैन की कमीजें 2
5. स्वेटर 1
6. गद्दा 1
7. रजाई 1 (अथवा अतिरिक्त गद्दा और रजाई के दो खोल)
8. हैट
9. कालर
10. टाइयां
11. पाजामा सूट 2
12. दस्ताने 1 जोड़ी
13. ऊनी मौजे 1 जोड़ी

इस संबंध में मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर खींचना चाहूंगा कि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यहां आने के बाद मेरा वजन अब तक 16 पौंड घट चुका है और यह सिलसिला अभी भी जारी है।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

100. एस. शेपर्ड के नाम

मांडले जेल,
19-11-25

प्रिय श्री शेपर्ड,

बहुत आभारी होऊंगा, यदि आप घर से प्राप्त सब्जियां और भारतीय मिठाइयों का यह छोटा-सा उपहार स्वीकार करें।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

श्री एस. शेपर्ड, आई. एम. एस.,
सुपरिंटेंडेंट,
मांडले जेल।

101. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
26-11-25

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारे कई पत्र मिल चुके हैं, लेकिन अफसोस कि मैं उनमें से किसी का भी उत्तर नहीं दे सका।

यहा के सभी समाचार तुम्हे रागामामा बाबू से मिल चुके हैं। और कोई नई बात बताने को नहीं है। मैं अगले शनिवार को तुम्हारे पत्र के सभी मुद्दों पर ब्यौरेवार लिखूगा।

मैं नहीं समझता कि तुम्हे कौंसिल आफ स्टेट के एक उम्मीदवार के रूप मे खडा करने की जरूरत होगी। यहा के लोगों को ख्याल है कि लिबरल उम्मीदवारो के रूप में बाबू लोकनाथ मुखर्जी और बाबू नलिनीनाथ सेठ काफी अच्छे रहेगे। लेकिन अगर कोई ऐसा खतरा दिखा कि उनमे से किसी नामाकन पत्र को किसी अनियमितता के कारण स्वीकार न किए जाने की आशका है, तो मैं तुम्हारा नामाकन पत्र दाखिल कर दूगा।

हम सब ठीक हैं। रागामामा बाबू ने तुम्हारी चिकित्सा के सबध में कविराज से भेंट की है। वे तुम्हे ब्यौरे से लिखेगे। आशा है कि तुम स्वस्थ होगे।

तुम्हारा अत्यत स्नेहपूर्वक
शरत

श्री सुभाष चन्द्र बोस

102. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले जेल
30-11-25

प्रिय महोदय,

यहा बहुत ज्यादा सर्दी पडने लगी है और हमें अभी तक पर्याप्त गर्म कपडे नहीं मिले हैं। कुछ चीजें, जैसे गर्म अडरवीयर, गद्दे, रजाइया, दस्ताने आदि अविलम्ब उपलब्ध कराए जाने चाहिए। मैं नहीं जानता कि आप सरकार की औपचारिक स्वीकृति आने की आशा में कोई रकम मजूर करने को इच्छुक होंगे या आप मेडिकल आधार पर कोई खर्च स्वीकार करना चाहेंगे। जो भी हो, आप इस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स को और स्थानीय

सरकार को तार भेजकर गर्म कपड़ों के संबंध में जल्द निर्णय के लिए अनुरोध कर सकते हैं। हमें आशा है कि आप इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करेंगे।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस,
(राजबंदियों और नजरबंदियों की ओर से)

103. पेनफोल्ड के नाम

मांडले जेल
30-12-25

श्री पेनफोल्ड,

सुपरिंटेंडेंट के नाम यह पत्र गर्म कपड़ों के विषय में है। कृपया इसे आज ही बिना चूके उनके सम्मुख प्रस्तुत कर दें।

एस. सी. बोस

104. संतोष कुमार वसु के नाम

मांडले
4-12-25

प्रिय श्री वसु,

आपके पत्रों को पढ़ना एक आनंद की अनुभूति करना है और उनके उत्तर देने में मुझे विशेष प्रसन्नता होती है। मैं कह नहीं सकता कि आपका पत्र एक बार फिर पाकर मुझे कितना हर्ष हुआ। मैं कार्पोरेशन में आपकी गतिविधियों की, जितना वर्तमान परिस्थिति में संभव है, जानकारी रखता रहा हूं। न्यू मार्केट के संबंध में अखबारों में शिकायतों की संख्या में निश्चित रूप से कमी हुई है। आशा है कि मृत्यु कक्ष बन जाने से आवारा कुत्तों की समस्या समाप्त हो जाएगी।

'गजट' का वार्षिक अंक काफी सफल रहा है और कृपया उसके संपादक को मेरी बधाइयां दे दें। वह मुझसे एक संदेश चाहते थे, लेकिन मैंने उसके अतिरिक्त कुछ सुझाव भी भेजे। मैंने महसूस किया कि वे कुछ अधिक संगत तो नहीं थे, लेकिन मैं इस मौके का लाभ उठाकर अपने सुझाव भेजने के लिए उत्सुक था। मुझे उस समय विश्वास नहीं था कि मैं निकट भविष्य में 'गजट' के संबंध में उसके संपादक को अपने विचार बता पाऊंगा या नहीं, और उन्हें भेजने का यही औचित्य था।

कुछ महत्वपूर्ण मामले हैं जिनकी ओर मैं आपका ध्यान इस आशा से खींचना चाहता हू कि आप अपनी स्वाभाविक स्फूर्ति और उत्साह से उन्हे हाथ में लेगे। मैं उनके बारे में कुछ सदस्यो को पहले ही लिख चुका हू, लेकिन कोई फल नहीं निकला है।

जैसे कपनी के साथ सडकों पर रोशनी सबधी ठेका 1931 मे समाप्त होता है। नए ठेके के बारे मे निर्णय पहले ठेके की समाप्ति की तिथि से पाच वर्ष पूर्व (अर्थात 1926 में) करना होगा जिससे नया ठेकेदार 1931 तक काम सभालने के लिए स्वय को तैयार कर ले। हमारे सामने चार विकल्प हैं .

(1) विभाग का नागरिकीकरण और गैस जारी रखना।

(2) विभाग का नागरिकीकरण कितु गैस की जगह बिजली लाना।

(3) एक नए ठेकेदार के साथ सडको पर बिजली की रोशनी के लिए ठेका करना।

(4) गैस कपनी के साथ ठेके को नया करना।

जैसा कि आपने अनुमान लगाया होगा, मैं नागरिकीकरण के पक्ष में हू। विश्व के प्रमुख नगरों के निगम अपने मार्गों पर रोशनी के अपने ही सयत्रों की सहायता से रोशनी का प्रबंध करते हैं तो हम क्यों नहीं वैसा ही कर सकते? अगर हम गैस को ही बनाए रखना चाहे तो हम समस्त उपोत्पाद को या तो गैर-सरकारी पार्टियों को बेचकर या म्यूनिसिपैलिटी की ओर से उद्योग खोलकर औद्योगिक कामा में ले सकते हैं। उदाहरण के लिए हम फेनायल या फेनोकोल की खरीद न करके अपने लिए स्वय ही रोगाणुनाशकों को निर्मित कर सकते हैं। हम गैस कपनी के पूरे सयत्र को खरीद सकते हैं और बस, उसका प्रबध करने के लिए आदमी रख दे। मुझे ऐसा कोई कारण नहीं दिखता कि इस प्रबध में हमे फायदा नहीं होगा।

नागरिकीकरण के अतर्गत हम गैस की जगह बिजली की रोशनी की व्यवस्था करे या नहीं, यह एक गभीर विचार का विषय है। इसका समाधान पूरी तरह वित्तीय स्थिति पर निर्भर करेगा। अपनी गिरफ्तारी से पहले मैंने लाइटिंग सुपरिंटेंडेंट से कहा था कि वह बिजली और गैस की रोशनियों की व्यवस्था के लिए आवश्यक उपकरणों आदि की लागत का एक तुलनात्मक लेखा-जोखा तैयार करे। मैं नहीं जानता कि उनका वह काम आगे बढा या नहीं। मुझे यह लगा था कि वह कुल मिलाकर बिजली की रोशनी के पक्ष में थे। आप जानते हैं कि हम प्रति वर्ष बिजली सप्लाई कार्पोरेशन को अपने पपिंग स्टेशनो और कुछ सडको पर रोशनी के लिए कई लाख रुपये देते हैं। अगर बिजली की सप्लाई के लिए हमारे पास अपना ही सयत्र हो तो हम सभी पपिंग स्टेशनों को अपनी ही बिजली से चला सकते हैं और इससे हमें बचत ही होगी। अतिम निर्णय करने से पूर्व इन सभी बातो पर सावधानी से विचार करना होगा। यह तर्क-वितर्क अगर एक वर्ष नहीं तो छह महीने तक तो चलेगा ही, इसलिए अच्छा होगा कि इसे अभी से आरभ कर दिया जाए।

मैं कुछ समय से म्यूनिसिपल मार्केट में ठंडे गोदाम के लिए एक संयंत्र की स्थापना की बात सोचता रहा हूं। इससे उस मांस, मछली और फल को सुरक्षित रखना संभव हो सकेगा, जिसे तुरंत नहीं बेचा जा सके। खाद्य पदार्थों का कुछ अंश प्रतिदिन बाजार में खराब हो जाता है और इस हानि की पूर्ति के लिए सामान्य वस्तुओं का मूल्य बढ़ाना पड़ता है। अगर शीत भंडारण संयंत्रों की सहायता से इस स्थिति को बचाया जा सके तो खाद्य पदार्थों की सप्लाई बढ़ जाएगी और कीमतों में गिरावट आने लगेगी। यह सवाल मार्केट कमेटी में उठाया जा सकता है।

इंग्लैंड में एक खाद्य संरक्षण विभाग है और मेरे एक मित्र (रावेनशा कालेज, कटक, में वनस्पति विज्ञान के प्राचार्य श्री पी. पारीजा) ने कैम्ब्रिज के उस विभाग में वैतनिक शोधकर्ता के रूप में काम किया था। वह प्राय: एक वर्ष तक कार्यरत रहे और उनका मुख्य कार्य सेबों को सुरक्षित रखने से संबद्ध था। कुछ वर्ष पूर्व मैं 'लंदन टाइम्स' में एक लेख पढ़ रहा था जिसमें कहा गया था कि सेबों को सुरक्षित रखने से संबद्ध प्रयोग सफल नहीं हो रहे हैं। आप या तो स्वयं या सेक्रेटरी के जरिए श्री पारीजा को लिखकर अनुरोध कर सकते हैं कि वह अपने क्षेत्र के ताजा अनुसंधानों तथा उनके व्यावहारिक उपयोग के बारे में जानकारी देने की कृपा करें। आप लंदन के स्वास्थ्य मंत्रालय तथा लंदन काउंटी कौंसिल से भी पत्र-व्यवहार करके इस सवाल के बारे में जानकारी भेजने का अनुरोध कर सकते हैं। अगर खाद्य संरक्षण में सफलता मिले तो निश्चय ही सप्लाई बढ़ सकती है और मूल्य गिर सकते हैं और इसलिए इस दिशा में अन्य देशों में हुई प्रगति की जानकारी प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

अनिवार्य प्राथमिकता शिक्षा की शुरूआत करने के मामले में बंबई, दिल्ली और चटगांव हमसे बाजी मार ले गए हैं। यह कितनी लज्जा की बात है! मैंने करीब तीन महीने पहले इसके बारे में डिप्टी मेयर को लिखा था, लेकिन मैं नहीं सोचता कि उनके कानों में जूं रेंगी है। मेरा विचार 1926 में चुने हुए क्षेत्रों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की शुरूआत कर देने का था जिससे वर्तमान कार्पोरेशन का कार्यकाल समाप्त होने से पहले उसे इस क्षेत्र में एक वर्ष का अनुभव प्राप्त हो सके। कानूनन हमें शिक्षा को अनिवार्यत: लागू करने का अधिकार नहीं मिला हुआ है और इसलिए कार्पोरेशन को विशेष अधिकार देने होंगे। मुझे बताया गया है कि पिछली कौंसिल में बाबू सुरेन्द्र नाथ राय के आग्रह पर एक संकल्प पारित किया गया था जिसमें स्थानीय सरकार को अधिकार दिया गया था कि वह एक अधिसूचना द्वारा स्थानीय संस्था को यह अधिकार दे सके कि वह अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू कर सके। मैं नहीं जानता कि यह बात ठीक है या नहीं, लेकिन मैंने अखबारों में पढ़ा कि चटगांव नगरपालिका के मामले में यह कार्यविधि अपनाई गई है। अगर यह सही है तो हमें स्थानीय सरकार की स्वीकृति अविलंब मिल सकती है। अन्यथा कलकत्ता म्यूनिसिपल अधिनियम में संशोधन आवश्यक होगा जिसमें समय लगेगा। मैंने जो सुझाव भेजे उनमें म्यूनिसिपल बैंकिंग को शामिल नहीं किया, लेकिन मुझे प्रसन्नता है कि श्री रामास्वामी ने उनकी चर्चा की है। बहुत से

विचार ऐसे होते हैं जिनके परिपक्व होने के लिए काफी चिंतन, विचार-विनिमय तथा तर्क-वितर्क की अपेक्षा होती है और जो कोई भी किसी म्यूनिसिपल विषय पर स्वस्थ विवाद का श्री गणेश करता है, वह कार्पोरेशन तथा करदाता का हित ही करता है। उसके अलावा यह जानना आवश्यक है कि म्यूनिसिपल प्रशासन के क्षेत्र में अन्य देशो में क्या ताजा प्रगति हुई है।

जहा तक विद्याधरी का प्रश्न है, आप बाहर से (हालैंड, जर्मनी या अमरीका से) कोई नदी-इजीनियर बुलाने की व्यवस्था क्यो नहीं करते, जो विद्याधरी और उसके आसपास की परिस्थितियो का अध्ययन करे और भविष्य की सभावनाओं को निर्धारित करे? उसका खर्च कार्पोरेशन उठा सकता है, लेकिन वह उपयोगी पूजी-निवेश होगा। मुझे खेद है कि सदस्य विद्याधरी समस्या से छुटकारा पा लेना चाहते हैं और समस्या के समाधान के लिए जिम्मेवारी नहीं लेना चाहते। यह साहसहीनता का सूचक है। उन्हें इसकी जगह साहसिकता के साथ कदम उठाना चाहिए और समस्या से यथासभव जूझना चाहिए।

नदियों का आरभ, विस्तार और लोप अपने आपमें एक विज्ञान है और विदेशो में अनेक इजीनियरो ने इसमें विशेषज्ञता प्राप्त की है। नदियो के छोटे से नमूने बनाकर प्रयोग किए जाते हैं, जिससे यह पता चले कि वास्तविक परिस्थितियों में उनका भविष्य का मार्ग क्या होगा। अगर कोई नदी-इजीनियर विद्याधरी के अध्ययन में रुचि लेता है तो वह स्थानीय मिट्टी का परीक्षण करेगा और अपने नमूने के साथ प्रयोग आरभ करेगा। आप जब तक विद्याधरी क्षेत्र के भविष्य का वास्तविक (अथवा आनुमानिक) निर्धारण न कर ले, तब तक आप कलकत्ता की गदे पानी की निकासी के भविष्य की व्यवस्था को निश्चित नहीं कर सकते। श्री विल्किसन या कोई भी जलनिकासी-इजीनियर दूसरी समस्या का समाधान तो कर सकता है, लेकिन पहली समस्या को तो कोई नदी-इजीनियर ही सुलझा सकता है। अभी तक विद्याधरी कमेटी ने पहली समस्या के हाशिए मात्र को छुआ है।

आप गैर-सरकारी तौर पर डा येटली को लिखकर उनके यूरोप और अमरीका के नदी-इजीनियरो के बारे में पूछ सकते हैं। ऐसे प्रख्यात इजीनियरों के बारे मे जानकारी के लिए इग्लैंड की इस्टीट्यूट आफ सिविल इजीनियर्स सस्था की सहायता भी ली जा सकती है। मुझे प्रसन्नता होगी अगर आप इस समस्या को भी हाथ मे ले।

मुझे मार्केट्स कमेटी की रिपार्ट पढने में दिलचस्पी है। मुझे आशा है कि महाशाला की कमजोर नैया उन सभी तूफानों को झेल जाएगी जो भविष्य म आ सकते हैं। अगर मेरे मन मे कुछ उपयोगी सुझाव आएगे तो मैं उन्हे समय-समय पर मेजदादा को लिखता रहूगा। मुझे आशा है कि आप मेरे सुझाव पर कुछ विचार करेंगे।

क्या वर्कशाप कमीशन ने कोई रिपार्ट दे दी है? मोटर वैहिकल्स विभाग की वर्तमान स्थिति क्या है? क्या उसे भविष्य मे मान्यता मिलने जा रही है? मैं पाता हू कि म्यूनिसिपल रेलवे के इजन बुरी हालत मे हैं और आपको ई बी रेलवे की सहायता लेनी पड रही

है। अगले बजट में आपको सड़कों की सफाई की नई मशीनों के लिए कुछ पैसा रखना चाहिए। अतिरिक्त क्षेत्रों के लिए पानी छिड़कने की और गाड़ियां भी चाहिएं। भविष्य के बारे में निर्णय करने से पहले हमें नई मशीनों को लेकर प्रयोग करना चाहिए। सड़कों की हालत के बारे में एक जांच की गई थी। क्या वह पूरी हो गई थी? मेरा विश्वास है कि आपको यूरोप में ताजा पद्धतियों में प्रशिक्षण-प्राप्त किसी सड़क-इंजीनियर की देख-रेख में सड़क विभाग को केंद्रीयकृत करना होगा। कार्पोरेशन में कोई दक्ष इंजीनियर नहीं है। सड़क-निर्माण का कार्य विदेशों में इतनी अधिक उन्नति कर चुका है कि हम बहुत पीछे रह गए हैं। अच्छा होगा कि हम किसी होशियार व्यक्ति को चुनकर उसे प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजें। हमारा सड़क-विभाग इतना पुराना पड़ चुका है कि वह और ज्यादा आवश्यकताओं-को, विशेषतः ऐसी हालत में जब कि कलकत्ता शहर का काफी विस्तार हो चुका है, पूर्ति नहीं कर सकता। मुझे आशंका है कि अगले साल सड़क-निर्माण कार्य फिर ठप्प हो जाएगा और तब करदाता हमारा गला दबोचेंगे। पूरे इंजीनियर विभाग का पुनर्गठन करना होगा और विभिन्न विभागों को (सड़क, जलनिकासी, सफाई) स्वायत्त बनाना होगा। मुझे संदेह है कि कलकत्ता जैसी विशाल महानगरी में केवल एक 'सब जनता' मुख्य इंजीनियर से काम चल सकता है।

क्या आपने कलकत्ता में समय-समय पर फैलने वाली चेचक को बीमारी में जांच की शुरुआत कराई है?

मेरी चिट्ठी लंबी होती जा रही है और मुझे इसको डाक के समय तक भेज देना है, इसलिए बहुत-सी बातों को कहे बिना अब अचानक रुक जाना होगा। मैं जो लिख चुका हूं, उस पर दुबारा दृष्टि भी नहीं डाल सकता। कृपया मेरी जल्दबाजी के लिए क्षमा करें।

सर्वोत्तम शुभ कामनाओं के साथ,

आपका सहृदय,
सुभाष सी. बोस

105. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
5-12-25

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 23 नवम्बर का पत्र आज सवेरे मिला। कई सप्ताहों की चुप्पी के बाद मैंने तुम्हें 26 नवम्बर को पत्र लिखा। वह अगर तुम्हें अभी मिल नहीं चुका है तो मेरा विश्वास है कि दो या तीन दिन में मिल जाएगा। उस पत्र में मैंने लिखा है कि लोग जल्दी नहीं समझे कि डा. द्वारकानाथ मित्र तथा श्री देवप्रसाद के विरुद्ध तुम्हें उम्मीदवार बनाना

चाहिए। लोगों का विचार था कि नलिनी बाबू और लोकनाथ बाबू लिबरलों के पर्याप्त अच्छे उम्मीदवार हैं। लेकिन मैं चुनाव सबधी प्रचार के बारे म सुझाव किरण शकर को भेज रहा हू और मुझे कोई सदेह नहीं है कि वे उपयोगी सिद्ध होंगे।

मैं समझता हू कि तुमने अपना वजन कम होने की बात अधिकारियों को न बताकर ठीक ही किया है। आवेदन-निवेदन हमारे स्वभाव के प्रतिकूल है और *विशेषत* तुम्हारे पहले आवेदन की जो दुर्गति हुई उसके बाद तो इस तरीके को अपनाने का सवाल ही नहीं उठता। तुमने रगून के अखबारों में पढ़ा होगा कि श्री ह्यूस्टीफेंसन अब स्वीकार कर रहे हैं कि तुम्हारा वजन 20 पौंड घटा है। जब इस विषय में उनसे और ब्यौरा देने को कहा गया तो उन्होंने कहा कि *वजन में यह कमी अस्वस्थता के कारण नहीं हुई।* जब सेनगुप्त ने पूछा कि क्या यह स्वास्थ्य के कारण हुआ, तो कोई जवाब नहीं दिया गया। तुम इस बारे में पूरा ब्यौरा 'द स्टेट्समैन' और 'बगाली' पत्रों के वहा पहुचने पर उनमें पाओगे। ऐसी मनोवृत्ति वाले लोगों से बहस करने से कोई लाभ नहीं होता। हम प्रतीक्षा करें *कि सरकार (अगर वह सोचती है तो) कब तक तुम्हें माडले से स्थानातरित* करना एकदम आवश्यक समझेगी।

रमैया ने मुझे 9 नवम्बर को उन सभी पुस्तकों की सूची भेज दी, जिन्हें उसने कार्पोरेशन कार्यालय से तुम्हारे पास भेजा है। देख लो कि सूची सही है या नहीं। उसे पत्र के साथ भेज रहा हू।

मैंने पृथ्वीश की सिफारिश कार्यवाहक मुख्य कार्यपालक अधिकारी से कर दी है। उन्होंने वायदा किया है कि जैसे ही कोई रिक्त स्थान होगा वह इसे याद रखेंगे। लेकिन स्थान रिक्त होता ही नहीं। मैंने पृथ्वीश से कहा है कि वह हमारे अखबार मे पूरे बगाल के लिए एजेंट के रूप में आ जाए जिसके लिए उसे निश्चित वेतन और यात्रा-खर्च मिलेगा। वह शेयर बेच सकता है, विज्ञापन जुटा सकता है, प्रचलन से सबद्ध शिकायतों की जाच कर सकता है और अन्य अनेक प्रकार से सहायक हो सकता है। अभी वह निश्चय नहीं कर पाया है कि वह हमारे अखबार में काम करेगा या नहीं।

मैंने तुम्हारे टाइपिस्ट को कई महीने तक रखा और उसका वेतन देता रहा। लेकिन प्राय पाच मास पूर्व वह यह कहकर अपने घर चला गया कि वहा कोई गभीर बीमारी से पीड़ित है। उसने एक बार मुझे घर से कुछ पैसे भेजने का अनुरोध करते हुए पत्र भेजा था। लेकिन उसके बाद उसके कोई और समाचार नहीं मिले। मुझे अब ऐसा कुछ याद आता है कि मैंने न उसके पत्र का उत्तर दिया था, न पैसे भेजे थे। मैं सत्र के समय इतना व्यस्त रहता हू कि मुझे पत्रोत्तर देने के लिए मुश्किल से ही समय मिल पाता है। इसके अलावा 'फारवर्ड' मेरा अधिकाधिक समय लेता जा रहा है। हम सभी विभागों में सुधार कर रहे हैं। इसमें कोई सदेह नहीं कि हमारा यह पत्र अब भारत का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय दैनिक है। इस बात को अग्रेजी के अखबार भी मानते हैं। आज तो बस इतना ही। मैंने आशा नहीं छोड़ी है कि शीत ऋतु तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो। लेकिन तुम्हें

से परीक्षा करें। जब तक वजन घटने के मूल कारण का पता नहीं चलता और उसे दूर नहीं कर दिया जाता, तब तक मुझे आशा नहीं है कि तुम्हारी तबीयत में अधिक सुधार हो पाएगा।

हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा स्नेहपूर्वक,
शरत चन्द्र बोस

106. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
11-12-25

प्रिय महोदय,

मुझे खेद है कि तेज सर्दी के एक और दौर के कारण मुझे फिर गर्म कपड़ों के बारे में लिखना पड़ रहा है। हमें गर्म अंडरवीयरों, दस्तानों और अतिरिक्त गद्दों (या रजाइयों) की तत्काल आवश्यकता है और अगर ये चीजें शीघ्र न मिलीं तो हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचेगी। चूंकि हमारे स्वास्थ्य के लिए आपकी सीधी जिम्मेवारी है, इसलिए हम जानना चाहेंगे कि क्या आप मेडिकल अफसर के नाते अपनी ही जिम्मेवारी पर स्वास्थ्य के आधार पर उपर्युक्त चीजें खरीदने की स्वीकृति देना चाहेंगे।

प्रसंगत: मैं कलकत्ता के एक अखबार की कतरन भेज रहा हूं जिसमें शायद आपको दिलचस्पी हो। इस कतरन में बंगाल की विधान परिषद् में हुए प्रश्नोत्तर का विवरण दिया गया है। ये पूरक प्रश्न हैं और मुख्य प्रश्नों का ब्यौरा नहीं छपा है। इस सरकार द्वारा भेजे गए जवाब पर मुझे आश्चर्य है। जाहिर है कि उसने किसी चिकित्सक से परामर्श करने का कष्ट नहीं उठाया, क्योंकि कोई भी चिकित्सक अपने होश-हवास में यह नहीं कहेगा कि वजन में 20 पौंड की कमी अस्वस्थता के कारण नहीं है और उसका कोई कारण नहीं दिया जा सकता।

आपका,
एस. सी. बोस
(राजबंदियों और नजरबंदियों की ओर से)

107. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेट के नाम

माडले जेल
शुक्रवार, 11-12-25

प्रिय महोदय,

आपके साथ मेरी जो बातचीत अभी हुई थी, उसके सदर्भ में मैं आपको यह पत्र-व्यवहार भेज रहा हू जो मेरे तथा मुख्य जेलर के बीच हुआ। उनसे आपको पता चलेगा कि बृहस्पतिवार को डाक का कोई उल्लेख नहीं है। पत्र-व्यवहार को देखने से यह स्पष्ट हो जाएगा कि मैंने उस पर यह आरोप नहीं लगाया है कि पत्रो के आने से पहले ही वह उनको भेजने मे देरी करता था। मेरी शिकायत आम थी और उसका बृहस्पतिवार से सबध नहीं था। जहा तक इस शिकायत का सवाल है, वह उचित है और मैं उस पर जमा हुआ हू।

आपका
एस सी बोस

पुनश्च

निस्सदेह मैंने जोर दिया था कि मुझे यहा बृहस्पतिवार को पहुचने वाली डाक उसी शाम को दी जाए (लेकिन आने से पूर्व नहीं), क्यांकि हम उत्तर देने के लिए शुक्रवार को बाहर जाने वाली डाक का लाभ उठाना चाहते थे। लेकिन वह एक अलग मामला है।

एस सी बोस

108 डी आई जी, आई बी, सी आई डी, बगाल के नाम
(द्वारा सुपरिंटेंडेंट, माडले जेल)

माडले
13-12-25

प्रिय महोदय

मैं यह पत्र एक सुझाव देने के लिए लिख रहा हू जिसे यदि मान लिया गया तो हमे डाक शीघ्र मिलने मे सुविधा हो जाएगी। कुछ समय से हमें केवल आपके विभाग द्वारा सैंसर किए गए पत्र मिलने में उनके माडले जेल पहुचने के बाद भी देरी होती रही है। मुझे पता चला है कि यह इस कारण से हो रहा है कि हमारे लिए पत्रो को सैंसर किए जाने के बाद दुहरे गोपनीय लिफाफों मे बद किया जाता है। पहले ऐसा नहीं होता

था और जेल कर्मचारी सेंसर किए गए पत्रों को खोल लिया करते थे। अब चूंकि उन्हें दुहरे गोपनीय लिफाफों में भेजा जाता है, लिफाफे सुपरिंटेंडेंट के आगमन की प्रतीक्षा में रोके रखे जाते हैं, क्योंकि वही उन्हें खोलता है। अगर यहां एक पूरे समय काम करने वाला सुपरिंटेंडेंट हो तो कोई कठिनाई नहीं होती। लेकिन वर्तमान सुपरिंटेंडेंट मांडले का सिविल सर्जन है और इसलिए वह अंशकालिक अधिकारी है तथा वह यहां का काम सामान्यतः सवेरे ही देख पाता है। डाक प्रायः तब आती है, जब वह जेल से जा चुका होता है जिसका नतीजा यह होता है कि डाक या तो उसके अगली बार आने की प्रतीक्षा में रोक ली जाती है या उसके पास भेजी जाती है। लेकिन उसके पास भेजे जाने का तरीका पूरी तरह संतोषजनक नहीं है। इसलिए अगर सेंसर किए गए पत्रों को गोपनीय पत्रों से अलग कर लिया जाए और उन्हें सामान्य ढंग से लिफाफों में भेजा जाए या लिफाफों पर 'केवल पत्र' लिखा हुआ हो तो लिफाफों को जेल के कर्मचारी स्वयं खोल सकेंगे और उन्हें सुपरिंटेंडेंट की प्रतीक्षा नहीं करनी होगी या उसके पास भेजना नहीं पड़ेगा। आपका कार्यालय कोई और भी ऐसी कार्यविधि अपना सकता है, जिससे जेल कर्मचारी खुद लिफाफे खोल सकें और हमें पत्र आने के साथ पहुंचा सकें। कहने की आवश्यकता नहीं कि अगर ऐसे पत्र जिन्हें विधिवत सेंसर किया जा चुका है जेल कार्यालय में पहुंचने पर रोक लिए जाते हैं, तो उससे हमारी परेशानी और चिंता बढ़ती है। कम से कम जब तक यहां पूरे समय का सुपरिंटेंडेंट न हो, तब तक उक्त कार्यविधि अपनाई जाए।

मैं हूं,
आपका विश्वस्त,
एस.सी.बी.

109. बंगाल सरकार के राजनैतिक विभाग के प्रभारी सदस्य के नाम

(द्वारा बर्मा सरकार)

मांडले
13-12-25

प्रिय महोदय,

मैं आपके विचारार्थ यह तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूं कि कुछ समय से मांडले जेल के वर्तमान सुपरिंटेंडेंट के साथ हमारे संबंध न तो सौहार्दपूर्ण हैं, न संतोषप्रद। हमें आशा थी कि निकट परिचय के परिणामस्वरूप हमारे संबंध सुधरेंगे, जैसा कि पिछले सुपरिंटेंडेंट के मामले में हुआ था, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है और भविष्य के लिए भी आसार कुछ अच्छे नहीं दिखाई देते। तनावपूर्ण संबंधों के पीछे जो अनेक घटनाएं हैं, उन्हें गिनाना मेरे लिए आवश्यक नहीं है। लेकिन मैं आखिरी घटना का ही उल्लेख करना चाहूंगा। यहां मौसम अचानक बहुत ठंडा हो गया था (मैं बता दूं कि हम यहां ईंटों के बने या पत्थर की चिनाई वाले कमरों में नहीं रहते, बल्कि लकड़ी के तख्तों

से बने पिजडेनुमा दरबों में रहते हैं और उत्तर से आने वाली तीखी ठडी हवाओ के झोके सहते रहते हैं), इसलिए हमने सुपरिंटेंडेंट का ध्यान हमारे पास अपर्याप्त गर्म कपडो की ओर आकर्षित किया। सरकार से उत्तर में देरी के कारण हमने उनसे कई बार अनुरोध किया कि तत्काल आवश्यक कपडों, जैसे गद्दे, ऊनी अडरबीयर और दस्ताने आदि की स्वीकृति वह स्वास्थ्य के आधार पर दे दे। उनका ध्यान इस बात की ओर भी खींचा गया कि सर्द रातो और सवेरों को देखते हुए हममें से कुछ के पास, जिनमें मैं भी शामिल हू, पर्याप्त गर्म कपडे नहीं हैं। हमे एक मात्र प्रत्युत्तर एक नए जेल कम्बल के रूप में मिला। मैं नहीं समझता कि बर्मा मे भारतीय स्वास्थ्य सेवा के सदस्य जेल कम्बल या उसी कोटि के कम्बल काम मे लाते हैं और इसीलिए मुझे समझ मे नहीं आया कि कुछ राजबदियो और नजरबदियो को जिनमे मैं भी हू, यह चीज क्यो दी गई।

सच्चाई यह प्रतीत होती है कि वर्तमान सुपरिंटेंडेंट को *शायद बगाल रेगूलेशन-* 3, 1818 और 1925 के बगाल जाब्ता फौजदारी सशोधन अधिनियम द्वारा निर्धारित उन *सिद्धांतों की जानकारी नहीं है, जिनके अतर्गत राजबदियो और नजरबदियों से व्यवहार का निर्णय होता है। जो अधिकारी लबे समय से जेल मैन्युअल के अनुसार कैदियों के साथ व्यवहार का अभ्यस्त हो चुका हो उसके लिए उसके अधीन रेगूलेशनो या अधिनियम* 1925 के तहत रखे गए व्यक्तियों से सयमपूर्वक व्यवहार करना कठिन होता है।

हमारे वर्तमान सबधों के फलस्वरूप कोई अप्रिय घटना घट सकती है, इसलिए हम यह वाछनीय समझते हैं कि हमे एक पूर्णकालिक सुपरिंटेंडेंट की देख-रेख मे रखा जाए, जिसके पास हमारी शिकायतो पर गौर करने के लिए ज्यादा समय हो। हमे आशा है कि आप इस मामले मे बर्मा सरकार को प्रेरित करेंगे।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

(इस पत्र को नहीं भेजा गया था)

110. रहीम के नाम

माडले
14-12-25

प्रिय श्री रहीम,

मैंने अभी-अभी सुना है कि श्री चटर्जी की इच्छा अपनी कोठरी में अकेले रहने की है। हम यहा आवश्यक प्रबध कर रहे हैं और फिल्हाल उन्हें इस अहाते से बाहर *जाने की आवश्यकता नहीं होगी।* मैं जब शाम को टेनिस के बाद घूमने जाऊगा तो आपसे बात करूगा। मैं फाटक पर आपको बुला लूगा।

आपका,
एस सी बोस

111. बर्मा की जेलों के आई .जी. के नाम

(द्वारा सुपरिंटेंडेंट, मांडले जेल)

मांडले

15-12-25

प्रिय महोदय,

मैं वांछनीय समझता हूं कि एक राजबंदी, श्री जे सी. चटर्जी, के बारे में कुछ तथ्यों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूं। आपको शायद याद होगा कि आरंभ से ही उनमें मानसिक थकान के चिह्न प्रकट हो रहे थे और वे स्वभाव से शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाले व्यक्ति थे। जब मैं यहां पहले-पहल आया तो पाया कि वे संदेह कर रहे हैं कि वे राजयक्ष्मा के मरीज हैं। वे असाधारण रूप में चिंताग्रस्त रहते थे और मुझे स्मरण है कि आपने यहां के एक बार के दौरे पर कहा था कि उनकी बीमारी अन्य कुछ से अधिक मन:भ्रांति की है। तब से हम गौर करते रहे हैं कि उनकी मानसिक स्थिति में गिरावट आती गई है। वे और ज्यादा चिंताग्रस्त दिखाई देते हैं तथा पहले से ज्यादा उत्तेजित एवं बेचैनी की हालत में हैं तथा लगता है कि वे अपने को बहुत दुखी अनुभव कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों श्री मित्र से अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने उनको अलग ले जाकर गोपनीय बातें की हैं और यह कहते हुए आत्महत्या करने की अपनी इच्छा व्यक्त की कि जीवन में उन्हें कतई कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है। अभी तक हमने इन तथ्यों के प्रति उदासीनता दिखाई है। लेकिन उनकी असलियत हाल की एक घटना से उजागर होती है, जिससे हमारे लिए यह अत्यावश्यक हो गया है कि हम सभी बातों की ओर आपका ध्यान खींचें। कल उन्होंने अचानक एक पत्र सुपरिंटेंडेंट को लिखा, जिसमें उनसे अनुमति चाही कि उन्हें दो-एक दिन एक एकांत कोठरी में रहने दिया जाए, जिससे वे ध्यान कर सकें तथा अपनी बहन के आरोग्य लाभ के लिए, जो इन दिनों सख्त बीमार हैं, प्रार्थना कर सकें। यह तथ्य हमें तभी मालूम हुआ, जब वे अनुमति प्राप्त करने के बाद उक्त कोठरी में जाने की तैयारी कर रहे थे। उनकी वर्तमान हालत तथा पहले के तथ्यों को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वे एक बेहद अवसादपूर्ण और असामान्य मन:स्थिति में हैं। इसलिए हमने उन्हें काफी कठिनाई के बाद राजी किया कि वे उस कोठरी में न जाएं और वादा किया कि हमारे वार्ड में ही ध्यान के लिए कोई प्रबंध कर दिया जाएगा। यही ताजा स्थिति है।

किसी सामान्य व्यक्ति के लिए उन सब तथ्यों का विश्लेषण कर सकना संभव नहीं है, जिनके कारण उनकी वर्तमान मानसिकता बनी है। लेकिन मुझे तत्काल जो सूझ रहा है उसका मैं उल्लेख करना चाहूंगा। जब हम यहां पहले-पहल आए तो वे मन:स्थिति से पीड़ित चल रहे थे। तब से उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ है और वे चिंताग्रस्त रहने की अपनी आदत नहीं छोड़ पाए हैं। आंखों की तकलीफ के कारण वे पिछले कुछ महीनों से कुछ पढ़ नहीं सके हैं और इस प्रकार मन को किसी अन्य दिशा में लगाने

के महत्वपूर्ण जरिए का लाभ नहीं उठा पाए हैं। यह भी हो सकता है कि यहा की एकरसता (वे यहा 1-1/2 साल से हैं) का उनके स्नायुओ पर प्रभाव पडा हो। कुछ महीने पूर्व उनकी बहन गभीर रूप से बीमार पड गई और डाक्टरो ने कहा कि वह अच्छी नहीं हो सकती। तब से उन्हे विषाद-ग्रस्तता के दौरे पडते रहे हैं। उन्होने बगाल सरकार को आवेदन भेजा कि उन्हे अपनी बहन से एक बार भेंट करने दिया जाए। लेकिन वह अनुरोध नहीं माना गया और हो सकता है कि उस कारण से उनकी हालत और बिगड गई हो। वे कई दिनों तक अपनी बहन की बीमारी को लेकर चिंतातुर रहे और अब उन्हे विषाद-रोग हो गया है। कल तीसरे पहर उनसे बातचीत के दौरान, जिसका उद्देश्य उन्हें फिर स्वस्थ स्थिति मे लाना था उन्होने स्वीकार किया कि वे सामान्य मन स्थिति मे नहीं हैं और कहा कि वे अपने वर्तमान परिवेश से ऊब चुके हैं। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि एकात मे रहते हुए वे अपनी मानसिक शक्ति फिर प्राप्त कर सकेंगे तथा पुन पहले जैसे हो जाएगे। लेकिन हमे आशका यह है कि एकात उनको शक्ति देने के बजाय उनकी बीमारी को और बढा देगा और इसीलिए हमने थोडे समय के लिए भी उनको एकात कक्ष म जाकर रहने से रोक रखा है। उन्होने जीवन मे रुचि न होने और आत्महत्या के बारे मे जो सकेत दिए हैं वे हमे बहुत आशकाजनक प्रतीत होते हैं। इन परिस्थितियो में हमारा विचार यह बनता है कि श्री चटर्जी के लिए परिवेश का परिवर्तन बहुत आवश्यक है। हमें आशा है कि आप इस विषय पर विचार करेंगे और आवश्यक कदम उठाएगे।

मैं यह श्री चटर्जी को बताए बिना लिख रहा हू, क्योकि मुझे आशका है कि वे यह सुनना पसद नहीं करेंगे कि उनकी मन स्थिति असामान्य हो रही है।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

112. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले
15-12-25

प्रिय महोदय,

साथ मे सलग्न बर्मा के आई जी पी को सबोधित पत्र से श्री चटर्जी के बारे मे सभी तथ्य, जो हमे विदित हैं, आपको स्पष्ट हो जाएगे। उनकी हालत गभीर मालूम होती है और मुझे आशा है कि आप इस मामले पर पूरी तरह गौर करेंगे।

आपका,
एस सी बोस

113. विभावती बोस के नाम

मां दुर्गा सदा सहाय
मांडले जेल
16 दिसम्बर 1925

प्रिय मेजोबहू दीदी,

आपके 5 दिसम्बर के पत्र को पाकर मुझे जो प्रसन्नता हुई, उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मैंने आपके पिछले दो पत्रों का उत्तर नहीं दिया था और इसीलिए मुझे आशा नहीं थी कि आप पत्र लिखेंगी। जो भी हो, अब मैं आपके तीनों पत्रों का उत्तर दे रहा हूं।

मैंने आपके द्वारा भेजे गए 'पंजाबी' (बंगाली कमीज की तरह का वस्त्र) को कुछ दिन पहले प्राप्त किया। जैसे ही वह पार्सल आया मैं जान गया कि वह घर में कते धागे का बना है, अन्यथा केवल एक ही पंजाबी क्यों होता? निस्संदेह मैं यह नहीं अनुमान लगा पाया कि कताई किसने की है। एक बार मैंने सोचा कि शायद यह मेजबहू दीदी तथा अन्य लोगों द्वारा काते गए सूत का तागा है। फिर मैंने सोचा कि यह शायद लालमानी मां द्वारा काते गए सूत से निर्मित है, क्योंकि मेरे पिछले कारावास के समय उन्होंने मुझे अपने द्वारा काते गए सूत की धोती और चद्दर भेजी थी। अब मैं पाता हूं कि मेरे सभी अंदाज गलत थे। मैंने नहीं सुना था कि आप भी इन दिनों कताई करने लगी हैं। कृपया मुझे अवश्य लिखें कि आपमें से कौन-कौन कताई कर रहा है और आप सब कैसे चल रहे हैं। आपमें से सबसे ज्यादा उत्साही कौन हैं? क्या दीदी कातना सीख गई हैं? आपने अपने सूत की बुनाई कहां से कराई?

पंजाबी बहुत बढ़िया सिला है और ऐसा मैं उसे पहन कर देखने के बाद कह रहा हूं। जैसे हमें अपने हाथ से बनाया गया खाना दस गुना अधिक जायकेदार लगता है, वैसे ही अपने हाथ से कते सूत का कपड़ा औरों द्वारा काते गए सूत के कपड़े की अपेक्षा कई गुना अधिक अच्छा लगता है। मुझे आशा है कि आपका उत्साह दिन दूना, रात-चौगुना बढ़ता जाएगा। यहां पहुंचने के कुछ समय बाद हमने कुछ कताई की। और तब चरखा खराब हो गया तथा जिस व्यक्ति को इस काम में सबसे ज्यादा उत्साह था उसको स्थानांतरित कर दिया गया। इसलिए अब लंगड़ा चरखा अलमारी के ऊपर विराजमान है। मैंने एक बार सोचा कि डा०. पी. सी. राय को लिखूं कि वे मुझे एक चरखा भेज दें। लेकिन फिर सोचा कि वह शायद आधे रास्ते में टूट जाएगा और उस विचार को त्याग दिया।

मैं शारदा के बारे में प्रायः सोचता रहता हूं। वह कैसी है? उसका समय अब मुख्यतः कैसे कटता है? बकरियों में, बिल्ली के साथ, चिड़ियों के बीच अथवा बच्चों के दल में? किसके साथ और किस काम में वह समय गुजारती है?

यह आप सबके लिए, जो मित्र और सबधी हैं, बडे दुख का विषय रहा है कि मैं पूरे एक वर्ष से एक विदेशी जेल मे बदी हू। मैं यह तो नहीं कह सकता कि स्वय मुझे इसका दुख नहीं है। लेकिन मैं प्राय सोचता हू कि इसके पीछे भगवान का कोई न कोई महान उद्देश्य छिपा होगा। अगर ऐसा न होता तो समस्त राजनैतिक बदियो मे से मुझे या मुट्ठी-भर लोगो को यहा क्यो आना पडता? इसके अतिरिक्त मैं शब्दों मे नहीं व्यक्त कर सकता कि समय-समय पर मुझे कितनी प्रसन्नता का अनुभव होता रहता है। अगर यह प्रसन्नता मुझे महसूस न होती तो शायद मैं अब तक पागल हो चुका होता। हम पवित्र ग्रथो मे प्राय पढते हैं कि पीडा मे भी आनद छिपा होता है। यह निस्सदेह सत्य है कि अगर मनुष्य को कर्तव्य-पालन में प्रसन्नता न मिली होती तो वह कष्ट-सकट का सामना समभाव से न कर पाता। निस्सदेह उसे जो सतोष दूसरो के लिए कष्ट सहकर मिलता है, वह और किसी प्रकार की पीडा से नहीं मिल सकता। अगर एक मा को अपने बच्चे के लिए, भाई को भाई के लिए, मित्र को मित्र के लिए, देशभक्त को स्वदेश के लिए कष्ट सहन कर प्रसन्नता न मिलती होती तो क्या उसकी पीडा को सह पाना सभव होता? यह निस्सदेह सच है कि भक्त विरह की कथा के द्वारा श्री कृष्ण के और निकट पहुच जाता है। एक वर्ष के देश-निष्कासन से मुझे अपनी मातृभूमि और ज्यादा प्यारी और अधिक मधुर तथा सुदर लगने लगी है। मैं अब अनुभव करता हू कि मैंने अपने देश से जीवन-पर्यन्त इतना प्यार कभी नहीं किया था। और अगर हमे 'स्वर्गाद्पि गरीयसी' मातृभूमि के लिए कष्ट सहने पडते हैं तो क्या यह प्रसन्नता का विषय नहीं है? आज मैं बाह्य दृष्टि से अपने देश से निष्कासित हू—लेकिन मेरी प्यारी मातृभूमि मेरी रग-रग में हर समय समाई हुई है, मेरी कल्पना की आखों के आगे हर समय मौजूद है। इस आतरिक निकटता में असीम आनद है ।

(अगली पाच पक्तिया सेंसर ने काट दी थीं—सपादक)

19-12-25

मैं मेजदादा को पिछले सप्ताह या इस सप्ताह पत्र नहीं लिख पाया। अगले सप्ताह मे उन्हे लिखूगा।

भैयादूज के उपलक्ष्य में कनक द्वारा भेजी गई धोती और चद्दर पाकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई। मैं अलग से लिखना चाहता था, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि ऐसा करना सभव होगा। जब वह आपके पास आए तो उसे मेरे समाचार दे दीजिएगा।

मुझे अभी एक और भी बात का उल्लेख करना है। आपने पूजा के अवसर पर जो कपडे हमारे लिए भेजे, उन्हे पाकर हम सब बहुत आनदित हुए। वे पूजा के समय तो हमारे पास नहीं पहुच पाए, लेकिन उससे क्या? हमारे लिए तो महीने का हर दिन छुट्टी का दिन होता है। मैं आपके प्रति विजया के प्रणाम निवेदित करते हुए अलग से नहीं लिख पाया था। मैंने मेजदादा को लिखे गए पत्र में वैसा निवेदन कर दिया था। आशा है, बुरा नहीं माना होगा।

मैं समझता हूं कि पूजा संबंधी समाचार अब बासी हो चुके हैं। मुझे नहीं याद आता कि मैंने पहले भी कभी पूजा के समय इतनी प्रसन्नता अनुभव की थी। हमारी इस प्रसन्नता का कारण शायद यह था कि बहुत ज्यादा संघर्ष के बाद हमें पूजा का समारोह मनाने का अधिकार मिला। कौन जानता है कि हम और कितने समय तक कारावास में रहेंगे। लेकिन अगर हमें वर्ष में एक बार मां की पूजा करने का अवसर मिलता रहे तो हम अपने सभी कष्ट झेल जाएंगे। दुर्गा में हमें अपनी मां के, अपनी भारत माता के और सम्पूर्ण सृष्टि के समवेत दर्शन होते हैं।

मैं एक और बात की चर्चा करना भूल ही रहा था। मैं सेजदादा को पहले ही लिख चुका था कि दुर्गा पूजा के संबंध में किया गया व्यय शायद सरकार वहन करेगी। अब हमें आदेश मिला है कि उसे हमको अपने ही स्त्रोत से पूरा करना होगा। हमारा कहना था कि सरकार को 500 रुपये देने चाहिएं और शेष खर्च हम करेंगे। हम अपने हिस्से का पैसा दे भी चुके हैं। लेकिन हम शेष 500 रुपये का एक अंश भी देने की स्थिति में नहीं हैं और हम देंगे भी नहीं।

आप यहां के समाचार जानने को उत्सुक होंगी। मुर्गीखाने की आबादी बढ़ी है। उसमें चार चूजे हैं। कुछ और भी थे, लेकिन वे अंडे से निकलने के बाद ही मर गए। वैज्ञानिक ढंग से एक सम्पूर्ण मुर्गीबाड़ा बना लिया गया है। नए मुर्गे भी खरीदे गए हैं। समय-समय पर हम मुर्गों की लड़ाई का मजा लेते हैं। इससे पहले मैंने ऐसी लड़ाइयां नहीं देखी थीं। कुछ कबूतर रखने का भी प्रस्ताव था, लेकिन जगह की कमी के कारण उन्हें नहीं खरीदा गया। लेकिन अगर हम यहां लंबे समय तक रहे तो कोई शक नहीं कि एक कबूतर-खाना बनकर रहेगा। कारागार का जीवन इतना नीरस और अरुचिकर है कि अगर हम मनोरंजन का कोई साधन न जुटाएं तो स्थिरचित्त रहना मुश्किल हो जाता है।

बिल्लियों से परेशानी पहले की तरह बनी हुई है। आरंभ में उनकी संख्या आठ या नौ थी। गुर्राती हुई झगड़ालू बिल्लियां हर रात हमारी नींद हराम कर देती थीं। वे हमारी डांट-डपट की तनिक भी परवाह नहीं करती थीं, क्योंकि वे जानती थीं कि हम ताला जड़ी कोठरियों में बंद हैं। फिर एक दिन हमने उन्हें पकड़ कर बोरों में बंद किया और बहुत दूरी पर उन्हें छोड़ा गया, परंतु उनमें से कुछ फिर आ धमकीं। अब उनकी संख्या तीन है। उन्हें फिर से भेजा गया, लेकिन वे फिर वापस आ गईं। यहां कई लोगों को बिल्लियों से बहुत लगाव है। वे करें भी तो क्या। किसी अन्य प्रियपात्र के अभाव में वे बिल्लियों पर ही अपना प्यार उंडेल कर संतोष पाते हैं। लेकिन मैं अभी तक इस कमजोरी को नहीं पाल पाया हूं और ये बिल्लियां हैं भी तो कितनी कुरूप। अगर वे शारदा की बिल्लियों की तरह सुंदर होतीं तो शायद उन्हें प्यार किया जा सकता था।

बगीचे को विकसित करने के लिए भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। हमारे स्थाई मैनेजर महोदय ने अपना व्यवस्था संबंधी दायित्व छोड़ दिया है और अब वह बगीचे की ओर ध्यान दे रहे हैं। लेकिन मिट्टी तो जैसे मान किए बैठी है। और फिर मैनेजर

साहब भी तो उसे उनको किस्मत पर छोडने वाले नहीं। मुश्किल से कुछ वर्ग फुट भूमि पर उन्होने क्या-क्या पौधे नहीं लगाए—पालक, बेंगन, चना, दालें, गन्ना, अनानास, प्याज आदि। इसके अलावा तरह-तरह के फूल। जिस जगह सूरज की धूप नहीं पहुचती, वहा फूलो के पौधे नहीं उग रहे थे। इसलिए उन्होने तरह-तरह की वैज्ञानिक विधियो का आविष्कार किया है। पिछले सप्ताह से वह धूप में एक बडे आकार के दर्पण को रखकर उसके जरिए सूरज की किरणे फूलो के पौधों पर प्रक्षेपित करते रहे हैं। उनका विचार है की उन्होने जो उपाय अपनाया है, उसके परिणामस्वरूप फूलों के पौधे अब बहुत तेजी से बढने लगे हैं। इसलिए हमने तय किया है कि उन्हे 'जगदीश बोस द्वितीय' कहा जाए।

इसमे रत्ती-भर सदेह नहीं कि जेल एक अच्छा खासा चिडियाघर है। यहा एक व्यक्ति का नाम श्यामलाल है। उसकी बुद्धिमत्ता को देखकर हम पहले ही उसे 'पडित' की पदवी प्रदान कर चुके थे। हाल में उसकी और भी उच्चतर मेधा को देखकर हमने उसे उपाध्याय की उपाधि से भी विभूषित किया है और उसे विश्वास दिलाया है कि अततोगत्वा वह 'महामहोपाध्याय' की पदवी अर्जित कर सकेगा।

महामान्य श्यामलाल ने एक चोरी मे हाथ बटाया और पाच रुपये लेकर घर लौटे। उनके चोर मित्रो ने उनसे एक हजार रुपये से भी अधिक ठग लिए। पाच रुपयों की खातिर उन्हे पद्रह वर्ष के सपरिश्रम कारावास का दड मिला। उन्हे राजशाही जेल भेजा गया। वहा कुछ कैदियो ने जेल की दीवार तोडी और वे भाग निकले। जब सभी कैदी भाग चुके तो श्यामलाल ने देखा कि जेल खाली है और उसका मुख्य फाटक खुला हुआ है। वह हेड वार्डन के पास गए और उनसे पूछा, 'सर, क्या मैं भी बाहर जा सकता हू।' हेड वार्डन ने कहा, 'जो तुम्हारी मर्जी हो, वह करो।' सभी भगोडे कैदी पकडे गए, उन्हे जेल के अदर लाया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के दौरान श्यामलाल खडे हुए और उन्होने कहा, 'माई लार्ड, मैं हेड वार्डन की आज्ञा लेकर जेल से बाहर गया था।' लेकिन न्यायाधीश ने उनकी एक न सुनी और उन्हे जेल से भागने के लिए एक साल की सपरिश्रम कैद की सजा सुना दी।

यहा श्यामलाल को स्नानघर का भार सौंपा गया। उनका काम नहाने-धोने के लिए पानी जमा करना और यह देखना था कि कपडे तेल साबुन आदि यथा-स्थान मौजूद रहें। उन्होने देखा कि कुछ कैदी नहाने के पानी को व्यर्थ में बहा देते हैं इसलिए उन्होने इसे रोकने का एक उपाय अपने मन मे सोचा। गहरे सोच-विचार के बाद वह स्नानघर गए और दरवाजा अदर से बद करके उसम ताला जड दिया। फिर वह खिडकी से कूद कर बाहर निकले और खिडकी को भी बाहर से फट से कसकर बद कर दिया। खिडकी की सिटकिनी अदर लग गई और श्यामलाल अपनी सफलता पर प्रसन्नता से थिरक उठे। जब नहाने के समय दरवाजा खोलना जरूरी हो गया तो श्यामलाल सोच में पडकर सिर खुजलाने लगे कि अब क्या करें। उनकी इस बुद्धिमत्ता को मान्यता देते हुए हमने उन्हे तुरत 'पडित' की उपाधि से विभूषित किया।

श्यामलाल को उपाधियों पर उपाधियां मिलती चली , क ५ फ गदगद वह 'पंडित' संबोधन पर होते थे और तब से काम के लिए उनका उत्साह दिन-दूना, रात-चौगुना होता गया। एक बार उन्हें डर्माटाईटिस (सफेद दाग) का रोग हो गया, लेकिन वह इस नतीजे पर पहुंचे कि उन्हें कुष्ठ रोग हुआ है। वह सभी से कोढ़ के इलाज के बारे में सवाल-जवाब करते रहते। बाद में किसी अन्य प्रसंग में उन्होंने ऐसी कुशाग्रता दिखाई कि उनका दर्जा बढ़ाकर उन्हें 'उपाध्याय' बना दिया गया। उनकी बुद्धि विकास की ओर इतनी सरपट भागती है कि कोई संदेह नहीं है कि शीघ्र वे 'महामहोपाध्याय' की उपाधि अर्जित कर लेंगे।

यहां एक और बहुत मजेदार व्यक्ति हैं। उन्हें 'यांका' कहा जाता है और वह मूलतः मद्रास क्षेत्र के निवासी हैं। वह इस देश में चालीस वर्ष पहले अंग्रेजों के साथ गए थे जब ब्रिटिश लोगों ने उत्तरी बर्मा पर अधिकार किया था। वह अभी केवल सत्तर वर्ष के हैं और उन्होंने जीवन में केवल तीन शादियां की हैं। वह जितने तगड़े हैं, उतने ही लंबे भी हैं और उनका पेट तो अन्य सभी अंगों की अपेक्षा अधिक आगे बढ़ा हुआ है। भोजन पर टूट पड़ना उनका सबसे प्रिय व्यसन है और उन्होंने इस तथ्य का गहराई से साक्षात्कार किया है कि भोजन दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई है। वह कोई भी भाषा नहीं जानते और अब जिस बोली में अपने आपको व्यक्त करते हैं, वह है करूंगी (एक मद्रासी बोली) जो हिंदुस्तानी और बर्मी की विचित्र-सी खिचड़ी है। इस सद्गुण के, अर्थात किसी भी भाषा की जानकारी न होने के कारण उन्हें पहले-पहल बांग्लाभाषियों के बीच काम करने के लिए तैनात किया गया। हम उनकी बात को वाणी द्वारा कम और इशारों द्वारा ज्यादा समझ पाते हैं। उनमें एक और भी असाधारण गुण हैं। वह किसी भी नाम का सही उच्चारण नहीं कर पाते। उनके मुंह से 'भोगसिंह' के लिए 'वरसिंग', 'कृपाराम' के लिए 'त्रिपद राजु', 'सुभाष बाबू' के लिए 'सुरवन बाबू' और 'विपिन बाबू' के लिए 'गोबिन बाबू' आदि निकलता है। उनकी वाणी का एक उदाहरण यह है, 'त्रिपद राजु चला गिया सोंदे', जिसका अनुवाद है--कृपाराम चले गए हैं। उनके द्वारा कहे गए वाक्य में 'चला गिया' तो हिंदुस्तानी है और 'सोंदे' एक बर्मी शब्द है। यांका को हर समय चिंता रहती है कि हम किसी दिन यहां से चले जाएंगे। तब इन्हें अपने भोजन को लेकर बड़ा कष्ट हो जाएगा।

जब हम अखबार लेकर साथ-साथ पढ़ने बैठते हैं तो वह बिल्कुल गुमसुम दिखाई देते हैं। जब उन्हें मुझसे अकेले में बातें करने का मौका मिलता है तो पूछते हैं, 'बाबू बेंगला चला गिया,' अर्थात क्या बाबू लोग बंगाल वापस जा रहे हैं? जब उनसे कहा जाता है कि हम नहीं जा रहे हैं तो वह राहत की सांस भरते हैं। दूसरी ओर वह शेखी बघारते हुए यह भी घोषणा करते हैं बाबू बेंगला चला गिया बहुत कोंदे', अर्थात अगर बाबू लोग बंगाल चले जाएं तो बहुत अच्छा होगा। 'कोंदे' एक बर्मी शब्द है, जिसका अर्थ है 'अच्छा'।

लेकिन मुझे पूरी कहानी एक ही दिन खत्म नहीं कर देनी चाहिए। पॉली के क्या

हाल हैं ? कविराजी औषधियो से मुझे कुछ फायदा हुआ है लेकिन मुझ निश्चय नहीं कि यह लाभ बना रहेगा। मुझे सर्दी और बुखार था पर अब मैं ठीक हू। आप सब कैसे हैं ? मेरे प्रणाम स्वीकार।

आपका
सुभाष

114 शरत चन्द्र बोस का पत्र

33/1 एल्गिन रोड
19 12 25

प्रिय सुभाष

मुझ तुम्हारा 4 तारीख का पत्र 12 को मिला।

मुझे वे सब मुद्दे मालूम हो गए हैं जिनकी चर्चा तुमने माडले म पिछले महीने रागामामा बाबू (श्री बी एन दत्त) से भेट के साथ की थी। मैं आवश्यक कदम उठा रहा हू।

मैं श्री एस एन हालदार स कल मिला था और उन्हे बता दिया था कि उनका पत्र रोक लिया गया है।

मैं कानपुर 2 को या 23 को जा रहा हू।

मा को तुम्हारा पत्र मिल गया है।

मैंने तुम्हारा मतपत्र विश्वभारती को भेज दिया है।

क्या इग्लैंड म कभी विश्वविद्यालय की ऐसी डिग्री भी थी जिसके आरभिक अक्षर ए. बी थे। मैंने एक पुराने प्रोफेसर की टीका म उनक नाम के साथ ए. बी सलग्न देखा। तुम्हारी डिग्री बी ए. है उस ही मैं अब तक स्नातक की डिग्री जानता रहा हू। व्यक्तिगत तौर पर मैं हमेशा डिग्री को क्रमानुसार अक्षरों में रखना पसद करता हू और मैं तुम्हारे नाम के बाद बी ए. की जगह ए बी रखना चाहूगा लेकिन विश्वविद्यालय ने इसके विपरीत निर्णय किया है।

आशा है तुम पहले से बेहतर हो। हम तुम्हारा वजन घटने पर बहुत चिंता है। मुझे इसका कोई कारण नही दिखता कि वे तुम्हे किसी अच्छी जगह क्यो नहीं स्थानांतरित कर सकते।

शीघ्रता म

तुम्हारा सस्नेह
शरत

श्री सुभाष सी बोस
बी ए. (कन्टब)

115. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले
30-12-25

प्रिय भाई,

मैं आपको कुछ समय से लिख नहीं पाया था। मैं समझता हूं शायद एक पखवाड़े से। आपका 19 तारीख का पत्र मुझे कल मिला और आपके 5 दिसम्बर के पत्र का उत्तर देना अभी शेष है।

मैंने रमैया द्वारा भेजी गई सूची से मिलान किया है और पाया है कि सभी किताबें मेरे पास हैं।

आपको यह पत्र कानपुर से लौटने के बाद मिलेगा। यदि आप वहां गए तो मुझे जानने की उत्सुकता है कि आपकी यात्रा कैसी रही।

मुझे आशा है कि संतानाना बाबू ने बंगाल और बर्मा सरकारों का ध्यान उन बातों की ओर दिलाया है, जिनकी चर्चा उनसे भेंट के दौरान हुई थी।

कुछ समय से मुझे श्रीमती दास के कोई समाचार नहीं मिले हैं। वे कैसी हैं।

मैं नहीं समझता कि किसी भी ब्रिटिश विश्वविद्यालय में बी. ए. की जगह ए. बी. लिखा जाता है। लेकिन अबर्डीन जैसे स्काटलैंड के विश्वविद्यालयों के बारे में मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता।

आशा है कि आप सब ठीक होंगे। मैं भी ठीक-सा ही हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. सी. बोस
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

116. गोपबंधु दास के नाम

माडले जेल
द्वारा डी आई जी, आई बी, सी आई डी
बंगाल
13, इलीसियम रो
कलकत्ता
24-12-25

प्रिय गोपबंधु बाबू,

आपका 26-4-25 का पत्र मुझे कुछ दिन पहले मिला था और उसे पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई थी। मैं उड़िया पुस्तकों की प्रतीक्षा लगातार करता रहा हूं, लेकिन वे अभी यहां नहीं पहुंची हैं। मुझे उनको प्राप्त करने में गहरी रुचि है, क्योंकि मैं उड़िया सीखने के लिए काफी उत्सुक हूं। मुझे मेरी आवश्यकता की किताबें बुक कंपनी (कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता) से मिलती रहती हैं, जहां मेरा खाता खुला हुआ है। अगर मुझे उड़िया पुस्तकों के नाम मालूम हों तो मैं उनसे कह सकता हूं कि मेरे लिए इन्हें मंगा दें। क्या आप किसी अच्छे उड़िया व्याकरण अथवा एंग्लो-उड़िया या बांग्ला-उड़िया व्याकरण का नाम सुझा सकते हैं।

आपके आशीर्वाद और आशा तथा बल का संदेश पाकर मुझे जो खुशी हुई, वह शब्दातीत है। भगवान का धन्यवाद है कि उसकी असीम कृपा से मुझे अपने वर्तमान स्वास्थ्य अनुभव को लाभप्रद बनाने की शक्ति मिली है। हालांकि मेरा स्वास्थ्य लगातार खराब रहा है।

मैं उड़िया विलयन योजना के विकास पर गौर करता रहा हूं और आशा करता हूं कि लार्ड रीडिंग अपनी वापसी से पहले-पहले कोई ऐसा ऐलान करेंगे जो उड़िया (लोकप्रिय) अभिमत के अनुकूल हो।

उड़ीसा में आई बाढ़ के समाचार से मुझे बहुत दुख हुआ। लगता है कि विपत्तियां अकेली कभी नहीं आतीं। कृपया लिखें कि कितना नुकसान हुआ है और कितना राहत कार्य किया जा सका है।

सिल्हट को बंगाल में मिला दिया गया है—मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि गंजम को उड़ीसा में क्या नहीं फिर मिलाया जा सकता। विलय आगे-पीछे होता ही है—मद्रास सरकार अपने विरोध द्वारा केवल उस अनिवार्यता को टाल रही है।

मैं कल्पना कर सकता हूं कि डा. बालकृष्ण मिश्र और पंडित कृपासिंधु मिश्र के असामयिक निधन से आपको कितनी व्यथा हुई होगी। मैं आपको किन शब्दों द्वारा दिलासा दूं? भगवान आपको इस क्षति को सहन करने की शक्ति दे। जिनको भगवान प्यार करता

है, उन्हें अपने पास शीघ्र बुला लेता है। सार्वजनिक जीवन से आपकी संन्यास लेने की इच्छा के पीछे जो पीड़ा है, उसने मुझे गहराई तक छुआ है। मैं महसूस करता हूं कि आप जो कुछ अनुभव कर रहे हैं, वह स्वाभाविक ही है, लेकिन मुझे आशा है कि यह इच्छा समयांतर से दूर हो जाएगी। आपने जिस दिन सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश किया था, उसी दिन से आपकी वैयक्तिक स्वतंत्रता समाप्त हो गई थी। सार्वजनिक सेवा का जीवन संन्यास की तरह होता है, उसमें पांव रखने वाले को अपनी निजी स्वतंत्रता का त्याग करना होता है और अपने अतीत को एकदम भुला देना होता है तथा एक बार ऐसा कदम रखने वाले के लिए वापस जाने की कोई राह शेष नहीं बचती। आप यद्यपि फिलहाल हतप्रभ अनुभव कर रहे हैं और लगता है कि आपकी पीड़ा असहनीय है— परंतु मुझे विश्वास है कि कालांतर में आप अपना संतुलन फिर प्राप्त कर लेंगे। मैं इसका कारण तो नहीं जानता, किंतु यह जीवन का नियम जैसा ही बन गया है कि जिसका हृदय जितना अधिक विशाल होता है, उसकी पीड़ा भी उतनी ही विशद होती है। स्वामी विवेकानंद ने अपने एक गीत में कहा है, 'जतो उच्च तोमार हृदय, ततो दुख जानियो निश्चय' — जितना विशाल तुम्हारा हृदय है, निश्चय ही तुम्हारा दुख भी उतना ही बड़ा होगा।

मुझे आशा है कि पुरी जिले में पानी की निकासी के बारे में कुछ न कुछ किया जाएगा और एक पवित्र संकल्प तक ही बात नहीं रह जाएगी।

उड़ीसा की बढ़ती हुई गरीबी और यंत्रणा सम्पूर्ण परिदृश्य का केवल एक अंश है। उड़ीसा आरंभ में गरीब था और इसीलिए उसके कष्ट इतने तीखे हैं। लेकिन सम्पूर्ण भारत में और बर्मा में भी बढ़ती हुई गरीबी की वैसी ही मार का क्रम चलता जा रहा है।

मुझे आशा है कि आपको जो शोक वहन करना पड़ा है, उसके बावजूद आप स्वस्थ होंगे। कृपया मेरे मित्रों को मेरी याद दिलाएं। मैं ठीक-सा ही हूं। मेरे श्रद्धापूर्ण प्रणाम स्वीकारें।

मैं हूं,
आपका स्नेहपात्र,
सुभाष सी. बोस

पुनश्च:

कृपया जानकारी दें कि उड़िया संतों और साधुओं तथा उनकी साधना पद्धतियों के बारे में कुछ पुस्तकें निकली हैं क्या?

एस सी. बो.

117. अनिल चन्द्र विश्वास के नाम

माडल जेल
(? 1925)

सविनय निवेदन,

आप सुन ही चुके होंगे कि हमारा अनशन एकदम निरर्थक और निष्फल नहीं रहा। सरकार को विवश होकर हमारी धार्मिक मागे माननी पडी हैं और आगे से बगाल के राजबदी को पूजा के व्यय के लिए 30 रुपये वार्षिक मिला करेंगे। यह एक नगण्य राशि है और इससे हमारा खर्च पूरा नहीं हो पाएगा। लेकिन हमें प्रमुख लाभ यह हुआ है कि सरकार ने अब उस सिद्धात को स्वीकार कर लिया है, जिसे अब तक वह मानने से इकार करती रही थी—पैसों का प्रश्न सभी युगो मे और सभी स्थानो में हमेशा बहुत महत्वहीन रहा है। हमारी पूजा सबधी मागो के अलावा, सरकार ने हमारी अनेक अन्य माग भी मान ली हैं। फिर भी वैष्णवो के ढग पर मैं कह सकता हू कि 'यह सब कुछ बाह्य है', अर्थात् सबसे बडा लाभ अनशन से यह हुआ है कि हमे एक आतरिक परिपूर्णता और आनद की उपलब्धि हुई है—मागो की पूर्ति का सवाल एक बाह्यपेक्षी सवाल है, भौतिक जगत से सबद्ध प्रश्न है। कष्ट सहन के बिना मनुष्य अपने आध्यात्मिक लक्ष्य मे एकीकृत नहीं हो सकता और जब तक वह अग्नि-परीक्षा से होकर न गुजरे, तब तक उसे अपने भीतर सचित असीम शक्ति के बारे मे निश्चयात्मक बोध नहीं हो सकता। इस अनुभव का ही यह परिणाम रहा है कि मैं अपने आपको अधिक गहराई से जान सका हू और मेरा आत्म विश्वास बहुत अधिक बढ गया है।

हमे समाज-सेवा द्वारा गृह उद्योगो की स्थापना करने की कोशिश करनी है। अगर हम कमर्शियल म्यूजियम, बगाल होम इडस्ट्रीज एसोसिएशन तथा ऐसी ही अन्य सस्थाओ में जाकर देखें तो हमे नए विचार मिल सकते हैं। आपको बगाल सरकार के गृह उद्योग विभाग की कुछ वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्टें पढकर भी लाभ हो सकता है। इन सबसे अधिक, यह आवश्यक है कि गृह उद्योग केंद्रो को देखा जाए, यह प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की जाए कि वे कैसे काम करते हैं और इस तरह अपने आपको परिशिक्षित किया जाए। मैं नहीं समझता कि गृह उद्योगो को चलाने के लिए बहुत ज्यादा धन की जरूरत होगी। सबसे पहले हमे सदस्यो मे से किसी एक व्यक्ति को चुन लेना होगा जो इस प्रश्न पर सोच-विचार करे, सूचनाए एकत्र करे तथा लिखित सामग्री का अध्ययन करे। फिर उसे स्वय जाकर ऐसे गृह उद्योगो का देखना होगा जिन्हे हम सभवत चला सकते हैं। इसके बाद जब कोई उद्योग आरभ करने का अतिम रूप मे निर्णय लिया जाए तो उसमें काम करने वालो को जाकर काम सीखना होगा। मुझे ऐसी कोई जरूरत महसूस नहीं होती कि किसी को पालिटेक्नीक सस्थाओं मे जाकर पूरा कोर्स करना चाहिए। ना ही मुझे यह जरूरी लगता है कि कोई इलेक्ट्रोप्लेटिंग या ऐसे ही अन्य काम वहाँ सीखे। कारण यह है कि हमारा अपना ही सिलाई विभाग है और हमारी सोसायटी में लुहारी या

इलेक्ट्रोप्लेटिंग सिखाने से कोई लाभ नहीं होगा। जहां तक मुझे स्मरण आ रहा है (मैं पालिटेकनीक में एक ही बार गया हूं) पालिटेकनीक के सभी उद्योगों में से हम अपने कुटीर उद्योगों के लिए केवल बेंत का काम और मिट्टी के माडलों का काम ही अपना सकते हैं। बेंत के काम के बारे में भी मुझे कुछ शक ही है, क्योंकि मैं यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि हमें उस काम को सीखने वाली महिलाएं मिल पाएंगी। अब आप अगर क्ले-माडेलिंग सिखाना चाहते हैं तो कोई भी कार्यकर्ता जाकर कुछ दिन में इस कला को सीख सकता है। इसमें कोई खर्च नहीं लगेगा और जब हम उद्योग का आरंभ करेंगे तो रंगों पर कुछ पैसे खर्च करने होंगे, इसके अतिरिक्त अन्य खर्च बहुत कम होगा। संक्षेप में, एक व्यक्ति को अपना पूरा समय इसी समस्या पर लगाना होगा। उसे प्रायः पागलपन की हद तक इसके पीछे पड़ जाना होगा।

मेरे मन में एक और बात बार-बार आती है। मैं उसके बारे में लिख भी चुका हूं और वह है, सीपियों के बटन बनाना। ढाका जिले के अनेक ग्रामीण घरों में यह उद्योग चल रहा है। गरीब घरों के स्त्री-पुरुष खाली समय में इसे चलाते हैं। किसी एक कार्यकर्ता को यह काम बहुत कम समय में सिखलाया जा सकता है। या, आप चाहें तो किसी नए कार्मिक को रख सकते हैं जो इस काम को जानता हो और सिखा सकता हो।

आप अखबारों में विज्ञापन देकर ऐसे कार्मिक को पाने की चेष्टा कर सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि किसी कड़े पत्थर पर रगड़ कर बटन बनाए जा सकते हैं और हम चाहें तो इस पद्धति से स्वयं इन्हें बनाना शुरू कर दें। छेद बनाने के लिए आपको कोई तेज धार वाला उपकरण चाहिए। अगर आप सोसायटी से ऐसे कुछ उपकरण बनवा लें तथा एकाध बोरी सीपियां एकत्र करा लें तो आप यह काम शुरू करा सकते हैं। यह काम राहत चाहने वालों तक सीमित रहेगा, लेकिन अगर आपको एक बार सफलता मिल गई तो हम देखेंगे कि सामान्य गरीब परिवार स्वयं इसे अपनी आय बढ़ाने के लिए अपना लेंगे। सोसायटी केवल सस्ते दामों में कच्चे माल की सप्लाई को और तैयार माल को ऊंचे दामों में बेचने का प्रबंध करेगी। इस दिशा में काम शुरू करने के लिए आपको आरंभिक अवस्था में काफी समय देना होगा।

आज बस इतना ही।

118. अनिल चन्द्र विश्वास के नाम

मांडले जेल

(? 1925)

आपने जो कागजात मुझे कुछ समय पहले भेजे थे—महात्माजी को अभिनंदन-पत्र, देशबंधु स्मारक निधि के लिए होने वाले सम्मेलन का कार्यक्रम आदि, वे मुझे ठीक से मिल गए हैं। कल मुझे पुस्तकालय की किताबों की सूची, मनोरंजन के रंगारंग कार्यक्रम

आदि के बारे मे भी आपक द्वारा प्रेषित चीजे मिल गईं। मैं शब्दा मे व्यक्त नहीं कर सकता कि सोसायटी के काम म लगातार प्रगति की जानकारी पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई।

मुझे जानकर खुशी हुई कि आपने खर्च निकालने के बाद भी इतने अधिक पैसे जमा कर लिए हैं। आपने चरखा और कताई आदि के बारे में जो भी लिखा है उससे मैं पूरी तरह सहमत हू, लेकिन आपको अभी भी कोशिश छोडनी नहीं चाहिए। आपने अपने पिछले पत्र म कहा था कि अगर हम कपास उगा सके तो एक महानुभाव हमे अस्सी बीघा जमीन देने को तैयार है। अगर ऐसी जमीन मिलने की सभावना हो तो कपास उगाने के लिए पूजीगत खर्च अधिक नहीं आएगा। अगर हम एक या दो मालिया का और कपास के बीजा का खर्च जुटा सके तो एक साल मे हम सभवत अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकगे। अगर भूमि बजर है तो उसे खेती योग्य बनाने के लिए अवश्य ज्यादा खर्च करना पडगा। निस्सदह हमे कृषि विभाग से परामर्श करना होगा कि किस किस्म की कपास उगाई जाए। जो भी कुटीर उद्योग आपने आरभ कर दिए हैं (जैसे पैकेट बनाने का उद्योग) उन्हे जारी रखना चाहिए, बशर्ते उनसे हानि न हो रही हो और लाभ नाममात्र का ही हो। अगर हम अधिक लाभ वाले उद्योगों का सचालन बाद मे कर सकेगे तो हम इन्हें बद कर देगे। जिन लोगा को इस समय सहायता मिल रही है उन्ह किसी न किसी काम मे व्यस्त रखना आवश्यक है। जब वे भीख मागना छोड देंगे और काम मे मन लगाएगे तो उन्ह लाभप्रद उद्योगो में सार्थक ढग से लगाया जा सकेगा। चालू कुटीर उद्योग भले ही वित्तीय दृष्टि से बहुत सफल न हो जन-समुदाय को यह लाभ तो मिलेगा ही कि उनम काम करने की इच्छा पैदा होगी और वे श्रम की प्रतिष्ठा का महत्व समझग। श्री मदन मोहन बर्मन के पास कुटीर उद्योगा के बारे में बहुत विचार है। इस सबध म उनसे मिलना काफी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। अगर हम सस्ते खाद्य-पदार्थ चटनी और अचार आदि बना सक तो कोई कारण नहीं कि हम क्यों न लाभ होता चले। इस काम के लिए महिलाए, विशेषत विधवाए अच्छी साबित होंगी। लेकिन क्या आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो यह काम सिखा सकें। अच्छी बिक्री के लिए यह जरूरी है कि हमारे उत्पादन सर्वोत्तम कोटि क हो। अगर अच्छा माल तैयार करने की कुछ सभावनाए हैं तो आप इसे प्रयोग के तौर पर शुरू कर सकते हैं। आप या तो कच्चा माल सप्लाई करके तैयार माल प्राप्त करग (बिक्री निस्सदेह आपके जिम्मे होगी) या वे स्वय कच्चा माल खरीदे चीजे तैयार करे और उन्ह आपको बेच द। यह काम शुरू करने से पहले इसके व्यापारिया से बातचीत कर लना जरूरी होगा जिससे मालूम हो सके कि व हमारी चीजा की बिक्री कर सकेगे या नहीं अगर कच्चा माल घटिया किस्म का है ता तैयार वस्तुए भी उत्तम कोटि की हागी। दूसरी ओर चोरी की भी बहुत अधिक आशका है। जो लोग यह काम करेगे वे गरीब हैं इसलिए कौन सुनिश्चित कर सकता है कि अगर उन्हें आम नींबू, तेल मिर्च आदि सप्लाई किया जाए तो वे उनको घर के काम म नहीं लाएगे? दूसरी ओर अगर उन्हें ही कच्चा माल खरीदने उनसे चीज तैयार करने और उनको हम बेचने की पद्धति अपनाई जाए तो खतरा यह है कि वे घटिया किस्म क कच्चा

माल (जैसे खराब तेल) का इस्तेमाल करेंगे। कृपया मामले के सभी पहलुओं पर खूब सोच-विचार करने के बाद कोई निर्णय करें। एक बात और।

हमें यह जानकारी होनी चाहिए कि ऐसी चीजों की बाजार में मांग कितनी है। मेरा अपना ख्याल यह है कि ऐसे काम में सफलता की आशा तब तक नहीं होगी, जब तक उन्हें तैयार करने वाले लोग सचमुच ईमानदार न हों। इस काम के लिए गरीब, किंतु जागृत परिवार अधिक उपयुक्त होंगे। जैसे ही तैयार माल प्राप्त हो, उसकी कीमत चुका दी जानी चाहिए या मजदूरी दे दी जानी चाहिए, हमें उनके तब तक भंडारण की आवश्यकता पड़ सकती है, जब तक उन्हें आगे न बढ़ाया जाए।

सोसायटी के लिए एक और काम भी हाथ में लेना बहुत महत्वपूर्ण है। कलकत्ता में दो जेलें हैं : प्रेसिडेंसी जेल और अलीपुर सेंट्रल जेल। जब कोई हिंदू बंदी जिसका कोई संबंधी कलकत्ता में नहीं है, देह त्यागता है तो उसका ठीक से अंतिम संस्कार नहीं हो पाता। ऐसा प्रबंध किया जाना चाहिए जिससे उसका दाह-संस्कार किसी सफाई कर्मचारी वर्ग के सदस्य द्वारा उसे पैसे देकर कराया जा सके। उधर मुसलमानों के लिए-उनका अपना दफनाने से संबंधित एक एसोसिएशन है और उन्हें जैसे ही किसी मुसलमान कैदी की मौत की खबर दी जाती है, वे उसको ठीक से दफनाने का इंतजाम करते हैं। हिंदू बंदियों के लिए भी ऐसा ही कोई एसोसिएशन होना चाहिए। क्या सेवक समिति इस काम का भार अपने ऊपर ले सकती है? अगर आप सहमत हों तो आप बसंत बाबू से जेल सुपरिंटेंडेंट को पत्र लिखवा दें कि समिति इस कार्य का भार वहन करने को तैयार है। अगर आप फिलहाल यह नहीं भी कर सकें तो मैं जैसे ही मुक्त होऊंगा यह काम हाथ में लूंगा। मैंने बहुत से ऐसे दाह-संस्कारों में भाग लिया है जिनमें लोगों की कमी पड़ गई थी; इसीलिए ऐसे काम के लिए मैं स्वेच्छा से अपना समय देने को तैयार रहूंगा।

अगर आप चाहते हैं कि कुटीर उद्योगों का सिलसिला आगे बढ़े तो आपको एक महत्वपूर्ण कदम उठाना होगा। आपको एक उपयुक्त नौजवान की तलाश करनी होगी जिसे कासिम बाजार पालिटेक्नीक में या ऐसी ही किसी अन्य संस्था में प्रशिक्षण दिलाया जा सके। कासिम बाजार के स्कूल में मिट्टी के बहुत सुंदर खिलौने और देवी-देवताओं की मूर्तियां तैयार की जाती हैं। अगर आप सोसायटी से सहायता पाने वालों को ऐसे उद्योगों में लगा सकें तो उनके उत्पाद पूरे बंगाल में, विशेषतः मेलों और त्यौहारों के समय बिक सकते हैं। एक अन्य लोक-कला देश में प्रचलित है, वह है फूल, गुलदस्ते, फूलों के पौधे और चीनी लालटेन जिनमें रंगीन कागज लगाए गए हों। ये चीजें इतनी सुंदर होती हैं कि उन्हें देखकर कोई सहसा नहीं कह सकता कि वे कागज की बनी हैं। सुसंस्कृत परिवारों के छोटे-छोटे बच्चे भी इन्हें बहुत अच्छे रूप में बना सकते हैं।

बटन बनाने का उद्योग ढाका में कुटीर उद्योग के रूप में चल रहा है। बहुत से लोगों का ख्याल है कि ढाका के बटन कारखानों में बनाए जा रहे हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। गांवों में बहुत से घरों में महिलाएं यह काम अपने खाली समय में करती

हैं—यहा तक कि परिवार के लिए खाना पकाने के बीच के खाली समय म भी। इसीलिए वे इतने सस्ते होते हैं। कलकत्ता में बटन उद्योग की शुरुआत करने पर आप विचार कीजिए। हो सकता है कि किसी को ढाका भेजना पडे जो जाकर सीखे कि यह उद्योग घरो में कैसे चलाया जाता है।

भवानीपुर क्षेत्र में स्वास्थ्य सबधी जानकारी देने के लिए भाषणों और स्लाइड शो का प्रबध करना वाछनीय है। भाषणो की जरूरत गरीबो की बस्ती में अधिक है। अगर सभव हो तो सेवक समिति के चित्र और स्लाइड दिखाने का उपकरण खरीदने की कोशिश करे। अगर भाषण स्लाइडो की सहायता से दिए जाए तो वे कहीं अधिक प्रभाव डालेगे। जहा तक चित्रो का सवाल है अधिक अच्छा यह होगा कि उन्हे खरीदने के बजाय स्थानीय चित्रकारो से बनवा लिया जाए।

आज बस इतना ही।

119. अनिल चन्द्र विश्वास के नाम

माडले जेल
(? 1925)

प्रिय मित्र,

मुझे आपका पत्र और सभी समाचार पाकर बडी प्रसन्नता हुई। आपको इसलिए निराश या चिंतित नहीं होना चाहिए कि अनाथालय के मामलों में कार्यकारिणी समिति के बहुत कम सदस्य रुचि लेते हैं। अधिकाश कार्यकारिणी समितिया का यही हाल है। आपको अपने उदाहरण द्वारा दूसरो मे सेवा की भावना और उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। कोई भी समाज में रहकर औरो की सेवा तब तक नहीं कर सकता जब तक उनकी दुर्दशा से लोगो मे सहानुभूति और सवेदना न जागृत हो। अगर ऐसा हो भी तो वह अधिक लाभप्रद नहीं होगा। मेरी यह आशा और कामना है कि आप जनता की निष्ठापूर्वक सेवा तथा प्रेम द्वारा समाज के अन्य सदस्यो में वैसा ही भाव उत्पन्न कर सके।

क्या अनाथालय के भवन से सलग्न कोई ऐसी भूमि है, जो बागवानी के लिए उपयुक्त हो?

मुझे जानकर प्रसन्नता है कि आप मासिक चदे के रूप में 140 रुपये जमा कर पा रहे हैं। आपको मकान का कितना किराया देना होता है। मकान म कितनी मजिलें और कितने कमरे हैं? कार्पोरेशन प्राइमरी स्कूल मे कितने विद्यार्थी हैं? और वे किस वर्ग के हैं? कृपया ब्यौरे से लिखिए कि अनाथालय के बच्चों के लिए पढाई का क्या कोर्स है और उसके लिए कितने नौकर काम कर रहे हैं?

रोज का खाना पकाने का काम कौन करता है? कितने लडको को बुनाई और सिलाई की मशीन पर काम की जानकारी दी जा रही है? आप क्या सोचते हैं कि कोई

लड़का कितने समय में बुनाई और सिलाई सीख लेगा? (इतना पर्याप्त है कि वह सामान्य कोट और कमीज की सिलाई कर सके)।

लड़कों की बुद्धिमत्ता का सामान्य स्तर कैसा है? अगर आप अनाथालय के बारे में जहां तक संभव हो, ब्यौरेवार रिपोर्ट मुझे लिख भेजेंगे तो मैं उन पर विचार करूंगा और आपको कुछ सलाह देने की कोशिश करूंगा। कृपया लड़कों के खाने-पीने के प्रबंध के बारे में विवरण देवें। बीमारी के समय चिकित्सा की क्या व्यवस्था है? क्या आपको चिकित्सा और दवाइयों पर खर्च करना पड़ता है?

आज बस इतना ही।

120. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
(? 1925)

प्रिय महोदय,

इन्सीन जेल के लिए जिन किताबों की आवश्यकता है, उनके विषय में मैं आपको सूचित कर दूं कि हमारे पास यहां बहुत कम संख्या में बांग्ला पुस्तकें हैं और हम उनमें से नहीं दे सकते। लेकिन हम रवींद्रनाथ टाकुर की वे पुस्तकें भेज रहे हैं, जिनकी अतिरिक्त प्रतियां सरकार द्वारा हमारे लिए खरीदी गई हैं। बांग्ला पुस्तकों की संख्या इतनी कम है और उनकी इतनी मांग है कि उन्हें सचल पुस्तकालय के रूप में काम में नहीं लाया जा सकता

आपका,
एस. सी. बोस

121. बंगाल सरकार के मुख्य सचिव के नाम

मांडले जेल
(? 1925)

विषय : दुर्गा पूजा महोत्सव

प्रिय महोदय,

मुझे आशा है कि आपको मालूम है कि दुर्गा पूजा आगामी 24 सितम्बर को और उसके बाद के सप्ताह में होगी। यह उत्सव हिंदुओं द्वारा, विशेषतः बंगाल के हिंदुओं द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है। समारोह पांच दिन चलता है और इतने विस्तार से होता है कि इसके लिए पहले से काफी तैयारी करनी पड़ती है।

हमें यहां पर समारोह करना है, इसलिए अनुरोध है कि ऐसे विशेष प्रबंध किए जाएं जिससे हम इसको यहां मना सकें। इसके लिए रुपयों की आवश्यकता होगी। अनुरोध है कि इसकी मंजूरी हमें सरकार की ओर से दी जाए।

हमें बताया गया है कि सामान्य समारोह भी मनाने के लिए यहां बंगाली पुजारी नहीं मिलते। दुर्गा पूजा तो कहीं ज्यादा जटिल समारोह है और बंगाली पुजारियों में से बहुत कम ही इसे करवा सकते हैं। इसलिए यहां बंगाल से किसी पुजारी को लाना आवश्यक होगा। हमारा अनुरोध है कि बंगाल से समय रहते एक पुजारी को भेजने का प्रबंध किया जाए।

इस मामले का महत्व देखते हुए, हमें आशा है कि आप इस ओर समुचित ध्यान देंगे।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

(यह पत्र नहीं भेजा गया)

122. बर्मा के महामहिम गवर्नर के नाम

मांडले जेल
(? 1925)

महामहिम के प्रति,

कुछ समय पूर्व हमने उन वाद्य-यंत्रों के प्रयोग की अनुमति के लिए आवेदन किया था, जो हमारे पास हैं या हमारे खर्च से खरीदे गए हैं। इस आवेदन को आई जी पी, बर्मा को भेजा गया जिसने इसे स्थानीय प्रशासन को भेजा और उसने अंतत: बंगाल सरकार को प्रेषित किया। हमें सूचित किया गया है कि बंगाल सरकार ने राजबंदियों एवं नजरबंदियों द्वारा वाद्य-यंत्रों के प्रयोग की अनुमति इसलिए नहीं दी है कि उससे जेल के अनुशासन पर असर पड़ेगा। स्थानीय प्रशासन ने उक्त निर्णय से सहमति व्यक्त करते हुए हमें वाद्य-यंत्रों का प्रयोग करने से मना कर दिया है।

बंगाल में इस प्रश्न पर पिछले कुछ समय से विचार होता रहा है। जब दिसम्बर 1924 में मैं बाहमपुर (बंगाल) की जेल में था तो मैंने इस सवाल पर आई जी पी, बंगाल से विचार-विनिमय किया था। और उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाया था कि अलीपुर केंद्रीय जेल में यूरोपियन और एंग्लो-इंडियन कैदियों को ईसाइयों के विशिष्ट दिनों में संगीत की अनुमति दी जाती है, चाहे वे कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट। उस जेल में चर्च बीचोंबीच में स्थित है और 'आमन' की ध्वनि जेल के कोने-कोने तक पहुंच सकती है—फिर भी यह माना गया है कि उससे जेल का अनुशासन भंग नहीं होगा। आई जी पी ने मेरे तर्क का समादर किया और कहा कि वह इस मामले पर विचार करेंगे।

मैं नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ, क्योंकि मैं बंगाल से गत जनवरी में चला आया था। यद्यपि यहां की परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न हैं। हमें जेल के एक सिरे में रखा गया है जो इस मुख्य खंड से बहुत दूर है। यहां सामान्य कैदी दिन में काम करते हैं और रात में सोते हैं। इसमें संदेह है कि वाद्य-यंत्रों की गूंज वहां तक पहुंचेगी। इसके अलावा सितार और 'इसराज' जैसे वाद्य-यंत्रों की आवाज बगल के कमरे में भी मुश्किल से सुनी जा सकती है। इस जेल के सुपरिंटेंडेंट को हमारे द्वारा वाद्य-यंत्रों के प्रयोग पर कोई आपत्ति नहीं थी, अगर ऊपर के अधिकारियों को कोई एतराज न हो, और उसने अपनी यह राय आई. जी. पी. को उनके यहां दौरे पर आने पर बता दी थी। इन परिस्थितियों में हमें नहीं समझ में आता कि इस खास मामले में वाद्य-यंत्रों के प्रयोग का निषेध किया जाना क्यों आवश्यक माना गया। यह ऐसा मामला है जिस पर स्थानीय अधिकारियों को निर्णय करने का पूरा अधिकार है। अगर जेल के अधिकारियों की यह राय है कि संगीत से अनुशासन भंग नहीं होता, तो अनुमति न देने का कोई उचित कारण नहीं प्रतीत होता।

हम यह तो समझ सकते हैं कि किन्हीं खास घंटों में संगीत पर रोक लगाई जाए, लेकिन एकदम मनाही समझ से बाहर है।

संगीत की आवश्यकता केवल भावात्मक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि धार्मिक दृष्टि से भी होती है। उसका प्रभाव उदात्त बनाने वाला होता है और मनोरंजन के रूप में वह अतुलनीय होता है। मेरी यह मान्यता है कि अगर यह माना जाए कि मनुष्य की आत्मा होती है तो उसे संगीत की उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी खाने-पीने की। इसके अतिरिक्त, जेल-सुधार की दृष्टि से संगीत केवल राजबंदियों और नजरबंदियों को ही नहीं, बल्कि सभी कैदियों के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए। बंगाल सरकार ने इस दिशा में आरंभिक कदम उठाते हुए संगीत को अलीपुर केंद्रीय जेल में चर्च के विशिष्ट दिनों पर सरकारी खर्च से सभी एंग्लो-इंडियन एवं यूरोपियन कैदियों के लिए सुलभ बनाया था और इस सुविधा का सभी बंदियों के लिए विस्तार केवल समय की बात है।

इतनी छोटी-सी बात के लिए आपसे निवेदन करने का मेरे पास यही औचित्य है कि मुझे आशा है कि आपसे मुझे वह मानसिक विशालता और कल्पनाशीलता मिलेगी जिसके बिना सभी प्रकार का प्रशासन विकृत होकर नीरस और निर्जीव यंत्र बन जाता है। विभागीय अधिकारियों की जुबान पर सुधार के नारे भले ही हों, वे अभी तक राजबंदियों को भी जानदार चीज से कुछ अधिक मानने को तैयार नहीं हैं और इसलिए वे किसी तरह की कलात्मक, भावात्मक अथवा धार्मिक प्रवृत्तियों की मांग को पूरा नहीं कर सकते।

मेरी महामहिम से प्रार्थना है कि आप मेरे तर्कों पर विचार करें और हमें उन वाद्य-यंत्रों के प्रयोग की अनुमति दिलाएं, जिन्हें हमने अपने ही खर्च से खरीदा है।

मैं हूं, महामहिम का आज्ञाकारी सेवक।

एस. सी. बोस

123 माडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले
(? 1925)

प्रिय महोदय

मैंने कलकत्ता से भेजे गए श्री दास के निधन के समाचार वाले तार के बारे में आपकी टिप्पणी पढ़ ली है। मुझे आश्चर्य है कि आपने इस मामले के विषय में मुझे कोई भी सूचना नहीं दी। मेरे लोगों को यह गलतफहमी थी कि समाचार मुझे मिल गया है। इधर मुझे दुख था कि बंगाल से किसी ने भी मुझे इस घटना की खबर नहीं भेजी। मैं नहीं जानता कि अगर मुझे खबर दे दी जाती तो कौन सा आसमान फट पड़ता क्योंकि आपको मालूम ही था कि आखिर एक दो दिन में यह समाचार अखबारों में छप ही जाएगा। इसके अतिरिक्त मैं नहीं समझता कि आपको पता है कि स्वर्गीय श्री दास के मेरे साथ कितने निकट के संबंध थे।

मैं यह नहीं कहता कि आपने तार को डी एस पी के पास भेजकर कायदे के खिलाफ काम किया। लेकिन सरकारी कार्यविधि के अनुसार और शिष्टाचार के नाते मुझे यह आशा करनी ही चाहिए थी कि स्थानीय पुलिस द्वारा तार का सेंसर हो जाने के बाद आप यह समाचार मुझे दे देंगे। अगर आपको तार रोकना ही था तो आप इसके बारे में कम से कम प्रेषक को तो सूचित कर ही देते।

आपको याद होगा कि जब आई जी पी यहां पिछले दिनों दौरे पर आए थे तो हम दोनों ने श्री दास के बारे में कुछ बातें की थीं जिन्हें आप बखूबी सुन सकते थे। लेकिन तब भी आपने तार के बारे में कोई संकेत नहीं दिया।

इस सबका निचोड़ यह निकलता है कि क्या हमारे लिए भेजे जाने वाले सभी संदेश हम तक पहुंच भी पाते हैं या नहीं इस पर हमें संदेह उत्पन्न हो गया है।

आपका
एस सी बो

(यह पत्र नहीं भेजा गया)

124. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
(? 1925)

प्रिय महोदय,

मुझे श्री पेनफोर्ड से उन निर्देशों के बारे में सूचना मिली है, जो आई. जी. पी. ने भोजन-भत्ते के बारे में भेजे हैं। मुझे विश्वास है कि आप सहमत होंगे कि वर्तमान परिस्थितियों में यह बहुत क्षोभकारक है। हम यहां जनवरी के अंत में पहुंचे थे। छह महीने बीत चुके हैं, लेकिन भोजन का सवाल अभी तक हल होता हुआ नहीं लगता। पहले कुछ महीनों में, आई. जी. पी. की सहमति से, प्रयोग के तौर पर हमें वह दिया गया जिसकी आवश्यकता थी और औसत खर्च लगभग 5 रु. 8 आना प्रति खुराक आया। उसके बाद हमसे कहा गया कि हम 4 रुपये प्रति खुराक से ज्यादा खर्च न करें और हमने कुछ समय तक ऐसा किया। इसके बाद निर्देश आए कि बंगाल सरकार के निर्णय की प्रतीक्षा में, पुरानी दर लागू होनी चाहिए। हमने इसे भी स्वीकार किया। फिर हमें सूचित किया गया कि बंगाल सरकार ने बर्मा सरकार की सिफारिशों के अनुसार भारत सरकार से सिफारिश की है कि 3 रुपये प्रति खुराक प्रतिदिन का भत्ता जुलाई से दिया जाए। इसके अनुसार वर्तमान डी. सी. की उपस्थिति में यह तय किया गया कि 3 रुपया प्रति खुराक की नई दर 13 जुलाई से लागू की जाए। अब समाचार मिला है कि जब तक भारत सरकार की अंतिम स्वीकृति नहीं मिल जाती, तब तक 2 रुपये प्रति खुराक की वर्तमान दर से अधिक खर्च न किया जाए।

हमें नहीं मालूम कि सबसे ताजा आदेश का वास्तव में आशय क्या है। क्या इसका मतलब यह है कि खुराक-भत्ते में वृद्धि का सवाल उठाया जाएगा? जुलाई बीत चुकी है और इसलिए हमें समझ में नहीं आता कि उस समय प्रति खुराक की नई दरें तब तक कैसे जुलाई से लागू की जाएंगी जब तक भारत सरकार की औपचारिक स्वीकृति की आशा में उन्हें पूर्वकालिक प्रभावी न माना जाए। इसके अतिरिक्त, हमारे दृष्टिकोण से अधिकारियों ने, वे कोई भी क्यों न हों, नई दरें लागू कर दी थीं और नई व्यवस्था को बहुत ही क्षोभजनक तरीके से गड़बड़ी में डाला जा रहा है तथा पुरानी दरें फिर लागू की जा रही हैं। इससे हमारी यही धारणा बनती है कि अधिकारियों का रुख एकदम मनमानेपन का है।

हम इस मामले में सरकार को तुरंत तीव्र प्रतिवेदन देना चाहते हैं। इसके लिए पहले डी. सी. तथा गैर-सरकारी जेल-निरीक्षकों से शीघ्र मिलना जरूरी है। इसके लिए यदि आप तुरंत उन्हें लिखें कि वे अपनी सुविधानुसार शीघ्र से शीघ्र हमसे मिलें तो हम आभारी होंगे।

मैं हूं,
आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

125. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले
(? 1925)

प्रिय महोदय,

मैंने आज सवेरे मुख्य जेलर को जो टिप्पणी भेजी थी, उस पर आपके लिखित विचार देखे हैं और मुझे इसी विषय पर आपकी सूचना भी—मैं उसे पत्र नहीं कह सकता मिली है।

आप कहते हैं कि मुख्य जेलर क प्रति मैं जिस भाषा का प्रयोग करता हू, वह *बिल्कुल अनौचित्यपूर्ण है। मैं समझता हू कि* मुख्य जेलर को और उसके तौर-तरीको को आपकी अपेक्षा मैं अधिक अच्छी तरह जानता हू। मैं यहा छह महीने से भी अधिक समय से रह रहा हू—आप यहा दो महीने से ही हैं। यह आपकी न्यायप्रियता का कोई ऊचा प्रमाण नहीं है कि एक ओर तो आप मेरी भाषा को 'बहुत ज्यादा अनौचित्यपूर्ण' कहते हैं, दूसरी ओर आप मुख्य जेलर द्वारा ऐसी परिस्थिति मे, जब कि भोजन का प्रबध हमारे हाथो मे है, अचानक हमारी सप्लाई को घटा देने की अपमानजनक कार्रवाई पर एक शब्द कहना भी जरूरी नहीं समझते। इसके विपरीत, आपने यह आदेश स्पष्ट मुख्य जेलर को देकर आक्रामक रुख अख्तियार किया है कि इस 'अर्थात मुख्य जेलर के नाम मेरे पत्र का कोई उत्तर न दिया जाए और न श्री बोस को तब तक कोई सूचना दी जाए जब तक वे अपनी हैसियत के मुताबिक शब्दो का प्रयोग न सीख ल।' मुख्य जेलर के हथकडों से आप मेरी अपेक्षा अधिक परिचित हैं और जानते हैं कि हमारे यहा पहुचने के दिन से ही यह किस प्रकार असख्य तरीको से हमे कोचते रहे हैं। उनकी ओर आपके पूर्ववर्ती का और इस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स का ध्यान विधिवत खींचा गया था और यदि आप अपना सामान्य रुख हमारे प्रति सहानुभूतिपूर्ण रखते, अपने व्यवहार और रग-ढग मे इतनी रुखाई न बरतते और हमारी जो भी शिकायतें रही हो अपने मातहतो की ही बराबर इतनी अधिक तरफदारी न करते, तो मैं कह सकता हू कि अब तक आपको हमसे कहीं ज्यादा जानकारी मिल चुकी होती। अगर मुख्य जेलर कोई ऐसा कदम उठाता है जो हमारे प्रति अपमानजनक है तो उसे उसके विरोध के लिए तैयार रहना चाहिए और सच्ची खेल-भावना से जवाबी मुक्का सहने को तैयार रहना चाहिए। मुख्य जेलर के बचाव का जो बहादुराना रुख आपने अपनाया है, वह आपकी अपनी शूरवीरता के बारे में अच्छी राय का सकेत वाहक हो सकता है, लेकिन है वह एक कमजोर पक्ष का समर्थन करने का लचर प्रयास मात्र।

आपने मेरे द्वारा अपनी हैसियत को देखकर बात करने की चर्चा की है और आप मुझे दिखाना चाहते हैं कि 'सभ्यजना मे दैनदिन व्यवहार में शिष्टता का समावेश कैसे होता है।' इस सदर्भ में पहले तो मैं आपको यह बता दू कि मैं थोडा-बहुत जानता हू कि आप इस जेल के अधिकारियों को किस ढग से सबोधित करते हैं और उनके प्रति

कैसे-कैसे अप्रिय शब्दों का प्रयोग करते हैं। अतः आपको यह शोभा नहीं देता कि आप शिष्टाचार और नम्रता का पाठ पढ़ाएं। इसके अलावा, मैं आपको सूचित कर दूं कि मैं न केवल एक बहुत ही सामान्य परिवार का सदस्य हूं, मैंने ऐसी शिक्षा भी प्राप्त की है जो न केवल इस देश में, बल्कि इंग्लैंड में भी सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है। मैं सभ्यजनों में सामान्यतः प्रचलित 'शिष्टाचार' से अपरिचित नहीं हूं, जैसी कि आपकी धारणा प्रतीत होती है और मुझे यह कहने की इच्छा होती है कि दूसरों को दवा देने से पहले आप अपना रोग तो दूर कर लीजिए। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप तुलना कर देखें कि मैं आपको किस रूप में लिखता हूं और आप मुझे किस रूप में लिखते हैं। शायद यह मानते हुए कि 'संक्षिप्त विवेक की आत्मा है,' आपने पहले ही से शिष्ट पत्राचार पर लगाए गए अंकुशों से आगे बढ़कर--प्रिय महोदय, तथा 'आपका विश्वस्त' आदि को भी शाब्दिक व्यर्थता मानकर अब त्याग दिया है। इस संदर्भ में मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप कृपया सावधानीपूर्वक आई. जी. पी. तथा सरकार के सचिव के पत्राचार पर गौर करें और आप पाएंगे कि उन्हें अभी तक उक्त शाब्दिक व्यर्थताओं को त्यागने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई है।

आपने मेरी 'हैसियत' की चर्चा की है। जी हां, मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि एक अधिकारी के रूप में मेरी आदत अपने मातहतों के साथ न केवल लिहाज के साथ, बल्कि अपनी सामाजिक स्थिति और शिक्षा-दीक्षा के अनुसार शिष्टता और नम्रतापूर्वक भी बर्ताव करने की है। व्यक्ति के रूप में मैं नितांत शांति प्रिय हूं और अगर मैं कभी कड़ी भाषा का प्रयोग करता हूं तो तभी, जब मुझे उत्तेजित किया जाता है, और जब मेरे आत्म-सम्मान पर जिस पर मुझे गर्व है—पहुंचाया गया आघात मुझे शाब्दिक प्रहार करने के लिए विवश कर देता है; और आप यह आशा नहीं कर सकते कि मैं या कोई भी बंगाली राजबंदी उस प्रकार दब्बू या चापलूस बने रहेंगे, जैसे कि आप मातहत या सामान्य कैदी आम-तौर पर हो सकते हैं। अगर आपके निजी अनुभव ने आपके मन में यह विश्वास बद्धमूल किया है कि जिस राष्ट्र का मैं हूं उसके लोग जातीय स्वभाव से क्रीत भाव और चापलूसी वाले हैं, तो मैं इनकी निंदा ही कर सकता हूं और कह सकता हूं कि आपका भ्रम-भंग केवल अनुभव की कठोर पाठशाला में ही हो सकेगा।

निष्कर्षतः मैं आपसे कह दूं कि मैं यहां आपसे शिष्टता और विनम्रता का पाठ पढ़ने के लिए नहीं हूं और इसलिए अच्छा होता कि आप अपना प्रवचन अपने ही तक सीमित रखते।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

(यह पत्र नहीं भेजा गया)

126 बगाल सरकार के मुख्य सचिव के नाम

माडले

(? 1925)

विषय सगीत

प्रिय महोदय

कुछ समय पूर्व हमने स्थानीय जेल-अधिकारियो से वाद्य यत्रो का इस्तमाल करने की अनुमति मागी थी। सुपरिंटेडेंट कैप्टन स्मिथ ने कहा था कि उन्हे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन चूकि यह वर्तमान प्रचलन से हटी हुई बात होगी इसलिए उन्होने मामले को आई जी पी बर्मा के पास भेज दिया। आई जी पी ने उसे बर्मा सरकार को भेजा जिसने उसको बगाल सरकार के पास प्रेषित कर दिया। बगाल सरकार ने यह उत्तर दिया कि ऐसा अनुरोध बगाल मे इस आधार पर नहीं स्वीकार किया गया है कि सगीत से जेल के आम अनुशासन पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। बर्मा सरकार ने इस विचार से सहमति व्यक्त की और हमें सूचित किया कि हमारा अनुरोध स्वीकार नहीं किया जा सकता।

हम बगाल सरकार का ध्यान इस तथ्य की ओर दिलाना चाहते हैं कि अलीपुर केंद्रीय कारागार में ईसाई कैदियो को चर्च वाले विशिष्ट दिनो पर सगीत की अनुमति दी जाती है। वहा जेल के मध्य मे एक चर्च है और आर्गन के स्वर जेल के कोने कोने तक सुनाई देते हैं। फिर भी यह नहीं माना जाता कि वह सगीत जेल क अनुशासन को भग करेगा। जब गत जनवरी मे बगाल के आई जी पी ने बरहमपुर जेल का दौरा किया था तो मैंने उनका ध्यान उक्त तथ्य की ओर खींचा था और मुझसे कहा गया कि वे सगीत के प्रश्न पर विचार करेगे। हमारा यह विचार है कि जब कि ईसाई बदियो को सगीत की अनुमति दी जा चुकी है कोई भी न्यायप्रिय सरकार उसकी अनुमति शिक्षित और सुसस्कृत राजबदियो तथा नजरबदियो के मामले मे न देवे यह उचित नहीं लगता। सगीत भावात्मक और धार्मिक दृष्टि से बहुत आवश्यक होता है विशेषत शिक्षित और सुसस्कृत व्यक्तियो के लिए। इसके अतिरिक्त मनोरजन के रूप म वह शायद अतुलनीय है। अगर हम मनुष्य को पशु से कुछ अधिक मानो तो यह स्वीकार करना होगा कि सगीत की उसे उतनी ही आवश्यकता है जितनी प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट की होती है। कार्लाइल ने एक बार कहा था— जिस व्यक्ति की आत्मा सगीत विहीन है वह जघन्यतम अपराध कर सकता है।' उसने नहीं कल्पना की होगी कि 20वीं शताब्दी म भारत स्थित महामहिम सम्राट के कारागारो म सगीत पर इसलिए कडी रोक लगा दी जाएगी कि वह बदियो के मन म उदात्त भावनाओ का सचार करेगा। हम यह बात तो समझ सकते हैं कि यह प्रतिबध लगा दी जाए कि जेल के अदर सगीत अमुक समय से अमुक समय तक ही हो। हम यह भी समझ म आता है कि यह निर्धारित कर दिया जाए कि अमुक वाद्य यत्रो की ही अनुमति होगी। बहुत से वाद्य यत्र ऐसे हैं जो आर्गन से कम आवाज करत

हैं और अगर आर्गन की ध्वनि से जेल का अनुशासन भंग नहीं होता जैसे कि अलीपुर न्यू सेंट्रल जेल में हैं, तो कोई कारण नहीं कि ऐसे वाद्य-यंत्रों की ध्वनि से अनुशासन में बाधा पड़े। इसलिए शिक्षित और सुसंस्कृत हिंदू राजबंदियों और नजरबंदियों के मामले में संगीत और वाद्य-यंत्रों पर सम्पूर्ण रोक की बात कतई समझ में आने वाली नहीं है।

हम महसूस करते हैं कि अगर हम बंगाल में होते तो हम सरकार को राजी कर लेने में सफल होते कि वह संगीत के प्रश्न के प्रति उदार और प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाए। अन्य सभ्य देशों की तुलना में बंगाल में जेलों की व्यवस्था यद्यपि पिछड़ी हुई है, लेकिन बर्मा की जेल-व्यवस्था सबसे ज्यादा गई-गुजरी है। और हमारा दुर्भाग्य यह है कि बर्मा में रखे जाने के बाद सभी मामलों में एक ही प्रशासन-प्रणाली से अपील करनी होती है जो प्रायः बाबा आदम के जमाने की है। हमें यह आशंका है कि बंगाल की जेल में हिंदू बंदियों पर संगीत के मामले में जो रोक लगी हुई है, उसका सहारा बर्मा सरकार हमें संगीत के लिए अनुमति न देने के लिए लेगी।

इस प्रश्न पर निर्णय करते हुए हमें आशा है कि बंगाल सरकार राजबंदियों और नजरबंदियों की हैसियत का ख्याल रखेगी। जैसा कि बंगाल के आई. जी. पी. ने अपनी हाल की जेल-प्रशासन रिपोर्ट में कहा है, राजबंदियों और नजरबंदियों को किसी दंड के रूप में कारावास नहीं दिया जाता, बल्कि उन्हें केवल जमानती तौर पर बंद रखा जाता है। हम सरकार को विश्वास दिला सकते हैं कि यदि सभी के लिए नहीं तो अधिकांश राजबंदियों और नजरबंदियों के लिए संगीत से पूर्णतः वंचित किया जाना वास्तविक परेशानी पैदा करता है।

जेल-सुधार की दृष्टि से अब समय आ गया है कि बंगाल सरकार गैर-ईसाई कैदियों को भी संगीत की अनुमति दे। लेकिन इस बीच मेरा अनुरोध है कि सरकार इस प्रश्न पर पुनः विचार करे और राजबंदियों तथा नजरबंदियों के मामले में संगीत पर लगी रोक को उठा ले। इस कदम से हमारे लिए आसान हो जाएगा कि हम जेल में वाद्य-यंत्रों के प्रयोग की अनुमति बर्मा सरकार से प्राप्त कर सकें।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस

127 मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले सेन्ट्रल जेल
(? 1925)

प्रिय महोदय,

मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर खींचना चाहता हूं कि जेल के अदर हाल मे जो पूजा समारोह मनाया गया था, उसके सबध मे प्रतिमा-निर्माता के बिल का भुगतान अभी तक नहीं किया गया है। मुझे नहीं समझ मे आता कि अभी तक बिल का भुगतान क्यो नहीं किया गया। प्रतिमा बनाने वाले ने खर्च का जो अनुमान प्रस्तुत किया था उसे सुपरिंटेंडेंट न स्वीकृत कर लिया था और उसको काम शुरू करने का लिखित आदेश दिया था। इस प्रकार सरकार पर कानूनी बाध्यता है कि वह भुगतान करे। इसके अलावा, सुपरिंटेंडेंट ने उच्चतर अधिकारियों को लिखित सूचना दी कि प्रतिमा-निर्माता को काम शुरू करने का आर्डर दिया गया है और उसे एडवास भी दे दिया गया है। इसलिए प्रतिमा बनाने पर हुए खर्च का भुगतान करने के लिए सरकार को मजूरी देने मे कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

भुगतान न किए जाने क उद्देश्य दो ही हो सकते हैं। पहला तो यह कि जब प्रतिमा-निर्माता अपना काम कर चुके और समारोह समाप्त हो जाए तो उसे परेशान किया जाए। दूसरा यह कि प्रतिमा-निर्माता के मन मे यह बात बैठ जाए कि भुगतान रोके जाने के लिए हम जिम्मेवार हैं और भविष्य मे उसकी सेवाए हमें नहीं प्राप्त हो पाएगी। जो भी हो, यह स्पष्ट है कि आपके कार्यालय द्वारा भुगतान मे देरी के कारण अत में सजा हमे भुगतनी पडेगी। हमे माडले में अनिश्चित काल तक रुकना पड सकता है। इसलिए अगर धार्मिक अवसरो पर हमे ऐसे लोगो की सेवाए उपलब्ध नहीं हों तो जेल अधिकारियों के साथ अनिवार्यत टकराव होगा। इन परिस्थितियों मे मुझे आशा है कि आप देखेगे कि सबद्ध बिल का भुगतान बिना देरी के कर दिया जाता है।

आपका,
एस सी बोस

128. दिलीप कुमार राय का पत्र

उद्धरित, एस. सी. बी.

34, थियेटर रोड,
कलकत्ता
6-5-25

प्रिय सुभाष,

मैंने कोई डेढ़ माह पूर्व तुम्हें एक लंबा पत्र लिखा था। मैं नहीं जानता कि वह तुम्हें मिला है या नहीं। वह एक भावुकतापूर्ण पत्र था, इसलिए मुझे आशंका है कि पुलिस अधिकारियों ने शायद उसको तुम तक पहुंचाना उचित न समझा हो। इसलिए मैं यह पत्र कामकाजी ढंग से इस आशा के साथ लिख रहा हूं कि यह तुम्हें मिल जाएगा।

मैं तुमसे पूछना चाहता हूं कि क्या तुम्हें निम्नलिखित पुस्तकें मिल गई हैं, जिन्हें मैंने पहले अलीपुर फिर बरहमपुर जेल में भेजा था :

(1) आइकेरस आन द फ्यूचर आफ साइंस --बर्टेंड रसल।
(2) लाइफ एंड लेटर्स (द्वितीय खंड)--अनातोले, फ्रांस।
(3) ओपीनियन्स आफ जेरोमी कोयनार्ड — अनातोले, फ्रांस।
(4) गार्डन आफ एपीक्यूरस—अनातोले, फ्रांस।
(5) मदर आफ पर्ल —अनातोले, फ्रांस।
(6) प्रास्पेक्ट्स आफ इंडस्ट्रियल सिविलाइजेशन—बर्टेंड रसल।
(7) प्राबलम आफ चाइना—बर्टेंड रसल।
(8) आइन्स्टाइन द सर्वर —एक रूसी द्वारा लिखित।
(9) माई डेज एंड माई ड्रीम्स—कार्पेंटर।
(10) द रिसर्च मैग्निफिसेंट — एच. जी. वेल्स।
(11) डिसइन्चान्टमेंट—मांटेग्यू।

यह जानकारी मैं इसलिए चाहता हूं कि जब तक मुझे निश्चय न हो कि तुम्हें वे मिल गई हैं, तब तक अन्य किताबें भेजने का कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि वे खो सकती हैं या कहां की कहीं पहुंच सकती हैं। इसलिए अगर संभव हो तो मुझे दो शब्द लिख दो और अपने भाई को जानकारी दे दो तथा उनके जरिए मुझे बताओ कि तुम्हें किस खास पुस्तक की आवश्यकता है अथवा क्या तुम यह निर्णय मुझ पर छोड़ोगे।

मैं ठीक से चल रहा हू। मैं एक बडी बागला पुस्तक और एक अग्रेजी किताब लिख रहा हू। अग्रेजी किताब मे चार महान व्यक्तियो से मेरी भेट-वार्ताओ का विवरण रहेगा। उसके प्रकाशित हो जाने पर मैं उसकी एक प्रति तुम्हे भेजूगा।

इस बीच, मेरे प्रिय मित्र, मैं तुम्ह अपना सर्वोत्तम प्यार और हार्दिक शुभाकाक्षाए भेजता हू।

अत्यत स्नेही,
दिलीप (कुमार राय)

129. दिलीप कुमार राय का पत्र

34 थिएटर रोड,
कलकत्ता
15-6-25

प्रिय सुभाष,

क्या तुम अब रसल की पुस्तक 'प्राम्पेक्ट्स आफ इडस्ट्रियल सिविलाइजेशन' और 'फ्री थाट एड आफिशियल प्रोपैगैंडा' को भेज सकते हो? मुझे उनकी बहुत अधिक आवश्यकता है, क्योकि मैं बर्ट्रेड रसल और उसके दर्शन पर एक लेख लिखना चाहता हू।

कृपया मुझे यह जानकारी भी दो कि क्या इस सूचना को तुम अपने किसी भाई को लिखे गए पत्र द्वारा दे सकते हो, तुम्हें निम्नलिखित पुस्तक, जिन्ह मैंने एक या दो सप्ताह पहले भेजी थीं, मिल गई हैं और वह लबा पत्र भी क्या मिल गया है जिसे मैंने तुम्हारे पत्र के उत्तर मे भेजा था

(1) रोमा रोला--स्टीफेन ज्विग।

(2) अटोनमेंट--थामसन।

(3) ब्रदर्स कार्माजोव—दोस्तोव्स्की।

(4) कमिग रेस--नलिनी गुप्त।

(5) स्मोक--तुर्गनेव।

प्रेमपूर्वक,

स्नेही,
दिलीप (कुमार राय)

130. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
1-1-26

गर्म कपड़ों के बारे में हम 13-11-25 को दिए गए प्रतिवेदन को पुन: प्रस्तुत कर रहे हैं। गर्मियों के लिए कपड़ों के बारे में हम जनवरी के अंत या फरवरी के आरंभ में सूची पेश करेंगे, जिससे हमारा काम अगले अगस्त तक चल सके। लेकिन अगर आप चाहें तो हम सूची पहले भी दे सकते हैं। परंतु हम समझते हैं कि गर्म कपड़ों के सवाल को पहले हल कर लेना ठीक होगा।

एस. सी. बोस

131. जानकी नाथ बोस का पत्र

38/2, एल्गिन रोड
4 जनवरी 1926

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा अंतिम पत्र मिल गया था और यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम ठीक हो।

मैं यहां 22 दिसम्बर को आया था और आज रात कटक के लिए रवाना हो जाऊंगा।

तुम्हारी मां यहां कुछ समय तक रहेंगी--वे काफी ठीक हैं।

अरुणा का विवाह आगामी फाल्गुन के मध्य तक होगा—उसका विवाह रमापति के भगिनीपति परेश के तीसरे भाई से होगा।

डाली की पुत्रियों की शादी के बारे में अभी कुछ तय नहीं हुआ है। हम सब ठीक हैं। आशा है, तुम स्वस्थ होंगे।

तुम्हारा सस्नेह,
जे. एन. बोस

132 जानकी नाथ बोस के नाम

माडले
8 3-26
सोमवार

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
15-3 26
कृते डी आई जी आई बी सी आइ डी
बंगाल।

प्रिय पिताजी

आपको अब तक मालूम हो गया होगा कि हमने 4 तारीख को अपना अनशन समाप्त कर दिया है। हम सबको कमजोरी तो अभी है लेकिन अन्यथा हम ठीक हैं। हमें अपनी पुरानी शक्ति प्राप्त करने में कुछ समय लग जाएगा।

भूख हड़ताल के दौरान मैंने मेजदादा को तार भेजकर पूछा था कि मैं आपको अपने स्वास्थ्य के बारे मे दैनिक सूचना भेजा करूं। उन्होने जवाबी तार भेजकर कहा था कि वे यहा से तार द्वारा प्राप्त दैनिक सूचना के आधार पर रोज-रोज आपको जानकारी देते रहेंगे। इसलिए मैंने आपको सीधे तार द्वारा समाचार नहीं भेजे। मुझे आशा है कि आपको यहा की घटनाओं की सूचना मिलती रही होगी।

मुझे जानकर दुख हुआ कि अरुणा के विवाह की बातचीत टूट गई है।

यहा क्रमश अब गर्मी बढ रही है।

मुझे जानने की उत्सुकता है कि आप सब कैसे हैं। गर्मिया आप कहा बिताने की बात सोच रहे हैं।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

पुनश्च

रागामामा बाबू अब यहा हैं। मेरी उनसे आखिरी भेंट आज होगी। वे आज तीसरे पहर रगून जाएगे और कलकत्ता के लिए मगलवार को रवाना होने वाली नौका को पकड़गे।

मुझे मेजदादा के कंघा और माचिस के नमूने मिल गए हैं। वे सचमुच बहुत अच्छे हैं।

सुभाष

133. बर्मा की जेलों के आई.जी. के नाम

मांडले जेल
8-1-26

प्रिय महोदय,

पिछले समय में मेरा यह दुखद अनुभव रहा है कि स्वास्थ्य के बारे में बंदियों द्वारा की गई शिकायतों पर अधिकारी हमेशा ही गंभीरतापूर्वक विचार नहीं करते और इसी से मैं अपने स्वास्थ्य के बारे में कुछ कहने में हिचक रहा था। लेकिन और अधिक विचार के बाद मैंने यह उचित समझा कि मैं अपने स्वास्थ्य के बारे में लिखित निवेदन प्रस्तुत कर दूं।

मुझे अक्तूबर 1924 में प्रातः सीधे बिस्तर से, जिस पर मैं मलेरिया के भीषण प्रकोप से उबरने के बाद पड़ा था, जेल ले जाया गया और मुझे स्वास्थ्य लाभ की अवधि वहीं बितानी पड़ी। फिर भी, जब तक मैं बंगाल में कारावास में था, मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक था। मुझे फिर मलेरिया बुखार नहीं आया और जब कि बीमारी के बाद मेरा वजन 168 पौंड था, मैंने बंगाल में रहते हुए तीन महीने में अपना पहले का स्वास्थ्य फिर प्राप्त कर लिया। जब जनवरी 1925 के अंत में मुझे बंगाल से बाहर आना पड़ा तो मैं पूर्व स्वास्थ्य प्राप्त कर चुका था और मेरा वजन पहले की तरह 153 पौंड था। तब से मेरा स्वास्थ्य किस प्रकार लगातार गिरता रहा है, यह इस तथ्य से मालूम हो जाएगा कि मेरा वजन यहां रहते हुए क्रमशः घटते-घटते 161 पौंड रह गया है।

यहां के अपने प्रवास के दौरान मुझे लगातार मंदाग्नि रही है। उसके साथ ही रीढ़ की हड्डी में दर्द, अजीर्ण रोग और स्नायु शिथिलता भी रही है। शायद कमजोरी के कारण शारीरिक और मानसिक श्रम से तीव्र विरक्ति के कारण मेरे लिए कोई गंभीर बौद्धिक कार्य करना संभव नहीं हो पाया है। मैं यह बता दूं कि सामान्यतः मुझे कठोर परिश्रम करने की आदत है और शारीरिक तथा मानसिक, दोनों ही दृष्टियों से मैं प्रतिदिन 14 घंटे का, लिखने-पढ़ने और सोचने का काम करने का अभ्यस्त रहा हूं।

मैं यहां सबसे पहले सुपरिंटेंडेंट कैप्टन स्मिथ से मिला था, जिन्होंने मुझे पाचन शक्ति की वृद्धि और अनुप्रेरणा के लिए एक टानिक तथा मेरुदंड में दर्द दूर करने के लिए क्रूशन साल्ट और थोडमल का सेवन करने का सुझाव दिया। उनके द्वारा सुझाए गए उपचार से कुछ लाभ तो हुआ, लेकिन बहुत अधिक नहीं। जब यहां मेजर फिंडले आए तो उन्होंने भी पूर्ववत उपचार सुझाया। लेकिन उन्होंने थोडमल और क्रूशन साल्ट की जगह स्लोरान लेने को कहा। इससे मेरुदंड का दर्द कम हुआ, लेकिन कुछ समय बाद फिर लौट आया। अन्य लक्षण, जैसे अपच, स्नायु शिथिलता और अनिद्रा ज्यों की त्यों रही।

नवम्बर में मैंने तय किया कि मैं अपनी आयुर्वेदिक चिकित्सा शुरू करूं और मैंने अपने पुराने कविराज को इसके लिए लिखा, क्योंकि उन्हें मेरी हालत के बारे में सब

कुछ पता है। यह न जानते हुए कि सरकार का रुख क्या होगा, मैंने सरकार से अपनी चिकित्सा का खर्च देने के लिए नहीं कहा, खास तौर से इसलिए कि मैं यह जोखिम नहीं उठाना चाहता था कि इकारी द्वारा मुझे अपमानित किया जाए। मैं प्राय एक महीने से आयुर्वेदिक चिकित्सा कर रहा हू और अभी यह नहीं कहा जा सकता कि उससे मुझे लाभ होगा या नहीं।

मुझे अहसास है कि इतनी दूरी से किसी मरीज का इलाज करने मे कठिनाइया हैं, लेकिन अगर आप मेरे इलाज की जिम्मेवारी सभाल लें तो मैं आयुर्वेदिक चिकित्सा छोड देने को तैयार हू।

निष्कर्ष रूप मे मैं कहना चाहूगा कि मुझे यह दर्द भरा अहसास है कि जब तक प्राणों के लिए तात्कालिक खतरा न हो, तब तक स्थानीय अधिकारियो से यह आशा करना व्यर्थ है कि वे इस मामले म टस स मस हो सकेंगे। लेकिन मैं यह कहना चाहूगा कि हम केवल कैदी नहीं हैं, बल्कि सुसस्कृत मानव हैं, हमारी मानसिक आवश्यकताओ को उतना ही महत्वपूर्ण मानना चाहिए जितना शारीरिक जरूरतो को। माडले जैसे स्थान मे लबे समय का कारावास उससे अगर मेरी जान को खतरा न भी हो तो भी मेरे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य क लिए अनुकूल नहीं सिद्ध होगा और मेरे भविष्य के जीवन पर असर डालेगा तथा मेरी उपयोगिता और क्षमताओ को दुर्बल बनाएगा। अगर सरकार का उद्देश्य यही है--दडस्वरूप मुझ पर किसी अदालत मे मुकदमा चलाना--तब मुझे और कुछ नहीं कहना है।

आपका विश्वस्त
एस सी बोस

134. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेसर और पास किया

अस्पष्ट

कृते डी आई जी आई बी, सी आई डी

27-1-26

माडले
16-1-26

प्रिय दादा,

मुझे कुछ समय से आपका पत्र नहीं मिला है। आपका पिछला पत्र मैं समझता हू कि 25 दिसम्बर का था।

उत्तरी भारत की आपकी यात्रा कैसी रही? कानपुर के बारे में आपकी क्या धारणा बनी? मैंने सुना है कि पंडित मोतीलाल गंभीर रूप से बीमार हैं और वे इलाज के लिए विदेश जाएंगे। क्या यह सच है?

आपको वहां इस साल सर्दी कैसी प्रतीत हुई? हमें सरस्वती पूजा के लिए पैसों की मंजूरी को लेकर कुछ परेशानी हो रही है। हमने सरकार को प्रतिवेदन भेज दिया है और हम उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आशा है, आप सब बिल्कुल ठीक होंगे। कैप्टन स्मिथ फिर यहां सुपरिंटेंडेंट के पद पर आए हैं। अभी पिछले दिनों बर्मा के इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स यहां आए थे और हमने उनसे कहा कि अगर हमें इस देश में एक साल और बिताना है तो हम चाहेंगे कि हमें बर्मा के किसी पर्वतीय स्थल में स्थानांतरित किया जाए। उन्होंने मुझे अभी कोई जवाब नहीं दिया है। और कुछ लिखने को नहीं है। मैं ठीक हो हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

प्राप्तकर्ता–
श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

135. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
कृते डी. आई. जी. आई. बी., सी. आई. डी.,
बंगाल।

मांडले
23-1-26

प्रिय भाई,

आपका 14 तारीख का पत्र पाकर और यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी उत्तर भारत की यात्रा आनंदप्रद रही है।

कृपया मेजली से कहें कि वह मेरे चश्मे की खोज करे और मुझे मायर लिखित पुस्तक 'एक्सपेरिमेंटल साइकोलाजी' के दोनों खंड भेज दे। चश्मा सीधे भेजा जाए और पुस्तकें सीधे इलीसियम रो भेज दी जाएं, जिससे दिक्कत से बच जाएं। मेरे पुस्तकालय

में मनोविज्ञान विषयक अन्य पुस्तकें भी भेजी जा सकती हैं, लेकिन मुझे मायर की किताब अवश्य ही चाहिए।

यह चिंता का विषय है कि पूरे नगर मे मलेरिया महामारी के रूप में फैला हुआ है। हमारे पास जो साधन हैं, उनकी सहायता से मलेरिया का सामना करना बहुत आसान है और मैं कोई कारण नहीं देखता कि सबद्ध विभाग क्यों नहीं तुरत इस प्रयास में लग जाए।

श्रीमती दास के बारे मे सुनकर मुझे दुख हुआ। कभी-कभी मुझे उनको देखने की बडी इच्छा होती है। भगवान ही जानता है कि मैं कब देख पाऊंगा। प्रभु उन्हे अपने दुर्भाग्य और कष्ट को सहन करने की शक्ति दे।

हमने यहा सरस्वती पूजा का उत्सव मनाया और फिल्हाल उसका खर्च स्वय उठाया। लेकिन हमने सरकार से कहा है कि वह खर्च की भरपाई करे। हम इस मामले को उठाते रहेगे। कविराजी औषधियों से मुझे लाभ है, हालाकि मेरा वजन अब भी घट रहा है। अब वह 159 पौंड है। पर मुझे नहीं मालूम कि कविराजी दवाइयो का प्रभाव स्थाई होगा या नहीं।

मुझे जानकार खुशी हुई कि कोडलिया मे सब काम ठीक से चल रहा है। कृपया बुक कपनी को सूचित कर दे कि नीत्शे की कृतिया भेजते हुए उन्होंने भूल से एक ही पुस्तक की दो प्रतिया भेज दी हैं। यह भूल इसलिए हुई है कि उन्होंने मुझे किताबे कई किश्तों में भेजीं। क्या मैं अतिरिक्त प्रति डाक से भेज दू या अपने बगाल लौटने तक रखे रहू? मैं समझता हू कि लौटा देना ही ठीक होगा, जिससे कोई खरीददार मिल सके तो वे उसे निकाल दे।

फिल्हाल और कोई बात लिखने को नहीं है। आशा है, आप बिल्कुल ठीक होगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

पुनश्च,

मुझे डा रेवर की पुस्तक 'इन्सटिन्क्ट एड दि अनकाशस' भी चाहिए।

एस सी बी

श्री एस सी बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

136. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
8 फरवरी 1926

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
9-2-26
कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,
बंगाल।

प्रिय सुभाष,

तुम्हारे 16 और 23 जनवरी के पत्र यथासमय मिल गए हैं।

हमारी उत्तरी भारत की यात्रा बड़ी आनंददायक रही। उत्तरी भारत लिखते हुए मैं उत्तरी बर्मा लिख गया। आशा करता हूं कि मुझे उत्तरी बर्मा की यात्रा विवश होकर नहीं करनी पड़ेगी।

मैं कानपुर से उस दिन चला जिस दिन श्रीमती सरोजिनी नायडू ने भाषण दिया था। उनकी ओजस्वी वाणी का गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने शायद ही इतना जोरदार भाषण पहले कभी सुना हो। पंडाल के अंदर का दृश्य भी अद्वितीय था। और अगर उत्साह बढ़ाने वाली किसी बात की कमी थी, तो वह दक्षिण अफ्रीकी प्रतिनिधि-मंडल की उपस्थिति से पूरी हो गई।

तुमने पंडित मोतीलाल की बीमारी की जो खबर सुनी है, वह सच नहीं है। वे बिल्कुल ठीक हैं और असेम्बली में पूर्ववत नेतृत्व कर रहे हैं। गोस्वामी प्रतिदिन असेम्बली में अपनी उपस्थिति का अहसास करा रहे हैं और मैं नहीं समझता कि वह दिन दूर है, जब वे उसका नेतृत्व संभालेंगे।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने सरस्वती पूजा संपन्न की। इसमें तुम्हारा खर्च कितना आया?

मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हारा वजन घटते जाने का क्या कारण है। वहां की जेलों के वातावरण में ही कोई प्रतिकूलता होगी। यह सच है कि जो लोग वहां रखे जाते हैं, वे जेलों के अंदर के किसी प्रकार के संक्रामक बैसिलों के शिकार हो जाते हैं। क्या तुम वहां एक बार अपने खून की परीक्षा नहीं करवा सकते और पेशाब की भी।

हां, मैंने भी पाया है कि बुक कंपनी ने नीत्शे की कृतियों के तीसरे खंड की दो प्रतियां भेज दी हैं। मुझे अभी हाल में उनका बिल चुकाना पड़ा और तभी मैंने यह देखा।

मैंने इसके बारे में गिरीश मित्र को लिखा है। मैं समझता हूं कि तुम्हें अतिरिक्त प्रति तुरत लौटाने की जरूरत नहीं है। अगर गिरीश अभी उसे वापस करने को कहता है तो मैं तुम्हे लिख दूंगा।

तुम्हें अन्य जिन पुस्तकों की जरूरत है, उन्हें मैं यथाशीघ्र भेजूंगा।

तुमने इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स से ठीक ही कहा कि गर्मियों में तुमको किसी पर्वतीय स्थल में भेजा जाना चाहिए। जिन लोगों को गर्मियों में पहाड पर जाने की आदत है, उन्हें यह मांग करने का अधिकार है कि उनको गर्मियों में किसी पर्वतीय स्थल में भेजा जाए। मैं नहीं जानता कि अधिकारी गर्मियों में तुम्हें कुर्सियांग (मेरा मतलब वहां अपने घर से है) ऐसे पहरे में भेजने के लिए राजी होंगे या नहीं।

आज तो बस इतना ही। हम सब ठीक हैं।

स्नेहपूर्वक तुम्हारा,
शरत

श्री सुभाष सी. बोस

137. बासंती देवी के नाम*

सेंसर और पास किया	द्वारा डी आई जी, आई बी,
अस्पष्ट	सी आई डी, बंगाल,
1-2-26	13, इलीसियम रो, कलकत्ता
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,	23-1-26
बंगाल।	

आदरणीय मां,

मुझे बहुत समय से आपके कोई समाचार नहीं मिले हैं। मेजदादा का जो पत्र मुझे दो-तीन दिन पहले मिला था, उसमें उन्होंने आपके विषय में लिखा था। काफी समय से आपको पत्र लिखने को इच्छा हो रही थी--केवल उत्तर पाने के लिए नहीं, यद्यपि आपका पत्र पाकर मुझे अपार प्रसन्नता होगी। वास्तविक कारण यह है कि आपको लिखकर शायद मेरा मन हल्का हो जाएगा। मैंने कुछ दिन पहले आपके समाचार पाने के लिए श्री हालदार को लिखा था। उन्होंने मुझे जवाब तो दिया, लेकिन दुर्भाग्य से पत्र पुलिस ने रोक लिया। मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि आपके समाचार पाने के लिए मैं इतना बेचैन क्यों हो रहा हूं।

---

* मूल बंगला से अनूदित।

कुछ समय पहले मेरा मन हो रहा था कि मैं सरकार से अनुमति मांगू कि आपसे एक बार मिल सकूं। राजबंदियों को अपने सगे-संबंधियों से भेंट करने की अनुमति दी जाती है -- मैं ऐसे मामले भी जानता हूं जब कि लोगों को लगातार पांच या सात दिन तक मिलने दिया गया है। मैंने इस विषय में विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उक्त आवेदन करने का कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि मुझे आशा नहीं है कि मुझे अनुमति मिल सकेगी। अनुरोध का कोई भी फल नहीं निकलेगा, केवल मेरा मन कुछ और ज्यादा उद्विग्न हो जाएगा और मैं वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध एक निरर्थक प्रतिवाद में पडूंगा। इसलिए काफी सोच-विचार के बाद मैंने यह विचार अपने मन से दूर कर दिया है।

मुझे यह जानकर बहुत चिंता हुई कि आपको बड़ी कमजोरी महसूस होती है और आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। पर मैं कर ही क्या सकता हूं? हम इतने असहाय हैं कि कुछ भी नहीं कर सकते। और कौन जानता है कि हमारे भाग्य में आगे क्या है? मैं कितनी ही बातें कहना चाहता हूं -- कितनी ही बातें कहने के लिए हैं, लेकिन अभी उन्हें कहने का समय नहीं आया है। यह पत्र भी मैं बहुत हिचकिचाहट के बाद लिखने बैठा हूं, क्योंकि यह पराई निगाहों से होकर गुजरेगा।

मैंने कांग्रेस को भेजा गया आपका संदेश समाचारपत्रों में पढ़ा। करुणा और व्यथापूर्ण उन शब्दों का मेरे मन पर कितना गहरा असर हुआ, इसे मैं शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकता। ऐसा कौन है जो उसके प्रति कृतज्ञता का अनुभव न करेगा, जो स्वयं अपनी पर्वत समान विपत्ति और दुख-राशि को भुलाकर अन्य व्यक्तियों के दुखदर्द पर आंसू बहाता है। अगर ऐसा संदेश कोई और देता तो भी मैं कृतज्ञ अनुभव करता और अपना आभार व्यक्त करता, लेकिन आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, क्योंकि हमारे संबंधों की यह मांग नहीं है। हमारे देशवासियों को आपकी विशाल हृदयता की जानकारी न होती तो क्या वे आपको 'मां' कहते? और जिसे वे मां कहते हैं, उसके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन क्या संभव हो सकता है? यदि मां ही अपने बच्चों के लिए इतनी गहरी पीड़ा अनुभव न करे तो और कौन अनुभव करेगा? कृतज्ञता-ज्ञापन क्या मां और बच्चों के पवित्र संबंध का अपमान करने के समान नहीं है? मुझे आशा है कि आप अपनी समस्त विपत्ति और दुखदर्द के बीच भी यह नहीं भूलेंगी कि बंगाल की असंख्य संतानों ने आपको मां के रूप में अपनाया है। इस बात से आपको अवश्य ही कुछ सांत्वना मिलेगी। गरीब और असहाय होते हुए भी उन्होंने आपकी विपत्ति को अपनी विपत्ति माना है।

आपके धैर्य और सहिष्णुता से हम सब देशवासी आज धैर्य और सहिष्णुता का पाठ सीख रहे हैं। अगर आप इतना सब कुछ सह सकती हैं तो क्या हम इसका एक अल्पांश भी नहीं सहन करेंगे? हमें आशीर्वाद दें कि हमारे पथ पर चाहे कैसी भी बाधाएं क्यों न हों, हमें उनका सामना करने की शक्ति मिलती रहेगी। भगवान की कृपा से मुझे

अब तक ऐसी शक्ति मिलती रही है--जीवन में मेरी एकमात्र यही प्रार्थना है कि मुझमें यह बल सदा बना रहे। मा, आज तो बस इतना ही।

और क्या लिखूं? क्या लिखू, क्या न लिखू, समझ मे नहीं आता।

इति।

आपका सेवक,
सुभाष

श्रीमती बासती देवी,
द्वारा श्री जस्टिस पी आर दास,
पटना।

138. बर्मा सरकार के मुख्य सचिव के नाम

माडले
2-2-26

विषय -- धार्मिक उत्सवों के लिए भत्ता।

प्रिय महोदय,

हम आपका ध्यान एक प्रतिवेदन की ओर खींचना चाहते हैं। हमने 16 जनवरी 1926 को सरस्वती पूजा के लिए भत्ते के बारे मे प्रतिवेदन भेजा था, जिसका उत्तर हमे अभी तक नहीं मिला है।

हम इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स से पहले ही निवेदन कर चुके हैं कि हमे यहा धार्मिक उत्सव मनाने होते हैं (अर्थात सरस्वती पूजा, होली, दौल पूर्णिमा उत्सव और दुर्गा पूजा) और हम आशा करते हैं कि सरकार इन समारोहों के लिए खर्च को मजूरी देगी। सरस्वती पूजा पर, जिसे हमने प्राय 15 दिन पूर्व किया, 76/9 रु का खर्च आया है। होली का त्यौहार आगामी 26 फरवरी को आ रहा है और अगले दो दिन तक मनाया जाएगा, जिसका खर्च सरस्वती पूजा की अपेक्षा अधिक होगा, पर 100 रुपये से ज्यादा नहीं होगा। हमारा अनुरोध है कि आप सरस्वती पूजा तथा होली से सबद्ध खर्चों की स्वीकृति देवें।

यहा यह बता देना अप्रासगिक नहीं होगा कि अलीपुर सेंट्रल जेल मे ईसाई कैदियो को धार्मिक उपासनाओं के लिए 1,200 रुपये वार्षिक खर्च दिया जाता है (देखें, भारतीय जेल कमेटी की रिपोर्ट --1919-20, खड III, पृष्ठ 744)। हमने इससे पहले भी कई मौकों पर बगाल की जेलो मे सरकारी खर्च से कैदियो तथा नजरबदियों द्वारा भी धार्मिक समारोह मनाए जाने का उल्लेख किया है। इसलिए हमें आशा है कि आप इससे निष्कर्ष निकाल सकेंगे कि सरकारी खर्च पर बर्मा की जेलो में नजरबद लोगों को क्या सुविधाएं दी जानी चाहिए।

अब जब कि भत्तों की मंजूरी बर्मा सरकार के अधिकार-क्षेत्र में है, हमें आशा है कि हमें उत्तर मिलने में कोई देरी नहीं होगी। होली के त्यौहार की तैयारी में कुछ समय लगने की संभावना है, इसलिए हम चाहेंगे कि उत्तर इस महीने के मध्य तक मिल जाए।

हम हैं, महोदय,
आपके विश्वस्त,
(हस्ताक्षर) एस.सी.बी.
ए.सी.बी.
टी.सी.सी.
बी बी.जी.
एम.एम.बी.
एम.एम.जी.
एस.एस.सी.
जे.एल.सी.

139. हरिचरण बागची के नाम *

मांडले
6-2-26

मुझे आपका पत्र यथासमय मिला। अगर मुझे उत्तर देने में देरी हो जाए तो आप अन्यथा न मानें। मुझे आशा है कि आप सभी मानसिक चिंताओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे और अपने कर्तव्यों का निर्वाह प्रसन्न भाव से करेंगे। मिल्टन ने कहा है -- 'मन की अपनी ही दुनिया होती है और वह स्वर्ग को नर्क तथा नर्क को स्वर्ग बना सकता है।'' इसके अनुसार काम कर सकना निस्संदेह हमेशा ही संभव नहीं हो पाता, लेकिन अगर हमारे सामने कोई आदर्श हमेशा ही न रहे, हम जीवन में कोई प्रगति नहीं कर सकते। जीवन किसी भी हालत में कठिनाइयों से मुक्त नहीं होता, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए।

मुझे अपनी रिहाई की अब कोई चिंता नहीं सताती, न आपको चिंता होनी चाहिए। भगवान की कृपा से अब मुझे मानसिक शांति उपलब्ध है। मैं अनुभव करता हूं कि मैंने इतनी शक्ति जुटा ली है कि मैं यहां आजीवन रह सकूंगा। मेरी शुभ कामनाओं से काम नहीं चलेगा -- मेरी यही प्रार्थना है कि जगत जननी की सदिच्छा और शुभाशीष आपको सदा कवच की भांति सुरक्षित रखे। मैं भला लिख ही क्या सकता हूं? जगत माता में विश्वास रखिए। उन्हीं की कृपा से आप भी प्रतिकूलताओं और भ्रमजाल से उबर सकेंगे। सभी बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद मनुष्य को तब तक सच्चे सुख की अनुभूति नहीं हो सकती, जब तक उसे आंतरिक शांति और संतोष न प्राप्त हो। इसलिए अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए आपको अपनी आत्मा जगत माता के चरणों पर अर्पित करते रहना चाहिए। शेष फिर।

* मूल बांग्ला से अनूदित।

140 शरत चन्द्र बोस के नाम

सैंसर और पास किया

अस्पष्ट

19/2/26

कृते डी आई जी आई बी, सी आई डी

बंगाल।

माडले

6-2 26

प्रिय दादा,

मैं समझता हू कि पिछले सप्ताह आपको पत्र नहीं दिया। मुझे जानकर प्रसन्नता हुई की आपकी उत्तरी भारत की यात्रा सुखद रही। कौंसिल आफ स्टेट के चुनावों के नतीजे, यद्यपि उनका अदाजा पहले ही से था बडे सतोष का कारण सिद्ध हुए हैं।

मुझे जानकर चिता हुई कि श्रीमती दास का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

सभी को इस बात की चिता होनी चाहिए कि कलकत्ता मे सर्वत्र मलेरिया का प्रकोप हो रहा है। मलेरिया की महामारी से व्यक्ति की शक्ति क्षीण होती है और तपेदिक के लिए द्वार खुल जाता है। मैं समझता हू कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा मच्छर ब्रिग्रेड को फिर से सक्रिय किया जाना चाहिए और मलेरिया के उन्मूलन के लिए तेजी से अभियान चलाया जाना चाहिए।

कविराजी औषधियो से मुझे लगभग दो महीने तक कुछ फायदा हुआ और कुछ समय तक मेरा वजन 161 पौंड पर स्थिर रहा। मैंने जब आपको पिछला पत्र भेजा था तब से मेरी पाचन-क्रिया फिर से गड़बडा गई है। इसके कारण का पता मुझे नहीं चला है। मैं इस आशका से दवाओ का सेवन रोक देना चाहता था कि कहीं उनकी मात्रा आवश्यकता से अधिक तो नहीं हो रही है और मैंने इस आशका को कम करते हुए कविराज महाशय को पत्र भी लिखा। लेकिन अब मैं पाता हू कि मुझे दवा बदल कर उसे जारी रखना चाहिए। इसलिए में तदनुसार आज कविराज महाशय को लिख रहा हू। मैंने कई तरह के भोजनो का प्रयोग यह देखने के लिए किया है कि मेरे लिए कौन सा भोजन अनुकूल होगा। लेकिन अभी तक मुझे यह जानने में सफलता नहीं मिली है। इस बीच मेरा वजन घटकर 156 पौंड रह गया है। इस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स यहा जनवरी मे आए थे और उन्होंने मेरे स्वास्थ्य तथा अन्य बातो के बारे मे पूछताछ की थी। उनके बाद इग्लैंड में बदीगृह के आयुक्त श्री पैटर्सन ने जो बर्मा में इन दिनों बोर्स्टल प्रणाली के सबध मे है, यहा का दौरा किया और हमारी शिकायतो के बारे में पूछा।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि कोडलिया में काम अच्छी तरह आगे बढ रहा है। क्या वही डाक्टर अभी भी काम कर रहा है। वह कैसा काम कर रहा है ? मैं नहीं जानता

कि मैंने आपको लिखा है या नहीं कि हमें सरकार से सूचना मिली है कि वार्षिक पुनरावलोकन के बाद यह तय किया गया है कि अपराध कानून संशोधन अधिनियम के अंतर्गत नजरबंदी के आदेश जारी रहने चाहिए।

हमने सरस्वती पूजा संपन्न की और फिलहाल उसका खर्च स्वयं उठाया है। हमने सरकार को प्रतिवेदन दिया है कि वह हमें अनुदान दे, जिससे हमारे खर्च की भरपाई हो जाए और हमने दौल पूर्णिमा उत्सव के लिए भी जो सन्निकट है, अनुदान मांगा है। दुर्गा पूजा का हिसाब-किताब अभी तक बराबर नहीं हो पाया और सरकार चाहती है कि हम अपने भत्तों से उसे 560 रुपये वापस कर दें। लेकिन यह मामला अभी भी विचाराधीन है और हम परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

क्या हेमेन्द्र बाबू के अलावा भी कोई देशबंधु की जीवनी लिखने का प्रयास कर रहा है? क्या पृथ्वीश ने अपना संकल्प पूरा किया है? मैं कुछ समय पूर्व अखबारों में पढ़ रहा था कि एक सुझाव यह है, जो मद्रास से आया है, कि इस काम को गोस्वामी हाथ में लें।

क्या कला समीक्षक ओ.सी. गांगुली अटार्नी जनरल भी हैं? अगर ऐसा है तो वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

क्या आप बुक कंपनी से कहेंगे कि अगर उसके पास कोई एकदम ताजा सूचीपत्र हो तो वह मुझे भेज दें।

आशा है, आप सब ठीक हैं। मुझे प्रसन्नता है — बल्कि आश्चर्य है कि अशोक बढ़िया कताई करने लगा है। मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस.सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड, कलकत्ता।

141. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
22-2-26

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 6 तारीख का पत्र कल मिला। मैं नहीं समझ पाया कि इस बार पत्र को मुझ तक पहुंचने में 15 दिन क्यों लग गए।

श्रीमती दास अब पहले से कुछ ठीक हैं। भोम्बल भी पटना में है और अब शांत है . . . मलेरिया का प्रकोप पूरे कलकत्ता शहर में है, लेकिन मैं नहीं समझता कि श्री

जे सी मुखर्जी के शासन काल म कुछ भी किया जा सकगा। मुझ कहत हुए दुख हाता है कि श्री जे सी मुखर्जी से कोई भी आशा नहीं की जा सकती है।

मैं समझता हू कि तुम्हे कविराजी औपधिया कुछ समय तक और खाते रहना चाहिए। जैसे ही गर्मी वहा शुरू हो तुम्ह उनको रोक देना होगा। क्या वहा अभी भी सर्दी है?

क्या इस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स और श्री पैटर्सन ने नजरबदियो के बारे मे वास्तविक और सच्ची पूछताछ की थी अथवा वह भी एसा सरकारी दौरा था जिसके बाद एक सरकारी विज्ञप्ति जारी करके छुट्टी पा ली जाती है?

कोडलिया गाव की प्रगति सतोपजनक रूप से हो रही है। वही डाक्टर अब भी काम कर रहा है।

नहीं तुमने मुझे पहल नहीं सूचित किया कि तुम्हे जानकारी दी गई है कि सरकार ने नजरबदी जारी रखने का फैसला किया है। यह आदेश तुम्हें कब दिया गया? क्या वह लिखित रूप म था?

क्या दुर्गा पूजा और सरस्वती पूजा के खर्चों के बारे में तुम्हे सरकार से और कुछ सुनने को मिला है? मुझे जानकर आश्चर्य हुआ कि सरकार ने तुमसे जल कार्यालय से दुर्गा पूजा के लिए दिए गए पैसा मे से 560 रुपये वापस करने को कहा है। मैं नहीं जानता कि पूजा के व्यय को लेकर गत कुछ दिनो में और क्या हुआ है लेकिन मुझे आशका है कि वहा तुम्हे अधिकारियों से टक्कर लेनी पडी है क्योकि अखबारो म छपी खबरो से मुझे पता चला है कि वहा के बदी भूख हडताल शुरू कर चुके हैं। मुझे जानकारी पाने की बहुत चिंता है और मैंने श्री आमस्ट्राग से कहा है कि वे जानकारी देवे लेकिन मैं नहीं जानता कि मुझे कोई सही बात मालूम हो पाएगी या नहीं।

मैं समझता हू कि मैंने अपने पत्र मे तुम्हे लिखा था कि तुम्हे नात्शे की कृतिया के तृतीय खड को लौटाने की जरूरत नहीं है। लकिन परसा अचानक मुझे एसा लगा कि मेरे लिए अच्छा यही होगा कि मैं बुक कपनी को यह किताब वापस कर दू। इसलिए तुम अपनी सुविधानुसार शीघ्र उसे भेज दना। हम सब कुशलता से हैं। मरा आशा और प्रार्थना है कि प्रभु के आशीर्वाद सदैव तुम्हार साथ रहे।

तुम्हारा अत्यत स्नेहपूर्वक
शरत

142. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले जेल
7-2-26

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट 16/2
कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,
बंगाल।

प्रिय दादा,

मुझे सूचना दी गई है कि छोटोदादा यहां अगले बुधवार या बृहस्पतिवार को होंगे। मैं नहीं जानता कि उनके साथ भेंट यहां होगी या रंगून में। एक तरह से रंगून जाना अच्छा होगा — यद्यपि मुझे वह जगह पसंद नहीं है — क्योंकि कर्नल केलसाल, जिन्होंने पहले मेरे स्वास्थ्य की परीक्षा की थी, वहीं मिलेंगे और उनसे सलाह-मशविरा किया जा सकता है।

मुझे पता चला है कि कमेटी ने डिप्टी मेयर के विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई करने की सिफारिश की है। यह जानकर मुझे व्यथा हुई है। गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा होगा? मैं आशा करता हूं कि कार्पोरेशन उदार दृष्टिकोण अपनाएगा—विशेषत: इसलिए कि वर्तमान कार्पोरेशन भंग होने जा रहा है।

मेरा वजन घटकर 138 (एक सौ अड़तीस) पौंड रह गया है।

अन्य लक्षण प्राय. पहले ही जैसे हैं।

आशा है, आप सब सकुशल होंगे।

हमें सूचना दी गई है कि अध्यादेश के अंतर्गत नजरबंदी के आदेश जनवरी 1925 में दो वर्ष समाप्त होने के बाद भी लागू रहेंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

143. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
9-2-26

प्रिय महोदय,

हमने आज सवेरे डिप्टी कमिश्नर से जो शिकायत की थी, उसके संदर्भ में हम उन दो प्रतिवेदनों की प्रतियां डिप्टी कमिश्नर के लिए भेज रहे हैं, जिन्हें हमने पूजा

के प्रश्न के संबंध में मुख्य सचिव को भेजा था। हम आभारी होंगे, यदि आप शीघ्र से शीघ्र, हो सके तो आज ही, उनको भेज दें।

आपका,
एस सी बोस

144. मांडले के डिप्टी कमिश्नर के नाम

माडले जेल
9-2-26

प्रिय महोदय,

हम आपके लिए उन दो प्रतिवेदनों की प्रतियां भेज रहे हैं, जिन्हें हमने पूजा के सवाल पर बर्मा सरकार के मुख्य सचिव को 16-1-26 और 2-2-26 को भेजा था। इनमें उन सब तथ्यों और दलीलों का निचोड़ आ गया है जो हम देना चाहते हैं और जो उन शिकायतों के संदर्भ में संगत हैं, जो हमने आपसे आज सवेरे की थी।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस
(नजरबंदियों की ओर से)

145. विभावती बोस का पत्र*

38/2, एल्गिन रोड
सेंसर और पास किया 19-1-26
मां दुर्गा सदा सहाय बुधवार

छोटो दादा,

मुझे आपका 19 दिसम्बर (1925) को लिखा गया पत्र इस महीने (जनवरी) की 8 तारीख को मिला। अब मैं कुछ यह लिखना चाहूंगी कि हम चरखों को कैसे चला रहे हैं। जब मैंने आपको 'पंजाबी' भेजा था तो यह नहीं लिखा था कि उसे बनाने के लिए सूत किसने काता था। अब मैं बता सकती हूं कि वह सूत मेरे अशोक और हमारी नौकरानी के हाथों काता गया था। दूसरे घर में कोई भी कताई का अभ्यास नहीं कर रहा है, यद्यपि कुछ समय पहले दीदी और अरुणा कताई किया करती थीं और कुछ सूत इस तरह इकट्ठा किया गया। ऐसा लगता है कि उस सूत से अभी कुछ बुना नहीं गया है। हमने अपनी कताई के द्वारा सूत इकट्ठा कर लिया है और इस बार हम उससे एक धोती बुनना चाहेंगे। हमारे घर में जो लोग कताई कर रहे हैं, उनमें से अशोक द्वारा

* मूल बांग्ला से अनूदित।

काता गया सूत सबसे बढ़िया है। लेकिन इन दिनों वह ज्यादा कताई नहीं कर रहा है और इस काम में लापरवाही दिखा रहा है, मैं भी बहुत ज्यादा कताई नहीं कर रही हूं, यद्यपि कुछ करती रहती हूं। आपका पत्र पाने के बाद करुणा ने कुछ कताई करने का क्रम आरंभ किया है। गोरा बिल्कुल ही कताई नहीं करता। इस बार मैं आपको एक ऐसा कपड़ा भेज रही हूं जिसको हमने हरिचरण बाबू की सहायता से सेवक समिति द्वारा बुनाई कराई। हम यह दावा तो नहीं कर सकते कि हमें कताई के लिए बहुत उत्साह है, लेकिन फिर भी मुझे आशा है कि हम उसे एकदम बंद नहीं कर देंगे। सेजोदीदी मोनी इन दिनों कताई नहीं कर रही हैं।

शारदा ठीक है और प्रायः आपकी चर्चा करती है। वह इन दिनों सेजोदीदी मोनी के बच्चों की धाय के रूप में काम कर रही है और मुझे आशा है कि आपको रवि नाम के एक बच्चे की याद होगी। शारदा सारा दिन उसकी देखभाल करने में बिताती है और इन दिनों उसे ज्यादा बकरियां या बिल्लियां पसंद नहीं हैं। शोभा अब बिल्कुल ठीक है।

आपको अब जेल-जीवन के सुख-दुख को सहन करने की शक्ति मिल चुकी है और इसीलिए आपका मन शांत रहता है। चूंकि हममें वह शक्ति पाने की क्षमता नहीं है, इसलिए हम जब सोचते हैं कि आप जेल के सींखचों के पीछे दिन काट रहे हैं तो हमारा मन बहुत उदास हो जाता है। जो कुछ भी होता है, भगवान की इच्छा से होता है और भगवान जो करता है, वह किसी ऐसे महान उद्देश्य से करता है जिसे हम नगण्य मानव अपनी अल्प बुद्धि द्वारा समझ नहीं पाते। फिर भी ईश्वर सभी को शक्ति देता है कि उसने जिसे जिस परिस्थिति में रखा है उसको वह सहन कर सके और उससे प्रसन्नता प्राप्त कर सके। अगर ऐसा न होता तो बहुतेरे लोग पागल हो चुके होते। ये सब विचार मेरे मन में उठते हैं, फिर भी मैं उन्हें अधिक समय तक अपने अंदर नहीं टिका पाती और अन्य विचार आकर उन पर हावी हो जाते हैं। हमारे जैसे लोगों के लिए ऐसे चिन्तन को स्थाई रूप से पोसना बहुत कठिन होता है। आपके पत्र की चार या पांच पंक्तियां दुर्भाग्य से पढ़ी नहीं जा सकीं, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह मिटा दिया गया था। मैंने कनक को आपके बारे में बताया है और सच तो यह है कि जब कभी भी हमें आपका पत्र मिलता है, हम सब उसे एक साथ बैठकर पढ़ते हैं।

क्या विशेष रूप से मुझे 'विजया प्रणाम' भेजने की कोई आवश्यकता है? उसके लिए मैं नाराज क्यों होऊंगी? मैं वास्तव में इस योग्य नहीं हूं कि आपके प्रणाम स्वीकारूं। यहां बच्चों ने सरस्वती पूजा का आयोजन किया और उस अवसर पर मैं बस यह सोचती रही कि कब वह दिन फिर आएगा कि आप ऐसे मौकों पर हमारे बीच उपस्थित रहेंगे। जो भी हो, उन दो दिनों तक बच्चों ने बहुत आनंद प्राप्त किया।

मैं सोचती हूं कि यह सौभाग्य की बात है कि कबूतर पालने का विचार त्याग दिया गया है, क्योंकि कबूतर घर बहुत गंदा कर देते हैं। आपके पालतू बगीचे के क्या हाल हैं? अवश्य ही आप वहां उगाई गई सब्जियों का आनंद ले रहे होंगे। क्या फूल आपने

वार्तालाप करते हैं? क्या उनका मिजाज बहुत गर्म है? आपके जैसे भद्र पुरुष का क्षुब्ध करना उनके लिए सचमुच शोभा की बात नहीं है।

आपके साथी श्यामलाल के क्या हाल हैं? क्या उसे कोई और नई उपाधि दी गई है? कुल कितनी उपाधिया उसे मिल चुकी हैं? याका आपके लिए कौन सा काम करता है? मैंने सुना है कि कारागार के अदर आप सब लोगो के लिए बगाली सेवक नियुक्त किया गया है और अगर यह सच है तो वह विचित्र प्राणी कैसे और कहा से आपके सम्मुख प्रकट हुआ? आशा करती हू कि वह खूब डटकर खाना खा रहा होगा और खूब प्रसन्न होगा।

मैं समझती हू कि आपने सभवत सुना होगा कि हमने कानपुर में काग्रेस सम्मेलन में भाग लिया। वहा हमे सरोजिनी नायडू का भाषण बहुत पसद आया। समस्या यह है कि वे हमसे जो आशा लगाती हैं क्या हम उसे कर सकने मे सक्षम हैं?

आपका स्वास्थ्य कैसा है और आप क्या अभी भी कविराजी औषधिया ले रहे हैं? आपके समूह के कितने लोग अभी भी वहा हैं? मैं समझती हू कि वहा अब सदिया खत्म हो गई हैं। जैसे ही गर्मी की ऋतु आती है आपका स्वास्थ्य गिरने लगता है। मा इन दिनों यहा हैं। हम सब सकुशल हैं। पिताजी ठीक हैं।

क्या आपको पता चला है कि अरुणा का ब्याह तय हो गया? विवाह शायद फाल्गुन के महीने मे होगा। आशा है कि आप सब वहा स्वस्थ होंगे। सभी को मेरे प्रणाम और मेरा हार्दिक स्नेह स्वीकारें।

आपकी सस्नेह
मेजबड़ू-दीदी
(विभावती बोस)

146 विभावती बोस के नाम *

मा दुर्गा सदा सहाय

माडले जेल
12-2-26

प्रिय मेजबड़ू-दीदी

मुझे आपका पत्र काफी समय पहले मिल गया था। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई थी कि अशोक ने कताई इतनी अच्छी तरह सीख ली है। मैं नहीं कह सकता कि मुझे आश्चर्य नहीं हुआ था। सच बात यह है कि कताई इतनी सरल होती है कि अगर सिखाया जाए तो एक बच्चा भी आसानी से सीख जाता है। आसाम में एक सामाजिक रीति है कि विवाह योग्य आयु की लडकियों को कताई आनी ही चाहिए, जैसे हमारे

* मूल बग्ला से अनूदित।

यहां पाक-विद्या का ज्ञान एक सामाजिक विशेषता है। गोरा, अरुणा तथा अन्य लोग क्यों नहीं कातते? उनके पास काफी अवकाश होगा। मैं समझता हूं कि अगर कोई एक बार भी अपने हाथ से कते सूत से बना वस्त्र देख पाए तो उसे कताई के लिए बहुत उत्साह महसूस होगा। जैसे हमें अपने हाथ की रसोई का खाना बहुत स्वादिष्ट लगता है, वैसे ही अपने हाथ से काते गए सूत का वस्त्र भी प्रसन्नतादायक होगा।

भगवान की दया से आजकल मेरे सभी पत्र ठिकाने पर पहुंच जाते हैं। यद्यपि उनमें कुछ पंक्तियां कटी हुई हो सकती हैं। आपको इस काटा-कूटी का कारण ज्ञात ही होगा।

आपका अंतिम पत्र आने से पहले ही कबूतरों ने यहां अपना अड्डा बना लिया था। दुर्भाग्यवश एक कबूतर को बिल्ला निगल चुका है। उस पर मुकदमा चलाने के लिए एक अदालत का गठन किया गया। बिल्ले को खाने का लालच देकर और रात में जाल बिछाकर गिरफ्तार किया गया। पहले तो यह सुझाव दिया गया कि उसे इस अपराध में फांसी पर लटका दिया जाए, क्योंकि ऐसे मामले में आदमी के साथ यही सलूक किया जाता है। फिर यह प्रस्ताव आया कि उसे फांसी देने से किसी को कुछ लाभ नहीं होगा, इसलिए बिल्ले के मांस की दावत आयोजित की जाए। इस देश में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्हें अभाव के समय बिल्ली का मांस खाने से कोई एतराज नहीं होता और यहां के कुछ कैदी इसी जमात वाले लोग हैं। एक भद्रजन ने यह कहा कि चूंकि मछली तथा मांस यहां कैदियों को दुर्लभ है, इसलिए अगर उन्हें बिल्ला दे दिया जाए तो वे उसे पकाकर खाने को तैयार हो जाएंगे। अंत में और अचानक वैष्णव भावना ने हर किसी के मन पर अधिकार कर लिया और यह आदेश जारी किया गया कि बिल्ले को एक बोरी में डालकर जंगल में छुड़वा दिया जाए।

लगभग एक महीने तक मुर्गियों द्वारा अंडे सेये जाने के बाद उनसे चूजे बाहर निकले। यांका उनकी देखरेख के लिए नियुक्त था। शुरू से ही यांका महान ने अंडों की चोरी आरंभ की। जब पांच या छह अंडे दिए जाते तो हमारी रसोई की अल्मारी तक केवल दो या तीन ही पहुंच पाते। शेष उसकी कृपा से गायब हो जाते। जिस दिन उसे रंगे-हाथों पकड़ा गया, उसका चेहरा भावशून्य था। वह केवल 71 वर्ष की आयु का है, लेकिन उसकी जठराग्नि कभी शांत नहीं हो पाती। हममें से बहुतों का विचार है कि वह भगवान भोलानाथ का अवतार है, क्योंकि उसका उदर महादेव के उदर से मेल खाता है। यांका की दया से चूजे प्रतिदिन स्वर्ग-लोक की यात्रा करते जा रहे हैं। उनकी संख्या 10 या 12 से घटकर तीन रह गई। वे अभी तक भी जीवित हैं और आशा की जाती है कि बचे रहेंगे। एक दिन उसकी लापरवाही के कारण एक चील ने झपट्टा मारा और एक चूजे को दबोच ले गई। अगली सुबह जब इस हानि का पता चला तो यांका ने बड़ी मासूमियत से कहा : 'मुर्सोनू', अर्थात ऐसा कोई चूजा था ही नहीं। जब उसको कसकर डांट-डपट की गई तो उसने बताया कि वास्तव में हुआ क्या था।

फिर भी, यांका कुल मिलाकर बुरा आदमी नहीं है। उसकी यह आस्था है कि विश्व का सर्वोच्च सत्य चटोरापन है। 'तस्मिन् तुष्टे जगत तुष्टम्'—अर्थात अगर आप अपनी क्षुधा

को शात कर सकें तो इस विश्व की समस्त कामनाओं को हम सतुष्ट कर लेंगे और अपने उदर की आग बुझाने के लिए कुछ भी कर गुजरने से हिचकिचाएगे नहीं। वह बर्मी भाषा में बौद्ध ऋचाओं का उच्चारण बहुत अच्छी तरह कर सकता है। जब मैं घर वापस लौटूगा तो आप सभी को इन ऋचाओं को सुनाऊगा।

बगाल से पाच कैदियो को इस जेल मे लाया गया जिससे वे हमारा काम-धाम कर सकें। लेकिन उनमे से एक ही ऐसा है जो कुछ काम का है। उसे रसोई का भार सौंपा गया है। यहा हमे तरह-तरह के लोग मिलते हैं। इससे मनोरजन भी होता है और शिक्षा भी मिलती है।

कविराजी औषधिया से दो महीने तक मुझे काफी लाभ रहा। अब मुझ उतना आराम महसूस नहीं होता और शायद दवाइया बदलने की जरूरत है। गर्मी भी बढ़नी शुरू हो गई है। जो भी हो मुझे विश्वास है कि हम जैसे-तैसे निर्वाह कर ले जाएगे। कृपया मेरे पत्रो को सुरक्षित रखिएगा और मेजदादा से भी ऐसा ही करने को कह दीजिएगा।

मुझे आशा है कि घर मे सभी सानद होगे। मैं मेजदीदी को लिख रहा हू कि वे बच्चो के लिए ड्राइग और सगीत के शिक्षक रख ले। मैं नहीं जानता कि इस विषय में उनके क्या विचार हैं—लेकिन मैं अपने जीवन मे इन दोनो के अभाव को महसूस करता हू। इसलिए अगर बच्चो को समुचित ढग की शिक्षा दी जाए तो मुझे प्रसन्नता होगी।

हमने भी यहा सरस्वती पूजा सपन्न की। पूजा के खर्च को लेकर हमें अधिकारियो के साथ निपटना पड रहा है। सरकार ने अभी तक दुर्गा और सरस्वती पूजा मे हुए खर्च की भरपाई नहीं की है। मैं कुछ कागजात भेज रहा हू जिनसे आपको पता चलेगा कि हमारे लिए खर्च की स्वीकृति का अधिकार बर्मा सरकार को न होकर बगाल सरकार को देना चाहिए, जब कि सरकार द्वारा बगाल कौंसिल मे घोषणा की गई थी कि आवश्यक खर्च की स्वीकृति बर्मा सरकार देगी। इन कागजात को देखने के बाद आपको विश्वास हो जाएगा कि खर्च की मजूरी देने से इकारी बगाल सरकार की ओर से हुई है। इन कागजात के साथ मैं दो प्रतिवेदनो की प्रतिलिपिया भी भेज रहा हू। इन प्रतिवेदनो को हमने बर्मा सरकार को भेजा है।

आपका
सुभाष

147. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

27-2-26

कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,

बंगाल।

मांडले

14-2-26

प्रिय दादा,

मुझे कुछ समय से आपका कोई समाचार नहीं मिला है। किंतु मुझे आशा है कि आप सब सानंद हैं।

मैंने कुछ समय पूर्व कविराज महाशय को लिखा था कि मैं कुछ समय के लिए दवा बंद कर देना चाहता हूं, क्योंकि मुझे आशंका है कि दवा मात्रा से अधिक ली जा चुकी है। उन्हें लिखने के बाद से मेरी पाचन-शक्ति और भी कमजोर हो गई है, शायद इसलिए कि गर्मी फिर शुरू हो गई। इसलिए मैंने उन्हें फिर लिखा है कि वे मुझे कोई औषधि भेजें, लेकिन पुरानी दवाएं बदलकर, क्योंकि उनसे मुझे कोई लाभ नहीं होगा। इस बीच पुरानी दवा लेना मैंने प्रायः एक पखवाड़े से बंद कर दिया है। मैंने आज सवेरे अपना वजन लिया—अब वह 155 पौंड है। लेकिन आपको मेरे बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

अरुणा का पाणिग्रहण संस्कार किस तिथि को होना है? क्या सेजदीदी गौरा के विवाह को तय कर सकी हैं? दादा कैसे हैं? मुझे जानकर प्रसन्नता है कि बकुदादा अब पहले से ठीक हैं। वे किसी पहाड़ी स्थान, जैसे कुर्सियांग, में क्यों नहीं चले जाते। मैंने सेजदादा को लिखा है कि वे अपने कंधों के नमूने भेजें। गोपाली तो मेरे विचार से अपने इम्तहान की तैयारी में जुटा हुआ है। क्या सती अब स्कूल साइकिल पर जाता है या ट्रेन द्वारा? स्कूल तक साइकिल से जाने और लौटने में काफी दूरी तय करनी पड़ती है। रांगामामा बाबू के यहां आने पर मैं उनसे कह रहा था कि वह सप्ताह-भर किसी होस्टल में रहें और सप्ताहांत में घर वापस आ जाया करें। खतरा यह है कि उन्हें कहीं मलेरिया न हो जाए, क्योंकि वह जगह अभी स्वास्थ्यप्रद नहीं हो पाई है।

मैं समझता हूं कि 28/1 में बच्चों के लिए एक बैडमिंटन कोर्ट बना दिया जाए जिससे उन्हें पर्याप्त व्यायाम का अवसर मिल सके। नगर-निवासियों की एक के बाद एक पीढ़ी की शारीरिक क्षमता गिरती जा रही है और माता-पिता के मानदंडों को बनाए रखने या उनमें सुधार करने के लिए विशेष प्रयास की जरूरत है। मैं शारीरिक क्षमता और राष्ट्र-कल्याण के विषय में कुछ दामा पुस्तकें पढ़ रहा हूं और शारीरिक विकास के

प्रति हम जो गभीर लापरवाही और उदासीनता बरतते रहते हैं, उसके सबध में मेरी आखें कुछ खुली हैं। मैंने निजी अनुभव से देखा है कि बेडमिंटन एक अच्छा खेल है। जो लोग आयु में मुझसे काफी छोटे हैं, उन्हें एकल खेल द्वारा काफी अधिक शारीरिक व्यायाम और युगल खेल द्वारा मनोरजन सुलभ हो सकेगा। मुझे आशा है कि आप इस पर विचार करेंगे।

आशा है, आप सब सानद होगे। मैं ठीक ही हू।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस सी बोस
38/1 एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

148. कैप्टन स्मिथ के नाम

माडले
16-2-26

तात्कालिक और गोपनीय

प्रिय कैप्टन स्मिथ,

मैंने सारा मामला अपने मित्रो के सम्मुख प्रस्तुत किया है और शुभाशुभ की चर्चा कर दी है। अच्छा होगा कि उन सबसे बातचीत कर ली जाए। क्या आप अपनी सुविधानुसार आ सकेंगे, या हम ही उधर आए?

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

कैप्टन स्मिथ,
सुपरिंटेंडेंट,
माडले जेल।

149. बर्मा सरकार के मुख्य सचिव के नाम

(द्वारा सुपरिंटेंडेंट, माडले जेल)

माडले
16 फरवरी 1926

प्रिय महोदय,

हमें अफसोस है कि हमको अपने 16 जनवरी और 2 फरवरी 1926 के प्रतिवेदन का कोई सतोषप्रद उत्तर नहीं मिला है। ना ही अभी तक पिछली दुर्गा पूजा के सवाल का हमें तसल्ली देने वाला कोई हल ढूढा जा सका है, यद्यपि छह महीने बीत चुके हैं।

इन परिस्थितियों में हमें विवश होकर यह विचार बनाना पड़ा है कि बर्मा की सरकार ने उपेक्षा का रुख अख्तियार किया हुआ है। उधर हमारा यह विचार बराबर बना हुआ है कि हमारा रुख लगातार तर्कसंगत रहा है और हमें कोई संदेह नहीं है कि स्थानीय अधिकारीगण, अर्थात जेल-सुपरिंटेंडेंट तथा डिप्टी कमिश्नर इसकी पुष्टि करेंगे। हम यद्यपि राजनीति के क्षेत्र में भिक्षुक-वृत्ति से काम लेने के खिलाफ हैं, फिर भी हमने यथाशक्ति सभी तथाकथित सांविधिक उपायों का सहारा लेकर देखा है जिससे हम सरकार को अपने पक्ष के औचित्य के बारे में आश्वस्त कर सकें। हमने एक के बाद एक प्रतिवेदन भेजे हैं, सरकार द्वारा नियुक्त किए गए सरकारी और गैर-सरकारी जेल-निरीक्षकों के सम्मुख अपनी शिकायतें रखी हैं, और हमने जेलों के महानिरीक्षक के सामने व्यक्तिगत रूप से भी मामला पेश किया है, लेकिन हमारे प्रयासों का कोई नतीजा नहीं निकला है।

हम यह पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि हम आशा करते हैं कि हमारे भत्तों का सवाल अंतिम रूप में यही सरकार हल करेगी। बंगाल विधान परिषद् में 11 दिसम्बर 1925 को बंगाल सरकार के गृह सचिव सर ह्यूस्टीफेंसन ने जो ब्यान दिया था उससे अब कोई शक नहीं रह गया है कि उक्त जिम्मेदारी इसी सरकार की है। 16 जनवरी 1926 के अपने प्रतिवेदन में हमने बंगाल सरकार के अधिकृत कार्यवृत्त के अंतर्गत प्रकाशित उक्त वक्तव्य के एक संगत अंश को उद्धृत किया था और हम आपका ध्यान एक बार फिर उसकी ओर खींचना चाहेंगे। जब तक बर्मा सरकार द्वारा सार्वजनिक रूप से कोई खंडन नहीं होता, तब तक सर ह्यू स्टीफेंसन के सार्वजनिक वक्तव्य को सही माना जाएगा और हमने उसे ही अपने पक्ष के लिए आधार बनाया है।

हमारी धार्मिक मांगों की पूर्ति में विफल होकर आपकी सरकार ने भारतीय जनता की धार्मिक आस्थाओं के प्रति और उसके वर्तमान तथा अतीत के इतिहास के प्रति शोचनीय अज्ञानता प्रदर्शित की है। हम पौर्वात्य लोगों के लिए धर्म न तो एक सामाजिक संस्कार है, न मानसिक विलासिता और न अवकाशीय मनोरंजन। वह हमारा सम्पूर्ण प्राण है। धर्म हमारे सम्पूर्ण सामाजिक एवं दैनिक जीवन के ताने-बाने का अंग है और वह हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व में—वैयक्तिक एवं राष्ट्रीय अस्तित्व में—अनुस्यूत है। शुभाशुभ के बीच हम इस धरती की समस्त पार्थिव चीजों की अपेक्षा आध्यात्मिकता को अधिक ऊंचा स्थान देते हैं। और इसी आधार पर हमारे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का वैचारिक ढांचा खड़ा हुआ है। हमारा यह दुर्भाग्य है कि हम एक देश के निवासी हैं—हम अनेक प्रकार से उस दासता के वश में हो सकते हैं, लेकिन ब्रिटेन जैसी महाशक्ति को भी उन मूल्यों का आदर करने के लिए विवश होना होगा, जो भारतीय जन-मानस के प्रिय मूल्य हैं। भारतीय इतिहास के पृष्ठ ऐसे बलिदानियों की गौरवगाथा से रंगे पड़े हैं, जिन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों की खातिर कष्ट झेले और प्राणोत्सर्ग किया। उन्होंने प्राण दिए जिससे भारत प्राणवंत बने। और हमारे पतन और हमारी पीड़ा के बावजूद, भारत अब भी जीवित है। वह जीवित है, क्योंकि उसकी आत्मा अमर है—उसकी आत्मा अमर है, उसकी धर्म में आस्था है। हमने बहुत कुछ खोया है। हम राजनैतिक स्वाधीनता गंवा चुके हैं। आर्थिक

स्वाधीनता अतीत का स्वप्न बन गई है—हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की जडे भी धूर्ततापूर्ण नीतियों के गुपचुप आघात से दिनो-दिन कमजोर होती जा रही हैं। लेकिन हमारा धर्म अब भी बचा हुआ है। हमारा यह दावा अब भी बरकरार है कि हमे अपने गौरवशाली पूर्वजों की तरह अपने देवी-देवताओ की उपासना का अधिकार है और हम पश्चिम के धार्मिक आधिपत्य के आगे घुटने टेकने के बजाय अपने प्राण दे देना श्रेयस्कर समझगे।

आपकी सरकार की सक्रियता अथवा यो कहा जाए कि निष्क्रियता से हमारे धार्मिक अधिकारों के मामलो मे अकारण हस्तक्षेप हुआ है। यह ब्रिटिश महारानी की उस घोषणा की भावना के विरुद्ध है, जिसमे भारत के विभिन्न धर्मों और सप्रदायों के लोगो को उपासना की स्वतत्रता प्रदान करने का वचन दिया गया था। इसके अतिरिक्त — और यह कहीं ज्यादा महत्व की बात है—इससे भगवान के नियमों की जैसा कि हम उन्हें समझते हैं अवहेलना होती है। एक ओर तो अलीपुर केंद्रीय जेल के मुट्ठी-भर ईसाई कैदियों के धार्मिक कृत्यो के लिए प्रतिवर्ष 1,200 रुपये व्यय करना और दूसरी ओर उच्च शिक्षा प्राप्त और सुसस्कृत हिदू बदियो के धार्मिक समारोहो के लिए एक कानी कौडी भी न स्वीकृत करना—क्या यह, महोदय न्याय पर कुठाराघात नहीं है और क्या यह औचित्य की कसौटी पर खरा उतरने वाला आचरण है ? एक यूरोपीय ईसाई की दृष्टि मे एक हिदू विधर्मी हो सकता है और उसका धर्म अस्पृश्य हो सकता है। और हो सकता है कि उसे उपासना के लिए सुविधाए देना नैतिक कर्तव्य न माना जाए। लेकिन हमारा धर्म वह धर्म है, जिसे न केवल सार्वभौम सहिष्णुता में विश्वास है, बल्कि जो सभी धर्मों की सच्चाई को स्वीकार करता है, और इसलिए हमारी मान्यता है कि किसी भी समूह के धार्मिक अधिकारों का हनन ईश्वरीय नियम का उल्लघन है।

हमें नहीं मालूम, महोदय, कि आपके या आपकी सरकार के सदस्यों के ओठो पर हमारे द्वारा ईश्वरीय नियमों के उल्लेख पर श्रेष्ठत्वाभिमानी एव अर्ध-विद्रूप मुस्कान झलकेगी या नहीं। अगर ऐसा हो तो हम आश्चर्य नहीं होगा। धर्म के प्रति उपेक्षा और उसकी सहजात वृत्ति श्रेष्ठत्वाभिमान ने यूरोप की आत्मा को कुचल कर दूर फेंक दिया है। लेकिन एक समय ऐसा भी था जब यूरोप की धर्म मे आस्था थी। तब वह शक्ति की सुरा से प्रमत्त या लूट की लालसा से उन्मत्त नहीं हुआ था और उसने समानता और भाईचारे की ईसाई सैधातिकता की जगह नार्डिक श्रेष्ठता की धारणा को नहीं अपनाया था। उस स्वर्णयुग मे वह शैतान की नहीं बल्कि भगवान की उपासना म अपनी पूर्ण उपलब्धि मानता था, वह अनुभव करता था कि सच्चा जीवन ईसाइयत में है धन-लालुपता में नहीं। यूरोप को तब अपने पडोसियो की लूट-खसोट की जगह अपने प्रभु की अर्चना में अधिक आनद मिलता था, वह अपने धर्म-युद्धो मे इतना व्यस्त रहता था कि उसके पास पूर्व के सासारिकता म अल्प-कुशल देशों को अपने बल प्रयोग द्वारा पराभूत करने की बात सोचने का समय नहीं बचता था। पैलेस्टाइन म क्रूसेडरो ने ब्रिटेन म प्यूरिटनो ने आयरलैंड मे कैथोलिको ने और यूरोप की मुख्य भूमि पर ह्यूजनाटो ने जो दुख-कष्ट सहे, उनसे उस गौरवशाली युग के इतिहास क पृष्ठ सदा क लिए आलोकित हो चुके

हैं। धर्म में प्रबल आस्था वाले प्यूरिटन उन दिनों अपनी कमजोर नौकाओं पर सवार अज्ञात सागरों और प्रदेशों के जोखिम से जा भिड़ते थे, लेकिन धार्मिक आस्था के त्याग की बात कभी नहीं सोचते थे; और संत-शहीद लैटिमर ने, जब कि उसे जीवित जला देने के लिए अग्निदंड में बांधा जा चुका था, आग की लपटों के बीच अपने एक सहयोगी शहीद से कहा था, 'प्रसन्नता अनुभव करो, मास्टर रिड्ली पुरुषोचित साहस बटोरो; हम आज के दिन इंग्लैंड में ऐसी ज्योत जलाएंगे, जो मेरा विश्वास है कि, प्रभु कृपा से फिर कभी नहीं बुझ पाएगी।'

लेकिन वे दिन अब स्वप्न बन चुके हैं—यह हमने स्वयं कष्ट भोगकर जाना है। आज तो पश्चिम की संगठित भौतिकता भारत की छाती पर एक दुःस्वप्न की तरह जमी बैठी है। क्लाइव और डलहौज़ी, लंकाशायर और लॉइस, बेंथम और जे.एस. मिल ने अपना पूरा जोर लगाकर हमें हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता एवं हमारे वांछनीय अतीत के दायरे से हमें दूर खींच ले जाने की कोशिश की। लेकिन वे सफल नहीं हो पाए हैं। अपने विगत अतीत की चिता-भस्म में से भारत फिर स्वरूप ग्रहण करता जा रहा है जिससे वह विश्व के स्वाधीन राष्ट्रों की श्रेणी में अपना समुचित स्थान ग्रहण करे और अपना आत्मीय संदेश—अपनी आध्यात्मिकता का संदेश देकर धरती पर अपने मिशन को पूरा कर सके। भारत आज अगर जीवित है तो इसीलिए कि उसे अपने अधूरे मिशन को पूरा करना है। केवल इसी कारण वह काल के सभी प्रहारों को झेलता हुआ आज तक जीवित है। सभ्यताओं का उदय हुआ है और वे अस्त हुई हैं; साम्राज्य पनपे हैं और विलीन हो गए हैं। बेबीलोन और निनेवाह, कार्थेज और यूनान धूलिसात हो चुके हैं। लेकिन भारतीय संस्कृति आज भी वैसी ही जीवंत है, जैसी वह हजारों वर्ष पूर्व थी, जब कि आज की दुनिया के अग्रणी आधुनिक देश असभ्यों से अधिक कुछ न थे। और क्या आप यह मानते हैं, महोदय, कि जिस देश के लोगों ने इतने सब कष्ट-संकट सहे और अपने दीर्घ इतिहास-क्रम में इतनी कठिनाइयों का सामना किया, वे अपने धार्मिक अधिकारों पर होने वाले मनमाने प्रहार मूकदर्शक बनकर सह लेंगे? हमें आशा तो नहीं करनी चाहिए, फिर भी हम आशा करते हैं कि 1857 के संग्राम तथा हाल के अकाली और तारकेश्वर सत्याग्रह आंदोलनों के सीखे सबक को इस सरकार ने पूरी तरह भुला नहीं दिया है।

हमें इस सच्चाई का पूरी तरह अहसास है कि किसी अनिच्छुक नौकरशाही के हाथों से किसी भी तरह के राजनीतिक या धार्मिक अधिकारों को कष्ट-सहन और उत्सर्ग के सिवा और किसी प्रकार से छीना नहीं जा सकता। ये अधिकार जितने ही हमारे लिए मूल्यवान होंगे, उतना ही बड़ा उत्सर्ग वे हमसे मांगेंगे। आज भगवान ने हमें निमित्त बनाया है कि हम धार्मिक स्वाधीनता के लिए वांछनीय मूल्य चुकाएं। हमें इस उत्सर्ग में कोई भी हिचकिचाहट नहीं है, न हमें इस अग्नि-परीक्षा से कोई घबराहट है; इसके विपरीत, हमें इसकी खुशी है। राष्ट्रीय इतिहास के क्रम में ऐसे अवसर भी आते हैं, जब प्रतिनियुक्त उत्पीड़न भागवत प्रेरणा से प्रेरित दायित्व बनकर सम्मुख आता है और वर्तमान अवसर ऐसा ही एक दायित्व बनकर आया है। यूरोप में और एशिया में, इंग्लैंड में और भारत

में बलिदानियो को शोणित धर्म-संस्थापन का उत्प्रेरक बनना है। हम यह दभ तो नहीं करते कि हम बलिदानी हैं, लेकिन हो सकता है कि यही भागवत प्रेरणा हो कि हम अपने विनम्र प्रयास द्वारा आगत बलिदानियों के लिए पथ प्रशस्त करे। भारत अपनी धार्मिक स्वाधीनता को किसी भी मूल्य पर बनाए रखने के लिए कृत-सकल्प है। यह निर्णय सरकार को करना है कि हमें हमारे अधिकार अनावश्यक उत्पीडन एव परिहार्य उत्सर्ग द्वारा उपलब्ध हो सकेगे या नहीं। लेकिन हम स्पष्ट शब्दो मे कह देना चाहते हैं कि जो भी होगा उसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी और यदि कुछ अप्रिय घटित हो गया तो हमारा खून सरकार के सर चढकर बोलेगा।

हमारी गिरफ्तारी और अलगाव के बावजूद, हमारा विश्वास है कि हम निपट असहाय नहीं हैं। निस्सदेह, फिलहाल हम नौकरशाही के तने हुए तेवरों के सामने असहाय दिखते हैं—लेकिन जैसा कि स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने अपनी ओजस्वी वाणी मे कहा था, 'सभी चीजों की नियति को शासित करने वाली एक उच्चतर शक्ति भी है।' उस उच्चतर शक्ति के आगे गर्वोन्नत ब्रिटानिया के बल को भी अवनत होना होगा। माडले कारागार के एक दूरस्थ कोने से हमारे शरीरो के प्रति निस्सदह आप मनमानी कर सकते हैं — लेकिन पाषाण की इन प्राचीरो के घेरे मे हम अगर जजीरो मे भी जकडे हुए हो तो हमारी आत्माए मुक्त हैं और मुक्त बनी रहेगी। और ऐसा कौन है जो सत्य के स्वरो को सदा के लिए समाधि दे सकता है? सत्य की वह समाधिस्थ वाणी पवन के पखो पर आरूढ होकर पर्वतो और उपत्यकाओं में और सागरों की लहरों के साथ सर्वत्र गूजती हुई भारतीय तटों से आ टकराएगी। हमारे भी अपने सहयोगी हैं, अपने मित्र हैं, अपने शुभ-चितक हैं। हम भी दावा कर सकते हैं कि हमे अपने देशवासियो का विश्वास और सद्भाव प्राप्त है। हम आश्वस्त रह सकते हैं कि अगर हमें यहा प्राणोत्सर्ग करना अनिवार्य हो जाता है तो हमारा यह बलिदान अज्ञात और उपेक्षित नहीं होगा। इसके विपरीत, हम इस हर्षद भाव के साथ प्राण-त्याग करेंगे कि हम जिस उद्देश्य के लिए वैसा कर रहे हैं वह हमारे देशवासियो के हाथो मे सुरक्षित रहेगा, कि भारत के निवासी मुक्ति के लिए तब तक सघर्ष करते रहेगे जब तक सफलता के विजय द्वार तक वे न पहुच जाए। और तब एक नया सुप्रभात होगा, सर्वत्र शाति की किरणें बिछ जाएगी, भारत फिर उसी प्रकार अपनी नियति का नियता बनेगा जैसे वह अतीत मे था, जब कि सम्पूर्ण विश्व आलोक पाने के लिए उसका मुह जोहता था।

आपको इतने विस्तार से यह सब लिखने के पीछे हमारा उद्देश्य यह है कि हमार मन म इस समय जो विचार और जो भावनाए सर्वोपरि हैं और जिनको सामान्यत सरकारी माध्यमों से व्यक्त नहीं किया जा सकता, उनके बारे में आपको जानकारी दे दी जाए। आपकी सरकार के नितात तर्कहीन और कठोर रवैए के कारण हमारे लिए और कोई विकल्प शेष नहीं रहा और अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए तथा बहुत समय से चली आ रही अन्य अनेक कठिनाइयो को दूर कराने के लिए हमे विवश होकर यह एकमात्र सम्मानजनक मार्ग चुनना पडा है, जो हमारी जैसी स्थिति वाला के लिए सभव

हो सकता था। तदनुसार हमने निश्चय किया है कि हम 18 फरवरी 1926, बृहस्पतिवार, से भूख हड़ताल पर रहेंगे।

भगवान हमारे सहायक हों।

हम हैं,

आपके आज्ञाकारी,

जीवन लाल चटर्जी
सत्येन्द्र चन्द्र मित्र
त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती
सतीश चन्द्र चक्रवर्ती
विपिन बिहारी गांगुली
सुरेन्द्र मोहन घोष
मदन मोहन भौमिक
सुभाष चन्द्र बोस

150. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
कृते डी. आई. जी., आई. बी. , सी. आई. डी.,
बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
1 मार्च 1926

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 14 फरवरी का पत्र मुझे 27 फरवरी को मिला।

मुझे जानकर दुख हुआ कि तुम्हारा वजन और घट गया है। मैंने इस विषय में पिताजी या मां को कुछ नहीं बताया है, क्योंकि उससे उन्हें और चिंता हो जाती। मैं वजन में इस कमी के बारे में चिंतामुक्त या उदासीन भाव नहीं रख सकता, यद्यपि तुमने लिखा है कि मुझे चिंतित नहीं होना चाहिए। लगातार 12 दिन की भूख हड़ताल के बाद मैं नहीं जानता कि अब तुम्हारा वजन क्या है।

अरुणा के विवाह की बातचीत टूट गई है, यह सूचित करते हुए मुझे अफसोस है . . . वे लोग चाहते थे कि हम वर की इंग्लैंड में पढ़ाई का खर्च उठाएं। इसलिए हमें इंकार करना पड़ा।

(* * अस्पष्ट * *)

रंगनाथ बाबू कल की नौका द्वारा बर्मा जा रहे हैं और शायद अगले गुरुवार को मांडले पहुंचेंगे।

अपने पिछले पत्र (27 फरवरी) में मैंने तुम्हें लिखा था कि मुझे 13, इलीसियम रो से तुम्हारे अनशन का समाचार कब मिला।

माडले जेल के सुपरिंटेंडेंट ने कल तार भेजा, 'स्वास्थ्य उतना अच्छा जितना प्रत्याशित है।' यह बहुत अस्पष्ट था—काश, कि वे अधिक विवरण भेजते।

मैंने अपने पिछले एक पत्र मे लिखा था कि तुम नीत्शे की कृतियो का तीसरा खड कालेज स्क्वायर की बुक कपनी को भेज दो और पढने के बाद मेरे लिए लार्ड रोनाल्डसे की कृतिया भेज दो। इन दोनों को ही फिल्हाल भेजने की आवश्यकता नहीं है। मैं नहीं चाहता कि तुम तब तक अपने ऊपर किसी भी तरह का जोर डालो, जब तक अनशन समाप्त न हो जाए।

यह तथ्य छिपाने से कोई लाभ नहीं कि मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य की चिता है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह तुम्हारा मगल करे।

(* * अस्पष्ट * *)

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

151. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पट
1/3/26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बगाल।

माडले
17-2-26

प्रिय दादा,

आपका 8 फरवरी का पत्र मुझे कल मिला।

मैंने अपने पिछले पत्र में अपने स्वास्थ्य के बारे में आपको लिखा है और उसमें जोडने के लिए फिल्हाल और कोई समाचार नहीं है। मुझे नहीं मालूम कि मेरी रक्त-परीक्षा से कोई लाभ होगा या नहीं, लेकिन मैं आपके सुझाव पर विचार करूगा। कुछ समय पूर्व मेरे मूत्र की परीक्षा शक्कर की मात्रा की जानकारी के लिए हुई थी, लेकिन वह नहीं पाई गई। मैं नहीं जानता कि उक्त परीक्षा पर कितना भरोसा किया जा सकता है, क्योंकि वह जेल के अस्पताल में की गई थी। लेकिन मैं फिर परीक्षा करवा सकता हू।

मैंने लगभग एक पखवाड़े से मां को पत्र नहीं लिखा है। दीदी कैसी हैं? कुछ समय से मुझे उनके कोई समाचार नहीं मिले। आशा है, आप सब सानंद होंगे। आजकल कांचीमामा कहां रह रहे हैं। क्या वे अकेले ही रह रहे हैं या अपना परिवार भी साथ ले गए हैं? मुझे प्रसन्नता है कि उनकी प्रेक्टिस अच्छे ढंग से शुरू हो गई है। अगर और ज्यादा लोग दंत चिकित्सा को सीखें तो भी उन्हें प्रेक्टिस के लिए अच्छा क्षेत्र मिल जाएगा। मैं ठीक ही हूं।

श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

152. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
18-2-26

प्रिय महोदय,

हम निम्नलिखित प्रतिवेदन तार द्वारा सपरिषद् महामहिम बर्मा के गवर्नर, सपरिषद् महामहिम बंगाल के गवर्नर तथा सपरिषद् भारत के गवर्नर जनरल के नाम भेजना चाहते हैं। आप इसे शीघ्रातिशीघ्र भेज सकें तो हम आभारी होंगे। 1888 के बंगाल रेगूलेशन 3 के नियम 5 के अंतर्गत कोई राजबंदी जिस अफसर की देखरेख में रखा जाता है उसे उस बंदी द्वारा समय-समय पर जो भी प्रतिवेदन सपरिषद् गवर्नर जनरल को भेजने हों, उन्हें अनिवार्यतः आगे भेजना होता है। बंगाल सरकार द्वारा राजबंदियों के साथ व्यवहार के बारे में बनाए गए नियमों से नियम संख्या 2 के अंतर्गत जब तार सरकार से आया या सरकार को भेजा गया हो तो उसे इस शर्त के साथ सीधे भेजना होगा कि स्थानीय सरकार भारत सरकार के साथ पत्राचार के लिए सदा ही बिचवई रहेगी। इसलिए निष्कर्षतः हम बंगाल सरकार के साथ सीधा पत्राचार कर सकते हैं।

आपका विश्वस्त,
एस. सी. बोस
राजबंदियों एवं नजरबंदियों की ओर से

तार द्वारा प्रतिवेदन.

1. सपरिषद् महामहिम गवर्नर जनरल, दिल्ली के प्रति।
2. सपरिषद् महामहिम बंगाल के गवर्नर, कलकत्ता के प्रति।

सभी प्रतिवेदन विफल हो जाने से हमें विवश होकर धार्मिक कृत्यों तथा अन्य मामलो से सबद्ध शिकायतों के कारण आज से अनशन आरभ करना पडा है। आपसे हस्तक्षेप करने का अनुरोध है।

राजबदी एव नजरबदी
माडले जेल

सपरिषद् महामहिम बर्मा के गवर्नर, रगून के प्रति।

सभी प्रतिवेदन विफल हो जाने के कारण हमे अपने धार्मिक कृत्या तथा अन्य मामला से सबद्ध शिकायतों को लेकर आज से अनशन आरभ करने के लिए विवश होना पडा है। आपसे अनुरोध है कि हस्तक्षेप करें।

1818 के बगाल रेगूलेशन के नियम 5 के अतर्गत हमारा अनुरोध है कि गवर्नर जनरल को राजबदियो के साथ व्यवहार से सबद्ध तार द्वारा प्रतिवेदन भिजवाए तथा बगाल सरकार के नियम 2 के अतर्गत उक्त व्यवहार के बारे मे प्रतिवेदन तार द्वारा बगाल भिजवाए।

राजबदी तथा नजरबदी
माडले जेल

153. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले
18-2-26

प्रिय महोदय,

हम आभारी होगे, यदि आप हमारी ओर से सरकारी निरीक्षक माडले के डी सी को तथा गैर-सरकारी निरीक्षको सर्वश्री यू था ग्वे तथा जमादार, उमेचद का सूचित कर कि हम चाहते हैं कि वे हमसे शीघ्र स शीघ्र मिले। गैर-सरकारी निरीक्षका के बार मे हमे आई जी प्रिजन्स के अपने 13 जुलाई 1925 के पत्र मे सूचित किया है कि वे चाहे कितनी ही बार यहा का दौरा कर सकते हैं। इसलिए जहा तक नियमा का प्रश्न है, उनके यहा आने मे कोई भी चीज बाधक नहीं है।

आपका विश्वस्त
एस सी बास

(रेगूलेशन-3 बगाल सी एल ए कानून के अतर्गत बदियो की ओर से)

154. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले जेल
20-2-26

प्रिय महोदय,

मुझे श्री चटर्जी से पता चला है कि आप पिछले दिनों पूछताछ कर रहे थे कि अंडों का क्या किया जाएगा। तब मैंने मुख्य जेलर से अंडों की जिम्मेदारी लेने के लिए कहा—पहले से जमा तथा नए अंडों की भी। लेकिन अभी तक इस बारे में कुछ नहीं किया गया है। मैं समझता हूं कि जब तक हमारी हड़ताल चलती है, तब तक के लिए सभी मुर्गियों को यहां से हटा देना उचित होगा। चूंकि अंडे यहां से जाते रहे हैं, इसलिए कुछ अंडे इस अहाते में रखना आवश्यक है—लेकिन अन्य कारणों से यह वांछनीय नहीं है। इसके अलावा मुर्गियों के खाने के लिए कुछ समय से उबले अंडे दिए जा रहे हैं और यह अधिक अच्छा होगा कि ऐसा किसी अन्य स्थान में किया जाए। यह निस्संदेह वांछनीय होगा कि अंडों को सेने की क्रिया जारी रखी जाए और समुचित खुराक भी दी जाए। अगर कोई जेलर ऐसा करने के लिए खुशी से आगे आता है तो आप मुर्गियों के संबंध में जो सर्वोत्तम समझें, कर सकते हैं।

आपका,
एस. सी. बोस

155. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
21-2-26

प्रिय महोदय,

मैं आभारी होऊंगा, यदि आप बंगाल सरकार के द्वारा राजबंदियों एवं नजरबंदियों के साथ व्यवहार के बारे में निर्मित नियमों के अंतर्गत नियम 2 के अधीन निम्नलिखित तार भारत में मेरे अपने लोगों को कलकत्ता सी. आई. डी. की मार्फत भेज दें। ये प्राइवेट संदेश हैं, इसलिए उक्त नियम के अंतर्गत इन्हें कलकत्ता सी. आई. डी. की मार्फत सीधे भेजा जा सकता है।

आपका,
एस. सी. बोस

तार

बोस 38/1, एल्गिन रोड, कलकत्ता।

18 तारीख से धार्मिक प्रश्न तथा अन्य मामलों को लेकर भूख हड़ताल पर हूं।

सुभाष बोस, मांडले

तार

अमरनाथ दत्त   असेम्बली   दिल्ली

धार्मिक उपासना की सुविधाए न मिलने तथा अन्य शिकायतों को लेकर मुझे 18 से भूख हड़ताल शुरू करने के लिए विवश होना पड़ा है।

सुभाष बोस, माडले

156. मांडले के डिप्टी कमिश्नर के नाम

माडले
21-2-26

प्रिय महोदय,

हमारी भूख हडताल का चौथा दिन समाप्त होने को है और यद्यपि हम पिछले कुछ दिनो से आपके यहा आने की प्रतीक्षा मे रहे हैं, आपने आने की परवाह नहीं की। हम आपको विनम्रतापूर्वक याद दिलाना चाहते हैं कि 1818 के अधिनियम के अनुच्छेद 3 के अतर्गत आपको उन लोगो के प्रति कुछ वैधानिक कर्तव्य निभाने हैं, जिन्हें उक्त अधिनियम के अतर्गत बदी रखा गया है। भूख हडताल होने पर आपकी जिम्मेवारी और ज्यादा बढ जाती है। जो भी हो, हमें आशा है कि आप सुविधानुसार शीघ्र से शीघ्र यहा आने का कष्ट करेंगे।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस
(बदियो की ओर से)

157. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

माडले जेल
21-2-26

प्रिय महोदय,

चूकि हमारा सघर्ष काफी समय तक चलने वाला है, बलपूर्वक भोजन देने का सवाल भी उठ सकता है। हमने कई बार इस बारे मे अपनी राय बता दी है और हम उस राय पर मजबूती से कायम हैं।

हमारी स्थिति इस प्रकार है अगर सरकार हमारे जीवनयापन की दशा हमारे लिए असभव बना देती है तो निश्चय ही उसे यह अधिकार नहीं है कि वह हमको भोजन

न लेने से रोक सके। जब आर्थिक स्वाधीनता लुप्त हो जाती है तो जीवनयापन का साधन खो जाता है, जब राजनैतिक स्वाधीनता नहीं रहती तो सम्मान लुप्त हो जाता है, पर जब धार्मिक स्वतंत्रता शेष नहीं रहती तो कुछ भी शेष नहीं रह जाता। आज हम उसी प्रकार सर्वहारा हैं। हमारे जीवन का कोई भी अर्थ नहीं रह गया है और हमारे सम्मुख केवल एक ही विकल्प रह गया है। हम सम्मानपूर्वक अपने प्राण दे देवें। हमारे प्राण हमारी अपनी थाती है और जब जीवन न केवल असह्य, बल्कि असंभव बन जाए तो हमें मृत्यु का वरण करने की छूट है। हमारे शरीर में प्राणों का संचार सरकार ने नहीं किया है और अपनी सप्राणता के लिए हम उसके प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। अपने कार्य के लिए हम केवल भगवान के प्रति उत्तरदायी होंगे और हमें आशा है कि सरकार दैवी सृष्टा की स्थिति को अपने ऊपर ओढ़ने की ढिटाई नहीं दिखाएगी। इसलिए यदि बलात भोजन देने का रास्ता अपनाया जाता है तो हमें कष्ट के बावजूद अपना पूरा जोर लगाकर उसका विरोध करना पड़ेगा।

यह प्रश्न तब भी उठा था जब कार्क के लार्ड मेयर श्री टेरेन्स मैकस्विनी ने अनशन किया था। स्वर्गीय लार्ड मेयर की मान्यता थी कि ब्रिटिश सरकार को बलात भोजन देने का कोई अधिकार नहीं है। (श्री बोस उन दिनों इंग्लैंड में थे और वे इस मामले के बारे में पूरी जानकारी रखते हैं।) इस पर सरकार ने फैसला किया कि बलात भोजन न कराया जाए और उसने यही आदेश दिया कि उनके बिस्तर के आसपास भोजन दिन और रात रखा रहे जिससे यदि वे किसी भी समय कुछ भी खाने की इच्छा करें तो वह उन्हें मिल जाए। हमारे मामले में क्या करना है, यह आपको और सरकार को तय करना है, लेकिन हम बलात भोजन के आगे किसी भी प्रकार झुकेंगे नहीं।

एक और भी मुद्दा है जिस पर आपको चिकित्सा अधिकारी के नाते विचार करना चाहिए। वह यह है कि बलात भोजन से हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंच सकती है और जान के लिए भी खतरा हो सकता है। पहली बात तो यह है कि नाक के रास्ते भोजन पुहंचाने के लिए जब आप नाक के छेद में नली डालेंगे तो हम अपना मुंह कसकर बंद कर लेंगे और आपके लिए हमारा मुंह खोलना तब तक प्रायः असंभव रहेगा जब तक आप हमारे दांत न तोड़ दें। इसलिए, आपके लिए यह देख सकना संभव नहीं हो सकेगा कि नली किस दिशा में जा रही है। हो सकता है कि वह गलती से श्वास-नली में चली जाए और अगर फेफड़े तक भोजन का एक कण भी पहुंचेगा तो यह आशंका है कि तुरंत मौत हो जाए। दूसरे, बलात भोजन देने के सभी तरह के तरीकों के अंतर्गत, अगर जिसे भोजन दिया जा रहा हो वह विरोध न भी करे तो भी, अगर उसका दिल कमजोर हो या उसे कोई और गंभीर बीमारी हो तो इस दौरान ही हृदय-गति रुक जाने से उसकी मृत्यु हो सकती है। तीसरे, जिसे बलात भोजन दिया जा रहा है उसके द्वारा असहयोग के दौरान जो खींचा-तानी हो सकती है उसके कारण भी दिल का दौरा पड़ सकता है या गला घुट सकता है या अन्य कोई ऐसी जटिलता पैदा हो सकती है जिसकी परिणति मृत्यु में हो सकती है। यह तब भी हो सकता है जब ऐसे व्यक्ति की ओर से कोई सक्रिय

प्रतिरोध न भी हो और वह केवल अपने प्रति होने वाले बलात कार्य से अपने आपको बचाने की कोशिश कर रहा हो। मैं इस ओर भी ध्यान दिलाना चाहूंगा कि बलात भोजन के परिणामस्वरूप यह दिखाया गया है कि स्वास्थ्य को स्थाई अथवा अस्थाई हानि होती रही है। जिस कोमल श्लेष्मल झिल्ली में से होकर खाना ले जाने वाली नली जबरन डाली जाएगी वह ऐसी चीज के संपर्क के लिए नहीं बनाई गई है और इसीलिए बलात भोजन के फलस्वरूप शारीरिक प्रणाली को स्थाई क्षति पहुचने की आशंका है। इन सब खतरों को देखते हुए कुछ मामलों में चिकित्सा अधिकारियों ने हमारी जानकारी के अनुसार बलात भोजन के लिए सहमति देने से इंकार किया है। आपको पता ही होगा कि कानून हमें अधिकार देता है कि हम अपने प्राणों के लिए प्रस्तुत गंभीर खतरे का और गंभीर चोट की जोखिम का सामना करें। हमने आपका ध्यान बलात भोजन के फलस्वरूप प्राणों के लिए खतरे और स्वास्थ्य के लिए क्षति की ओर खींचा है। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि अगर बलात भोजन कराने का सहारा लिया गया तो हमारे लिए अपनी जान और अपने स्वास्थ्य को बचाने के उद्देश्य से उस अमानवीय प्रयास का सक्रिय प्रतिरोध करने का कानूनी औचित्य होगा।

निष्कर्ष रूप में हम फिर दुहरा दें कि बलात भोजन के फलस्वरूप मृत्यु या चोट साधारण बात है और सुविज्ञ चिकित्सक इसकी प्रामाणिक पुष्टि कर सकते हैं। इस प्रकार होने वाली मृत्यु हत्या के समान होगी, बल्कि संभवत: सोच-विचार कर की गई हत्या के समान होगी, क्योंकि प्रभारी चिकित्सा अधिकारी को अपने काम के परिणाम की जानकारी पहले ही से होगी। हम इन सब तथ्यों की ओर आपका ध्यान जिन कारणों से खींच रहे हैं उनमें एक यह है कि अगर बलात भोजन देने के फलस्वरूप कोई गंभीर घटना घट जाती है तो किसी न्यायालय में आपको दीवानी और फौजदारी, दोनों ही दृष्टियों से जिम्मेवार ठहराया जा सकेगा।

इन सब बातों के अलावा हम यह विनीत निवेदन भी कर देना चाहते हैं कि शारीरिक रूप से हमारा दिल कमजोरी का शिकार है।

हम हैं, महोदय,

आपके विश्वस्त,

सुभाष चन्द्र बोस

जीवन लाल चटर्जी

सुरेन्द्र मोहन घोष

मदन मोहन भौमिक

सतीश चन्द्र चक्रवर्ती

(यह पत्र हस्ताक्षरकर्ताओं की ओर से सुभाष चन्द्र बोस द्वारा तैयार किया गया था)

158. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
21-2-26

प्रिय महोदय,

हम आभारी होंगे, यदि आप हमें बताएं कि भूख हड़ताल के बारे में सरकारी सर्कुलरों के संदर्भ में क्या आपने यहां की स्थिति के बारे में हमारे कुटुंबियों को सूचित कर दिया है। अगर आपने यह नहीं किया है तो हमें प्रसन्नता होगी कि आप सर्कुलर में बताए गए ढंग से कार्रवाई करें।

आपका,
एस. सी. बोस
(राजबंदियों और नजरबंदियों की ओर से)

159. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
22-2-26

प्रिय महोदय,

हम आभारी होंगे, यदि आप गैर-सरकारी निरीक्षकों सर्वश्री उमेचंद झवेरी तथा यू था ग्वे को संदेश भेज दें कि हम उनसे तुरंत मिलना चाहते हैं।

आपका,
एस. सी. बोस
(राजबंदियों एवं नजरबंदियों की ओर से)

160. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
22-2-26

प्रिय महोदय,

मैं मांडले के डिप्टी कमिश्नर के लिए उस पत्र की एक प्रतिलिपि भेज रहा हूं जिसे मैंने बलात भोजन के संबंध में आपको लिखा है। पत्र में उस सबका सार संक्षेप

में दिया गया है जो हमें बलात भोजन के बारे मे कहता है। मैं कृतज्ञ होऊगा, यदि आप इसे यथाशीघ्र उनको भेज दें।

आपका
एस सी बोस

(यह पत्र 24-2-26 तक नहीं भेजा गया था)

161 शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
1-3-26
कृते डी आई जी , आई बी , सी आई डी
बगाल।

प्रिय दादा,

मैं समझता हू कि मैं आपके सबसे बाद वाले पत्र का उत्तर पहले दे चुका हू। मुझे याद नहीं कि मैंने आपको सूचित किया है या नहीं कि आपका अतिम पत्र पाने के बाद मैंने हुकवर्म (अकुश-कृमि) रोग की जाच के लिए अपनी स्वास्थ्य-परीक्षा करवाई लेकिन वैसी कोई बात नहीं निकली। शीघ्र ही मैं अन्य परीक्षाए भी करवाऊगा।

मैं औषधियों तथा उनके बारे मे कविराज महाशय के निर्देशों की प्रतीक्षा करता रहा हू। मैं नहीं जानता कि मेरे पत्र उन्हें मिले भी या नहीं।

मुझे कुछ समय से पिताजी का कोई पत्र नहीं मिला है। वे कैसे हैं? नतूनमामा बाबू के भी कोई समाचार मुझे नहीं मिले हैं। वे बडनगर में रहते हैं या नामामा बाबू के साथ? क्या वे आफिस जाने के लायक हो गए हैं? नतूनदादा कैसे हैं? मैंने उन्हें कुछ समय पूर्व लिखा था, लेकिन उत्तर मुझे नहीं मिला है। मा के पत्र का उत्तर मैं अगले सप्ताह दूगा-- इस बीच आशा है कि वे चिंतित नहीं होगी।

आशा है कि आप मनोविज्ञान की वे पुस्तके शीघ्र भेजेंगे जिन्हें मैं पढ़ना चाह रहा हू।

कारा, कि मैं और अधिक कुछ लिख सकता।

आप सब कैसे हैं?

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

162. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
24-2-26

प्रिय महोदय,

मैं निम्नलिखित तार अगर जरूरत हो तो अपने ही खर्च पर कलकत्ता भेजना चाहता हूं।

हेमेन्द्र दास गुप्ता,
31, हाल्दारपाड़ा रोड,
कालीघाट, कलकत्ता।

आपका,
एस. सी. बोस

आपका तार मिला। संस्मरण आज भेज रहा हूं। इलीसियम रो से पता करें।

सुभाष बोस

163. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
25-2-26

प्रिय महोदय,

मैं निम्नलिखित तार भारत में अपने लोगों को शीघ्रातिशीघ्र भेजना चाहता हूं।

आपका,
एस. सी. बोस

तार

बोस
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

आज भूख हड़ताल का आठवां दिन है।

सुभाष बोस

जे एम सेनगुप्त,

मेयर, कलकत्ता।

आज आठवे दिन भी भूख हडताल पर हू।

सुभाष बोस

अमरनाथ दत्त,

असेम्बली, दिल्ली

आज भूख हडताल का आठवा दिन है।

सुभाष बोस

टी सी गोस्वामी,

असेम्बली, दिल्ली।

आज आठवे दिन भी भूख हडताल पर हू।

सुभाष बोस

164. मांडले जेल के सुपरिंटेडेट के नाम

माडले
26-2-26

प्रिय महोदय,

आज हमारी भूख हडताल का नवा दिन है। मैं नहीं जानता कि आप हमे बलात भोजन देने के अलावा समझौते के लिए शीघ्रता करने की दिशा में और क्या कदम उठा रहे हैं। मैं नहीं जानता कि इस प्रात मे स्थिति क्या है, लेकिन मैं जानता हू कि बगाल मे उस व्यक्ति के विचारो को और अधिक ध्यान दिया जाता है जो मौके पर मौजूद हो और मैं समझता हू कि यही बात बगाल सरकार के पक्ष मे कही जा सकती है। आपने हमे एकाधिक बार यह धमकी भी दी है कि बलात भोजन की खातिर (जो प्रसगत कोई आसान काम नहीं होगा) तीन वर्ष की कडी कैद की सजा दी जाएगी और शायद आपको यह पता नहीं है कि यहा ऐसे लोग भी हैं जिन्होने अपने राजनैतिक विचारों के लिए अदमान में 10 साल के कालापानी की सजा झेली है। आपने एकदम मनमाने ढग से बगाल सरकार के नियमों की उपेक्षा करके हमारे अधिकाश तार रगून भेजे हैं जहा उन्हें दाखिल दफ्तर कर दिया गया है--जब कि आपको हमारे लोगो को सीधे अथवा डिप्टी कमिश्नर के जरिए सूचना देनी चाहिए थी। आपने मेरे बडे भाई को जो उत्तर मेरे स्वास्थ्य के बारे म दिया, वह गलत तस्वीर पेश करता है और उससे मेरे घर के लोग अवश्य ही गलतफहमी मे रहेगे। मैं नहीं समझ पाता कि आप कैसे यह कह सकते हैं कि जो

व्यक्ति भूख हड़ताल पर है वह ठजह्ह है, जब तक कि आप उसके कष्टों के प्रति नितांत निर्मम भाव न रखें। अब ऐसा प्रतीत होता है कि इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स की मनोवृत्ति उनके मातहतों के मन में भी प्रविष्ट होती जा रही है।

आपका,
एस. सी. बोस

(लगभग 9 बजे सवेरे भेजा गया)

165. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
26-2-26

प्रिय महोदय,

आभारी होऊंगा, यदि आप निम्नलिखित तार मेरे भाई को सीधे मेरे खर्च पर भिजवा दें। मैं नहीं चाहता कि इसे रंगून या सी.आई.डी. को भेजा जाए। अगर किसी कारणवश आप यह संभव नहीं मानते कि इसे सीधे भेजा जाए, तो मैं नहीं समझता कि इसको भेजने का कोई फायदा होगा।

आपका,
एस. सी. बोस

तार

बोस

38/1, एल्गिन रोड, कलकत्ता।

कृपया मां-पिताजी को कहें कि मेरे अनशन पर परेशान न हों। हो सके तो भूख हड़ताल का समाचार उन तक न पहुंचने दें। उनके स्वास्थ्य की तार द्वारा सूचना दें।

सुभाष बोस

166. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
26-2-26

प्रिय महोदय,

हम आभारी होंगे, यदि आप मांडले के डिप्टी कमिश्नर को सूचित कर दें कि हम चाहते हैं कि वे हमारे पास सुविधानुसार शीघ्र से शीघ्र आएं।

आपका
एस सी बोस
(बंदियों की ओर से)

167. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
26-2-26

प्रिय महोदय,

हम चाहते हैं कि मांडले के *श्री एल के मित्र, एम एल सी, यथाशीघ्र हमसे* अलग-अलग या एक साथ भेंट करें। अतएव हमारा आपसे अनुरोध है कि आप इस भेंट के लिए शीघ्र से शीघ्र समुचित अधिकारियों को तार भेजकर इसका प्रबंध करें। हम इसे अत्यावश्यक मानते हैं।

आपके विश्वस्त
एस सी बोस
जे एल चटर्जी
एम एम भौमिक
एस एम घोष
बी बी गांगुली
एस सी चक्रवर्ती
एस सी मित्र
टी चक्रवर्ती

168. बर्मा सरकार के मुख्य सचिव के नाम

मांडले
26-2-26

प्रिय महोदय,

हम 'रंगून डेली न्यूज' के 24 फरवरी (डाक संस्करण) की निम्नलिखित कतरन की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। उपलब्ध आंतरिक साक्ष्य से यह लगता है कि यह वक्तव्य अर्ध-सरकारी है या सरकार द्वारा प्रेरित है। हम यह बता दें कि उक्त वक्तव्य बंगाल सरकार के गृह मंत्री सर ह्यू स्टीफेंसन के उस बयान के विरुद्ध जाता है जो उन्होंने बंगाल के नजरबंदियों के संबंध में बर्मा सरकार की जिम्मेवारी के बारे में दिया था। अगर रंगून के अखबारों में दिए गए बयान का खंडन बर्मा सरकार नहीं करती तो हमारा तथा आम जनता का यह निष्कर्ष निकालना ठीक ही होगा कि यह प्रेस वक्तव्य वास्तव में बर्मा सरकार का ही एक वक्तव्य है। यह उचित नहीं होगा कि दो प्रांतीय सरकारों के बीच गलतफहमी के कारण हम पर दुहरे शासन का दुगुना भार लादा जाए। एक ओर तो हमसे यह कहा जाए कि हमें बंगाल सरकार के आदेशों पर निर्भर करना होता है और दूसरी ओर हमारे घर के लोगों से कहा जाए कि बंगाल के बंदियों के लिए बर्मा सरकार पूरी तरह उत्तरदायी है— यह हमारी सीधी-सादी सहज बुद्धि के अनुसार राजनैतिक कूटनीतिज्ञता के क्षेत्र में एक प्रकार की चालाकी से भरी धोखा-धड़ी है।

लेकिन अगर अखबारों का वक्तव्य सही है तो उसका परिणाम यह निकलता है कि :

1. बर्मा सरकार को हमें बलात भोजन खिलाने के बारे में कोई भी आदेश या सर्कुलर निकालने का अधिकार नहीं है। बंगाल सरकार तथा बर्मा सरकार, दोनों ही के सर्कुलर अवैध हैं, यह हमने मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट को अपने 22-2-26 के पत्र में बता दिया है।
2. बंगाल सरकार द्वारा बनाए गए नियमों के अंतर्गत हमें बंगाल सरकार तथा बंगाल में रहने वालों से सीधे पत्राचार करने का जो अधिकार दिया गया है उसका दमन करके बर्मा सरकार गैर-कानूनी और मनमाने ढंग से काम कर रही है। इस संबंध में नियम इस प्रकार हैं:

नियम-2

उपर्युक्त द्वारा यह स्पष्ट है कि हम सीधे बंगाल सरकार से या सी.आई.डी. के द्वारा बंगाल में अपने लोगों से पत्राचार कर सकते हैं। केवल भारत सरकार के साथ पत्राचार के मामले में हमें स्थानीय सरकार के जरिए जाने की बाध्यता होगी।

इसके अलावा, हम जानते हैं कि बंगाल सरकार के नियमों के अनुसार जब कभी भी भूख हड़ताल हो तो सुपरिंटेंडेंट को उसकी सूचना जिला मजिस्ट्रेट (अर्थात डिप्टी कमिश्नर) के जरिए हमारे संबंधियों को देनी चाहिए। हमें खेद है कि इस मौके पर बंगाल

सरकार के इस नियम का पालन नहीं किया गया। हमने एकाधिक बार सुपरिंटेंडेंट का ध्यान इस बात की ओर खींचा। लेकिन किन्हीं कारणो से जो उन्हीं को ज्ञात है, उन्होंने हमारी शिकायत की उपेक्षा करने मे ही प्रसन्नता अनुभव की। परिणाम-स्वरूप हमारे सभी तार डाक द्वारा रगून की यात्रा करते रहते हैं। हमारे लिए यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि वे वहा से आगे भेजे जाते हैं अथवा दाखिल दफ्तर कर दिए जाते हैं।

हम हैं, महोदय,
आपके विश्वस्त,
एस सी बोस
(राजबदियो तथा नजरबदियो की ओर से)

169. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
27-2-26

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
डी एस पी
कृते डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,
बगाल।

28-2-26

प्रिय सुभाष,

मैंने इससे पहले तुम्हे 22 तारीख को पत्र लिखा था। तुम्हारे अतिम पत्र पर 6 तारीख पडी है और मैं समझता हू कि मैंने तुम्हे लिखा है कि वह मुझे 20 तारीख को मिला। मैंने आज सवेरे श्री आर्मस्ट्राग को लिखकर पूछा कि क्या तुम्हारे कोई पत्र उनके कार्यालय मे पडे हैं। उन्होने जवाब दिया है कि कोई नहीं है। मैंने यह भी जानना चाहा कि तुम्हारा 6 तारीख का पत्र मुझे पहले क्यो नहीं मिला। उन्होने उत्तर दिया है कि वह पत्र उन्हे अपने कार्यालय में 19 तारीख को शाम 3 30 बजे मिला था। इसलिए सभवत पत्र जहा से होकर आया था, देरी वहा हुई होगी।

तुम्हारी बहूदीदी के नाम तुम्हारा 12-2-26 का पत्र 25 तारीख को मिला। इस पत्र मे तुमने कुछ ऐसे कागजात की चर्चा की है, जिनसे सिद्ध होता है कि बदियो के भत्तों, खर्चों आदि के लिए बगाल सरकार जिम्मेवार है और तुमने लिखा है कि तुम उन

कागजात को साथ भेज रहे हो। लेकिन पत्र के साथ वे नहीं थे और आज सवेरे मैंने श्री आर्मस्ट्रांग से उनके बारे में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया है कि वे कागजात उनके कार्यालय में नहीं पहुंचे, और इस कमी की ओर ध्यान दिया गया तथा इसके बारे में उसी समय उनके कार्यालय के रिकार्डों में टिप्पणी दर्ज कर दी गई।

तुम्हारा कल भेजा हुआ तार मुझे आज सवेरे मिला। उसके मिलने पर मैंने श्री आर्मस्ट्रांग से निम्नलिखित तार तुम्हें भेजने को कहा :

'तुम्हारा तार आज मिला। अखबारों में भूख हड़ताल की खबर 21 को छपी। इलीसियम रो से मैंने तुरंत जानकारी देने को कहा। 25 तारीख को खबर दी गई कि भूख हड़ताल 18 को शुरू हुई। असेम्बली ने गोस्वामी का 'काम रोको प्रस्ताव' 25 को पास किया। गृह मंत्री ने पूर्ण सहानुभूतिपूर्ण जांच का वादा किया। रांगामामा बाबू कल मांडले जा रहे हैं। स्वास्थ्य के समाचार आज दो।'

श्री आर्मस्ट्रांग ने मुझे सूचित किया है कि उन्होंने मेरा तार ज्यों का त्यों मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट को भेज दिया है।

उपर्युक्त तार से तुम्हें स्पष्ट हो जाएगा कि 18 तारीख को शुरू होने वाली भूख हड़ताल की खबर हमें 25 तारीख तक नहीं दी गई। श्री आर्मस्ट्रांग ने मुझे लिखा कि 24 तारीख की शाम को ही यह खबर मिली कि राजबंदियों तथा नजरबंदियों ने 18 तारीख से भूख हड़ताल कर रखी है। यह अत्यंत आश्चर्यजनक है।

इस पत्र के मिलने से पहले तुम 'स्टेट्समैन' में असेम्बली में गत वृहस्पतिवार को होने वाली बहस का समाचार पढ़ चुके होंगे। श्री गोस्वामी ने बहुत प्रभावशाली भाषण दिया और सारे सदन को अपने पक्ष में कर लिया। तुमने 'एसोसिएटेड प्रेस' की रिपोर्ट में देखा होगा कि लेफ्टिनेंट कर्नल मुलवानी की गवाही के प्रकाशन से कैसी सनसनी पैदा हुई। क्या तुमने गवाही की रिपोर्ट पढ़ी है?

यहां के अखबारों ने तुम्हारे तथा अन्य बंदियों द्वारा बर्मा के मुख्य सचिव को पूजा के खर्च के बारे में लिखे गए तीन पत्रों को (जिनमें 16 फरवरी वाला पत्र भी है) प्रकाशित किया है। अंतिम पत्र वास्तव में बहुत तीखा था और मैं बता दूं कि मुझे उसको पढ़कर तुम पर बहुत गर्व हुआ। भगवान तुम सब पर अपनी कृपा-दृष्टि करें।

मांडले के डिप्टी कमिश्नर ने मेरे तार के उत्तर में यह तार भेजा है कि तुम्हारी तंदरुस्ती ठीक चलती जा रही है और तुमने चाहा था कि भूख हड़ताल की खबर तुम्हारे माता-पिता से छिपाई जाए। अब वैसा करना संभव नहीं है। पिताजी यहां 21 तारीख को थे और उसी दिन अखबारों में पहली बार भूख हड़ताल की खबर छपी और मां को भी उसके बारे में पूरी जानकारी है। लेकिन इससे तुम्हें चिंतित नहीं होना चाहिए।

मुझे आज सवेरे सूचना मिली कि सर अलेक्जेंडर मडीमैन ने अगले सोमवार (18 मार्च) को भूख हड़ताल के बारे में बयान देने का वादा किया है। अभी तक न तो बंगाल

सरकार की ओर से और न बर्मा सरकार या भारत सरकार की ओर से कोई बयान आया है और हम प्रतीक्षापूर्वक उत्सुक हैं कि सरकार को इस मामले म कहना क्या है।

अगर सभव होता तो इस समाचार को मा और पिताजी से छिपाकर मुझे बडी प्रसन्नता होती। लेकिन यह बिल्कुल सभव नहीं है क्योंकि इस समाचार ने अखबारो में तथा मच पर भी बहुत हलचल पैदा कर दी है और इन परिस्थितियों मे जब तक मनुष्य ऐसी जगह न रह रहे हो जहा अखबार तक नहीं पहुचते हों तब तक उन्हे यह समाचार मिलेगा ही। लेकिन इस बात को लेकर कतई चिता करने की आवश्यकता नहीं है।

तुम्हें जो अखबार पढने को मिलते हैं उनसे तुम्हे कुछ हद तक पता चल गया होगा कि देश भर मे क्या कुछ हो रहा है। 'एसोसिएटेड प्रेस' पर प्राय इलजाम लगाया जाता है कि वह खबरे छिपा जाता है। लेकिन जो थोडे बहुत समाचार वह देता है वही शिक्षित तथा दूरदर्शी व्यक्ति के लिए पर्याप्त हैं।

मैं नहीं जानता कि तुम्हें अब 'फारवर्ड' पढने दिया जाता है या नहीं। अखबारो के बारे में भारत मत्री के वक्तव्य के बाद मैंने सोचा था कि स्थानीय अधिकारी तुम्हे 'बगाली' की जगह 'फारवर्ड' मगाने की अनुमति दे दगे। मुझे 'बगाली' पढना पडता है—वह दिनोंदिन ज्यादा अप्रिय बनता जा रहा है। अब वह प्राय सरकारी मुखपत्र हो गया है और भारतीय पाठको की दिलचस्पी का कोई भी समाचार नहीं देता।

मुझे अब इसके सिवा और कुछ नहीं लिखना है कि सम्पूर्ण परिवार के आशीर्वाद तुम्हारे लिए हैं। मुझे कोई सदेह नहीं है कि भगवान की इस लाला भूमि मे तुम्हारी यत्रणा व्यर्थ नहीं जाएगी।

मैं केवल चेतावनी के रूप में एक शब्द कहना चाहूगा। अब जब कि तुम अनशन पर हो तुम्हे अपने प्रति सामान्य दिनो की अपेक्षा अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। तुम्हे अपने ऊपर जोर कतई नहीं डालना चाहिए—पढना तक बद कर देना चाहिए। प्रसगत लार्ड रोनाल्डसे की पुस्तक 'हार्ट आफ आर्यावर्त' के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं ? तुमने अभी तक मुझे इस विषय मे बताया नहीं है।

हम सब सानद हैं।

तुम्हारा सस्नेह
शरत

श्रीयुत् सुभाष सी बोस

170. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
6-3-26
कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी., बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
6 मार्च 1926

प्रिय सुभाष,

तुम्हारे 17 और 21 फरवरी के पत्र मुझे 2 तारीख को मिले। मुझे कोई शक नहीं कि तुम्हारे पत्र समय से नहीं पहुंचाए जा रहे हैं। सवाल सिर्फ यह रह जाता है कि देरी यहां होती है या वहां।

रांगामामा बाबू शायद आज तीसरे पहर तुमसे मिलेंगे और हम तुम्हारे स्वास्थ्य के ब्यौरे के बारे में उनके तार की प्रतीक्षा करेंगे। 15 दिन की भूख हड़ताल के बाद तुम्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत सावधान रहना होगा। अब तुम्हें पता है कि सम्पूर्ण देश की दृष्टि में तुम्हारे स्वास्थ्य और जीवन का कितना मूल्य है और मुझे आशा है कि (अगर और कोई बात नहीं तो) उक्त विचार तुम्हें अपने स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति में अधिक से अधिक चिंता करने के लिए प्रेरित करेगा।

चूंकि तुम्हें 'स्टेट्समैन' पढ़ने को मिलता है, इसलिए तुमने अवश्य ही उसमें 'जेलों में सुविधाएं' शीर्षक लेख की ओर ध्यान दिया होगा जो गत बृहस्पतिवार को नगर संस्करण में छपा था। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि उससे अधिक नीचतापूर्ण कोई और बात हो सकती है?

मैंने पाया है कि बर्मा सरकार का कहना है कि धार्मिक कार्यों के लिए खर्च की स्वीकृति का सामान्य प्रश्न विचाराधीन है। हमें निर्णय की उत्सुकता से प्रतीक्षा है।

लेफ्टिनेंट कर्नल मुलवानी ने जेल समिति के समक्ष जो गवाही दी है, उसके एक स्थानीय पत्र में प्रकाशन पर सारा देश आश्चर्य-चकित रह गया है। मैं नहीं कह सकता कि रंगून के किसी पत्र ने उसे प्रकाशित किया है या नहीं और अगर ऐसा हुआ भी है तो क्या तुम्हें उसको देखने का मौका मिला है अथवा तब तक मिल पाएगा जब तक तुम कारावास में हो। मुझे जानने की उत्सुकता है कि जेल सुपरिंटेंडेंट लोग उसके विषय में क्या सोचते हैं।

तुम सोच रहे होंगे कि मैं क्यों उस विचार का पोषक हूं, जिसे मैंने तुम सब तक मौलाना शौकत अली के जरिए पहुंचाया है। बात यह है कि उक्त विचार बंगाल की जनता का है और मेरा निजी विचार कुछ भी क्यों न होता, मैं बाध्य था कि तुम तक जनता का (विशेषत: कांग्रेसजनों और स्वराजवादियों का) विचार पहुंचाता। उससे निस्संदेह कुछ अच्छा परिणाम निकला है, सभी का ध्यान मांडले की ओर खिंचा हुआ है और इसका अच्छा नतीजा निकल कर रहेगा।

यह पत्र तुम तक पहुचने से पहले ही तुम लार्ड लिटन का वह भाषण 'स्टेट्समैन' में पढ चुके होंगे जो उन्होने ढाका म मुस्लिम हाल का उद्घाटन करते हुए दिया था। मुझे उसमें यह पढकर हसी आई कि तुम महामहिम के मित्रों में एक हो और उनके तथा तुम्हारे विचारों में कोई अतर नहीं है।

मैं इस बार तुम्हे लबा पत्र पढने का कष्ट नहीं दूगा और परिवार के कुछ समाचार देकर मैं पत्र समाप्त करूगा। दादा फिर स्वस्थ हैं। उनका इलाज नहीं चल रहा है। लेकिन यह बताते हुए मुझे दुख है कि नतूनमामा बाबू का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिर रहा है। वे अब प्राय बिस्तर पर पड गए हैं। शरीर-भर में उनके दर्द में वृद्धि हो गई है और मुझे आशका है कि उन्हें फिर लबी छुट्टी लेनी होगी।

मुझे पिछले महीने के अत मे सुनील के समाचार मिले। उसने लिखा है कि उसके घर वापस आने में अब बहुत देरी नहीं है। मैं ठीक से समझ नहीं पाया कि इससे उसका तात्पर्य क्या है।

मैं मनोविज्ञान विषयक तुम्हारी किताबे आज बुक पोस्ट से भेज रहा हू। पिताजी यहा कल सवेरे आ रहे हैं।

तुम्हारा अत्यत स्नेहपूर्वक,
शरत

171. जानकी नाथ बोस के नाम

माडल
8-3-26

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
15-3-26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बगाल।

पूज्य पिताजी,

आपको अब तक पता चल चुका होगा कि हमने गत 4 तारीख को अपनी भूख हडताल समाप्त कर दी। हम सबको कमजोरी तो है, लेकिन अन्यथा हम ठीक हैं। हमें पहले जैसी ताकत आने में कुछ समय अवश्य लग जाएगा।

भूख हडताल के दौरान मैंने तार भेजकर मेजदादा से पूछा था कि क्या मुझे अपने स्वास्थ्य के बारे मे आपको प्रतिदिन सूचना भेजनी चाहिए। उन्होने जवाबी तार भेजकर कहा कि यहा से तार द्वारा जाने वाली दैनिक सूचना के आधार पर वे दैनिक जानकारी देते रहते हैं। इसलिए मैंने आपको सीधे तार द्वारा खबर नहीं भेजी। मुझ आशा है कि

आपको यहां की गतिविधियों की जानकारी मिलती रही होगी।

मुझे जानकर दुख हुआ कि अरुणा के विवाह की बातचीत टूट गई है। यहां क्रमशः गर्मी बढ़ती जा रही है।

मुझे जानने की उत्सुकता है कि आप सब वहां कैसे हैं। गर्मियां आप कहां बिताने का विचार कर रहे हैं?

आपको मेरा प्रणाम।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

पुनश्च:

संगमामा बाबू अब यहीं हैं। उनसे मेरी आखिरी बार भेंट आज होगी। वे आज तीसरे पहर रंगून जा रहे हैं, जहां से मंगलवार को छूटने वाले जहाज से कलकत्ता जाएंगे।

सुभाष

पुनः पुनश्च:

मुझे मेजदादा के कंघों और माचिस के नमूने मिल गए हैं। वे निस्संदेह बहुत अच्छे हैं।

सुभाष

172. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले
13-3-26

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
23-3-26
कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,
बंगाल।

प्रिय दादा,

आपका 6 तारीख का पत्र मुझे 11 तारीख को मिला।

श्री पैटर्सन के बारे में हमने जो अनुमान लगाया था, वह सही सिद्ध हो रहा है जैसा कि असेम्बली के प्रश्नोत्तरों से प्रकट हुआ है। वे लीपा-पोती करने के उद्देश्य से आए थे और उन्होंने तदनुसार काम किया। उनकी सही स्थिति के बारे में निश्चित हुए बिना ही हमने अपनी कुछ शिकायतें कहीं—इस डर से कि कहीं वे वापस जाकर यह

न कहे कि हमें कुछ भी शिकायत नहीं है। यह पता नहीं चला है कि उन्होंने इन शिकायतों की ओर समुचित अधिकारियों का ध्यान खींचा या नहीं।

मौसम अब अनिश्चित-सा है, लेकिन कुछ ही समय में यह लगातार गर्म बन जाएगा। अप्रैल मे वास्तविक गर्मी शुरू हो जाएगी।

इस्पेक्टर जनरल महोदय ईद का चाद बन गए हैं—कम से कम हमारे लिए। जनवरी में उन्होंने हमसे कहा था कि वे फरवरी मे फिर आएगे। अब ऐसा नहीं लगता है कि वे इधर शीघ्र आने वाले हैं।

नजरबदी के नए आदेश पर 16 (सोलह) जनवरी 1926 को हस्ताक्षर हुए और वह हमें 29 जनवरी को दिया गया। इससे पिछले आदेश पर 19 जनवरी 1925 को हस्ताक्षर हुए थे और वह बरहमपुर जेल मे हमे 25 जनवरी को दिया गया था।

मैंने रागामामा बाबू के हाथों नीत्शे की कृतियो का तृतीय खड वापस भेज दिया है और ड्राईक्लीनिग के लिए अपनी शाल भी भेजी है।

मैं नहीं जानता कि सलग्न कागजात क्यों नहीं पहुचे और वे क्यो लापता हो गए हैं। यहा हमारे एक मित्र को सूचना मिली है कि उनके पत्र के सलग्नक सेसर के कार्यालय में जा पहुचे हैं, हालाकि उन्हे रोक दिया गया था। मैं नहीं समझता कि मैं उन्हे पत्र के अदर रखना भूल सकता था।

मैंने आपको अपने पिछले पत्र में लिख दिया है कि मैंने तार किन-किन तारीखो को भेजे। आप इन तारीखों को प्राप्ति की तिथियों के समक्ष रखकर देख सकते हैं। अधिकाश मामलो में टेलीग्राम डाक द्वारा रगून भेजे गए और वहा से उन्हे तार के जरिए आगे भेजा गया। पहले आठ या दस दिन वे टेलीग्राम रगून मे अटकाए रखे गए जिससे उनके जाने मे असाधारण देरी हुई, लेकिन बाद के दिना मे वे अधिक शीघ्रता से भेजे गए। अगर समाचार किसी न किसी प्रकार प्रकट न हो गया होता तो मैं नहीं समझता कि टेलीग्राम रगून से भेजे भी जाते।

आपने डिप्टी कमिश्नर को कितने टेलीग्राम भेज हैं और किन-किन तारीखो पर? क्या आपको उन सबके उत्तर मिले थे? जब वे यहा थे तो मैंने उनसे कहा था कि आपको वे तार भेजकर कहे कि सभव होता मा और पिताजी को समाचार न दिया जाए। उसके बाद से उन्होंने इधर शक्ल नहीं दिखाई है। लेकिन मुझे खुशी है कि उन्होने हमारी बात मानकर सूचना दे दी थी।

मैं आपको 'रगून डेली न्यूज' की एक कतरन भेज रहा हू—यह एक स्थानीय दैनिक पत्र है जिसे पढने की अनुमति हमे सरकार से मिली है। आप देखेंगे कि भारत से हमारे लिए रगून के पत्रो के जरिए कितने कम समाचार मिल पाते हैं और किस प्रकार 'एसासिएटेड प्रेस' कुछ पत्रो के प्रति जान-बूझकर उपेक्षा का बर्ताव करता है। जहा तक 'बगाली' पत्र का प्रश्न है, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि हम उस उदारतावादी पत्र की अपेक्षा बर्मा के पत्रो से अधिक जानकारी पाते हैं और मुझे शक है कि उसके ग्राहकों

में जेल के बंदियों के अलावा भी कोई और है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्री गोस्वामी ने हमारे लिए जो भी किया है, उसके लिए हम सभी उनके प्रति कृतज्ञता का अनुभव करते हैं।

मैं अभी तक ठीक हूं, सिर्फ कमजोरी शेष है जिसे जाने में कुछ समय लग जाएगा। अनशन की समाप्ति के बाद मेरा वजन कुछ बढ़ा है और 143 पौंड है।

अरुणा के विवाह के संबंध में, मैं समझता हूं कि अब समय आ गया है कि वैवाहिक संबंधों के आड़े आने वाली कुछ रूढ़ियां तोड़ी जाएं। मैं नहीं जानता कि मेरा सुझाव किस रूप में लिया जाएगा, लेकिन मैं सोचता हूं कि पूर्वी और पश्चिमी बंगाल के कायस्थों में अंतर्विवाह होने चाहिएं। समस्या का समाधान और कैसे किया जा सकता है? जो भी हो, मुझे कोई संदेह नहीं कि शहर में वर की खोज की अपेक्षा मुफस्सिल में खोज अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

रंगामाला बाबू से मेरी लंबी बातचीत हुई और आपको उनसे सब बातों की जानकारी मिल जाएगी। मैंने उन्हें अपनी कठिनाइयों के बारे में विस्तार से बताया है और उस टिप्पणी को एकाधिक बार पढ़कर सुनाया है, जिसमें बताया गया है कि हमने भूख हड़ताल क्यों स्थगित की। मुझे आशा है कि वे यथासंभव सही रिपोर्ट आपको देंगे। हमने उक्त दोनों स्मरण-पत्रों की प्रतिलिपियां इंस्पेक्टर जनरल आफ प्रिजन्स को भी भेज दी हैं जो उन्हें सेंसर के बाद, रंगून में मौलाना शौकत अली को दे देंगे।

मुझे आपके 22 फरवरी 27 फरवरी, 1 मार्च और 6 मार्च के पत्र यथासमय मिल गए हैं। अगर भविष्य में भी सेंसर का काम इसी तरह त्वरित ढंग से होता रहा तो मुझे किसी तरह की शिकायत नहीं होगी।

मैं अपने स्वास्थ्य की पर्याप्त देखरेख रख रहा हूं, जहां तक खुराक और आदत की मजबूरी मुझे वैसा करने देती है। मुझे फिलहाल कब्जियत के कुछ लक्षणों और सर्दी-जुकाम की तकलीफ कभी-कभी होने के सिवा और कोई कष्ट नहीं है। निस्संदेह मैं नहीं जानता कि अब से एक पखवाड़ा बाद क्या होगा जब कि गर्मी अपना जोर आजमाना शुरू करेगी।

आपने 'स्टेट्समैन' के जिस लेख का जिक्र किया है, उसे हमने देखा है और हमें कोई संदेह नहीं कि उसकी समुचित खबर ली जाएगी। आप जानते हैं कि फिलहाल हमने क्यों अपनी भूख हड़ताल स्थगित रखना स्वीकार किया—यद्यपि यह हमारी इच्छा के विरुद्ध बात थी। कलकत्ता से और विशेषतः आपके पास से आए तारों से हम सबको आश्चर्य हुआ। मौलाना शौकत अली से पहले दिन तीन घंटे तक बातचीत के बाद हमने उन्हें यह कहकर टालना चाहा कि हम देश के नाम पर अपीलों को नहीं स्वीकारेंगे—हम केवल बंगाल के जनमत का आदर करेंगे। हम बंगाल के संदेशों की प्रकृति के बारे में इतने आश्वस्त थे कि अगली सुबह हमने सुपरिंटेंडेंट को यह लिखा कि मौलाना साहब से और आगे बातचीत का कोई लाभ नहीं होगा। एक बार अगर बंगाल के अभिमत का

संलग्न : 'रंगून डेली न्यूज' की एक कतरन।

संलग्नक :

'रंगून डेली न्यूज', 12 मार्च 1926
श्री पटेल द्वारा असेम्बली का स्थगन
भारतीय प्रेस में टिप्पणियां 'द इंग्लिशमैन' एसोसिएटेड प्रेस

कलकत्ता, 10 मार्च : असेम्बली को स्थगित करने के श्री पटेल के निर्णय और बाद में उनके द्वारा दिए गए वक्तव्य पर टिप्पणी करते हुए 'द इंग्लिशमैन' लिखता है: 'स्पष्ट तथ्य यह है कि श्री पटेल ने अपने विवेक, अपनी न्यायप्रियता और निर्णय-बुद्धि पर अपनी भावना को हावी हो जाने देकर एक बहुत बड़ी गलती की है। संविधान की भीतियों को उन्होंने जो क्षति पहुंचाई उस पर उन्होंने पूरी तरह पश्चात्ताप किया है और यथायोग्य वह सब किया है जिससे क्षति का प्रभाव दूर हो सके। लेकिन हमें आशंका है कि कतिपय क्षेत्रों में यह घटना कुछ समय तक भुलाई नहीं जा सकेगी और इंग्लैंड में उन खतरों के प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत की जाएगी जो संविधान में किसी भारी संशोधन के कारण पेश आ सकते हैं।'

'द स्टेट्समैन'

'द स्टेट्समैन' कहता है, 'श्री पटेल ने स्वयं असेम्बली को उस असंभव स्थिति से उबार दिया है जिसमें वे उसे स्वराजवादियों की वापसी के बाद पा रहे थे। कल सदन में उनका वक्तव्य यद्यपि इस सुझाव को तो वापस नहीं लेता कि अब सदन का कामकाज विवादेतर विषयों तक सीमित रहना चाहिए, लेकिन इस बात को स्वीकार करता है कि उनका मूल कथन जल्दबाजी का सूचक था और उसकी भाषा ऐसी थी जिसे धमकी भी समझा जा सकता था। निस्संदेह, श्री पटेल अब ऐसे पदारूढ़ व्यक्ति की चिंता से ग्रस्त हैं जो पद से संबद्ध सम्पूर्ण गरिमा और अधिकार को सुरक्षित रखना चाहता हो, लेकिन वे संभव है कि इस तथ्य को भुला दें कि अध्यक्ष असेम्बली का स्वामी नहीं है, बल्कि सेवक है।'

'अमृत बाजार पत्रिका'

'अमृत बाजार पत्रिका' लिखती है कि श्री पटेल ने जब अपने इस इरादे की घोषणा की कि — जहां तक उनका वश चलेगा वे नौकरशाही को अपना उल्लू सीधा करने के लिए सदन के कंधे पर बंदूक रखने की अनुमति नहीं देंगे, तो वे अधिकारों और स्वतंत्रताओं का पक्ष ले रहे थे। उनके उन साहसिक शब्दों की प्रतिध्वनि प्रत्येक सच्चे भारतीय मानस में गूंजेगी और भारत में स्वतंत्र संस्थाओं के विकास के इतिहास में भी उन्हें सम्मान का स्थान मिलेगा।

श्री रंगास्वामी अय्यंगार के विचार

मद्रास, 9 मार्च : आज असेम्बली में श्री पटेल ने जो बयान दिया उसके संबंध में 'एसोसिएटेड प्रेस' को एक वक्तव्य देते हुए श्री रंगास्वामी अय्यंगार, एम. एल. ए.,

ने कहा, 'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री पटेल ने अपनी स्थिति को किसी भी सदेह या गलतफहमी की सभावना से ऊपर रखा है और मेरा विश्वास है कि जहा तक इस मामले के साराश का सबध है, उन्होंने पूरी तरह अपने अधिकार-क्षेत्र में रहते हुए काम किया, यद्यपि उनकी अभिव्यक्ति की शैली से गलतफहमी पैदा हुई जिसे उन्होंने दूर कर दिया जो प्रसन्नता की बात है।'

173. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
5-4-26
सोमवार

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
6-4-26
कृते डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,
बगाल।

प्रिय सुभाष,

मैं काफी समय से तुम्हे पत्र नहीं लिख पाया हू। मैं समझता हू कि तुम्हे मैंने अपना पिछला पत्र 20 तारीख को भेजा था।

मुझे तुम्हारे 13, 17 और 26 मार्च के पत्र क्रमश 24 और 27 मार्च तथा 3 अप्रैल को मिले।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने 'रगून डेली न्यूज' की वह कतरन भेजी है, जिसमे पटेल द्वारा असेम्बली के स्थगन के बारे मे भारतीय पत्रो की (तथाकथित) राय दी गई है। मैंने 'एसोसिएटेड प्रेस' से इस मामले के बारे में सपर्क किया है। कोई कारण नहीं कि रगून के पत्रों मे और अधिक भारतीय समाचारो एव विचारो का समावेश नहीं।

'बगाली' का सपादक बदल जाने के बाद भी वह कोई विशेष उन्नति नहीं कर रहा है। वह अपने आपको 'भारतीय राष्ट्रवाद का मुखपत्र' घोषित करता है, लेकिन इन दिनो उन शब्दो से कोई भी भुलावे मे नहीं आ सकता।

मुझे आशा है कि रगून के पत्रो ने कलकत्ता मे दगे का समाचार तुम्हे दिया होगा। अब शहर म शाति है और मुझे और गडबडो की आशका नहीं है। मेरी अपनी राय यह है कि आर्य समाजियो ने मूर्खतापूर्ण ढग से काम किया। मेरा यह भी विश्वास है कि छिपकर भावनाए भडकाने वाले लोग सक्रिय थे और यह मात्र सयोग नहीं था कि गडबडो नए वाइसराय के आने के समय हुई।

आज बस इतना ही। और ब्यौरे के साथ में तुम्हे अगले बृहस्पतिवार का लिखूगा। आशा है, अब तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से अधिक अच्छा होगा।

तुम्हारा सस्नेह

174. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
16-3-26
कृते डी. आई. जी., आई.बी., सी.आई डी.,
बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
15 मार्च 1926
8 बजे रात

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा पहली तारीख का पत्र 9 को मिला।

2 फरवरी और 6 मार्च के बीच (दोनों को मिलाकर) मैंने तुम्हें चार पत्र लिखे 22 और 27 फरवरी को तथा 1 और 6 मार्च को। मुझे आशा है कि तुम्हें वे सभी मिल गए होंगे।

रांगामामा बाबू यहां गत बृहस्पतिवार को सवेरे पहुंचे। उसी दिन शाम को मां और पिताजी कटक चले गए। पिताजी का स्वास्थ्य कुछ दिन से ठीक नहीं चल रहा है—कोई खास बीमारी तो नहीं है, लेकिन वे पहले से कुछ दुबले अवश्य हो गए हैं। रांगामामा बाबू ने जोर दिया कि मां को भी उनके साथ जाना चाहिए—और मैं समझता हूं कि उन्होंने ठीक ही किया।

तुम्हारा यह अनुमान सही है कि भूख हड़ताल के दौरान तुम्हारे तारों को रोका गया। मैं वे तिथियां दे रहा हूं जिन पर मुझे तार दिए गए।

27 फरवरी, '26 को निम्नलिखित टेलीग्राम मिला :

'धार्मिक प्रश्न तथा अन्य शिकायतों की खातिर अठारह तारीख से भूख हड़ताल पर हूं।

सुभाष बोस
मांडले।'

27 फरवरी, '26 (रात सवा दस बजे)—निम्नलिखित तार मिला :

'भूख हड़ताल का आज आठवां दिन।

सुभाष बोस।

2 मार्च, '26 को निम्नलिखित तार मिला :

'क्या पिताजी को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी सीधे भेजना आवश्यक है? मां-पिताजी के स्वास्थ्य के बारे में तार द्वारा सूचित करें। सुभाष।

जेलग्यी'

3 मार्च, '26—13, इलीसियम रो ने निम्नलिखित तार की प्रतिलिपि भेजी
'धार्मिक उपासना के आम सवाल पर सरकार से कुछ सूचना नहीं। भूख हडताल जारी। आज 3 मार्च को चौदहवा दिन। सभी दुर्बल। अन्यथा ठीक।

जेलग्यी।'

7 मार्च, '26—निम्नलिखित तार मिला

'मा-पिताजी को समझाए कि वे चिंतित न हों। उनसे भूख हडताल की खबर छिपाए। उनके स्वास्थ्य की सूचना तार द्वारा दे।

सुभाष बोस
माडले।'

अतिम तार, यानी जो 7 मार्च को मिला, स्पष्टत कई दिन तक रोके रखा गया।

तुम्हारा 'द इग्लिशमैन' के विरुद्ध मानहानि का मामला सुनवाई के लिए आज न्यायाधीश कोत्जनर की अदालत में पेश होने वाले मुकदमो की सूची मे दर्ज था। न्यायाधीश बीमार हैं और आज अदालत मे नहीं आए। विश्वास किया जाता है कि वे ईस्टर की छुट्टियों से पहले अदालत मे नहीं उपस्थित होगे। इसलिए अगले महीने के अत तक ही तुम्हारा मामला लिया जा सकता है।

मैंने रागामामा बाबू से सुना है कि तुम्हे सरकार से साल-भर मे 18 रुपये 5 आने के कुल मूल्य की किताबे मिलीं। क्या यह रकम वहा तुम सभी लोगों के लिए थी या प्रत्येक के लिए अलग-अलग? रागामामा बाबू कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कह सके।

आशा है, तुम अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्क होंगे। आज बस इतना ही।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

श्री सुभाष सी बोस

175. शरत चन्द्र बोस का पत्र

38/1, एल्गिन रोड
20 मार्च 1926

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,
बंगाल।

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा 8 तारीख का पत्र 16 को मिला। अपने पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि मुझे तुम्हारे तार किन-किन तारीखों को मिले। उस पत्र से तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा 21 फरवरी का तार छह दिन तक रोके रखा गया। मैं समझता हूं कि यह जेल के सर्कुलरों के विरुद्ध है।

गत 6 फरवरी से अब तक मुझे तुम्हारे पत्र जिन तिथियों को मिले हैं, उन्हें मैं दे रहा हूं :

6 फरवरी — 20 फरवरी को प्राप्त किया।
14 फरवरी — 27 फरवरी को प्राप्त किया।
17 फरवरी — 2 मार्च को प्राप्त किया।
22 फरवरी — 2 मार्च को प्राप्त किया।
1 मार्च — 9 मार्च को प्राप्त किया।

भूख हड़ताल की समाप्ति के बाद से क्या तुम्हारा वजन कुछ भी बढ़ा है? मैं यह जानने को उत्सुक हूं, क्योंकि मैं देखता हूं कि जेल में तुम्हारा वजन लगभग 40 पौंड घटा है।

यहां जोरदार अफवाह है कि मांडले के नजरबंदियों को मद्रास जेल और अन्य दूरस्थ जेलों में स्थानांतरित किया जाने वाला है। यह खबर दरअसल कलकत्ता के एक दैनिक अखबार ने छापी है। क्या तुमने इसके संबंध में कुछ सुना है?

मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि तुम्हें बंगाल क्यों नहीं स्थानांतरित किया जा सकता—विशेष रूप से बर्मा सरकार की जिम्मेवारी के संबंध में परस्पर विरोधी रिपोर्टों के बाद।

मैं समझता हूं कि तुम्हें फिर रहन-सहन के खर्च के लिए भत्ते के भुगतान के संबंध में प्रतिवेदन भेजना चाहिए। तुम्हारा भार हमारे ऊपर डालने का कतई कोई औचित्य नहीं है। मां और पिताजी 27 तारीख को पुरी जा रहे हैं। वे यहां 2 अप्रैल को लौटेंगे। पिताजी का स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ ही हो रहा है। मैं नहीं जानता कि वे आगामी गर्मियों को कैसे सहन कर पाएंगे।

पिताजी का पत्र मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हू।

क्या तुमने बुक कपनी द्वारा भेजी गई सभी किताबे पढ ली हैं? क्या तुम्हे अभी और भी किताबें चाहिए? अगर चाहिए तो सूची भेज देना।

हम सब काफी ठीक हैं। आशा है, तुम बेहतर होगे।

तुम्हारा सस्नेह
शरत

श्री सुभाष चन्द्र बोस

176 शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
11-4
कृते डी आई जी , आई बी , सी आई डी
बगाल।

माडले
31-3-26

प्रिय दादा

आपका 20 मार्च का पत्र मुझे 27 को मिल गया था। आपके द्वारा दिए गए तथ्यों से मुझे मालूम हुआ कि फरवरी के महीने मे मेरे पत्र आपके पास प्राय एक पखवाडे का समय लेकर पहुचे। हाल म इस स्थिति म सुधार हुआ है। अब लगभग आठ दिन का समय लगता है। मैं नहीं समझता कि आप तक मेरे पत्रों को पहुचने के लिए अधिकतम एक सप्ताह से ज्यादा समय लगना चाहिए।

मेरा वजन अब 146 पौंड है अर्थात भूख हडताल के बाद से मेरा वजन आठ पौंड बढा है। सामान्य परिस्थितियो मे खोया हुआ वजन पुन प्राप्त करने मे एक महीने से ज्यादा समय नहीं लगना चाहिए। यहा तज गर्मी शुरू हो गई है खास तौर पर दिन के समय में। मुझे आशा है कि मेरा वजन तुरत वही फिर हो जाएगा जो भूख हडताल से ठीक पहले (अर्थात 155 1/2 पौंड) था।

मैंने हमारे किसी दूरवर्ती जेल म स्थानातरण के बारे म कुछ नहीं सुना है केवल 'बगाली' पत्र मे कुछ समय पूर्व एक और पत्र के हवाले से प्रकाशित खबर ही मैंने देखी थी। स्वास्थ्य के आधार पर स्थानातरण की एक अर्जी (मेरी नहीं) सरकार के पास पिछले कुछ महीनों से है लेकिन अभी तक कोई आदेश नहीं आया है।

परसों मैंने बुक कपनी को कई किताब भेजने के बारे म लिखा है।

मैं जानने को उत्सुक हूं कि पिताजी अब कैसे हैं। उनके पत्र से मुझे मालूम हुआ कि अरुणा के विवाह की बातचीत फिर शुरू हो गई है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि 'द इंग्लिशमैन' के विरुद्ध मुकदमे में मुझे हरजाना दिए जाने का निर्णय दिया गया है। मुझे न्यायाधीश कोत्जनर से कोई आशा नहीं थी और कुछ नहीं से कुछ बेहतर है। इसके अलावा, हमारा पक्ष खरा उतरा है। 'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले पर कब तक विचार आरंभ होगा?

आशा है, आप सब सानंद होंगे।

मैं यह लिखना भूल गया कि मुझे सी.आई.डी. के जरिए तीन किताबों का एक पार्सल, दो धोतियां, सूत का एक बंडल और कुछ पापड़ मिले हैं। विश्वास है कि धोती और सूत, दोनों ही घर में काते गए सूत के अंतर्गत हैं। मैं समझता हूं कि सूत अशोक ने काता होगा, क्योंकि उसकी प्रसिद्धि सर्वोत्तम सूत कातने वाले के रूप में है। नमूना सचमुच बेहद बढ़िया है और सूत एक जैसा कता है। धोतियों के लिए सूत सप्लाई करने का यश लूटने का दावा कौन करता है?

कल रात जब हम सोने के लिए तैयारी कर चुके थे तो अचानक वर्षा का एक और झोंका आया। ऐसा लगता है कि मौसम ने पहले ही से रोशनियों के साथ अभिसंधि कर रखी थी, क्योंकि जैसे ही हवा का वेग बढ़ा, सभी रोशनियां गुल हो गईं। सार्वजनिक निर्माण विभाग की प्रायः एक पखवाड़े की खोज के बावजूद लगता है कि बर्मा में टाइल उपलब्ध नहीं है। पिछले तूफान के बाद से छत की मरम्मत नहीं हो पाई है। जब वर्षा शुरू हुई तो छत ने अपना स्वागतांचल फैलाया ही हुआ था और कमरे का एक भाग जलमग्न हो गया। इस बीच उत्तरी सिरे पर हवा के साथ बारिश बाड़े से अंदर प्रविष्ट होती रही और कुछ चीजें तथा किताबें भीग गईं। हम सब हड़बड़ाकर बिस्तर से उठे और प्रायः एक घंटे तक चीजें कमरे में एक जगह से दूसरी जगह धरते-उठाते रहे और जलमग्न स्थानों को पुनः काम के लायक बनाने का प्रयास करते रहे। शायद प्रकृति हमें परिवर्तन का आनंद देना चाहती थी और वह हमें मिलकर रहा।

मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

177. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
26-3-26
कृते डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,
बगाल।

माडले
17-3-26

प्रिय दादा,

मेरा 13 3 26 को आपको लिखा गया पिछला पत्र वास्तव में 15 3 26 को डाक मे डाला गया। मैंने इस विषय मे पत्र पर ही उल्लेख कर दिया है। आगे से जब कभी भी पत्र लिखे जाने वाले दिन के बाद के किसी दिन डाला जाएगा तो मैं ऐसा ही उल्लेख कर दिया करूगा।

मुझे अकल से पता चला कि लक्ष्मी बैंक आपको उन कुछ सौ रुपयो के लिए परेशान कर रहा है, जिन्हे मैंने कुछ समय पूर्व अपनी सीमा के बाहर जाकर लिया था। इस विषय में उन्होंने मुझे अभी तक कुछ भी नहीं लिखा है। यह रकम इतनी अल्प है कि वे आसानी से मेरी वापसी तक उसके विषय में इतजार कर सकते थे, विशेष रूप मे उस हालत मे जब कि वे सूद लगाते जा रहे हैं। लेकिन मैं उन्हे इस सबध में इसी सप्ताह लिख रहा हू।

मैंने नीत्शे की कृतियो के तीसरे खड की अतिरिक्त प्रति लौटा दी है। कृपया उसे बुक कपनी को भिजवा दें।

मैं आपको लिखकर यह सुझाव देने की बात सोचता रहा हू कि बच्चों के लिए सगीत और चित्रकला के अतिरिक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। मुझे विश्वास है कि अगर सभी को प्रशिक्षित किया जाए तो उसमे मौजूद ललितकला सबधी प्रतिभा पल्लवित हो सकती हैं। जहा तक सगीत का प्रश्न है, आप दिलीप से सलाह लें कि बच्चों को आरभिक सगीत-शिक्षा सर्वोत्तम रूप से कैसे दी जा सकती है। मैं जानता हू कि कुछ समय से उनका ध्यान बच्चो को कम आयु से ही सगीत की शिक्षा देने की समस्या की ओर लगा हुआ है। वह स्वय बहुत बढ़िया उस्ताद हैं—जैसा कि उनके शागिर्दों की सफलता को देखकर स्पष्ट हो जाता है। लेकिन उनके द्वारा दी गई शिक्षा का लाभ पूरी तरह उठाने के लिए बच्चो को कुछ आगे का ज्ञान होना चाहिए।

हमने माडले, बर्मा से एम एल सी , श्री एल के मित्तर को लगभग तीन महीने पूर्व लिखा था कि वे आकर हमसे भेट करें। उन्होंने डी आई जी (बगाल) को अनुमति के लिए लिखा, लेकिन उनसे कहा गया कि वे जेल सुपरिंटेंडेंट के जरिए आवेदन करें। उन्होने वैसा किया और उनका आवेदन बर्मा सरकार को भेजा गया और शायद इस सरकार द्वारा बगाल को भी भेजा गया। हम अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है, लेकिन जो विलब हो रहा है, उससे ऐसा लगता है कि अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रसगत श्री मित्तर सहायक सरकारी वकील भी हैं।

आगामी चुनावों के संदर्भ में बंगाल कौंसिल की सदस्यता के लिए मेरी उम्मीदवारी का सवाल उठाया जा सकता है। मैं नहीं सोचता कि मेरे उम्मीदवार होने से कोई लाभ होगा। अगर मैं पहले ही से सदस्य होता तो बात बिल्कुल और थी। अगली कौंसिल का स्वरूप जो भी हो, वह काफी सजीव होगा और नजरबंदी की विवशता के कारण एक भी वोट से वंचित होना बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। जैसा कि मैंने अभी कहा है, अगर मैं पहले ही से सदस्य होता तो अन्य विचारों को मैं ऊपर रखता—लेकिन जैसी कुछ वस्तु-स्थिति है, उसमें मैं उम्मीदवार होना न आवश्यक मानता हूं, न उचित। इसके अतिरिक्त, अगर मुझे नागरिक सेवा और राजनीति के बीच चुनाव करना हो तो मैं शायद एक अधिक शब्दाडंबर वाले कार्यक्रम की अपेक्षा एक कम महत्वपूर्ण दिखने वाले, लेकिन अधिक ठोस कार्यक्रम को ही चुनूं। अगर मेरी उम्मीदवारी का सवाल उठाया जाता है तो आप मेरे विचार इस विषय में बता दें।

दो-तीन दिन पहले हमें एक बहुत दिलचस्प अनुभव हुआ, हालांकि वह एकदम नया नहीं था। सूरज डूबने लगा और शाम की परछाइयां हमारे चारों ओर घिरने लगीं। लेकिन शाम के उस धुंधलके से भी कहीं अधिक स्याह रंग का एक ऐसा तूफान सुदूर, अंधेरे आसमान में उठने लगा जो गर्मियों में मांडले में अक्सर आया करता है। खिड़कियों की चिक बंद करते न करते धूल की मोटी परत ने चलते-फिरते शामियाने की तरह हमें पूरे तौर पर ढक लिया। बड़ी मुश्किल से खिड़कियों की चिकों को डाला गया, लेकिन हवा में इतनी तेजी थी कि वे फड़फड़ाने लगे और सम्पूर्ण परिवेश में गूंजते हुए वाद्य संगीत की संगत करने लगे। धूल की मोटी परत पूरे कमरे में बिछ गई और एक भी कोना उससे अछूता नहीं बच पाया। हवा का जोर लगातार जारी था और छत की खपरैलें उड़ने लगीं। लकड़ी के तख्तों से बना कमरे का ढांचा यों चरमराने लगा, जैसे तूफानी समुद्र में जहाज डगमगा रहा हो। कागज उड़ने लगे, लालटेनें गिरकर चकनाचूर हो गईं और छोटी-मोटी चीजें पंख लगाकर उड़ चलीं। लेकिन प्रकृति का यह रौद्र रूप अधिक समय तक नहीं टिका और सुखद वरदान के समान आसमान से दयालु बूंदें झरनी शुरू हो गईं। दार्शनिकों का कथन है कि भगवान की कृपा अंधकार में ही बरसती रह सकती है। इसलिए यह सर्वथा उचित ही था कि दयालु बूंदें अंधेरे में झरें। परिवेश की समरसता को परिपूर्ण करने के लिए बिजली की धारा भी बंद हो गई और हम वैसे घनांधकार से घिर गए जिसे मिल्टन ने 'सिम्मेरियन डार्कनेस' कहा है। रह-रहकर बिजली की डरावनी कौंध केवल उस अंधकार को दृश्य (डार्कनेस विज़िबल) बनाने में ही सहायक हो रही थी। (मैं फिर मिल्टन के ही शब्दों में यह वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूं, क्योंकि अगर शेक्सपीयर स्वर्गिक ज्योत्स्ना के वर्णनों में अपनी सानी नहीं रखता तो पवित्रतावादी मिल्टन के अंधकार के वर्णन अन्य सभी कवियों की अपेक्षा बढ़-चढ़कर हैं) और मां काली के सच्चे साधकों को मां की मुस्कान के प्रचंड सौंदर्य के दर्शन करा रही थी—'दिग्मर मुखमंडले शोभे अट्टहासि।'

धूल पर तो शीघ्र विजय पा ली गई, लेकिन हम और हमारे सुख के अल्प-साधन पानी और पवन के हाथों की गेंद बन गए। मुझे बचपन में वर्षा के संबंध में पढ़ाई एक

कविता की पंक्तियां याद आने लगीं। जिनकी शुरूआत कुछ इस प्रकार थी

"पिटर पैटर पिट पैट

डाउन द विन्डो-पेन"

लेकिन हमारे कमरे में खिडकियों के ऊपर आड नहीं थी और लकडी के तख्तो की नितांत उपेक्षा करते हुए वर्षा की बूंदे हमारे ऊपर पडने लगीं और हमारे कपडो को जल-सिक्त करने लगीं। हवा का रुख अचानक बदला और वह उत्तर दिशा से बहकर आने लगी—यह वह भाग था जहां हवा की रुकावट के लिए कोई प्रबंध नहीं किया जाना था। हम सब वर्षा के झकोरों मे भीगते रहे, हवा के झकोरे खाकर ठंढ से कांपते रहे, लेकिन अपनी-अपनी जगहों से हटने का साहस न कर सके, क्योंकि डर था कि हम किसी मेज से या चारपाई से या किसी व्यक्ति से टकरा न जाएं—और हम अपने फेफडो को भरपूर फुलाकर आवाजें करते हुए ही अपने आपको ढाढस बंधा सके या परिस्थितियों के अटपटेपन को हास्य-विनोद से कुछ हल्का-फुल्का बना सके। रोशनी आने और तूफान शांत होने तक चारों ओर अंधकार और गडबडी का साम्राज्य छाया रहा। और तब हमने क्या देखा? हमने देखा कि किताबें भीगी पडी हैं, कपडो से पानी टपक रहा है, बिस्तर गीला हो चुका है और इन सबसे अधिक कमरे के बीचोंबीच एक नन्ही नदी प्रवाहित हो रही है। ऐसा लगा कि भगवान ने हमें नीरसता से उबारने के लिए एक अनोखा काम जुटा दिया है और पूरे दो घंटे तक हम फर्श को रगड-रगड कर साफ करने, पानी हटाने और किताबें तथा फर्नीचर सुखाने में संलग्न रहे। किताबों और कपडों को स्नान की ताजगी पाकर निस्सदेह पूरी रात गहरी नींद आई होगी पर हमारी क्या दशा थी? हमारा ध्यान तुरंत मुख्य जेल की ओर गया जिस पर हम मौसम की ही नहीं, बल्कि हर-एक घटना की जिम्मेवारी डाल सकते थे, और रात दस बजे आवश्यक आदेश दिया गया कि हमें सूखे कंबल और चादरें पहुंचाई जाए। मुख्य जेलर महोदय, जो मौसम की भयावहता से पहले ही आक्रांत थे, हमारे आदेश से घबरा से गए—लेकिन उन्होंने एकदम नए जेल में बने कंबल देना उचित नहीं समझा, तथा अपने अतिरिक्त भंडार से कई साफ चादरें और कंबल भेजे। रात के उन प्रहरों में सहानुभूति और गर्माहट के इन प्रतीकों का गर्माहट के साथ स्वागत होना स्वाभाविक था और भगवान की कृपा के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हमने ठीक ग्यारह बजे कारागार के द्वारा पर ताले जडने वाले के सम्मुख समर्पण कर दिया।

मैं यहीं पत्र समाप्त कर देना चाहूंगा, क्योंकि मुझे आशंका होने लगी कि मैं काव्य-प्रवाह में कहीं और ज्यादा बहता हुआ बहक न जाऊं। शेष समाचार अपने अगले पत्र में दूंगा। आशा है, आप सब सानंद होंगे। कविराज महाशय से मुझे औषधियां का एक पार्सल मिल गया है। मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

श्री एस.सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

178. लक्ष्मी इंडस्ट्रियल बैंक लि. के नाम

80, सचिव चौरंगी रोड, कलकत्ता

मांडले जेल
द्वारा डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,
13, इलीसियम रो, कलकत्ता, 20-3-26

प्रिय महोदय,

मैंने आपके बैंक से जो पैसा उधार लिया था उसके संदर्भ में कृतज्ञ होऊंगा, यदि आप किसी प्रकार की कार्रवाई मेरे रिहा होने तक स्थगित रखें। लेकिन यदि आप मूल या ब्याज का भुगतान इसी बीच चाहते हैं तो मुझे लिखें और मैं तदनुसार प्रबंध कर दूंगा।

आपका विश्वस्त,
सुभाष सी. बोस

179. शरत चन्द्र बोस का पत्र

पास और सेंसर किया
अस्पष्ट
18-4-26
10.30 प्रात:

38/1, एल्गिन रोड
17 अप्रैल 1926

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 31 मार्च का पत्र 12 अप्रैल को मिला। मैं नहीं कह सकता कि इस देरी का कारण क्या है।

हमें जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा वजन कुछ बढ़ा है, भले ही यह वृद्धि अधिक न हो। मैं अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूं कि मांडले अब कितना कष्टदायक होगा। बर्मा के किसी पहाड़ी स्थान में तुम्हारे स्थानांतरण के आवेदन का क्या बना?

तुम जब कभी बुक कंपनी को किताबों के लिए लिखो तो सूची की एक प्रति मुझे भी भेज दिया करो।

जब तुम कुछ पुस्तकें पढ़ चुको तो उन्हें रजिस्ट्री द्वारा मेरे पास भेजते रहो। मैं यहां अपने इस्तेमाल के लिए एक छोटा-सा पुस्तकालय बना रहा हूं। अगर मुझे बंगाल कौंसिल में जाना है तो मेरे पास पुस्तकालय होना ही चाहिए।

मैं नहीं जानता कि कोत्जनर का फैसला रगून के पत्रो मे छपा है या नहीं। अगर नहीं छपा है तो मैं उसकी एक प्रति के लिए अर्जी देकर उसे भेज दूगा। उसने तुम्हारे और तुम्हारी हैसियत के बारे में जो कुछ कहा वह काफी अच्छा था और 'द इग्लिशमैन' की अपमानजनक लेखन के लिए जो निदा की कठोर शब्दों मे की। क्षतिपूर्ति के रूप में पैसों का परिमाण कम होना मामूली बात है – जरूरत वास्तव में यह है कि किसी व्यक्ति के चरित्र की सच्चाई साबित हो जाए और इस दृष्टि से हम सफल रहे हैं।

'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले की सुनवाई लगभग दो महीने बाद शुरू होगी। तुम्हारे वकील मैसर्स दत्त एड सेन ने बगाल सरकार के पालिटिकल डिपार्टमेंट के अतिरिक्त उप सचिव को लिखकर अनुरोध किया था कि मामले के सबध मे तुम्हें कलकत्ता लाया जाए, लेकिन इसकी अनुमति नहीं दी गई है। उत्तर इस प्रकार आया है

'मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि सरकार यह अनुरोध स्वीकार करने में असमर्थ है कि श्री एस सी बोस को उक्त मुकदमे के सिलसिले मे कलकत्ता लाया जाए।'

सरकार का यह रुख बहुत आश्चर्यजनक है। मुझे या मैसर्स दत्त एड सेन को लिखो कि इस मामले में और क्या किया जाए।

मुझे तुमको सूचित करते हुए हर्ष होता है कि पिताजी अब पहले से बेहतर हैं। वे कल कटक गए थे। लेकिन एक पखवाड़े के बाद फिर यहा वापस आ जाएगे।

अरुणा का विवाह परेश शोम के भाई से तय हो गया है। विवाह इसी महीने (बैशाख) मे होगा। काश कि तुम भी यहा होते!

हा अशोक कताई में और अधिक प्रवीण होता जा रहा है। अमि का भी जब मन होता है, कताई करता है। लेकिन उसका मन बहुत अस्थिर रहता है और कभी-कभी तो वह कई सप्ताहों तक कताई छोड देता है।

अमि और मीरा को सगीत सिखाने के लिए मैंने एक शिक्षक की व्यवस्था कर दी है। अमि को सगीत सीखने का बहुत शौक है। गर्मी की छुट्टियों में लडकों के लिए एक ड्राइग मास्टर रख दिया जाएगा।

आज तो बस इतना ही। हम सब कुशल हैं।

श्री सुभाष चन्द्र बोस — तुम्हारा सस्नेह

180. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
11-5-26
कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,
बंगाल।

मांडले
30-4-26

प्रिय दादा,

आपका 17 अप्रैल का पत्र मुझे 24 तारीख को मिला। मैंने मार्च में बुक कंपनी को निम्नलिखित किताबों के लिए लिखा था :

1. प्राण तोषिणी—राम तोषण भट्टाचार्य कृत।
2. तंत्रसार— रसिक मोहन चट्टोपाध्याय कृत।
3. बृहत्तंत्रसार— आगम बागीश श्रीमत् कृष्णानंद कृत।
4. शक्तानंद तरंगिणी— श्रीमत् ब्रह्मानंद गिरि कृत।
5. श्यामा रहस्य— श्रीमत् पूर्णानंद परमहंस कृत।
6. तत्व रहस्य— श्रीमत् पूर्णानंद परमहंस कृत।
7. पुरोहित दर्पण।
8. शक्ति और शाक्त— वुडरोफ कृत।
9. वुडरोफ की तंत्र पर एक अन्य पुस्तक।

उन्होंने मुझे सूची की 4, 5, 6 और 7वीं पुस्तक भेजी हैं। साथ ही वुडरोफ की भी पांच पुस्तकें भेजी हैं, जिनकी मुझे आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने शिवचन्द्र विद्यारत्न लिखित तंत्र सिद्धांत संबंधी दो खंडों में पुस्तकें (अंग्रेजी अनुवाद) भेजी हैं, जिनका मूल्य 20 रुपये है। मेरे पास शिवचन्द्र की मूल बांग्ला में 'तंत्र तत्व' पुस्तक मौजूद है जिसे मैं पढ़ भी चुका हूं। केवल अनुवादक की भूमिका को पढ़ने के लिए 20 रुपये खर्च करके अंग्रेजी अनुवाद खरीदना किसी भी प्रकार से उपयोगी नहीं होगा। बांग्ला में मूल पुस्तक का मूल्य तो केवल 6 रुपये है। इन परिस्थितियों में कृपया बुक कंपनी से मालूम करें कि क्या मैं 'प्रिंसिपल आफ तंत्र' के दोनों खंड लौटा दूं। वुडरोफ की जो पांच पुस्तकें भेजी गई हैं, वे तंत्र के बारे में नहीं हैं, लेकिन उनकी सबकी कीमत कुल 11 रुपये है और इसीलिए मैं उन्हें रख सकता हूं (हालांकि बहुत इच्छापूर्वक नहीं)। कृपया बुक कंपनी को सूचित कर दें कि वह वुडरोफ की और कोई पुस्तक न भेजें— यदि उसने मेरे लिए कोई आर्डर पहले ही से न दे रखा हो। अगर दे रखा हो तो वह 'शक्ति और शाक्त' तथा तंत्र पर वुडरोफ की एक पुस्तक भेज दें। मुझे अब पता चला है कि

वुडरोफ ने तंत्र पर जो किताबें लिखी हैं (मैं समझता हू कि उनका नाम तत्रशास्त्र है) वे मेरी दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं। अगर आप सोचते हैं कि हमे अपने पुस्तकालय मे वुडरोफ की सभी कृतिया रखनी चाहिए तो और बात है।

कृपया बुक कपनी को सूचित कर दें कि मैं उपर्युक्त सख्या 1 2 और 3 वाली पुस्तके चाहता हू। अगर 1 और 2 वाली किताबें उपलब्ध नहीं हैं तो निश्चित है कि 3 वाली पुस्तक अवश्य उपलब्ध होगी। *वह बसुमति प्रेस का प्रकाशन है और मैंने उसे* उनके सूचीपत्र में विज्ञापित देखा है। कृपया गोपाली या किसी और को निर्देश दे दे कि वह उपर्युक्त मुद्दो पर बुक कपनी के मैनेजर से शीघ्र से शीघ्र बाते कर लें।

गर्मियो में हमारे किसी ठडी जगह स्थानातरण की कोई सभावना नहीं है।

कृपया लिखें कि आपको इस समय किन विशेष पुस्तकों मे दिलचस्पी होगी? मैं तदनुसार यहा से उन्हें भेज दूगा।

मैंने कोत्जनर का फैसला कलकत्ता और रगून के पत्रो मे पढ लिया है। मुझे सूचना मिली है कि न्यायमूर्ति ग्रेगरी ने 'कैथोलिक हेराल्ड' के विरुद्ध मानहानि के दावे में खर्च समेत चार हजार रुपये के हर्जाने का फैसला दिया है। दोनों ही मामलो में हर्जाना हमारी आशाओ के अनुकूल नहीं है— लेकिन जो भी हो हमने जिस सिद्धात के लिए यह सब किया वह विजयी रहा है।

मैं समसझता हू कि 'द स्टेट्समैन' ने अपने लिखित बयान में कहा है कि मैं कलकत्ता कार्पोरेशन का मुख्य कार्यपालक अधिकारी था पर अब नहीं हू। उसके इस कथन के विरुद्ध लिखित साक्ष्य के रूप में कार्पोरेशन को 'ईयर बुक' (वार्षिकी) और *सिविल लिस्ट त्रैमासिक से उद्धरण पेश किए जा सकते हैं।*

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि पिताजी अब पहले से ठीक हैं और अरुण का विवाह इसी महीने (वैशाख में) होने जा रहा है।

अशोक अब किस कक्षा में है? उसने जो सूत काता है वह निस्सदेह बहुत महीन है। मैं समझता हू कि सभव हो तो उसे सगीत और चित्रकारी का प्रशिक्षण भी लेना चाहिए।

क्या आपको मालूम हो पाया है कि वह स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद किस विषय को लेने की सोच रहा है?

आप सेजदादा को सुझाव दे सकते हैं कि वे कघो के साथ-साथ जीभ साफ करने वाले उपकरण 'जिभछोला' का निर्माण भी शुरू कर सकते हैं। उनकी भारत में अच्छी बिक्री होगी। सेल्यूलायड का एक बढिया 'जिभछोला' माडले में डेढ से दो रुपये तक

'कैथोलिक हेराल्ड' की ओर से हर्जाना कौन देगा? मैं समझता हूं कि उसके संपादक इन दिनों इंग्लैंड में हैं।

आशा है कि आप सब सानंद होंगे। मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

पुनश्च:

साउथ कलकत्ता नेशनल स्कूल के अधिकारी अपने छात्रों के लिए खेल का मैदान (संभवत: हाजरा पार्क) चाहते हैं। क्या आप उनकी सहायता कर सकते हैं? मैं नहीं जानता कि यह मामला अब मुख्य कार्यपालक अधिकारी के पास है अथवा जिला कमेटी में।

एस. सी. बो.

181. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
13-5-26
कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,
बंगाल।

मांडले जेल
शनिवार, 1 मई 1926

प्रिय दादा,

मैं आपको 'कैथोलिक हेराल्ड' के विरुद्ध मानहानि के मुकदमे से संबंधित रंगून के एक समाचारपत्र की कतरन भेज रहा हूं। रिपोर्ट में यह स्पष्ट नहीं है कि प्रतिवादियों ने अपना पक्ष किसी रूप में प्रस्तुत किया या नहीं। वादी का वकील कौन था? मुझे आशा है कि कलकत्ता के अखबार जो मंगलवार को यहां पहुंचेंगे, मुझे सभी वांछित सूचनाएं देंगे।

जहां तक 'द स्टेट्समैन' के मामले का सवाल है, यह स्पष्ट नहीं है कि किस पक्ष ने स्थगन के लिए आवेदन किया। कमीशन पर पूछताछ कब होने जा रही है? मुझे इस मामले के बारे में सभी तरह की जानकारी चाहिए।

प्रतिवादी क्या रुख अख्तियार करने जा रहे हैं। क्या वे उस पर कायम रहेंगे जो

कमीशन पर मुझसे पूछताछ से पहले मेरे लिए शायद अपने वकील से परामर्श करना आवश्यक होगा। मुझे आशा है कि तदनुसार जरूरी प्रबंध किया जाएगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरी अपने वकीलो से भेंट निजी मामला होना चाहिए और अन्य भेंटों की तरह यह भेंट सी आई डी के अधिकारी की उपस्थिति में नहीं होनी चाहिए। 'द स्टेट्समैन' का मामला किसकी अदालत मे आ रहा है?

क्या आप पूरी गर्मियां कलकत्ता मे ही बिताएंगे? आपको इस साल कैसा महसूस हो रहा है? अरुणा का विवाह कब होने जा रहा है?

नजरबंदियों की शीघ्र से शीघ्र रिहाई के सबसे सरल उपाय के बारे में महात्मा गांधी ने जो कुछ लिखा है उसे मैंने दिलचस्पी से पढ़ा।

जब आप गत वर्ष मांडले आए थे तो क्या आपने बर्मा की किन्हीं विशिष्ट दर्शनीय चीजों को खरीदा था? आपको बर्मा की कौन सी चीजें सुंदर और अनोखी लगी थीं।

आशा है आप सब सानंद होंगे। गोपाली ने परीक्षा मे कैसा कुछ किया है? मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

श्री एस सी बोस
38/1 एल्गिन रोड
कलकत्ता।

संलग्नक 'कैथोलिक हेरल्ड' के विरुद्ध मानहानि का मामला
श्री सुभाष चन्द्र बोस का दावा
वादी के पक्ष में चार हजार रुपयों की डिग्री

कलकत्ता 29 अप्रैल आज उच्च न्यायालय मे न्यायमूर्ति ग्रेगरी ने श्री सुभाष चन्द्र बोस द्वारा 'कैथोलिक हेरल्ड' के संपादक फादर एफ ए. गाइल के विरुद्ध तथाकथित मानहानिपूर्ण लेख प्रकाशित करने के लिए 50 000 रुपये के हर्जाने के दावे को निपटाया। वादी ने इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा पास की थी। लेकिन उसने इस्तीफा दे दिया था और बाद में उसे कलकत्ता कार्पोरेशन का मुख्य कार्यपालक अधिकारी नियुक्त किया गया तथा उस दौरान बंगाल अध्यादेश के अंतर्गत गिरफ्तार करके मांडले जेल में रखा गया। तथाकथित मानहानि का आधार एक पत्र को माना गया जिसे श्री बोस के पिताजी द्वारा लिखा बताया गया लेकिन जो बाद में झूठा साबित हुआ। इस पत्र की नक्ल द इंग्लिशमैन' तथा 'द स्टेट्समैन' मे छापी गई और श्री बोस ने इन पत्रो के विरुद्ध दो अन्य मामले दायर किए। 'द इंग्लिशमैन' के विरुद्ध मामले की डिक्री श्री बोस के पक्ष में हुई है और उन्हें हर्जाने के रूप में दो हजार रुपये दिए जाने का निर्णय हुआ है। वर्तमान

मामले में न्यायाधीश महोदय ने विचार व्यक्त किया कि वादी के पिताजी की ओर से जिन शब्दों का उल्लेख किया है उनसे यह सिद्ध होता है वादी का क्रांतिकारी गतिविधियों से संबंध था और इस बात का प्रकाशन मानहानि का गंभीर विषय है। न्यायाधीश महोदय ने श्री बोस के पक्ष में डिक्री और खर्च समेत चार हजार रुपये के हर्जाने का निर्णय दिया।

'द स्टेट्समैन' के मामले में स्थगन का आवेदन किया गया जिससे वादी से कमीशन पर पूछताछ की जा सके, क्योंकि सरकार ने श्री बोस को कलकत्ता आकर साक्ष्य प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं दी है। अर्जी बाद की किसी तिथि पर आगे बढ़ाई जाएगी—ए. पी.

182. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

6-5-26

कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,
बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
5 मई 1926

प्रिय सुभाष,

'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले में तुम्हारे आवेदन की सुनवाई अभी नहीं हुई है। शायद कल उस पर विचार होगा। तुम्हारी ओर से सर विनोद मित्र और श्री एन. एन. सरकार को पेश होने के लिए उन्हें तुम्हारे पक्ष की जानकारी दे दी गई है। 'द स्टेट्समैन' के वकील लैंगफोर्ड जेम्स हैं।

बिड़ला जूट मिल्स कंपनी लिमिटेड के विरुद्ध मामले को सुलह-समझौते के लिए मुझे सौंपने की बात चल रही है। बिड़लाओं की ओर से यह सुझाव दिया गया था कि मामला दो पंच-निर्णायकों को सौंपा जाए— जिनमें से एक मैं रहूं। मैंने दो में एक पंच-निर्णायक होना अस्वीकार कर दिया है और उनसे कह दिया है कि अगर दोनों पक्ष 'केवल मेरे पंच-निर्णय' को मानने के लिए तैयार हों तो मैं वह जिम्मेवारी ले सकता हूं। ठेकेदार लोग तो इसके लिए तैयार हैं, लेकिन बिड़लाओं की ओर से अभी कोई जानकारी नहीं मिली है।

अगर तुम्हारे मामले में अदालत कमीशन पर पूछताछ का आदेश देती है, तो मुझे शायद मांडले आना होगा। मुझे नहीं मालूम कि क्या मांडले में ऐसे कुशल वकील हैं जो तुम्हारे निर्देशों को प्राप्त कर सकें और तुम से पूछताछ कर सकें। अगर नहीं होंगे तो मुझे यहां से कौंसिल और अटार्नी को लाना होगा। तुम अपने जेल के सुपरिंटेंडेंट

से पूछ सकते हो कि क्या माडले में कुशल वकील मिल जाएगे। इसी बीच तुम 'द स्टेट्समैन' में प्रकाशित लेख में मानहानि वाले अशों को लेकर एक टिप्पणी तैयार कर सकते हो। मैं समझता हू कि तुम्हे याद होगा कि मानहानि का मामला तुम्हें यह करने में बनता है कि तुम 'क्रातिकारी षड्यत्र को निर्देशित करने वाला मस्तिष्क' हो। निस्सदेह सबूत पेश करने की जिम्मेवारी 'द स्टेट्समैन' की है। लेकिन प्रतिवादी के पक्ष को काटने वाला कोई भी तथ्य हमारे लिए सहायक सिद्ध होगे।

'कैथोलिक हेराल्ड' के विरुद्ध मामले में न्यायमूर्ति ग्रेगरी का निर्णय काफी तीखापन लिए हुए था। उन्होने कहा कि 'कैथोलिक हेराल्ड' द्वारा प्रयुक्त शब्द बहुत गभीर 'मानहानि' वाले शब्द हैं और उन्हे चार हजार रुपये हर्जाने का निर्देश दिया। 'कैथोलिक हेराल्ड' के सपादक देश छोडकर भाग गए हैं। अखबार का प्रकाशन भी रुक गया है। इसलिए 'कैथोलिक हेराल्ड' के सपादक से हर्जाने की वसूली में काफी कठिनाई होगी। 'द इग्लिशमैन' सभवत हमें शीघ्र भुगतान कर देगा।

मुझे आशा है कि तुम अपने स्वास्थ्य की वैसी चिता कर रहे हो, जैसे वर्तमान परिस्थितियो में सभव है।

क्या तुम्हें पटना से श्रीमती दास का कोई पत्र मिला है। उन्हें तुम्हारी प्राप्ति-स्वीकृति नहीं मिली है। वे अब यहा हैं और कुछ और समय तक रहेंगी।

हम सब काफी ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

पुनश्च

शहर मे गडबडी होने के कारण अरुणा का विवाह स्थगित करना पडा है।

183. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

3-4-26

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी, — माडले

बगाल। — 26-3-26

प्रिय दादा,

आपका 15 तारीख का पत्र मुझे 23 तारीख को मिला। इससे पहले मुझे आपके 22 फरवरी, 27 फरवरी, 1 मार्च और 6 मार्च के पत्र मिल चुके थे।

आपको मेरा जो तार 27 फरवरी को मिला था, उसे मैंने यहां से 21 फरवरी को दिया था— जो 27 को मिला था, वह 25 को दिया गया था— जो 2 मार्च को मिला था, वह उसी दिन प्रातः (अर्थात 2 मार्च को) दिया गया था और जो आपको 3 मार्च को मिला था, वह उसी दिन (अर्थात 3 मार्च को) दिया गया था। जो तार आपको 7 मार्च को मिला था जिसमें आपसे अनुरोध किया गया था कि आप खबर मां और पिताजी तक न पहुंचाएं, वह 26 फरवरी को दिया गया था।

असेम्बली में श्री गोस्वामी के स्थगन प्रस्ताव के परिणाम को दर्शाने वाला आपका तार मुझे 27 फरवरी को मिला था। वह कलकत्ता से शायद 25 या 26 तारीख को भेजा गया था। मैंने उसका निम्नलिखित उत्तर उसी दिन भेज दिया था :

'आपका तार मिला। कमजोरी है पर चिंता की बात नहीं। सम्मानपूर्ण समझौता होने तक अनशन जारी रहेगा। सुभाष बोस।'

हमें अपने कारावास की अब तक की सम्पूर्ण अवधि में कपड़ों के लिए 25 रुपये 5 आने प्रति व्यक्ति के रूप में मिले हैं।

कल मैंने 'द बंगाली' पत्र में दिलचस्पी से पढ़ा कि कलकत्ता में यह अफवाह है कि हम सबको मद्रास स्थानांतरित किया जा सकता है।

मुझे अभी घर से कोई पुस्तक नहीं मिली है। मैं आज बुक कंपनी को लिख रहा हूं कि वह मुझे और किताबें भेज दें। कृपया बुक कंपनी से कहें कि वह मुझे अब तक भेजी गई सभी पुस्तकों की सम्पूर्ण सूची बनाकर भेजें। मैं उसका मिलान अपनी सूची से करना चाहता हूं।

मुझे भूख हड़ताल के बारे में बाबू रमेश चन्द्र गांगुली और उनके पिताजी का एक संदेश मिला है। कृपया खुड़ो से कहें कि वह मेरी ओर से आभार का संदेश दे देवें। रमेश बाबू, जहां तक मैं सोचता हूं, आपके खेलकूद संवाददाता हैं।

आशा करता हूं कि आप मेरे पत्रों को सुरक्षित रख रहे होंगे। बाद में वे उपयोगी हो सकते हैं।

मैंने पाया है कि श्री सेनगुप्त नजरबंदों को हमेशा 'नौजवान' कहकर संबोधित करते हैं। मुझे व्यक्तिगत रूप से इस संबोधन पर कोई आपत्ति नहीं है और मैं 50 वर्ष की आयु में भी नौजवान कहलाना पसंद करूंगा। लेकिन सच्चाई यह है कि कुछ ऐसे भी नजरबंद हैं जो आयु में श्री सेनगुप्त से भी बड़े हैं। इस स्थिति के कारण उक्त संबोधन से गलतफहमी पैदा हो सकती है।

आप सबको उन सब कारणों की जानकारी देना संभव नहीं है, जिनको लेकर भूख हड़ताल शुरू हुई। अभी बहुत समय तक जब तक हम रिहा न हों, पूरी दास्तान सामने

नहीं आ पाएगी। इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि कोई भी महज खिलवाड के लिए अपनी जान की बाजी नहीं लगाना चाहेगा और हमने यह कदम खूब गभीर सोच-विचार के बाद ही उठाया था। हमने मौलाना शौकत अली और रागामामा बाबू को पहले ही बता दिया है कि कलकत्ता और दिल्ली से भेजे गए परामर्श से हम कतई सहमत नहीं थे और मुझे निश्चय नहीं कि भूख हडताल समाप्त कर हमने सही कदम उठाया है। मुझे आशा है कि मौलाना शौकत अली कलकत्ता पहुच कर हमारा दृष्टिकोण उतनी सच्चाई से पेश करेंगे, जितना उनकी याददाश्त उनका साथ देगी।

पिताजी कैसे हैं, मैं यह जानने को उत्सुक हू।

अब यहा काफी गर्मी पडने लगी है— बल्कि कहना चाहूगा कि यह स्थान भट्ठी जैसा ही बन गया है।

अगर हमे जल्द मद्रास जाना है तो इस प्रात मे और भेट की अब आवश्यकता नहीं रहेगी। भविष्य में जब कभी मेरी भेट किसी से हो तो उसे अचानक नहीं आ टपकना चाहिए। अगर मुझे उसके विषय मे पहले से पता हो तो मैं कलकत्ता से पुस्तके या अन्य कोई ऐसी चीज मगवा सकता हू, जिसकी मुझे जरूरत है।

आशा है, आप सब सानद हागे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस सी बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

184.बुक कंपनी के मैनेजर के नाम

(कालेज स्क्वायर कलकत्ता)

माडले
26-3-26

प्रिय महोदय,

यदि आप निम्नलिखित पुस्तक सुविधानुसार यथाशीघ्र भेज सकें, तो आभारी होऊगा

1 प्राण तोषिनी (तत्र सबधी पुस्तक)--श्री राम तोषण भट्टाचार्य द्वारा सकलित और प्राणकृष्ण विश्वास द्वारा प्रकाशित।

2 तत्रसार (तत्र सबधी पुस्तक)— श्री रसिक मोहन चट्टोपाध्याय द्वारा प्रकाशित।

3. बृहतंत्रसार (बसुमति प्रकाशक द्वारा प्रकाशित), लेखक – श्रीमद् कृष्णानंद, मूल्य दो रुपये।
4. तरंगिनी – श्रीमद् ब्रह्मानंद गिरि कृत।
5. श्यामा रहस्य – श्रीमद् पूर्णानंद परमहंस कृत।
6. तारा रहस्य – श्रीमद् पूर्णानंद गिरि कृत।
7. पुरोहित दर्पण – (बसुमति कार्यालय में उपलब्ध)।

संख्या 4, 5, 6, 7 – ये सभी पुस्तकें बसुमति द्वारा प्रकाशित हुई हैं और वहां उपलब्ध हैं– अगर एक साथ खरीदी जाएं तो उनका मूल्य एक रुपया आठ आना होगा।

8. शक्ति और शाक्त – वुडरोफ कृत।
9. वुडरोफ लिखित तंत्र की एक अन्य पुस्तक (मुझे पुस्तक का नाम याद नहीं आ रहा है)।

कृपया अब तक मुझे आपने जो पुस्तकें भेजी हैं, उनकी एक सूची प्रेषित करें। मैं अपनी सूची से आपकी सूची का मिलान करना चाहता हूं।

आपका विश्वस्त,
सुभाष चं. बोस

मैनेजर,
बुक कंपनी।

185. गोपबंधु दास के नाम

मांडले
(द्वारा डी.आई.जी., आई.बी.,
सी. आई. डी., बंगाल,
13, इलीसियम रो
कलकत्ता)
7-4-25

प्रिय गोपबंधु बाबू,

आपका 20 फरवरी का पत्र कुछ समय पहले मिल गया था। आपने पुस्तकों का जो पहला पार्सल भेजा था, उसे मैं खोज नहीं पाया हूं। जेल-कार्यालय के लोगों का कहना है कि ऐसा कोई पार्सल नहीं आया। दूसरा पार्सल भी नहीं प्राप्त हुआ है – मैं

जेल-आफिस से समय-समय पर पूछताछ करता रहा हू। जेल के लिए भेजा गया तुम्हारा यह पत्र यहा आ गया है जिसमें किताबें न पहुचाए जाने की शिकायत दर्ज की गई है। पर मैं नहीं जानता कि तुम्हें कोई जवाब दिया गया है या नहीं। अब मैं सीधे कलकत्ता की किसी दुकान से कुछ उडिया पुस्तकें मगाने की बात सोच रहा हू। अगर आप निम्नलिखित सूचनाए दे सके तो मुझे प्रसन्नता होगी

1 *किसी बढ़िया उडिया-बाग्ला अथवा उडिया-अग्रेजी कोष के निर्माता का नाम।*

2 उडिया पढने के लिए किसी अच्छी अग्रेजी या बाग्ला व्याकरण का और उसके लेखक का नाम।

3 उड़िया की कुछ उपयुक्त दिलचस्प पुस्तको के नाम जिन्हें मैं जैसे ही उडिया पढने का ज्ञान प्राप्त कर लू, पढना शुरू कर दू।

4 अग्रेजी, बाग्ला या उडिया मे उडिया साहित्य के इतिहास की किसी पुस्तक का नाम।

5 कलकत्ता, कटक अथवा पुरी में पुस्तक विक्रेताओ की दुकानो के नाम जहा उडिया पुस्तके रखी जाती हैं।

पुरी जिले मे विनाशलीला के समाचार बहुत दुखद हैं। मैं महसूस करता हू कि बगाल रिलीफ कमेटी को इस मौके पर उडीसा को आर्थिक सहायता देनी चाहिए। जहा तक मुझे मालूम है, कमेटी के पास रिजर्व कोष है, जिसकी मदद से इन दिनो खादी का काम चल रहा है। मेरा विश्वास है कि बाबू सतीश सी दास गुप्ता (डा पी सी राय के सेक्रेटरी) ऐसे किसी विचार का विरोध करेंगे, जैसा कि दक्षिण भारत में आई बाढों के समय किया था, लेकिन जनता की राय और कमेटी में बहुमत इस विचार का समर्थन करेगा। मैं यह बात विश्वासपूर्वक कह सकता हू, क्योकि मुझे वस्तुस्थिति की जानकारी है। लेकिन मैं जब तक वर्तमान स्थिति मे हू ,तब तक मैं नहीं समझता कि मैं कुछ कर सकूगा।

अगर श्री दास सार्वजनिक नियत्रण की बात मान लें, और मेरी समझ में वे अब मान लेंगे, तो उडीसा को उत्कल टैनरी मे रुचि लेनी चाहिए। अगर इसे ठीक ढग से चलाया गया तो वह न केवल वित्तीय दृष्टि से सफल होगी, बल्कि उडीसा के गौरव में चार चाद लगाने वाली भी सिद्ध होगी। उडीसा कृषि की दृष्टि से गरीब है और अगर उसका औद्योगिक विकास न हो सका तो उसके निवासियों के लिए रोजी-रोटी का प्रबध करना असभव हो जाएगा। बहुत अधिक सख्या मे उडिया लोगों को अपने प्रदेश से बाहर जाकर रोजी-रोटी कमानी पडती है, इस बात के निश्चित प्रमाण हैं कि उडीसा की जमीन इतनी उपजाऊ नहीं है कि पूरी आबादी का गुजारा हो सके। वर्तमान परिस्थितियों में प्रवास से नैतिकता शिथिल बनती है, क्योंकि उससे पारिवारिक बधन टूटते हैं और ऐसे अपरिचित

स्थानों में लोगों को गंदे तथा असामान्य परिवेश में रहना पड़ता है, जहां सामाजिक अंकुश का प्राय: अभाव ही होता है। मैं मुख्यत: कलकत्ता की परिस्थितियों की अपनी जानकारी के आधार पर यह बात कह रहा हूं और मैं नहीं समझता कि मेरा निष्कर्ष गलत है।

मुझे आशा है कि आप निकट भविष्य में कलकत्ता में काम फिर शुरू कर सकेंगे।

स्कूल की हालत के बारे में जानकर मुझे दुख हुआ।

मेरा यह विचार है कि उड़ीसा के सम्मुख दो बड़ी समस्याएं हैं, जो बंगाल के सम्मुख भी हैं। पहली है नदी समस्या और दूसरी है सहकारितापूर्ण विकास की समस्या। दोनों ही प्रांतों में हम नदियों की दया पर निर्भर हैं, लेकिन नदियों के मूल और मार्ग के विषय में हमारी जानकारी अत्यल्प है। हमारे इंजीनियरों को नदियों के बारे में बहुत कम ज्ञान है और हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को तो और भी कम जानकारी है। फिर भी, मैं महसूस करता हूं कि अगर हम इस क्षेत्र में कुछ विशेषज्ञता न प्राप्त कर सकें तो हमारा जीवन संकटापन्न बना रहेगा। सिविल सर्विस के कोर्स में मुझे नदियों के विषय में कुछ पढ़ना पड़ा था। अब मैं इस विषय के सघन अध्ययन के बारे में गंभीरता से सोच रहा हूं। कलकत्ता में जल की निकासी की पूरी व्यवस्था विद्याधरी नदी पर निर्भर करती है। जब कि मुख्य कलकत्ता में जल-निकासी की समस्या का समाधान आसानी से हो सकता है, रहस्यमयी विद्याधरी ने अब तक समाधान के सारे प्रयासों को विफल किया है। बंगाल के सैनिटरी कमिश्नर डा. बेंटली मुझे मिलने वाले अकेले ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें इस समस्या की बारीकियों का कुछ अंदाजा है।

कृषि विकास तथा मलेरिया जैसी बीमारियों का उन्मूलन तभी संभव होगा, जब सहकारी आधार पर काम शुरू किया जाए। पूरे प्रांत में मलेरिया-निरोधक सहकारी समितियों का जाल बिछ जाना चाहिए। इसकी शुरुआत बंगाल में हो भी चुकी है और उसे सफलता भी मिली है। इस संदर्भ में, मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि बंगाल की तरह तथाकथित मलेरिया के काफी मामले वास्तव में काला आजार की बीमारी के मामले होते हैं। हमने यह खोज तब की जब हमने बंगाल हैल्थ एसोसिएशन के अंतर्गत कई गांवों में काम आरंभ किया। पहले-पहल तो सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग ने हैल्थ एसोसिएशन के आंकड़ों की खिल्ली उड़ाई, लेकिन अब उसने उनकी सत्यता स्वीकार कर ली है। हम कलकत्ता कार्पोरेशन की सीमा के अंदर म्यूनिसिपल दवाखाने चलाने के अलावा मलेरिया-निरोधक सहकारी समितियों तथा बंगाल हैल्थ एसोसिएशन और मलेरिया तथा काला आजार जैसी बीमारियों के लिए बनाए गए कई वार्ड हैल्थ एसोसिएशनों को आर्थिक सहायता भी देते हैं।

आशा है, मैं अधिक उपदेशात्मक नहीं हो गया हूं। वैसा करना मेरा तनिक भी अभीष्ट नहीं है। मेरा एकमात्र उद्देश्य अनुभवों का आदान-प्रदान करना है।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे।

मेरा हार्दिक सम्मान स्वीकारें,

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष सी बोस

पुनश्च.

कृपया मित्रों को मेरी याद दिलाएं।

एस सी बी

186. विभावती बोस के नाम *

श्री मा दुर्गा सहाय

माडले जेल
9-4-26

पूज्यनीय बहूदीदी,

आपके पिछले दो पत्र यथासमय मिल गए थे, किंतु अभी तक उनका उत्तर नहीं दे पाया था।

सेजदादा द्वारा निर्मित कघा और माचिस मिल गए हैं। वे काफी अच्छे हैं। मुझे आशा है कि आगे चलकर वे और अधिक बढ़िया बनेगे।

यहां खूब गर्मी पड रही है। दिन में हमारी हालत भुनी हुई मछली जैसी हो जाती है, लेकिन रातें अभी भी अपेक्षाकृत ठडी होती हैं और इसलिए नींद में व्यवधान नहीं होता।

फिलहाल मैं कविराजी औषधि नहीं ले रहा हू। अगर जरूरी हुआ तो मैं उन्हे कुछ समय बाद फिर लेना शुरू करूगा।

अशोक और अरुणा द्वारा काते गए सूत से बुनी दो धोतिया मुझे मिल गई हैं। उसी पार्सल मे पापड़ का एक पैकेट भी मिला है। कृपया ऐसे सूत से उनके लिए कपडे बुनवाएं जिन्होंने उसे काता है — उन्हें जब अपने ही द्वारा काते गए सूत के वस्त्र मिलेगे तो उनको कातने के लिए और ज्यादा उत्साह मिलेगा।

जीवन में जब नीरसता प्रतीत होने लगे तो बीच-बीच में कुछ वैचित्र्य की आवश्यकता होती है। पक्षियों और कबूतरो को पालना इसी नूतनता के लिए होता है कल हमने एक तोते का जुगाड किया। अगले महीने मैना का जुगाड करने जा रहे हैं।

* मूल बाग्ला से अनूदित।

मुझे समझ में नहीं आता कि गत माह मैंने जो कागज-पत्र आपको अपने पिछले पत्र के साथ भेजे थे, वे आपको क्यों नहीं मिले। बीच-बीच में ऐसा गोल-माल होता रहता है।

कृपया लिखें कि गोपाली की परीक्षा कैसी रही। अशोक अब किस कक्षा में पढ़ रहा है?

मैं इस सप्ताह मेजदादा को पत्र नहीं लिख रहा हूं। आजकल हमें ऐसा महसूस होता है कि मानो जेलखाने पर हमारा स्थायीस्वत्व हो गया है। हमें नहीं लगता कि हमको कोई आसानी से जेल से बाहर खदेड़ सकेगा।

आशा करता हूं कि आप सब सानंद होंगे। मां और पिताजी कैसे हैं? आप सबको प्रणाम।

इति,
सुभाष

187. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया

मांडले जेल

अस्पष्ट

1-5-26 23-4-26

कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,

बंगाल।

प्रिय दादा,

आपका 5 तारीख का पत्र मुझे 13 को मिला। यहां गर्मी दिनों-दिन बढ़ रही है। मैं समझता हूं कि पिछले वर्ष की अपेक्षा अब कहीं ज्यादा तेज गर्मी पड़ रही है।

भूख हड़ताल को समय से पूर्व स्थगित कर देने के परिणामों के बारे में मेरा अंदाज सही निकला है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई है कि कलकत्ता की गड़बड़ी समाप्त हो गई है। मुझे आशा है कि गड़बड़ी के वास्तविक कारणों की जानकारी प्राप्त करने के लिए बारीकी से गैर-सरकारी जांच की जाएगी।

वहा गर्मी कैसी पड रही है? पिताजी और मा अब कहा हैं और कैसे हैं? मैं नहीं जानता कि भविष्य में आपको लिख सकना सभव होगा या नहीं। जब तक मुझे इसकी अनुमति मिलती रहेगी, मैं लिखता रहूगा।

आशा है, आप सब सानद होंगे। मैं ठीक ही हू।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

श्री एस सी बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

188 शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बगाल।

38/1, एल्गिन रोड
3-5-26

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 23 तारीख का पत्र मुझे कल मिला। मैंने तुम्हे शायद 5 अप्रैल के बाद कोई पत्र नहीं लिखा है। लेकिन उसके बाद तुम्हे दो पत्र भेजे गए—एक 17 को और दूसरा 29 अप्रैल को। आशा है कि वे तुम्हें मिले होंगे। मैंने एक गलती कर दी है। 17 तारीख का पत्र मेरा लिखा हुआ था। उस पत्र मे मैंने उस पत्राचार की चर्चा की थी जो तुम्हारे वकीलों मैसर्स दत्त एड सेन तथा सरकार के बीच तुम्हे 'स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले मे साक्ष्य देने के लिए कलकत्ता लाने के सबध मे हुआ था।

मैं पिछले महीने लगातार विभिन्न चीजो में व्यस्त रहा और मुझे लगता है कि मैंने तुम्हारे प्रति लापरवाही बरती। आशा है, तुम बुरा नहीं मानोगे।

हम सब सोचते थे कि साप्रदायिक गडबडी समाप्त हो गई है। लेकिन वह और उग्र रूप मे पुन प्रकट हुई। मैं समझता हू कि शहर में गत कुछ दिनों से जो भयकर स्थिति है, उसका कुछ ब्यौरा स्थानीय पत्रो ने दिया होगा। लेकिन कल से फिर शांति कायम हुई है और मैं आशा करता हू कि दगे फिर नहीं भडकेगे।

हमने तुम्हारे मामले की सुनवाई लबे अवकाश के बाद तक या माडले मे आयोग पर तुमसे पूछताछ करने तक स्थगित रखने के लिए अर्जी दी थी। तुम्हारी ओर से वकील सर विनोद मित्र हैं और 'द स्टेट्समैन' की ओर से लैंगफोर्ड जेम्स हैं। अर्जी पर विचार

आज तीसरे पहर होगा और उस पर निर्णय की सूचना मैं तुम्हें दे दूंगा।

अब तुम्हें वे कारण बताने से कोई फायदा नहीं होगा, जिनसे प्रेरित होकर हमने यह सलाह दी थी कि भूख हड़ताल छोड़ देनी चाहिए। अगर मैं तुम्हें उनके बारे में लिख भेजूं तो मैं नहीं समझता कि वह पत्र पास किया जा सकेगा। इसलिए मुझे तुम्हारी रिहाई तक प्रतीक्षा करनी होगी। लेकिन तुम्हें यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमने (यद्यपि भूख हड़ताल समाप्त करने की सलाह दी थी, तथापि) ऐसे स्थगन के विरुद्ध दलीलों को ठीक से समझा नहीं था।

यहां अब बहुत गर्मी पड़ रही है। पिताजी कटक में हैं, लेकिन मां यहीं पर हैं। अभी तय नहीं हुआ है कि वे कब जाएंगी।

यह तथ्य छिपाने से कोई लाभ नहीं है कि हम सब तुम्हारे स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं, विशेषत: वहां की गर्मी के कारण। सच कहूं तो मुझे समझ में नहीं आता कि अगर सरकार अपने अकारण रुख पर अड़ी रहती है तो क्या किया जा सकता है।

मुझे जिस बात ने अधिक चिंता में डाल दिया है, वह तुम्हारा यह कथन है कि 'मैं नहीं जानता कि भविष्य में आपको लिख पाना संभव होगा या नहीं। जब तक मुझे अनुमति मिलती रहेगी, मैं लिखता रहूंगा।' निश्चय ही तुम्हारा तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक माह घर को कुछ पत्र लिख भेजने का अधिकार भी तुमसे छीना जा रहा है। यह विश्वास करना कठिन है कि ऐसे किसी कदम पर जहां तक तुम्हारा संबंध है, विचार किया जा रहा है। लेकिन कभी-कभी अप्रत्याशित भी घटित हो ही जाता है। मैं तुम्हारे अगले पत्र की आतुरता से प्रतीक्षा करूंगा, जो मुझे आशा है कि इस विषय पर कुछ प्रकाश डालेगा। अपने स्वास्थ्य के बारे में कुछ और विस्तार से अवश्य लिखो। हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह,

श्री सुभाष सी. बोस

शरत

189 संतोष कुमार वसु के नाम

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

26-4-26

कृते, डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,

बंगाल।

माडले जेल
द्वारा डी आई जी ,
आई बी ,सी आई डी ,
13, इलीसियम रो,
कलकत्ता।

16-4-26

प्रिय श्री बसु,

मुझे आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। आपने रोशनी के बारे मे जो लिखा है उसे पढकर मुझे राहत मिली। विशेषत यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि आप इस मामले को पी यू कमेटी के समक्ष रखने जा रहे हैं और मुझे विश्वास है कि इस पर आप सावधानी से विचार करेंगे। मुझे आशा है कि कार्पोरेशन सडको पर रोशनी को (चाहे वह गैस की हो या बिजली की) म्यूनिसिपल अधिकार मे लेने का विचार आसानी से त्यागेगा नहीं, जब तक कि इसके विरुद्ध बहुत ज्यादा जोरदार तर्क न हो। अगर जरूरत हो तो आप लाइटिंग सुपरिंटेंडेंट के अनुमानो की जाच, उन पर पूरी तरह निर्भर न करते हुए, स्वतत्र विशेषज्ञो से करवा सकते हैं और अगर विशेषज्ञ मिल सके तो आपको उनसे सलाह लेनी होगी। लेकिन अगर दुर्भाग्य से यह काम किसी प्राइवेट कपनी को सौंपना ही पडे तो मुझे आशा है कि आप तत्सबधी टेडर के लिए विज्ञापन केवल इग्लैंड मे ही नहीं, बल्कि यूरोप के शेष भाग मे भी जारी करेंगे। इस सब में समय लगेगा और इसीलिए यथाशीघ्र किसी निर्णय पर पहुचने की आवश्यकता है। म्यूनिसिपल अधिकार मे लेने के मामले से निपटते हुए यह नहीं भूल जाना होगा कि उपोत्पादों का व्यावसायिक कामो के लिए इस्तेमाल करने की सभावनाओ को ध्यान में रखा जाए।

सभी नई सडको पर, विशेषत नए क्षेत्रों मे—विद्युतीकरण का विस्तार करने की नीति का मैं हार्दिक अनुमोदन करता हू। मैं नहीं कह सकता कि करट सी ई एस कार्पोरेशन से क्रय करने और सेंट्रल आफिस, मार्केट आदि में रोशनी स्वय पहुचाने से कोई खास लाभ होगा। जब तक खर्च मे बचत या अधिक सुविधा न हो तब तक हमारे लिए विभागीय काम मे वृद्धि करना तथा लाइटिंग सुपरिंटेंडेंट के वेतन-वृद्धि की मागो को बल पहुचाना हितकर नहीं होगा।

मैं नहीं समझता की आवारा कुत्तों के खातमें के लिए विशेष कक्ष की योजना अभी कार्यान्वित हो सकी है। वह किस चरण में है?

मुझे आशा है कि आप शीत भंडारण योजना को आसानी से त्याग नहीं देंगे। अगर जरूरी हो तो आप मछली, गोश्त और फल के व्यापारियों से पूछताछ कर लें कि ऐसे संयंत्र से उन्हें लाभ होगा या नहीं। अगर वे लाभान्वित हों, तो हम खर्च पूरा करने के लिए, उनसे संयंत्र के प्रयोग के लिए, कुछ शुल्क ले सकते हैं।

मैं नहीं जानता कि हमारे बाजार प्रत्येक माह के लिए विभिन्न खाद्य-पदार्थ के औसत मूल्य का लेखा-जोखा तैयार करते हैं या नहीं। मैं समझता हूं कि ऐसा औसत मासिक विवरण तैयार करना और उसकी तुलना पिछले कुछ वर्षों या आसन्न वर्षों के समकक्ष महीनों के मूल्यों से करना हितप्रद होगा। इससे हमें एक नजर में पता चल जाएगा कि मूल्य घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं। इन औसतों की सूची पी.यू. और मार्केट कमेटी के समक्ष रखी जा सकती है और उसे गजट में प्रकाशित किया जा सकता है। एक वर्ष के अंत में साल-भर के औसत मूल्यों का भी लेखा-जोखा किया जा सकता है। सभी म्यूनिसिपल बाजारों में इन औसतों की गणना की जाए और बाजार नियंत्रक द्वारा सम्पूर्ण कलकत्ता के लिए औसत निकाली जाए। बाजार नियंत्रक को चाहिए कि वह इन औसतों का बारीकी से अध्ययन करें और पता लगाएं कि विभिन्न बाजारों में मूल्यों में अंतर क्यों रहता है तथा उन्हें घटाने के लिए उपाय निकालें। इस प्रश्न पर श्री एस.सी. राय (उप-कार्यपालक अधिकारी) से परामर्श करना उचित होगा। बाद में भारतीय अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए ये आंकड़े बड़े काम के साबित होंगे। इनका लाभ म्यूनिसिपल कर्मचारियों की अधिक वेतन की मांग की परख करने के लिए भी मिल सकेगा। मैं समझता हूं कि इतना ही यथेष्ट होगा कि रोज की जरूरतों की चीजों के बारे में ही मूल्य संबंधी यह अध्ययन किया जाए तथा विलास की वस्तुओं को छोड़ दिया जाए। मैं नहीं जानता कि बाजार नियंत्रक ने अब तक खाद्यान की सप्लाई अथवा उनके मूल्यों में कमी के लिए कोई कदम उठाया है या नहीं। इस दिशा में पहला कदम यह होगा कि मालूम किया जाए कि मूल्यों की ठीक-ठीक स्थिति क्या है और जहां तक संभव हो, व्यापारियों द्वारा मुनाफाखोरी को रोका जाए। इसके बाद सबसे आसान उपचार यह होगा कि स्थानीय तौर पर अनाजों का पुनर्वितरण किया जाए, उसे एक बाजार से दूसरे में पहुंचाया जाए, जिससे अगर किसी वस्तु की एक बाजार में बहुत मांग है तो उसका मूल्य वहां कम किया जा सके। यह पुनर्वितरण स्वयं व्यापारियों की एजेंसियों द्वारा अथवा अगर कानून आड़े न आता हो तो स्वयं कार्पोरेशन द्वारा किया जा सकता है।

वांछनीय होते हुए भी यह बात संभव नहीं है कि कोई ऐसा सेंट्रल मार्केट हो जो पूरे कलकत्ता के लिए सभी चीजों के वास्ते एक नमूने के तौर पर हो, हाग मार्केट गोश्त और फलों के लिए केंद्रीय मार्केट हो सकता है। कालेज स्ट्रीट मार्केट को मछलियों के लिए केंद्रीय मार्केट के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, क्योंकि मछली स्थानीय आबादी का मुख्य भोजन है। स्यालदा केंद्रीय दुग्ध मार्केट के लिए सर्वोत्तम स्थान है।

कलकत्ता के बाजारो का विकास इन दिशाओं मे होना चाहिए। लेकिन मुझे सदेह है कि हमारे मार्केटों के विकास के पीछे कोई सुनिश्चित और सजग नीति है। अभी तक हम मानो अधेरे में निशाना लगाते रहे हैं। मेरी चिता केवल खाद्य-पदार्थों को लेकर है, अन्य अनेक प्रकार की वस्तुओ को लेकर नहीं। किसी भी बाजार के विस्तार की स्वीकृति देने से पूर्व हमारे मन मे उस बाजार के भविष्य का स्पष्ट चित्र होना चाहिए। इस प्रकार की कल्पना के बिना जो भी विकास होगा यह अव्यवस्थित और अनिश्चित ढग से होगा और बाजार का विस्तार पूर्ण हो जाने पर पता चलेगा कि कुल मिलाकर उस बाजार की व्यवस्था बहुत ही गड़बड है। मैं समझता हू कि कालेज स्ट्रीट के मार्केट के मामले मे यही होगा।

शिक्षा अधिकारी को आपने कैसा पाया है ? उसे अपना विभागीय काम करने के अलावा चार और कामों के लिए अपने आपको तैयार करना चाहिए

(1) विभिन्न वार्डों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा सबधी विभागीय अनुमान तैयार करना तथा अनिवार्य शिक्षा योजना के अतर्गत स्कूल जाने योग्य आयु के बच्चों की गणना से सबधित तथ्य एकत्र करना, (2) किडर गार्डन के सिद्धातों को तथा विशेषत बच्चो से सबद्ध शैक्षिक मनोविज्ञान सबधी प्रमुख तथ्यो की जानकारी प्राप्त करना, (3) विभिन्न श्रेणियों के बच्चो के लिए पाठ्य-पुस्तको की एक सुदृढ प्रणाली तैयार करना और पुस्तको को लिखवाने के लिए कुशल व्यक्तियों की खोज करने, तथा (4) हमारे शिक्षकों के लिए ट्रेनिंग स्कूल की व्यवस्था। जैसे-जैसे काम का दायरा बढता जाए, शिक्षा अधिकारी का वेतन बढाते रहना चाहिए, जब तक कि उसे अन्य किसी भी विभाग के प्रमुख को मिलने वाला वेतन न मिलने लगे। निस्सदेह शिक्षा विभाग को एक पूर्ण विभाग बनाने में कई वर्ष लग जाएगे, लेकिन उस लक्ष्य को हमें अपने ध्यान में रखना चाहिए। जिस विभाग पर कलकत्ता के स्कूल जाने योग्य आयु वाले तमाम गरीब लडके-लडकियों की शिक्षा का भार है, वह महत्व के मामले में अन्य विभागों से घटकर नहीं रह सकता।

जहां म्यूनिसिपल बैंकिंग का सवाल है, मैं समझता हू कि हमें कुछ समय तक उससे बचकर चलना होगा और मैं इस बारे मे आपसे पूरी तरह सहमत हू।

सफाई कर्मचारियों के लिए स्टोर कैसा काम कर रहा है ? मुझे उनके सबध में कोई भी सूचना नहीं मिली है।

मैं सोचता हू कि कार्पोरेशन को दो समस्याओ के बारे मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से सपर्क करना चाहिए। पहली समस्या है — कलकत्ता के सभी स्कूलों और कालेजों के छात्रों की स्वास्थ्य-परीक्षा। दूसरी समस्या है—राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियो को नगर-प्रशासन पद्धति सिखाने के लिए राजनीति शास्त्र विभाग में एक उप-विभाग खोलना। सामान्य लोगों को पता नहीं होता कि स्वय राजनीति शास्त्र में यूरोप और अमरीका में कितना विशिष्टीकरण चल रहा है। विशेष रूप से अमरीका ने नगर-प्रशासन को एक विज्ञान का रूप दे दिया है और वहा नगर-प्रशासन के सिद्धातों और पद्धतियों पर ढेर-सी किताबें लिखी गई हैं। राजनीति शास्त्र के पाठ्यक्रम में नगर-प्रशासन विषय को

सम्मिलित करने से विशेष लाभ होगा। इससे उक्त विषय को एक यथार्थ रूप दिया जा सकेगा और हम विश्वविद्यालय के छात्रों को सहायता दे सकेंगे कि वे म्यूनिसिपैलिटी के कार्य-कलापों को आंतरिक रूप में समझ सकें। आप पार्षद रामप्रसाद से इस विषय में बातचीत कर सकते हैं।

जहां तक स्वास्थ्य-परीक्षा का सवाल है, मैं समझता हूं कि अगर वार्षिक स्वास्थ्य-परीक्षा संभव न हो तो दो या तीन वर्षों में एक बार नियमित परीक्षा की जा सकती है। इससे हमें ठीक-ठीक पता चल जाएगा कि शारीरिक गठन के मामले में बच्चों की एक के बाद एक आने वाली पीढ़ी में सुधार हो रहा है अथवा गिरावट आ रही है। इस काम में विश्वविद्यालय, कार्पोरेशन और स्वास्थ्य एसोसिएशनों में सहयोग अपेक्षित होगा।

16-4-26

मैंने यह पत्र दो माह पूर्व लिखना शुरू किया था, लेकिन तब से यह असमाप्त पड़ा रहा है। इस बीच हुगली और इरावती नदियों में बहुत-सा पानी बह निकला है। अब मैं इसका उपसंहार लिखकर इसे भेज रहा हूं।

मुझे अपने भाई के पत्र से यह सूचना पाकर दुख हुआ कि शहर के कई भागों में मलेरिया बहुत उग्र रूप में फैल रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि कार्पोरेशन ने नगर के शिक्षा संबंधी एक सर्वेक्षण को मंजूरी दे दी है। यह पिछले वर्ष हो जाना चाहिए था, लेकिन 'देर आयद दुरुस्त आए'।

विद्याधरी के मामले में आपने जो टक्करें ली हैं उनको मैं दिलचस्पी से देखता रहा हूं। मुझे आशा है कि आप यह नहीं भूलेंगे कि आप यह समस्या तभी हल कर सकेंगे, जब विदेश से किसी दक्ष इंजीनियर को बुलवाएं। आप इंग्लैंड, अमरीका और यूरोपीय देशों में क्यों नहीं विज्ञापन दिलवाते? कोई उपयुक्त इंजीनियर पाने में आपको वर्षों नहीं, तो कम से कम महीनों लग ही जाएंगे।

इस बीच मैं डा. बेंटली से लिखा-पढ़ी करके पता करता हूं कि नमूनों के आधार पर विद्याधरी संबंधी प्रयोगों से साल्ट-लेक क्षेत्र में जल-धाराओं के भविष्य के मार्गों का पता लगाया जा सकता है या नहीं। ऐसे प्रयोगों का बहुत अच्छा फल यूरोप में (मैं समझता हूं कि, उदाहरणार्थ, मेरसी नदी के मामले में) निकला है। कार्पोरेशन को याद रखना है कि मुख्य जल-निकासी योजना पर अंतिम निर्णय करने से पहले जल-धाराओं के भविष्य के मार्गों का अनुमान लगाना आवश्यक है। हमारे अनुमान गलत सिद्ध हो सकते हैं, लेकिन मुख्य जल-निकासी योजना उन्हीं पर आधारित होगी।

क्या श्री विल्किंसन वापस आ रहे हैं अथवा वे सदा के लिए स्वदेश चले गए हैं?

मोटर वैहिकिल्स विभाग के नए सुपरिंटेंडेंट कैसे लगे? क्या वाचा के समय से अब स्थिति में सुधार हुआ है?

प्रसगत , महीनो पहले मैंने जिला 4-गौखाना में चारे, दाने आदि की चोरी के बारे में एक रिपोर्ट भेजी थी। ई जी पी कमेटी के अनुरोध पर मेरी रिपोर्ट दी गई थी। क्या आपको पता है कि इस रिपोर्ट पर कमेटी ने विचार किया है या नहीं, अथवा क्या मेरी रिपोर्ट दबा दी गई है ?

क्या श्री कोट्स अब वापस आ गए हैं ?

मुझे लगता है कि अब सडक विभाग को जड-मूल से पुनर्गठित करना होगा। यद्यपि मैं सामान्यत केंद्रीकरण को बहुत पसद नहीं करता, लेकिन मुझे यह सोचने पर विवश होना पडा है कि सडक विभाग को अगले कुछ वर्षों के लिए एक पृथक, विशेष-दक्षता प्राप्त सडक इजीनियर के अधीन केंद्रीकृत कर देना चाहिए। वर्तमान पद्धति के अतर्गत आप कुशलता का स्तर बहुत ज्यादा ऊचा नहीं बना सकते। मैं जानता हू कि जिला इजीनियर और श्री कोट्स इसकी खिलाफ्त करेंगे। लेकिन नई योजना के तहत किसी के भी आर्थिक हानि उठाने की आशका नहीं है।

कृपया चेचक की महामारी को भुलाए नहीं। समय-समय पर उसके फूट पडने के कारणो की छानबीन की जानी चाहिए।

क्या छटनी अफसर की पूरी रिपोर्ट आपको मिल गई है।

हमारा हिसाब-किताब वाला विभाग बेहद कुशल है, पर मुझे कहने की अनुमति दें कि अधिकारी कभी-कभी अत्युत्साही बन जाते हैं। जब मैं वहा था तो मुझे चीफ अकाउटेट को समय-समय पर झाड खिलानी पडती थी। मुझे अफसोस है कि दगे भडक उठे—हमारे दुर्भाग्य का प्याला लबालब है। मैं नहीं समझ पाता कि आखिर हमारे देश की आत्मा पर किसी की अशुभ छाया पड रही है। दगों के असली कारणा की जानकारी तो मुझे शायद ही हो पाए और रिहाई से पहले मैं शायद ही जान सकू कि पर्दे के पीछे से भडकाने वाले एजेट कौन हैं। मैं सोचता था कि बगाल साप्रदायिक दगों से मुक्त है, लेकिन वैसा नहीं होना था।

आशा है, आप सब सानद हैं। आज तो बस मुझे यहीं रुक जाना होगा। सम्पूर्ण सदिच्छाओं के साथ।

सदैव आपका बधु,
सुभाष सी बोस

श्री एस के बसु,
10-ए, गोपाल घोष लेन,
खिदिरपुर,
कलकत्ता।

190. वासंती देवी के नाम*

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

3-5-26

कृते डी. आई. जी., आई.बी., सी.आई.डी.,

बंगाल।

मांडले जेल

(द्वारा डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,

बंगाल, 13 इलीसियम रो, कलकत्ता)

26-4-26

श्री चरणेषु मां,

मुझे आपका 6 फरवरी का पत्र यथासमय मिल गया था, लेकिन अनेक कारणों से उसका उत्तर मैं नहीं दे सका। मैंने इस आशा में आपको नहीं लिखा कि आपका पत्र मुझे मिलेगा। फिर भी, इतने लंबे समय के बाद आपके हाथ से लिखे अक्षरों को देखकर हृदय प्रफुल्लित हो गया। लेकिन पूरा पत्र पढ़ चुकने के बाद वह आनंद लुप्त हो गया। मैंने सोचा कि अगर हम स्वतंत्र होते तो हम शायद आपको कुछ सांत्वना दे सकते। प्राय: डेढ़ वर्ष से हम अपने आपको प्राय: मातृ-विहीन अनुभव कर रहे हैं। भगवान ही जानता है कि निष्कासन की यह दीर्घरात्रि कब समाप्त होगी। लगता है, जैसे हम इस अंधकार के अभ्यस्त होते जा रहे हैं और बाहर का आलोक हम से दूर होता जा रहा है। कारागार के बंधन की जो ज्वाला हमें आरंभ में अनुभव होती थी, उसका धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है और उसकी जगह एक निर्विकार भाव मेरे हृदय पर अधिकार करता जा रहा है; मैं किधर जा रहा हूं, यह पता लगाना सदा संभव नहीं होता। हमें प्रवासी बनाकर वह प्रभु किस उद्देश्य को सार्थक कर रहा है, इसे मैं समझ नहीं पाता। इसीलिए मैं उससे सर्वदा प्रार्थना करता रहता हूं कि वह इन सब विपत्तियों और विघ्न-बाधाओं के बीच हमारे असार, अपूर्ण और नीरस जीवन को अपनी ओर उन्मुख करता रहे।

मैं समझ सकता हूं कि उसने अपने किसी गूढ़ उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें सभी प्रकार से अवलंबनहीन बनाया है। लेकिन डेढ़ साल की इस असहायावस्था के बावजूद क्या मैं उसकी ओर अग्रसर हो पाया हूं?

* मूल बांग्ला से अनूदित।

लेकिन मैं क्या लिखना चाहता था और क्या लिख गया। मैं नहीं जानता कि मुझे आपके श्री चरणो के दर्शन करने का सौभाग्य कब मिलेगा। लेकिन आपका विचार सदा मेरे मन में रहता है। एक भी दिन ऐसा नहीं बीतता ज्व आपकी याद मुझे नहीं आती हो। अगर मैं अपना सर्वस्व देकर भी आपको कुछ सात्वना दे सकू और आपकी सेवा कर सकू तो अपने को धन्य मानूगा। लेकिन शायद यह होने वाला नहीं है।

आज तो लिखने को और कुछ है नहीं, इसलिए आज बस इतना ही। हम सबके प्रणाम स्वीकारे।

आपका सेवक,
सुभाष

191. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेसर और पास किया

अस्पष्ट

14-5-26

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,

बगाल।

माडले
7-5-26

प्रिय दादा,

कुछ समय से मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला है। आशा है कि साप्रदायिक दगो का दूसरा दौर अब समाप्त हो गया होगा और कलकत्ता मे फिर शाति स्थापित हो गई है। सम्पूर्ण घटना खेदजनक है। मुझे आशा है कि अब भय की जगह सद्भावना के साथ स्थाई समझौते के लिए गभीर प्रयास किए जाएगे।

माडले और इन्सीन जेलों में किताबो के लिए दो सौ रुपये मजूर किए गए हैं। अभी हमें पता नहीं है कि इसमे हमारा ठीक-ठीक हिस्सा कितना होगा।

धार्मिक कृत्यों के लिए सरकार ने 30 रुपये प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष को स्वीकृति दी है। इस सबध में आदेश इतना व्यापक है कि वह सभी कैदियों पर लागू प्रतीत होता है। शुद्ध लाभ यह है कि सरकार सिद्धातत झुक गई है लेकिन अगर हमने भूख हडताल समय से पहले ही समाप्त कर दी होती तो हमे और ज्यादा भत्ता मिल जाता।

प्रसाधन सामग्री, कागज, स्टेशनरी तथा विविध वस्तुओं के लिए सात रुपये प्रतिमाह मिलने वाले भत्ते को बढ़ाकर 15 रुपये प्रतिमाह कर दिया गया है।

कपड़े, बिस्तर आदि के लिए अगले अगस्त तक की अवधि के वास्ते औसतन प्रतिव्यक्ति 100 रुपये का अतिरिक्त भत्ता स्वीकृत हुआ है। लेकिन अगले वर्ष के लिए 225 रुपये वार्षिक से अधिक भत्ता नहीं मिलेगा। केवल मेरे लिए उसे बढ़ाकर 325 रुपये प्रतिवर्ष कर दिया गया है।

इस वर्ष अन्य वर्षों की अपेक्षा अधिक सूखा रहेगा। अभी तक एक बूंद भी पानी नहीं गिरा है। यद्यपि पिछले वर्ष की इसी अवधि में रुक-रुककर वर्षा हुई थी जिससे गर्मी शांत होने में मदद मिली थी। परिणामस्वरूप नगर में चेचक की बीमारी फैलने के समाचार मिले हैं और जेल के अंदर भी एक व्यक्ति को यह रोग हुआ है।

आप सबके क्या हालचाल हैं? पिताजी कुर्सियांग कब जाएंगे। उन्होंने लिखा है कि वे इस महीने के अंत तक जा रहे हैं। नाडुमामा की कोई खबर मिली है क्या? उसने परीक्षा में कैसा किया है?

मुझे प्रसन्नता है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय मैट्रिकुलेशन कक्षा तक बांग्ला को शिक्षा का माध्यम बनाने जा रहा है। हमारी अपेक्षा विद्यार्थियों की वर्तमान और भविष्य की जमात को बांग्ला साहित्य का गहनतर अध्ययन करना चाहिए। मैं अब उस त्रुटि का परिमार्जन कर रहा हूं जो मुझे अपनी शिक्षा में प्रतीत होती थी, अर्थात बांग्ला साहित्य का नितांत अपरिचय। बंगाल का मध्यकालीन साहित्य हमारी एक महान निधि है—कुछ अर्थों में आधुनिक साहित्य से भी अधिक महत्वपूर्ण।

मैं ठीक ही हूं। आशा करता हूं कि इस पत्र के पहुंचने तक अरुणा का विवाह सम्पन्न हो चुका होगा।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस.सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

192. शरत चन्द्र बोस के नाम

मांडले
17-5-26

प्रिय दादा,

दो या तीन दिन पहले रंगून के एक समाचार-पत्र में 'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले के संबंध में एक पैराग्राफ था। दुर्भाग्यवश उसकी भाषा इतनी भद्दी थी कि उसका कोई

मतलब निकाल सकना कठिन था। लेकिन मुझे ऐसा मालूम हुआ कि न्यायालय सरकार को निर्देश देने जा रहा है और इस मामले को मुकदमे की सुनवाई तक स्थगित रखा गया है।

बुक कपनी ने मुझे अब तक उसके द्वारा भेजी गई किताबो की सूची भेज दी है। उसने नीत्शे की पुस्तको के बारे मे गलती की है। उसका कहना है कि 1-9-1925 को उसने खड 3, 12, 15, 16 13, 11 10 तथा 23-9-1925 को खड 10 12 3 तथा 25-11-1925 को खड 1, 2, 3 4, 5 6 7, 9 14 17 18 भेजे हैं। इस प्रकार सूची के अनुसार उसने खड 12 और 10 की दो-दो प्रतिया भेजी हैं और खड 3 की तीन प्रतिया। लेकिन मुझे खड 3 की केवल दो प्रतिया मिलीं जिसमे से एक मैंने रागामामा बाबू के जरिए वापस कर दिया है। सेट मे कुल 18 खड हैं और मुझे 19 पुस्तकें मिलीं लेकिन एक को लौटाने के बाद अब मेरे पास 18 पुस्तके ही हैं।

उसने भूल की है, उसका एक और प्रमाण है। प्राय उसी समय यहा के कार्यालय को नीत्शे की कृतियो के चार खड (अर्थात, 11, 15, 16 13) मिले और 19 बाग्ला किताबें मिलीं जो यथासभव मेरे पास भेज दी गईं। उसे इनके साथ खड 3 12 और 10 नहीं मिले। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि खड 3 12, 10 को 1-9-25 को न भेजकर काफी बाद म 23-9-25 को भेजा गया था। मैं, सदर्भ के लिए मेरे नाम लिखा उसका पत्र भेज रहा हू। कृपया किसी से कहे कि वह दुकान पर जाकर इस गुत्थी को सुलझा दे।

मैं आपको सोमवार को नहीं लिख पाया था। उसके बाद मुझे कलकत्ता के अखबार मिले हैं और मैं समझता हू कि अब मैं 'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मामले के बारे म स्थिति को अधिक अच्छी तरह समझता हू। अब यह प्राय निश्चित प्रतीत होता है कि वे न्यायोचित टिप्पणी का ही सहारा लेगे हालाकि आखिर तक आते-आते श्री लैंगफोर्ड जेम्स की जबान लड़खडाने लगी थी। लेकिन मैं नहीं समझ पाया कि श्री जेम्स यह वाहियात दावा कैसे कर सके कि आवेदन को खर्च के साथ खारिज कर दिया जाना चाहिए, जब कि श्री सरकार ने उनके इस आश्वासन पर उसे वापस लेने का प्रस्ताव किया था कि केवल न्यायोचित टिप्पणी का सहारा लिया जाएगा। मुकदमे की सुनवाई कब होने वाली है? प्रतिवादी की वर्तमान स्थिति को आप किस रूप में आकते हैं?

मैं नहीं जानता कि क्या यात्रिक ग्रथों के सकलनकर्ता श्री आर्थर ऐवेलान तथा श्री वुडरोफ एक ही व्यक्ति हैं या नहीं। यदि हा तो बुक कपनी ने मुझे ऐवेलान कृत तत्र के अनुवाद को भेजकर कोई त्रुटि नहीं की है। मैंने केवल वुडरोफ की पुस्तक मगाई थीं।

क्या आप इतिहासकार राखाल दास बनर्जी को व्यक्तिगत रूप म जानते हैं? मैं समझता हू कि मैं बर्मा-रिकार्डों की मदद से बगाल के आरभिक और मध्यकालीन इतिहास को कुछ विलुप्त श्रृखलाओ की जानकारी दे सकता हू। हाल में यहा वर्षा के एक-दो हल्के छींटे पडे हैं। इससे अब मौसम कुछ ठडा हो गया है। क्या आप मा से

पूछकर जन्म के समय मेरी राशि और नक्षत्र की जानकारी मुझे दे सकते हैं? मुझे इसकी आवश्यकता तंत्रशास्त्र का अध्ययन करते हुए उठ खड़ी होने वाली एक समस्या के समाधान के लिए है।

इंस्पेक्टर जनरल चाहता था कि हमें दी गई प्रत्येक कापी, किताब और कागजात आदि का पूरा रिकार्ड रखा जाए और रोज तलाशी ली जाए। उसने कहा कि अगर हम कड़े अनुशासन को नहीं मानेंगे तो लिखने-पढ़ने की सामग्री की सप्लाई बंद कर दी जाएगी। जैसा कि मैंने आपको पिछले सप्ताह लिखा था, मैंने सुपरिंटेंडेंट से बातचीत की जिसने युक्तियुक्त रुख दिखाया और यह मामला पुनर्विचार के लिए आई. जी. को फिर भेज दिया गया है। आई. जी. से हमें यह सूचना भी मिली कि अगर जरूरत हुई तो हमारे विरुद्ध जेल-संहिता की कुछ धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई की जा सकती है (अर्थात हमें कुछ समय के लिए अलग-अलग या एकांत कोठरियों में बंद किया जा सकता है)। अगर सुपरिंटेंडेंट ने सूझबूझ से काम न लिया होता तो इन सब आदेशों से काफी अप्रिय वातावरण बनता और टकराव पैदा हो जाता। लेकिन मैं समझता हूं कि अब वह आशंका दूर हो गई है। अभी तक कोई भी आदेश लागू नहीं किया गया है और जब से सुपरिंटेंडेंट ने अपनी राय लिखकर आई. जी. को भेजी, तब से कोई और बात सुनने में नहीं आई है। इस बीच आई. जी. हमारे बीच एक और दौरे पर आ चुके हैं और उसका रंग-ढंग तथा बातचीत शिष्टतापूर्ण लगी। इसीलिए मैं समझता हूं कि मामला हमेशा के लिए ठीक हो गया है।

क्या आप गर्मियों में थोड़े समय का अवकाश लेने जा रहे हैं? कलकत्ता में अब गर्मी कैसी है? श्री एस० एन० मलिक कब इंग्लैंड रवाना हो गए हैं? मैंने अखबारों में पढ़ा है कि श्रीमती मलिक भी उनके साथ जाएंगी।

कृपया श्रीमती दास को राजी करें कि वे देशबंधु की जीवनी लिखना या जीवनी के लिए सामग्री तथा तथ्य एकत्र करना आरंभ करें। इससे उन्हें बहुत सांत्वना मिलेगी।

चितरंजन सेवा सदन की देखरेख अब कौन कर रहा है? क्या श्रीमती दास को संतोष है कि वह ठीक से चल रहा है?

आप सब कैसे हैं? मैं ठीक ही हूं।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष
21-5-26

193. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

31-5-26

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,

बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
27-5-26

प्रिय सुभाष,

मैं समझता हू कि मैंने इससे पहले 5 तारीख को पत्र भेजा था। मुझे तुम्हारे 30 अप्रैल, 1 मई, 7 मई और 14 मई के पत्र क्रमश 12 मई, 14 मई, 15 मई और 28 मई को मिले।

मैं अभी तक बुक कपनी को नहीं लिख पाया हू। अगले कुछ दिनो में मैं लिखूगा। मैं प्रबध करूगा कि तुम्हे जिन पुस्तकों की आवश्यकता है, वे भेज दी जाए।

अब 'द स्टेट्समैन' के मामले में कुछ शब्द। तुमने यह ठीक ही कहा है कि उन्हाने लिखित बयान में यह नहीं स्वीकार किया है कि तुम अभी भी मुख्य कार्यपालक अधिकारी हो। हमने जे सी मुखर्जी के नाम सम्मन जारी कराया है कि वह उक्त तथ्य को सिद्ध करें तथा उनसे कहा है कि वे तुम्हारी छुट्टी के बारे में कार्पोरेशन के प्रस्तावो को रखें तथा प्रमाणित करें।

'द स्टेट्समैन' के मामले में हमने आरभ मे स्थगन के लिए आवेदन किया था क्योकि तुम्हारे साक्ष्य की आवश्यकता थी और सरकार ने तुम्हारे वकीलों का यह अनुरोध नहीं माना था कि तुम्हें मुकदमे के सिलसिले में कलकत्ता लाया जाए। जब उक्त आवेदन की सुनवाई आरभ हुई तो 'द स्टेट्समैन' के वकील लैंगफोर्ड जेम्स ने कहा कि वह औचित्य का सहारा न लेकर केवल युक्तियुक्त टिप्पणी का सहारा ले रहे हैं। और इसलिए तुम्हारे साक्ष्य की आवश्यकता नहीं है तथा इस कारण स्थगन का आवेदन अथवा कमीशन के विकल्प का आवेदन खारिज कर दिया जाना चाहिए। न्यायाधीश बक्लैंड ने कहा कि वे आवेदन को मुकदमे की सुनवाई शुरू होने तक स्थगित कर देगे जिससे यह देखा जा सके कि 'द स्टेट्समैन' के लिए सुनवाई के दौरान वकील ऐसा ही रुख अपनाते हैं या इससे भिन्न।

मुकदमे की सुनवाई गत सप्ताह शुरू हुई और उस दिन 'द स्टेट्समैन' के वकील श्री पेज (लैंगफोर्ड जेम्स के कनिष्ठ वकील) ने इस आधार पर स्थगन के लिए अनुरोध

किया कि लार्ड लिटन के मालदा–भाषण के प्रमाणन के लिए उन्हें गवाह नहीं मिले हैं। 'द स्टेट्समैन' के वकील ने हमारे वकीलों को लिखा था कि लार्ड लिटन के भाषण को सही स्वीकार कर लें। हमने स्वीकार नहीं किया और इसीलिए 'द स्टेट्समैन' के लिए उसको प्रमाणित करने की आवश्यकता पड़ी। मामले की सुनवाई तीन सप्ताह के लिए स्थगित कर दी गई और उस दिन का खर्च हमें मिलने का आदेश हुआ। यह 800 रुपये से 1,000 रुपये के बीच होगा।

मैं समझता हूं कि सुनवाई के दौरान तुम्हारी गवाही जरूरी होगी और इसीलिए या तो स्थगन या कमीशन अवश्यंभावी हो जाएगा। अगर कमीशन का आदेश होता है तो हम अवश्य ही सरकार को आवेदन देंगे कि तुम्हारे साथ एकांत में भेंट की अनुमति दी जाए। वास्तव में मैंने जिन कारणों से स्थगन का अनुरोध किया था उनमें से सरकार का एक यह तरीका था कि भेंट के समय सी. आई. डी. का एक अफसर मौजूद रहता है और ऐसी स्थिति में मामले को चलाना संभव नहीं होता। हम प्रतीक्षा करें कि ऊंट अब किस करवट बैठता है। हम अभी नहीं तय कर सकते कि तुमसे जिरह के लिए कौन-सा कदम उठाया जाएगा। शायद मामले की सुनवाई बकलैंड की अदालत में होगी।

मुझे तुम्हारे 9 तारीख के पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सरकार, जहां तक बंदियों की शिकायतों का सवाल है, सिद्धांत के प्रश्न पर अंततः झुक गई है।

आज तो बस इतना ही। लेकिन पत्र समाप्त करने से पहले मैं तुम्हें यहां हाल में हुई एक दिलचस्प घटना के बारे में बताना चाहूंगा। मैं 'फारवर्ड' के कार्यालय में अभी कुछ दिन पहले 'एसोसिएटेड प्रेस' के श्री के. सी. राय से मिला। मैं उनसे इससे पहले कभी नहीं मिला था। उन्होंने मुझसे कहा कि दिल्ली में यह 'गप' प्रचलित है कि फरवरी में अखबारों में प्रकाशित लेफ्टिनेंट कर्नल मुलवानी की गवाही की एक प्रति मांडले जेल से चोरी-छिपे बाहर पहुंचाई गई है। उन्होंने यह भी कहा कि बंदियों को जेल कमेटी की रिपोर्ट पढ़ने की अनुमति असावधानी के कारण दी गई और इस प्रकार मुलवानी की गवाही प्रकाश में आ गई। यह ऐसी 'नायाब खोज' थी कि मैंने श्री राय से पूछा कि क्या मैं इसकी जानकारी तुम्हें दे दूं। उन्होंने कहा कि अवश्य। मैंने कहा, मेरे पत्र का यह हिस्सा अवश्य सेंसर किया जाएगा। उन्होंने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। तब मैंने कहा, क्या मैं इसे कसौटी पर परखूं? उन्होंने कहा, आप जरूर यह करें।

अरुणा का विवाह आज शाम संपन्न होगा। विवाह शाम बाजार में होगा।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से अच्छा होगा। हम सब ठीक हैं।

सस्नेह तुम्हारा,
शरत

श्री सुभाष सी. बोस
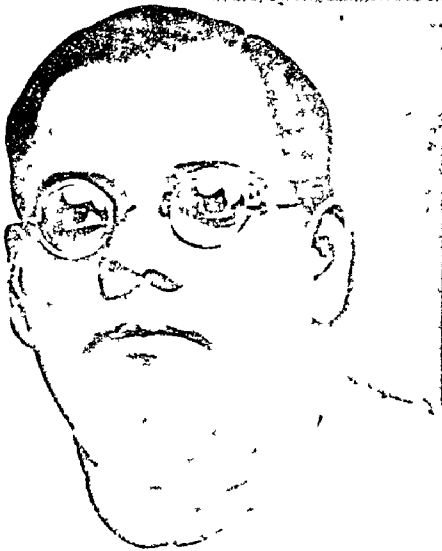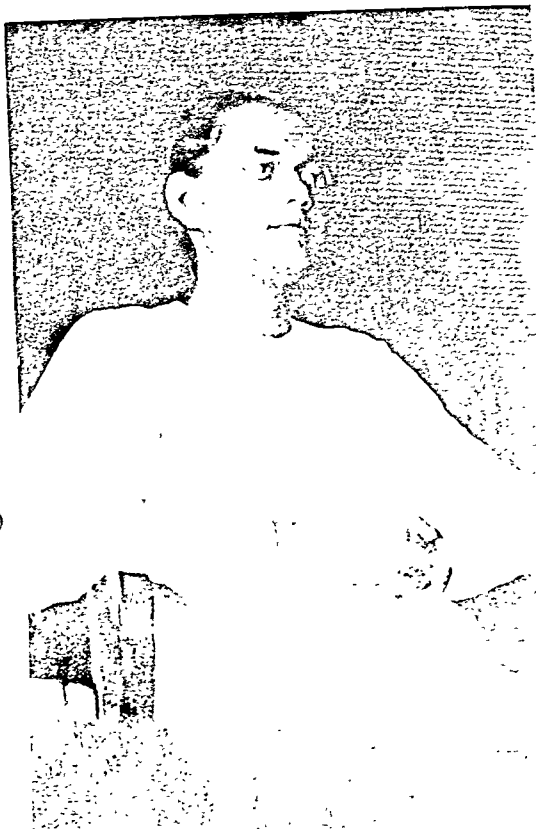
194. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया

25-5-26

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,

बंगाल।

माडले

14-5-26

प्रिय दादा,

आपका 3 तारीख का पत्र मुझे 11 तारीख को मिला। आपका 5 तारीख का पत्र मुझे 12 तारीख को मिला था। मैं आपके 17 अप्रैल के पत्र का उत्तर पहले ही दे चुका हूं। मुझे बहूदीदी का 29 अप्रैल का पत्र मिल गया है।

मैं पाता हूं कि साप्रदायिक बवडर बगाल के सभी भागो मे फैल रहा है। सम्पूर्ण काड बहुत ही खेदजनक है और जरा सोचिए कि देशबधु को दिवगत हुए अभी पूरा वर्ष भी नहीं बीता है। मुझे आशा है कि इस सारी गडबडी के कारणो की बारीकी से जांच की जाएगी। स्पष्ट है कि यह विस्फोट पूरी तरह से आकस्मिक नहीं है। तनावपूर्ण संबंध अवश्य ही टूटने की अवस्था तक पहुचे होगे और आग भडकने के लिए सिर्फ एक चिगारी की जरूरत रही होगी। एकमात्र जो व्यक्ति अपने विशाल हृदय के कारण साप्रदायिक विद्वेष की भावना को शात कर सकता था, वह हमारे बीच नहीं है और हम अपने को निराश्रित अनुभव कर रहे हैं।

मुझे रगून के अखबारो से मालूम हुआ है कि ऐल्डरमैन और कौंसिलरों ने डिप्टी मेयर के इस्तीफे की मांग की है। मैं जानने को उत्सुक हूं कि उनके पुन चुने जाने के एक महीने के अंदर ही यह असाधारण कदम क्यों उठाया गया? क्या इसके पीछे किसी रूप मे साप्रदायिक गड़बड़ी है?

जब एक ओर अलीबंधु और दूसरी ओर स्वामी श्रद्धानद उत्तेजक भाषण दे रहे हैं तो सभी लोगो को शांत रहने तथा एक-दूसरे के निकट आने की बहुत आवश्यकता है। मेरा निजी विचार यह है कि सांस्कृतिक निकटत्व के बिना स्थाई एकता सभव नहीं है। हिंदू और मुसलमान सांस्कृतिक दृष्टि से इतने अलग-अलग हैं कि उनके लिए पारस्परिक आदर और सद्भाव के आधार पर एकता स्थापित करना कठिन है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सर बी सी मित्र और श्री सरकार को मेरी ओर से वकालत करने के लिए सभी बातें समझा दी गई हैं। मुझे अखबारो से पता चला है कि न्यायाधीश बकलैंड द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या बदी कानून वर्तमान मामले में लागू माना जाएगा, श्री सरकार ने इस मुद्दे पर विचार के लिए समय चाहा है।

मुझे यह जानने की उत्सुकता है कि प्रतिवादी अपना पक्ष किस प्रकार रखना चाहते हैं। क्या आपको इस संबंध में कछ संकेत मिला है? उन्होंने अपने लिखित बयान में कहा है कि उन्होंने जो कुछ कहा है वह सारांशत: और तथ्यात्मक रूप में सही है। क्या वे तथाकथित मानहानि को सत्यता सिद्ध करने का प्रयास करेंगे अथवा वे केवल सरकार के प्रमुख सदस्यों के सार्वजनिक वक्तव्यों पर आधारित युक्तियुक्त टिप्पणी का सहारा लेंगे? मुझे मानहानि के युक्तियुक्त कारणों के रूप में दो बातें प्रतीत होती हैं : (1) कि मैं एक क्रांतिकारी षड्यंत्र का 'सदस्य' हूं, और (2) मैं 'निर्देशक मस्तिष्क' हूं आदि। इसके अंतर्गत पहली चीज भी निस्संदेह शामिल है। प्रतिवादी यह आग्रह कर सकते हैं कि सरकारी अधिकारियों के भाषणों से उनको आरोप लगाने के लिए कुछ औचित्य मिला था— लेकिन उनके दृष्टिकोण से भी मानहानि के अंतर्गत दूसरी बात के लिए कोई औचित्य नहीं खोजा जा सकता। इसलिए यह असंदिग्ध रूप से स्पष्ट है कि जो बयान विवाद का विषय है, उसे देते हुए उन्होंने आगा-पीछा नहीं सोचा था।

मेरे पास अर्जीदावा तो नहीं है, लेकिन प्रतिवादियों द्वारा दाखिल किए गए लिखित बयान की एक प्रति मेरे पास है। कृपया मुझे अर्जीदावे की एक प्रति भेज दें। मुझे पता चला है कि यहां सभी प्रमुख वकील बंगाली हैं। वे अपने ढंग से काफी होशियार होंगे, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि वे वर्तमान उद्देश्य की पूर्ति के लिए यथेष्ट होंगे या नहीं। जो भी हो, उन्हें कलकत्ता के हमारे कानूनी प्रतिनिधियों से, जिन्हें प्रतिवादियों के बारे में हमसे अधिक जानकारी होगी, निर्देश लेने होंगे। अगर मुझे बचाव पक्ष के रुख के बारे में कुछ अंदाजा हो तो मैं भी उपयोगी निर्देश दे सकता हूं। मुझे अपने प्रमुख साक्ष्य से पहले अपने वकीलों से भेंट करना जरूरी है और यह भेंट एकांतिक होनी चाहिए। इसके बारे में सरकार से पहले ही से प्रबंध करना जरूरी होगा, जिससे बाद में भेंट के समय कोई कठिनाई न उठ खड़ी हो। मैं आपको सोमवार को फिर पत्र लिखूंगा (आज शुक्रवार है) और इस बीच मैं स्थानीय वकीलों के बारे में और ज्यादा जानकारी एकत्र करने का प्रयत्न करूंगा। क्या प्रतिवादी कलकत्ता से कोई वकील भेजेंगे या क्या वे केवल हमारी कार्रवाई को स्वीकार कर लेंगे? अगर वे कलकत्ता से वकील भेजें तो हमें भी अवश्य भेजना चाहिए। क्या कोई ऐसा वकील होना जरूरी है जो स्वाधीन-चेता हो, या किसी भी होशियार वकील से काम चल जाएगा?

मुझे गड़बड़ी की आशंका क्यों है इसे बताता हूं। बंगाल सरकार ने कतिपय नियम बनाए हैं जो महज कागज पर ही हैं और जिन्हें कभी लागू नहीं किया गया है। अगर उन्हें कहीं भी लागू करने की कोशिश की जाए तो गड़बड़ी अवश्य पैदा होगी। एक नियम यह है कि जेल की कोठरियों की रोज तलाशी ली जाए। अभी हाल में आई. जी. प्रिजन्स से यह आदेश प्राप्त हुआ कि उक्त नियम को लागू किया जाए। मैंने इस मामले के बारे में सुपरिंटेंडेंट से बातचीत की और उससे कहा कि यह आदेश अनावश्यक है और उससे अप्रिय वातावरण ही बनेगा। उसने बहुत समझदारी दिखाई और वह मुझसे सहमत था। तब से शायद इस विषय को लेकर उसके और आई. जी. प्रिजन्स के बीच लिखा-पढ़ी

चल रही है- क्योंकि हमें इसके बारे में और कुछ सुनने को नहीं मिला है और इस बीच नियम को लागू नहीं किया गया है। एक-दो और भी मुद्दे हैं जिनके बारे मे मैं अपने अगले पत्र मे लिखूगा।

यहा बहुत गर्मी पड रही है- लेकिन आपको ज्यादा चितित नहीं होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हमारे सामने जब कभी कोई अग्नि-परीक्षा होती है तो हमको उसका सामना करने के लिए शक्ति भी प्रदान की जाती है जिससे हम उस स्थिति से सुरक्षित उबर सकें। मेरा वजन एक माह से अधिक समय से 145 पौंड के आसपास चल रहा है। भगवान को धन्यवाद है कि मैं अपने आपको कोई भी कठिनाई झेल सकने योग्य पाता हू।

कृपया मैनेजर, महाबोधि जर्नल, 4 ए, कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता को लिख दे कि वे आपको बिक्री योग्य अपनी पुस्तको की सूची भेज दे जिसे आप मुझे प्रेषित कर द।

मैं श्रीमती दास को पहले ही पत्र लिख चुका हू। दुर्भाग्य से उनके पत्र का उत्तर देने मे कुछ विलब हुआ। क्या आप उन्हे देशबधु की जीवनी लिखने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते? इससे वे व्यस्त भी रह सकेंगी और उन्हें सात्वना भी मिलेगी। अगर वे स्वय पुस्तक नहीं लिखना चाहतीं तो वे सहायक सामग्री पुस्तकाकार म एकत्र कर ले और तब मैं यह काम हाथ में ले सकता हू, हालाकि मैं शायद उस महान आत्मा के प्रति पूरा न्याय न कर सकू।

क्या पैसा खर्च करके अथवा अन्य उपायों से 'नारायण' का पूरा सेट प्राप्त करना सभव है? मुझे उसकी जरूरत है। हो सकता है कि कुछ लोगो के पास पूरा सेट सुरक्षित हो और अगर उनसे अनुरोध किया जाए तो वे देने के लिए राजी हो जाए। क्या 'फारवर्ड' मे पत्र या विज्ञापन देने से कोई फायदा होगा?

क्या हेमेन्द्र बाबू ने देशबधु की जीवनी प्रकाशित कर दी है? पृथ्वीश बाबू द्वारा लिखित जीवनी कब छपने जा रही है?

मुझे पता चला है कि कलकत्ता के कुछ पत्रो को दफा 108 सी पी सी के तहत नोटिस दिया गया है। क्या मामला है और अब क्या स्थिति है?

राजनैतिक सघर्ष की धमाचौकडी के बीच देशबधु के मिशन को भुला दिया गया है। उनकी राजनैतिक गतिविधियों ने सार्वजनिक दृष्टि के सम्मुख चकाचौंध उत्पन्न कर दी है। उनके मिशन के वास्तविक स्वरूप को समझ पाना तब तक असभव रहेगा जब तक लोगो के सामने वर्तमान राजनीति आडे आ रही है। कला और साहित्य— और सामान्यत सस्कृति के क्षेत्र में उनका नेतृत्व एक स्थाई थाती के रूप में उपलब्ध प्रतीत होता है। दुर्भाग्यवश जो लोग उनके राजनैतिक अनुयायी होने का दावा करते हैं व उनके सास्कृतिक मिशन के प्रति अनभिज्ञ हैं— और जिन्होने उनके सास्कृतिक मिशन को अनुभूत किया है वे लगातार राजनीति से सकोच करते रहे हैं। परिणमत सस्कृति और

राजनीति एक-दूसरे से अलग जा पड़े हैं और उनमें समन्वय का अभाव है, जिस पर देशबंधु का इतना ज्यादा जोर रहता था। आज हमें जिस चीज की बहुत ज्यादा आवश्यकता है, वह है प्राचीन और मध्यकालीन बंगाली संस्कृति का पुनरुत्थान जो इतिहास, साहित्य और कला के अधिक गहन अध्ययन द्वारा लाया जा सकता है। इस प्रकार का पुनरुत्थान ही भविष्य में सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का वास्तविक आधार बन सकता है— ठीक वैसे, जैसे कि आधुनिक यूरोप के लिए क्लासिकी का पुनरुत्थान नींव के समान सिद्ध हुआ था। आज के समाज और संस्कृति में— स्वदेशी और असहयोग के बावजूद— बहुत कुछ ऐसा है जो विदेशी है और उसे कभी भी ठीक ढंग से आत्मसात नहीं किया जा सकेगा। इन फोड़े-फुंसियों को काटकर अलग कर देना होगा और इमर्सन के शब्दों में, हमें पूरी तरह से आंतरिकता का जीवन जीना होगा और बाहर से आने वाली हर चीज को एक स्वस्थ अंग की तरह आत्मसात करना होगा। 'नारायण' ने— और जिस विचारधारा का उसने प्रतिपादन किया है— उसने हमारी सांस्कृतिक चेतना को नया जीवन देने के लिए बहुत कुछ किया है और अगर उसका असमय अंत न हो जाता तो उसने हमारे सांस्कृतिक विचारों में पूरी तरह क्रांति कर दी होती।

लेकिन मुझे लगता है कि मैं बहक रहा हूं। और मुझे अब कलम रोक देनी चाहिए।

चितरंजन सेवा सदन का काम कैसा चल रहा है ? कौन लोग उस संस्था की देख-रेख कर रहे हैं? क्या श्रीमती दास श्री हालदार के यहां रह रही हैं? भोम्बल कहां हैं?

हां, मैं भी सोच रहा था कि क्या हमें 'कैथोलिक हेराल्ड' से खर्च वसूल नहीं करना चाहिए?

आशा है, आप सब सकुशल होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

195 शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

4 6 26

कृते डी आई जी आई बी सी आई डी

बगाल।

माडले

26 5 26

भेजा 28 5 26

एस सी बी

सलग्नक

दो पत्र जिनमें से एक मुद्रित है।

एस सी बी

प्रिय दादा

मैंने कल के रगून के अखबारा म देखा कि 'द स्टेट्समैन वाला मुक्दमा सुनवाई के लिए हाईकोर्ट मे आया था और सुनवाई तीन सप्ताह के लिए स्थगित कर दी गई। मैं हैरान हू कि जब कि प्रतिवादी युक्तियुक्त टिप्पणी का सहारा लेने जा रहे हैं तो उन्होंने स्थगन के लिए क्या आवेदन किया। मैं द कैपिटल' (ए डिचर्स डायरी) के 20 मई के अक से उद्धरण दे रहा हू, 'श्री जेम्स द्वारा न्यायमूर्ति बकलैंड के समक्ष अर्जी उस समय दी गई जब 'फारवर्ड' म कलकत्ता कार्पोरेशन के मुख्य कायपालक अधिकारी श्री सुभाष चन्द्र बोस के सबध में द स्टेट्समैन' के स्वर्गीय सपादक जे ए, जेम्स का अपने उत्तराधिकारी श्री रे नाइट के नाम एक बडा दिलचस्प पत्र छपा— स्मरणीय है कि न्यायमूर्ति श्री कोतजनर तथा न्यायमूर्ति श्री ग्रेगरी के निर्णय के अनुसार श्री बोस की कैथोलिक हेराल्ड ने मानहानि की है कालेज स्क्वायर म कुछ लोगो के अनुसार भी उस रात श्री जेम्स के जल्दबाजी मे शिमला रवाना होने क पीछे शायद 'औचित्य का सिद्धान्त था लेकिन अब हमें मालूम हुआ है कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी। कृपया मुझे लिखे कि उक्त तथ्य कहा तक सही हैं।

वैद्यशास्त्र पीठ को वार्षिक अनुदान पुन देने का समय सभवत निकट आ रहा है। श्यामदास कविराज ने हाल म अपने एक पत्र म चलते चलते यह उल्लेख किया है कि जामिनी बाबू बहुत सक्रिय रहे हैं और कौंसिलरों को अपने पक्ष म करने म सफल रहे हैं। वे यह भी कहते हैं कि नृपेन बाबू और रामप्रसाद उनके (श्यामदास कविराज के) कालेज के बहुत ज्यादा विरुद्ध हैं। तथ्य जैसा कि आप जानते हैं यह है कि जामिना बाबू बहुत होशियार लोगो म हैं और पक्ष प्रचार की अच्छी तरकीब जानत हैं और कुछ

कौंसिलर (जैसे बाबू जोगेश सी. सेन, जिनके भाई एक कविराज हैं) विभिन्न निजी कारणों से जामिनी बाबू के कालेज में दिलचस्पी रखते हैं। मैंने जामिनी बाबू को हमेशा ही एक नीम-हकीम माना है— वे आधे कविराज और आधे एलोपैथ हैं— और मैं नहीं समझता कि जिस किसी भी संस्था के वे सर्व-सर्वा होंगे उस संस्था से योग्य चिकित्सक निकल सकेंगे। खतरा यह है कि कौंसिलर आयुर्वेद संबंधी मामलों में इतनी कम दिलचस्पी रखते हैं कि उन्हें आसानी से जामिनी बाबू के पक्ष में मत देने के लिए प्रभावित किया जा सकता है और इस प्रकार वैद्यशास्त्रपीठ का बंटाधार हो सकता है।

हम आगामी अगस्त में पहनने के लिए कश्मीरी माल खरीदने की बात सोच रहे हैं। हमारा वित्तीय वर्ष अगस्त में आरंभ होता है और लगभग उन्हीं दिनों में कपड़ों का भत्ता उपलब्ध होगा। पिछले साल हम स्वदेशी चीजें नहीं खरीद सके थे, क्योंकि कश्मीर से उन्हें लाने का समय नहीं था। इस वर्ष हम समय रहते प्रबंध कर लेना चाहते हैं। हम कुल मिलाकर कम से कम 700 रुपये (सात सौ रुपये) के कपड़े खरीदेंगे (कमीजों, कोट और रैपरों के लिए)। क्या आप ताजा दामों के साथ कुछ नमूने भेज सकते हैं? क्या हमें वे कुछ रियायती मूल्य में मिल सकते हैं?

मुझे अपनी गिरफ्तारी से कुछ समय पहले एक धमकी भरा पत्र मिला था। वह पत्र मेरी गिरफ्तारी के समय पुलिस अन्य कागजात के साथ ले गई, लेकिन शायद अब उसे लौटा दिया गया है। क्या उसको 'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध मुकदमे के सिलसिले में काम में लाया जा सकता है? 'स्वराज' पार्टी का मैं अकेला ही सदस्य नहीं हूं जिसे ऐसा पत्र मिला है। अगर जैसा कि सरकार का आरोप है, मैं आतंकवादी षड्यंत्र में शामिल रहा हूं तो मेरी जान लेने की धमकी क्यों दी गई?

मैं फिट्ज विलियम हाउस से प्राप्त पत्र लौटा रहा हूं। मैं समझता हूं कि मैं 'मास्टर' की डिग्री ले ही लूं, क्योंकि उस पर कुल खर्च 9 पौंड 3 शि. ही पड़ेगा। मैं बर्सर के लिए एक पत्र साथ भेज रहा हूं जिसे आप उक्त राशि के साथ भेज देंगे।

मुझे शीघ्र कुछ किताबों की जरूरत होगी। मैं आपको एक-दो सप्ताह में उनकी सूची भेज दूंगा।

आशा है, आप सब बिल्कुल ठीक होंगे। मैं ठीक ही हूं।

गोपाली की परीक्षा कैसी रही है?

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

श्री एस. सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

सलग्नक

फिट्ज विलियम हाउस,
ट्रम्पिंगटन स्ट्रीट
कैम्ब्रिज

प्रिय महोदय,

मैं आपको स्मरण दिलाना चाहूंगा कि अब आप कला विषयों मे 'मास्टर' की डिग्री लेने के लिए तैयारी कर सकते हैं। इस सबध में आपकी सुविधा के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है

		पौंड	शि	पेस
फीस	*विश्वविद्यालय को*	3	0	0
	(अगर 1915 के लेट सत्र से पहले का मैट्रिकुलेट हो)	6	0	0
	(अनुपस्थिति म डिग्री के लिए अतिरिक्त शुल्क)	3	0	0
	फिट्ज विलियम हाउस को	3	3	0

कार्य विधि

1 यह सूचना पाने के लिए मुझे लिखिए कि आगामी सत्र के काग्रीगेशन (सामूहिक अध्ययन) के दिन कौन से होंगे। (*वे आम तौर पर एक पखवाड़े में* शुक्रवार या शनिवार होते हैं और प्राय सदा दोपहर *2* बजे से होते हैं)

2 जब आप दिन का चुनाव कर चुके तो आप आकर मिलेंगे या मुझे लिखित सूचना भेजेगे जिसके साथ 3 पौंड 3 शिलिग की फीस भी होगी और तब मैं वापसी में आपको प्रबध का ब्यौरा और प्रार्थना-पत्र भेजूगा।

3 अगर आप अनुपस्थित रहकर कार्रवाई करना चाहें तो आपको कुल फीस (9 पौंड 3 शि. या 12 पौंड 3 शिलिग — जो भी लागू हो) प्रार्थना-पत्र भेजने से पहले भेज देनी चाहिए। आपको अपनी अनुपस्थिति का कारण भी बताना चहिए।

4. कांग्रेगेशन के दिन आपको रजिस्टर में आकर हाजरी के लिए हस्ताक्षर करने चाहिएं और विश्वविद्यालय की फीस नकद देनी चाहिए।

आपका विश्वस्त,
वाल्टर हार्वी
बर्सर

स्थाई पता—
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
दिनांक मई 1926

सेवा में,

बर्सर,
फिट्ज विलियम हाउस,
कैम्ब्रिज

प्रिय महोदय,

मुझे आपका वह पत्र मिल गया है जिसमें मुझे सूचित किया गया है कि अब मैं 'मास्टर' की डिग्री ले सकता हूं। मैं आपको 9 पौंड 3 शिलिंग (विश्वविद्यालय—3 पौंड; फिट्ज विलियम हाउस—3 पौंड 3 शिलिंग; अनुपस्थिति में डिग्री के लिए अतिरिक्त शुल्क-3 पौंड) भेज रहा हूं जिससे आप मेरी ओर से आवश्यक भुगतान कर सकें।

मैं इस समय इंग्लैंड से बाहर हूं और निकट भविष्य में मेरे वहां जाने की आशा नहीं है। इसलिए मुझे खेदपूर्वक कहना पड़ रहा है कि मैं अनुपस्थिति वाली व्यवस्था का सहारा लूंगा। मैं अत्यंत आभारी होऊंगा, यदि आप तदनुसार प्रबंध कर दें।

धन्यवादपूर्वक,

मैं हूं,
आपका विश्वस्त,
एस.सी. बोस

196. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
15-6-26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बंगाल।

माडले
7-6-26

प्रिय दादा,

मुझसे यू था ग्वे ने अनुरोध किया है कि मैं उनके एक संबंधी श्री एम एस ग्वे को कारमाइकेल मेडिकल कालेज में प्रवेश पाने मे सहायता दू। यू था ग्वे माड निवासी हैं और बैरिस्टर हैं तथा हमारे एक गैर-सरकारी निरीक्षक और भद्र व्यक्ति हैं। मुझे पता चला है कि उनके संबंधी श्री एम एस ग्वे इन दिनो कलकत्ता म हैं और प्रवेश के लिए प्रयास कर रहे हैं। वे आपसे शायद अगले कुछ दिनों में मिलगे। सुपरिंटेंडट की अनुमति से मैंने आपको आज सवेरे एक तार भेजा है, जिसमें आपसे अनुरोध किया है कि आप श्री ग्वे को मदद करे। मुझे विश्वास है कि आप अभी भी कारमाइकेल कालेज की प्रबंध समितियों मे कार्पोरेशन के प्रतिनिधि हैं और आप वहा अपने प्रभाव से काम ले सकते हैं। मैंने डा विधानराय को भी तार भेजा है और आज की डाक से पत्र भी भेज रहा हू।

श्री एस सी बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

197. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
23-6-26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
21 जून 1926

प्रिय सुभाष,

मुझे तुम्हारा 7 तारीख का पत्र 15 तारीख को मिला। मुझे तुम्हारा 18 तारीख का तार भी मिल गया था।

बैरिस्टर ग्वे पिछले दिनों कलकत्ता आए थे और मुझसे दो बार मिले। वे डा. बी.सी. राय से भी मिले। उनके पुत्र ने (डा. राय के परामर्श से) सिंडिकेट को एक आवेदन दिया है जिसमें मेडिकल कालेज में भर्ती होने के लिए अनुमति मांगी गई है, यद्यपि वह आई.एस.सी. भी उत्तीर्ण नहीं है। उसने हांगकांग विश्वविद्यालय में तीन वर्ष तक चिकित्सा शिक्षा पाई है।

मैंने श्री ग्वे को (रजिस्ट्रार) श्री ज्ञान बाबू के नाम परिचय-पत्र दे दिया है। मुझे अभी नहीं मालूम कि ज्ञान बाबू ने उनसे क्या कहा। श्री ग्वे को उसी दिन बर्मा लौटना था पर उनके पुत्र को आकर मुझे बताना था कि क्या हुआ।

मैं इस वर्ष कारमाइकेल कालेज की प्रबंध समिति में नहीं हूं। मैंने सुना है कि कारमाइकेल कालेज में कोई रिक्त स्थान नहीं है। इसलिए अगर श्री ग्वे के पुत्र को प्रवेश की अनुमति मिल जाती है तो उसे कलकत्ता मेडिकल कालेज में भर्ती होने की कोशिश करनी होगी।

मेरा विचार है कि मैंने तुम्हें गत माह तीन पत्र लिखे थे—3, 5 और 27 मई को। क्या वे सब तुम्हें मिल गए हैं?

कल बकरीद है। मुझे आशा है कि कोई गड़बड़ी नहीं होगी, यद्यपि अफवाह गर्म है कि कुछ जगहों में ऐसा हो सकता है।

इस आशंका से हमें बंगाल हिंदू-मुस्लिम समझौते पर सोचने के लिए विवश होना पड़ता है। बड़ी सावधानी से इस पर विचार करने और वर्तमान में समझौते के प्रति हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों के रुख को समझने के बाद (और यह रुख बदलेगा ऐसा नहीं लगता), हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि बंगाल समझौते को आहिस्ता-आहिस्ता भुलाना होगा और जल्द कांग्रेस को अथवा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को या कार्य समिति को अखिल भारतीय आधार पर हिंदू-मुस्लिम समस्या का कोई हल खोजना होगा। हमने गत शनिवार को अखबारों में एक बयान जारी किया और मुझे विश्वास है कि वह रंगून के समाचार-पत्रों में भी छपेगा।

हमें विश्वास है कि अगर आगामी चुनावों में सेनगुप्ता यह आवाज उठाते हैं कि 'हम बंगाल समझौते के साथ उठेंगे या गिरेंगे' तो उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी। हिंदू-मुस्लिम एकता पुनः स्थापित करने के लिए गंभीरता से प्रयास तो अवश्य किया जाना चाहिए, लेकिन बंगाल हिंदू-मुस्लिम समझौते को जनता के समक्ष रखना बहुत विवेकहीन बात होगी। गुहाटी कांग्रेस में या संभव हो तो उससे पहले ही समझौते के बारे में किसी सहमति पर पहुंचना होगा, लेकिन एक ऐसे समझौते में जान फूंकने की कोशिश का कुछ नतीजा नहीं निकलेगा, जिसकी निंदा दोनों ही संप्रदायों ने की है।

हम अपने घोषणा-पत्र के बारे में तुम्हारी राय जानना चाहेंगे।

'द स्टेट्समैन' के विरुद्ध तुम्हारा मामला अगले बुधवार को सुनवाई के लिए पेश हो रहा है।

आशा है, तुम बेहतर होगे।

सस्नेह तुम्हारा,
शरत

श्री सुभाष सी बोस

198. अमूल्य चरण उकील के नाम *

माडले
(द्वारा डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,)
13 इलीसियम रो,
कलकत्ता

(11-6-26 को प्राप्त)

श्रद्धेय डा उकील,

अचानक आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। यह मनुष्य-स्वभाव की एक कमजोरी है कि अगर अन्य जन उसका अभाव अनुभव करे तो उसे यह सुनकर बहुत आनद आता है। इसी दुर्बलता का उल्लेख अलेक्जेंडर शेल्कर्क की कविता की इन पक्तियों में किया गया है

क्या मेरे मित्र कभी-कभी
मेरे विषय मे कोई बात सोचते हैं या कोई इच्छा करते हैं ?

आपने जो लिखा है, यह अत्यत सही है—जेलखाने मे आने के बाद मुझे साधना का खूब अवसर मिला है। किंतु यह दुख का विषय है कि शारीरिक अस्वस्थता के कारण मैं इस सुयोग का आशानुरूप उपयोग नहीं कर पाया। करने के लिए काम बहुत है, लेकिन तदनुरूप मेरा शारीरिक सामर्थ्य नहीं है। यहा आने के बाद अनेक प्रकार की बातें मैंने सीखी हैं और अभिज्ञता प्राप्त की है, लेकिन पाचन शक्ति की कमी के कारण अधिक परिश्रम करने की क्षमता कम हुई है। यहा रहते हुए यथेष्ट शारीरिक स्वास्थ्य-लाभ हो पाएगा, इसकी आशा कम ही है।

यह जानकर मुझे दुख हुआ है कि कार्यकर्ताओं में सयम और अनुशासन की भावना का ह्रास हुआ है। अखबारो में जो कुछ पढने को मिला है, उससे मुझे यही आभास मिलता है। ऐसा लगता है कि आज सभी नेता बन गए हैं—कोई किसी नेता की बात

* मूल बगला से अनूदित।

नहीं मानना चाहता। यह किसका दोष है कि आज बंगाल में ऐसा कोई भी नहीं है जिसे नेता कहा जा सके। यहां न कोई नेता है, न कार्यकर्ता।

यह सच है कि कार्यकर्ताओं में आज न निष्ठा है, न अध्यवसाय। यह बात भी सही है कि जो कोई भी किसी कार्य को साधना के रूप में नहीं ले सकता, वह सच्चा कार्यकर्ता नहीं हो सकता। लेकिन मनुष्य के सिवाय मनुष्य का निर्माण और कौन करेगा? कांग्रेस की राजनीति इन दिनों इतनी अयथार्थ हो चुकी है कि किसी भी सच्चे व्यक्ति को उससे संतोष नहीं हो सकता। इस स्थिति को देखने के बाद जो कोई भी कुछ काम करना चाहता है, वह शायद कौंसिल के साथ कोई संपर्क नहीं रखना चाहेगा। हमारे सामने ये तीन प्रमुख समस्याएं हैं :—(1) स्वास्थ्य की समस्या, (2) मध्यवित्त श्रेणी वालों के लिए अन्न की समस्या, और (3) कृषि की समस्या।

स्वास्थ्य-समस्या के विषय में कालिक की पुस्तक 'फिजिकल एफीशिएंसी', मैकडूगल कृत 'नेशनल वेलफेयर एंड नेशनल डिके' तथा अन्य अनेक पुस्तकें पढ़ने से मुझे बहुत-सी जानकारी मिली है। अंग्रेजों का स्वास्थ्य हमारी अपेक्षा बहुत ज्यादा अच्छा है, लेकिन वे भी गत 20-25 वर्षों से बराबर प्रयास करते आ रहे हैं कि उनकी शारीरिक और राष्ट्रीय क्षमता में वृद्धि हो। इस अवधि में कई राष्ट्रीय स्वास्थ्य कमीशन नियुक्त किए गए, जिनका उद्देश्य यह जानकारी पाना था कि अंग्रेजों का स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा अच्छा हुआ है या गिरा है, और अगर गिरा है तो उसके क्या कारण हैं और इन कारणों को कैसे दूर किया जा सकता है। लेकिन हमारे देश में इस विषय में कोई सम्मिलित खोज नहीं की गई है—यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी। इसके विपरीत, हमारा स्वास्थ्य दिनोंदिन और गिरता जा रहा है। मेरी राय से हमारे देश में भी मुलर के व्यायाम को बड़े पैमाने पर शुरू करना चाहिए। इसके द्वारा बिना किसी खर्च के शारीरिक क्षमता बढ़ाई जा सकती है और मैं महसूस करता हूं कि यह प्रणाली हमारे देश के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। मैंने स्वयं इससे कुछ लाभ उठाया है और इसीलिए भरोसे के साथ यह बात कह सकता हूं। मुलर-प्रणाली की एक और विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के लिए अलग-अलग व्यायाम बताए गए हैं। हां, प्रणाली अवश्य एक ही है। आप चाहें तो इसका कुछ प्रचार कर सकते हैं।

अगर हमने देश के सभी वैज्ञानिकों और उद्योगपतियों को एकजुट नहीं किया और उनके समवेत प्रयास द्वारा मध्यवित्त श्रेणी की अन्न-समस्या का समाधान करने की चेष्टा नहीं की तो मुझे लगता है कि भविष्य में हम अनाहार मृत्यु का वरण करेंगे। देश की वर्तमान अवस्था में अगर मध्यवित्त श्रेणी का लोप हो जाता है तो हमारा राष्ट्र सदा के लिए पंगु हो जाएगा।

हमारी कृषि-समस्या का समाधान सहकारिता द्वारा ही हो सकता है, अन्य किसी प्रकार से नहीं। सहकारी बैंक की आवश्यकता अवश्य है, लेकिन केवल बैंक से काम चलने वाला नहीं है। कृषकों के उत्पादन खर्च में कमी के लिए उन्हें बीज, उर्वरक, हल, बैल आदि सहकारी व्यवस्था द्वारा मिलने चाहिए, तभी वे उत्पादन बढ़ा सकेंगे। इसके

बाद खेती की उपज की बिक्री एकाधिकारवादियो के जरिए न होकर सहकारिताओं के द्वारा होनी चाहिए जिससे उसके लिए अधिक मूल्य मिल सके। अगर अन्न-समस्या के समाधान के लिए देश के सामान्य लोग सहयोगिता तथा एकतापूर्वक प्रयास नहीं करेंगे तो किसी भी अन्य महान कार्य के लिए सहयोग नहीं कर पाएगे। और अगर ये दो मुट्ठी भात के लिए सहयोगितापूर्ण प्रयास के अभ्यासी बनेंगे और उसका हाथाहाथ फल पाएगे तो वे किसी भी बडे उद्देश्य के लिए भी एकजुट होकर काम कर सकगे। अगर सहयोग द्वारा कृषि और स्वास्थ्य-समस्या का समाधान नहीं होता तो देश की उन्नति सभव नहीं। हमारी सबसे ज्यादा कमी हममें पहल करने की शक्ति का अभाव है। सहयोगितापूर्वक काम करते-करते पहल करने की क्षमता भी सभी के अदर पैदा होगी और अगर राष्ट्र में यह क्षमता उत्पन्न हो गई तो राष्ट्र-निर्माण मे कोई देरी नहीं लगेगी। मुझे नहीं लगता कि सरकार की सहायता से चिकित्सालयों की सख्या में वृद्धि करने से कोई विशेप लाभ होगा—कारण यह है कि इससे देशवासियो में पहल करने की क्षमता जागृत नहीं हो पाएगी। इससे उन्हे कर्म की प्रेरणा तो मिलेगी ही नहीं उनमे सरकार पर और ज्यादा निर्भर होने की आदत पडेगी। यह अवश्य है कि अस्पतालो और डिस्पेसरिया का सामयिक प्रयोजन की पूर्ति के लिए होना अच्छा है, लेकिन मेरा विचार है कि हमारा उद्देश्य होना चाहिए—देशवासियो में कर्म की प्रेरणा उत्पन्न करना तथा इस प्रकार सम्मिलित प्रयास द्वारा स्वास्थ्य, अन्न और कृषि की समस्याओ का समाधान खोजना।

मेरा विश्वास है कि यदि श्रमजीवी शिक्षण परिपद्, बगीय स्वास्थ्य समिति तथा इसी प्रकार के अन्य जातीय प्रतिष्ठान अगर इस मार्ग को अपनाए तो हम उनके द्वारा उक्त उद्देश्य प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इन सब सस्थाओं को सभी सभव सहायता दी जानी चाहिए। ये सभी छोटी-छोटी सस्थाए एक दिन बडी राष्ट्रीय सस्थाए बन जाएगी।

आपने कार्पोरेशन के बारे में जो लिखा है वह सच है। उसका स्वास्थ्य विभाग मुख्यत एक सरकारी विभाग के समान है। जब तक उस विभाग का लोकतत्रीकरण न हो जाए, तब तक कोई भी उपलब्धि सभव नहीं है। वार्ड हैल्थ एसोसिएशनों के जरिए काम किया जा सकता है, लेकिन दुख का विषय है कि कोई भी ऐसा एसोसिएशन आज तक सजीव नहीं बन पाया है। इसका कारण है सहयोगिता और कर्म-प्रेरणा का अभाव।

मेरी जब भी रिहाई होगी, मैं भविष्य के कार्य के सबध में खूब स्पष्ट विचार लेकर आऊगा।

खद्दर की स्थिति क्या है? उसके मूल्य बढे हैं या घटे हैं। यहा तो उसके मूल्य बेतहाशा बढे हुए हैं। विधु वापस आ गया है यह जानकर प्रसन्नता हुई। वह अब कहा काम करेगा?

जातीय आयुर्विज्ञान पत्रिका को पाकर खुशी हुई। पत्रिका का रग रूप सुदर है। मैंने नहीं सुना था कि मेडिकल या कारमाइकेल कालेज से ऐसी पत्रिकाए प्रकाशित होती हैं। कुछ लेख गभीर शोध पर आधारित लगे। छपाई भी अच्छी है। मुझे आशा है कि ... लोगो की सपत्ति नहीं बन जाएगी—तथा सभी का

योगदान इसमें रहेगा। छात्रों को लिखने की प्रेरणा देकर बहुत अच्छा काम किया गया। छात्रों को प्रबंध देना (चाहे वे अच्छे हों या हल्के), इस पत्रिका की स्थाई विशेषता बन जानी चाहिए।

आशा करता हूं कि आप सब सानंद होंगे। मैं ठीक हो हूं। आपको जब भी अवसर हो, पत्र लिखेंगे। उसे पाकर बहुत प्रसन्नता होगी। मेरी श्रद्धा स्वीकार करेंगे।

सुभाष चन्द्र बोस

पुनश्च:

मैंने सुना है कि जातीय आयुर्विज्ञान विद्यालय के छात्रों ने अपने कालेज को संबद्ध कराने की मांग लेकर हड़ताल कर दी है। मैं निजी तौर पर संबद्धता का विरोधी हूं और मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि अगर कालेज संबद्ध हो तो कार्पोरेशन उसे क्यों इतनी अधिक सहायता प्रदान करे? इस विषय में छात्रों को अपनी बात जबरन मनवाने का कोई अधिकार नहीं है। कारण कि जब उन्हे प्रवेश दिया गया था तो पूर्णतः कालेज की वर्तमान अवस्था के आधार पर दिया गया था। वे जानते थे कि यह कालेज संबद्ध नहीं है और कोई संभावना भी नहीं है कि वह संबद्ध होगा। जैसे-जैसे कालेज की हालत बेहतर होती जाती है, गुलामी की प्रवृत्ति सर उठाती जाती है। कृपया मेरी राय सुंदरी बाबू और कुमुद शंकर बाबू को बता दें।

आपका,
सुभाष

199. शरत चन्द्र बोस के नाम

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
25-6-26
कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,
बंगाल।

मांडले
17-6-26

प्रिय दादा,

आपका 27 मई का पत्र मुझे 8 तारीख को मिला, यद्यपि उसे 31 तारीख को सेंसर और पास किया गया था। मुझे आपके लिखने से पता चलता है कि कभी-कभी मेरे पत्रों को आप तक पहुंचने में एक पखवाड़े का समय लग जाता है। जब मैं इंग्लैंड में था

तो मुझे यहा की डाक पद्रह दिन में मिल जाया करती थी। लेकिन शिकायत करने से कोई लाभ नहीं होगा।

अखबारों से मुझे पता चला है कि अभी बकलैंड कुछ अन्य न्यायाधीशो के साथ शीघ्र छुट्टी पर जाने वाले हैं। अगर ऐसा हुआ तो द स्टेट्समैन वाले मामले की सुनवाई किसी अन्य जज को करनी होगी। अगली सुनवाई कब तक होने वाली है? विचाराधीन राजनैतिक बदियो को अपने वकीलो से एकात में भेट करने की अनुमति देने की परपरा चलती आई है। इसके बारे मे मैं बिल्कुल निश्चित हू, क्योकि मेरे अपने विचार की पुष्टि उन लोगो के मामले को देखने के बाद हुई है जिन्हे इसका प्रत्यक्ष अनुभव है। इन परिस्थितियों में मैं कोई कारण नहीं देखता कि सरकार मेरे साथ उससे भी ज्यादा खराब व्यवहार करे जो वह किसी षड्यत्र के मामले मे विचाराधीन कैदियो के साथ करती है।

श्री के सी राय ने दिल्ली में फैली अफवाह के बारे मे जो कुछ कहा है उसे सुनकर मुझे हसी आई। वह अफवाह आपके कथनानुसार न केवल एक अद्भुत खोज थी बल्कि काव्यमयी कल्पना का एक नमूना थी। दिल्ली हिमालय के निकट है और शिमला तो पर्वत शिखर पर ही बसा हुआ है—और हिममडित हिमालय को अनतकाल से कल्पना शक्ति जागृत करने के लिए यश मिला है। मैं सोचता हू कि जब इस सरकार ने पूरी और स्थानीय खोजबीन के बाद यह जाहिर किया कि माडले से कोई गुप्त बात प्रगट नहीं हुई है तो अब वह दिल्ली के निदान को कितना पसद करे।

कुछ समय पहले मैंने अखबारो मे देखा था कि श्रीमती मित्र सर बी सी राय के साथ यूरोप-यात्रा पर गई थीं और वापस लौटीं। मैंने सोचा कि शायद यह मामला कनिष्ठ द्वारा वरिष्ठ को प्रभावित करने वाला मामला हो। अधिकाशत मुझे यही लगता है कि श्रीमती मित्र को श्रीमती सरकार के उदाहरण से प्रेरणा मिली होगी। इसके बाद ही श्रीमती मलिक अपने पति क साथ इग्लैंड गई है। मैं समझता हू कि यह एक स्वस्थ चिह्न है कि हमारी पर्दानशीन महिलाए अब सजग हो रही हैं और स्वय जाकर विश्व के विभिन्न भागो को देखना चाहती हैं।

मेरे पास यहा कश्मीरी कपडे के कुछ नमूने हैं पर वे दो वर्ष पुराने हैं। यही कारण है कि मैंने आपको लिखा था कि आप कुछ ताजे नमूने और उनके ताजा मूल्य लिख कर भेज दे।

क्या आपने एम ए, की डिग्री के लिए मेरा पत्र और पैसे कैम्ब्रिज को भेज दिए हैं? क्या बिडला बधुओ के मामले मे कोई नई बात सामने आई है?

जब रागामामा बाबू यहा आए थे तो मैंने उनसे कहा था कि मुझे यह विचार पसद नहीं हैं कि सती प्रतिदिन साइकिल से जादवपुर आया व जाया करे। वह साइकिल सवार के रूप में न तो बहुत मजबूत है न कुशल और यद्यपि रसा रोड काफी चौडी है फिर भी उस पर गाडियो की काफी भीड-भाड रहती है। बालीगज स्टेशन के साथ ट्राम्ने का सबध शीघ्र जुड जाएगा (अगर वह अभी भी नहीं जुड गया है तो) और तब वह ट्राम तथा रेल द्वारा जादवपुर की यात्रा कर सकता है। तब तक क्या यह अधिक अच्छा

नहीं होगा कि वह इंस्टीट्यूट के निकट किसी होस्टल में रहने का प्रबंध कर ले? निस्संदेह उसे प्रत्येक साप्ताहांत में घर वापस आना होगा।

तो आखिर उन्होंने श्री पी. के. चक्रवर्ती को फंदे में फंसा ही लिया? हाईकोर्ट में इस अपील का क्या नतीजा आपकी राय में होगा?

नतूनमामा बाबू का कामधाम अब कैसा चल रहा है?

मुझे देखने को मिला है कि कुछ अखबारों ने बांड पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री चक्रवर्ती की आलोचना की है।

18-6-26

आपका 11-6-26 का पत्र मुझे कल मिला। यह जानकर मुझे दिलचस्पी हुई कि श्री विल्किंसन गवाहों के कठघरे में खड़े होंगे। मुझे आश्चर्य है कि श्री जोन्स का पत्र अखबारों में कैसे छप गया। मेरा विश्वास है कि वह सबसे पहले फारवर्ड में छपा, क्या यह ठीक नहीं है? निस्संदेह फारवर्ड के कार्यकर्ता बड़े होशियार हो गए हैं। आपने जो कतरन भेजी है, वह मुझे अभी नहीं मिली है और मैं उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूं।

क्या वुडरोफ ने वकीलों की जमात में ऐसे चेले या गुरु-भाई छोड़े हैं, जो उसके द्वारा शुरू किए गए काम को जारी रख सकें? बनारस के श्रीयुत् वरदाकांत मजुमदार ने उसकी एक पुस्तक की भूमिका लिखी है और वह बहुत अच्छी भूमिका है। क्या आप वरदा बाबू से परिचित हैं?

डाक्टर रमेश मजुमदार ने हाल में एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसका नाम है 'एनशिएंट इंडियन कालोनीज इन दि फार ईस्ट'। मैं इस पुस्तक को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूं। अगर मैंने यह देखा कि उन्होंने उस सामग्री का उपयोग नहीं किया है जो मेरी निगाह से गुजरी है, तो मैं उस सामग्री को राखाल बाबू को भेज दूंगा। मैं कुछ बातें लिखकर भेज रहा हूं जिनके संबंध में मैं चाहूंगा कि राखाल बाबू कुछ प्रकाश डालें। अगर आप इस विषय में राखाल बाबू को लिखेंगे तो वह मेरी सहायता शायद कर सकेंगे।

मेरी तबीयत पहले ही जैसी है। इधर कभी-कभी वर्षा हो रही है, जिससे इस माह मौसम सुहावना रहा है।

मेरे लंबे-लंबे पत्रों से आप घबराएं नहीं। उन्हें आप जब कभी अवकाश हो, पढ़ सकते हैं। आशा है, वहां सभी सानंद होंगे।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

200. शरत चन्द्र बोस के नाम

28-6-26 (सोमवार) को भेजा
एस सी बोस
सेंसर और पास किया
अस्पष्ट 9-7-26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बंगाल।

माडले जेल
26-6-26

प्रिय दादा,

मैं समझता हू कि मैंने आपको पिछला पत्र 18 तारीख को भेजा था। मैं 'द स्टेट्समैन' के सपादक को भेजे गए श्री जोन्स के पत्र की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हू, क्योकि वह पत्र मेरे मुकदमे से सबद्ध है। मैं नहीं जानता कि वह मेरे पास क्यों नहीं पहुचा है। कतरन भेजने की बजाय क्या आप मुझे उसकी एक प्रति भेज सकते हैं? मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि उसे रोक लिया जाएगा क्योकि जहा तक मेरा सबध है, वह मेरे मामले से सबद्ध विशुद्ध कानूनी विषय है। कृपया उस पत्र को भेजने की तारीख (यदि आप उसे भेज चुके हैं तो) मुझे लिखे। अगर वह अतत मुझे नहीं मिलता तो मैं सी आई डी आफिस को लिखूगा।

मैंने कई महीने पहले सुना था और मैं आपको लिखना भूल गया—कि डा कार्तिक बोस अपनी ग्लास फैक्ट्री बेचना चाहते हैं। उनका पुत्र फ्रास मे (या विदेश म कहीं अन्यत्र) बीमार है और स्वय उनका स्वास्थ्य ढीला-ढाला चल रहा है—इसलिए वे अपनी ग्लास फैक्ट्री को, जो लाभदायक नहीं सिद्ध हुई है, बेच देना चाहते हैं। मैं यह सूचना सेजदादा को, अगर यह उनके काम की हो, देना चाहता था जिससे वे देख और कोशिश करें कि सौदा पट जाए। प्रसगत उनका काम-धाम कैसा चल रहा है?

अगर आप हेमेन्द्र बाबू (दासगुप्ता) से कहीं मिल तो कृपया उनसे कह कि हमे अब तक उनकी कोई भी पुस्तक नहीं मिली है। मैं समझता हू कि उन्होने देशबधु की जीवनी की चार प्रतिया सी आई डी के जरिए भेजी हैं।

मैं समझता हू कि आप इस समय अनेक कामों मे अत्यधिक व्यस्त होगे। मैं यही आशा कर सकता हू कि आप क्षमता से अधिक परिश्रम नहीं करेंगे—विशेषत तब जब कि बहुत-सी बात आप पर निर्भर हैं। आप अपने को कलकत्ता से अलग कर ले और पुरी या कुर्सियाग म कुछ दिन विश्राम कर। श्री पी के चक्रवर्ती का मामला रगून के

पत्रों में पूरी तरह प्रकाशित हो गया है और इस सब प्रचार के लिए वे स्वयं ही जिम्मेदार हैं। लेकिन मै नहीं समझता कि इससे उन्हें अधिक मदद मिली है। मैं आशा करता हूं कि आप उनकी जगह कोई उपयुक्त व्यक्ति खोज लेंगे। पत्रकार-जगत में एक ओर तो इतने अधिक गपोड़िए और धोखेबाज लोग हैं और दूसरी ओर जानकार किंतु अविश्वस्त लोग, जिनसे सावधान रहना ही होता है। इन सबसे अधिक और कोई कर्म-क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें दूर से किसी के बारे में निर्णय कर सकना इतना कठिन हो और मैं सोचता हूं कि बंबई के पत्रकार कुल मिलाकर सबसे ज्यादा गिरे हुए हैं। वे कभी भी कुछ भी कह सकते हैं। कुछ और उनके बारे में बस इतना ही कहा जा सकता है। आप कुछ सुशिक्षित और प्रतिभाशाली नौजवानों को क्यों नहीं रखते जो अभी पढ़ाई समाप्त करके निकले हों, और जिन्हें पत्रकारिता की शिक्षा दी जा सके। आप अप्रेंटिसों के रूप में उन्हें बड़ी संख्या में पा सकेंगे और अगर आप उनमें से कुछ को पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय बना सकें तो आप देश की निश्चय ही बड़ी सेवा करेंगे। प्रसंगत: क्या श्री चक्रवर्ती को पुन: सीधे रास्ते पर लाने की संभावना नहीं है।

मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। हां, मैं कुछ ज्यादा कमजोरी अवश्य महसूस कर रहा हूं। मेरा वजन इस समय 144 पौंड है। मैं लगभग छह महीने तक कठोर परिश्रम करना चाहता हूं जिससे मैं अपनी शिक्षा को पूरी कर सकूं, अथवा जारी रख सकूं क्योंकि वह गत चार या पांच वर्षों से बहुत ज्यादा उपेक्षित रही है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मेरा शरीर साथ दे पाएगा। कुछ समय तक तो मैं ठीक से काम कर लेता हूं, लेकिन फिर मेरी शक्ति जवाब देने लगती है। कभी-कभी मैं महसूस करता हूं कि नगर-व्यवस्था की विशेष समस्याओं का अध्ययन शायद बहुत लाभप्रद नहीं रहेगा, क्योंकि भविष्य में शायद मैं अन्य कार्यक्षेत्रों की ओर खींच लिया जाऊंगा।

गोपाली शायद बी.एस.सी. पास कर लेगा। हो सकता है कि वह अपने भविष्य के बारे में निर्णय न कर सके। अगर वह सेजदादा के साथ नहीं हो जाता तो मेरी उसे सलाह है कि वह कपड़ा-निर्माण अथवा भूगर्भ विज्ञान का प्रशिक्षण लेवे। ये दोनों ही क्षेत्र प्रतिभा-सम्पन्न नौजवानों के लिए बहुत अच्छे सिद्ध होंगे। बंगाल में (कपास, पटसन आदि के) कारखानों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जाएगी और इससे कामकाज के अवसरों में वृद्धि होगी। उधर भूगर्भ शास्त्री की मांग भारत-भर में और बर्मा में भी होगी। इसी प्रकार इंजीनियरिंग का पेशा भी है—लेकिन इसे इंजीनियरिंग की किसी एक शाखा में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए, जैसे जल-निकासी अथवा सेतु-निर्माण या सागर-इंजीनियरिंग में। मुख्य बात यह है कि उसमें महत्वकांक्षा और आत्म-विश्वास हो।

आशा है, आप सब स्वस्थ होंगे। पिताजी और मां कैसी हैं?

मुझे 'द स्टेट्समैन' वाले मामले के संबंध में आपका संदेश अभी-अभी (आज शाम 5 बजे) मिला है। उत्तर में मैंने यह संदेश भेजा है : '. . . पूरी तरह आपके निर्णय पर निर्भर हूं।' मेरे पास मामले के सभी तथ्य नहीं हैं और इसीलिए इससे अधिक निश्चित उत्तर देना कठिन है, विशेषत: ताजा घटनाओं को देखते हुए। हमें जो अधिक से अधिक

लाभ मिल सके लेना चाहिए, और वर्तमान परिस्थिति मे क्या अधिक से अधिक लाभ मिल सकता है, इसके सर्वोत्तम निर्णायक आप ही हो सकते हैं। उदारता का सवाल ही नहीं उठता है।

आपका स्नेहभाजन
सुभाष

201. शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले
30-6-26

प्रिय दादा,

आपका 21 जून का पत्र कल मिला। मुझे आपके 3, 5 और 27 मई तथा 11 जून के पत्र भी मिल गए थे। गत मार्च के बाद से क्या आपको मेरे सभी पत्र यथावत मिल गए हैं या उनमे से किसी मे काट-पीट या अज्ञात सेंसर के निशान हैं?

कृपया श्री ग्वे की यथासभव पूरी मदद करने का प्रयास करें जिससे किसी न किसी मेडिकल कालेज मे प्रवेश मिल सके। अगर आवश्यक प्रतीत हो तो उनका सर नीलरतन या मेडिकल-क्षेत्र के अन्य प्रमुख व्यक्तियो से परिचय करा दें। वे एक नई जगह में असहाय महसूस कर सकते हैं और चूकि मैं स्वय एक अजनबी जगह मे रह रहा हू, इसलिए मुझे उनके साथ और ज्यादा सहानुभूति महसूस होती है। मैंने उनके विषय मे डा बी सी राय को लिखा था और आशा है कि उन्हे मेरा पत्र मिल गया होगा। अगर वे कहीं भी एक स्थान दिला दे तो मैं नहीं समझता कि एक विश्वविद्यालय से दूसरे में स्थानातरण में कोई कठिनाई होगी।

कल की कलकत्ता से आने वाली डाक मे बुधवार को हाईकोर्ट में पूरी सुनवाई का ब्यौरा पढने को मिला। अपने 26 तारीख के पत्र में मैंने 'द स्टेसट्मैन' के प्रस्ताव के बारे मे अपनी राय लिख दी थी, लेकिन मैं नहीं जानता कि मैंने अपनी बात स्पष्ट रूप मे रखी थी या नहीं। मैंने इस विषय मे और आगे विचार किया है और इस निर्णय पर पहुचा हू कि आपको स्वय ही मेरे अटार्नियो और वकीलो से सलाह लेकर निर्णय करना होगा। प्रतिवादियों द्वारा रखे गए प्रस्ताव के सभी पक्षो पर ब्यौरे से लिखना शायद सभव न हो। इसका कारण स्पष्ट है। इसलिए आप मेरी राय की प्रतीक्षा म कोई कार्यवाई रोक न रखे। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हू, मुझे आपके निर्णय पर पूरा भरोसा है।

मुझे बहुत समय से सतोष बाबू का कोई समाचार नहीं मिला है। अगर आप उनसे मिलें तो कृपया कह दे कि वे दक्षिण कलकत्ता नेशनल स्कूल के छात्रों को हाजरा पा्क

में (जो रसा रोड और हाजरा रोड के जंक्शन पर नया पार्क है) खेलने के लिए अनुमति दिलाने में सहायता करें। मैं नहीं जानता कि यह मामला अब जिला समिति के हाथ में है या मुख्य कार्यपालक अधिकारी के हाथ में। दो वर्ष पूर्व जब स्कूल के अधिकारी इस मामले में मुझसे मिले थे तो मैंने उनसे सहायता देने का वायदा किया था। लेकिन मेरा वायदा पूरा नहीं हो पाया है।

कुछ समय पूर्व, बल्कि कई महीने पहले 'फारवर्ड' के बिल-कलेक्टर खगेन घोष ने अपनी शिकायतों का एक पुलिंदा मेरे पास भेजा था। (वह बर्दवान की दिशा में अखबार का बिक्री एजेंट भी था)। मैं नहीं समझता था कि मैं उसकी सहायता के लिए कुछ कर सकता हूं, खास तौर पर इसलिए कि मुझे सिक्के के दूसरे पहलू की कोई जानकारी नहीं थी। क्या आपको इसके बारे में कुछ पता है? प्रसंगतः पृथ्वीश क्या कर रहा है? क्या उसे कोई काम मिल गया है?

हमें कुछ समय से बाबू कृष्ण मित्र द्वारा संपादित 'संजीवनी' (बांग्ला साप्ताहिक पत्र) मिल रहा है। इस पत्र की एक अच्छी विशेषता है — वह असहाय महिलाओं की दशा की ओर ध्यान खींचता रहता है। कलकत्ता के लोगों को कोई अंदाज नहीं है कि किस हद तक असहाय लड़कियों और स्त्रियों को बंगाल के विभिन्न भागों में गुंडों, बदमाशों और अनाचारियों की कुदृष्टि का शिकार होना पड़ता है। सार्वजनिक चिंता इस विषय में मृतप्राय है—उसे जागृत करना है। 'संजीवनी' पत्र इस प्रकार की रोमहर्षक घटनाओं को एकत्र कर उन्हें प्रति सप्ताह प्रकाशित करता रहता है। मैं समझता हूं कि प्रत्येक अंक में कम से कम आधा दर्जन घटनाओं का विवरण छपता है। इन विवरणों के बारे में संपादकीय टिप्पणियां लिखी जाती हैं और लोगों से अपील की जाती है कि वे निस्सहाय लड़कियों और स्त्रियों की मदद के लिए आगे आएं। मैं बंगाल के किसी भी अन्य ऐसे पत्र को नहीं जानता जिसने इस काम को इतने उत्साह और स्फूर्ति के साथ उठाया हो। अगर इस प्रकार का प्रचार-प्रसार कुछ समय तक होता रहे तो लोगों की आत्मा कचोटेगी और वे शीघ्र सक्रिय होंगे। मुझे नहीं मालूम कि अन्य पत्र क्यों नहीं इस काम को उठाते। कुछ लोगों को इसमें भी सांप्रदायिकता की गंध आती है—लेकिन मैं उनसे सहमत नहीं हूं। इसमें शक नहीं कि बहुत से मामलों में लड़कियों को भगाने वाले मुसलमान होते हैं और लड़कियां या विधवाएं हिंदुओं की होती हैं, लेकिन यह समस्या सांप्रदायिक नहीं है। यह विशुद्धतः मानवीय समस्या है। ऐसी घटनाएं भी हुई हैं जिनमें भगाने वाले हिंदू रहे हैं और उनके कृत्यों की शिकार मुसलमान स्त्रियां रही हैं—और इसीलिए यह हिंदू और मुसलमान, दोनों ही का कर्तव्य है कि वे दुर्बल वर्ग की मदस्याओं की महत्ता करें। मुझे समझ में नहीं आता कि कार्पोरेशन ने श्री शहीद सुहरावर्दी के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? कार्पोरेशन की कार्रवाई ने उन्हें अपने संप्रदाय वालों की दृष्टि में शहीद बना दिया है। मुझे संदेह है, हालांकि मैं इस विषय में संशोधन स्वीकार करने के लिए तैयार हूं, कि कार्पोरेशन की जांच से कुछ अच्छा परिणाम होगा। कार्पोरेशन को उनको बर्खास्त करने का अधिकार नहीं है—उन्हें स्थगित

शासन विभाग के पास इसके लिए जाना होगा और सरकार उनकी बर्खास्तगी के कार्पोरेशन के अनुरोध को ठुकरा सकती है। अगर सरकार यह कदम उठाए तो वह कार्पोरेशन के विरुद्ध जिसमें इन दिनों स्वराजवादियों का बोलबाला है, मुसलमानों की हिमायती प्रतीत होगी। लेकिन अगर कार्पोरेशन बर्खास्तगी की सिफारिश करने का चरम सीमा वाला कदम न उठाए तो उसने आरंभ में जो भी तकलीफें सहीं या परिश्रम किया और लोगों को जिस प्रकार नाराज किया, वह सब कुछ व्यर्थ जाएगा। इससे कहीं अधिक अच्छा यह होता कि पार्टी ने उनसे निपटा होता और उनके विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई की होती अथवा मामला कार्पोरेशन में बातचीत में खत्म हो गया होता। निस्संदेह मुझे सभी तथ्यों की जानकारी नहीं है और मेरे विचार आनुमानिक ही हैं।

मैंने आपका घोषणा-पत्र और सेनगुप्ता का प्रत्युत्तर पढ़ लिया है जिसका अभी तक उत्तर नहीं दिया जा सका है। समझौते की पुनः पुष्टि का कोई सवाल नहीं उठता, लेकिन उसे पूरी तरह समाप्त कर देना भी आवश्यक नहीं है। हमें स्वराजिस्ट-विरोधियों के हाथों की कठपुतली बनने से बचने की सावधानी बरतनी होगी। मैं समझता हूं कि उचित नारा यह होगा 'समझौते में संशोधन करो'। यह न केवल यथेष्ट रूप से तर्कसंगत होगा, बल्कि हमारे स्वर्गीय नेता की इच्छाओं के अनुरूप भी होगा। जब सिराजगंज सम्मेलन ने समझौते की स्वीकृति दी थी, तब भी उसके विरुद्ध कुछ हद तक लोगों ने आवाज उठाई थी और स्वर्गीय देशबंधु दास को इसका पता था। कई बार उन्होंने एकांत्रिक रूप में ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक तौर पर भी स्पष्ट कर दिया था कि उसका एकमात्र उद्देश्य अपने देशवासियों के सम्मुख दोनों संप्रदायों में भेदभाव के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करना था। अगर समझौते में कुछ धाराएं या अंश अनुपयुक्त या अस्वीकार्य हों तो उन्हें संशोधित किया जाए, तो उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। काकीनाडा कांग्रेस के समय—जहां तक मुझे मालूम है—उन्होंने इससे भी आगे जाकर कहा था कि वे नहीं चाहते कि कांग्रेस तत्काल बंगाल समझौते को स्वीकार कर ले, लेकिन वे यह अवश्य चाहते हैं कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति उस पर विचार करे। लेकिन सदन बहुत विरोधी था और उसने बंगाल समझौते पर विचार करना भी स्वीकार नहीं किया। कोकोनाडा कांग्रेस के बाद सिराजगंज सम्मेलन ने समझौते को स्वीकार किया (मैं सम्मेलन में मौजूद नहीं था), लेकिन उससे पहले देशबंधु ने अपने समर्थकों को आश्वासन दिया था कि उनका दृष्टिकोण अनमनीय या अतार्किक नहीं है, और वे समझौते की किन्हीं पृथक धाराओं या अंशों में संशोधन- परिवर्द्धन के लिए तैयार हैं। लेकिन इसके साथ ही, देशबंधु के संग या उनके बाद मेरी यह धारणा है कि बंगाल का हाथ पर हाथ रखकर बैठ नहीं जाना चाहिए और समाधान के लिए महज अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर नहीं देखते रहना चाहिए। हमारा समाधान अखिल भारतीय आधार पर होना चाहिए, लेकिन बंगाल को अपनी समस्या स्वयं ही हल करनी होगी।

कल के रंगून के अखबारों से भोम्बल की दुखद, असामयिक और अनपेक्षित मृत्यु का समाचार मिला। यह कितनी दुखद बात है कि ऐसे तरुण और होनहार जीवन का

इस प्रकार अंत हुआ। हमने तार द्वारा मां को और जवान विधवा को शोक संदेश भेज दिया है, लेकिन इतनी दूर से ऐसा संदेश भेजना बहुत भावना-शून्य और औपचारिक लगता है। कृपया श्रीमती दास और दुखी परिवार को यथासंभव सांत्वना देवें। भगवान जाने कि अभी उन सबको कितना दुख सहना होगा। भाग्य उनसे न जाने क्यों रूठा हुआ है। मैं श्रीमती दास से एक बार मिलने के लिए बहुत आतुर हूं, लेकिन भगवान ही जानता है कि मेरी इच्छा कब पूरी होगी और पूरी होगी भी या नहीं।

मुझे सेजदीदी के पत्र से मालूम हुआ है कि मीरा टायफायड से पीड़ित थी, लेकिन आपने इसके बारे में मुझे पत्र में नहीं लिखा।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

पुनश्च:

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि क्या आपको मेरे लंबे-लंबे पत्र पढ़ने का समय भी मिलता होगा।

एस. सी. बी.

श्री एस.सी. बोस,
38/1, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।

202. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
12-7-26
कृते डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी.,
बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
10 जुलाई 1926

प्रिय सुभाष,

मैं समझता हूं कि इसके पहले मुझे तुम्हारा 21 जून को पत्र मिला था। उसके बाद मुझे तुम्हारे कई पत्र मिले हैं, लेकिन मैं किसी का उत्तर नहीं दे पाया। मैं कल उनमें से हर-एक का जवाब दे दूंगा, जिससे वे पत्र मंगलवार की नौका से जा सकें।

मुझे खेद है कि मैं रे नाइट के नाम जोन्स के पत्र और उन के साथ मुलाकात के बारे में उनकी टिप्पणी की प्रतिया भेजना भूल गया था। मैं उन्हें अब भेज रहा हू।

बगाल हिंदू-मुस्लिम समझौते के बारे में तुमने जो मत व्यक्त किया है, उससे हमारे निष्कर्षों की ही पुष्टि हुई है। केवल एक ही बात पर विचार करना शेष रह गया है और यह यह है कि 'समझौते में सशोधन करो' का नारा अभी दिया जाए या एकता सम्मेलन के प्रस्तावो के आधार पर एकता लाने की कोशिश की जाए।

क्या भूख हडताल के बाद तुम्हारा वजन कुछ बढा है? मुझे यह जानकर चिता हुई है कि तुम कमजोरी महसूस कर रहे हो।

भगवान की दया से मीरा अब ठीक है। उसके बारे मे समाचार देकर मैं तुम्हें चिता में नहीं डालना चाहता था।

श्रीमती दास यथाशक्ति अपना दुख झेलने का प्रयत्न कर रही हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वे उन्हें इसके लिए शक्ति दे। तुम्हारी बहूदीदी उनसे दो बार मिल चुकी हैं। मैं उनके घर तो गया हू, परतु उनसे मिलने के लिए ऊपर नहीं जा सका। मैंने आज शाम उनसे मिलने का निश्चय किया है।

हम सब सकुशल हैं।

शेष अगले पत्र में।

सस्नेह तुम्हारा
शरत

श्री सुभाष सी बोस

सलग्न--सात पृष्ट

संलग्नक ·

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,

बंगाल।

श्री जे ए, जोन्स द्वारा मैसर्स रे नाइट एड सस

कलकत्ता के श्री रे नाइट को लिखे गए पत्र की प्रति 'द स्टेट्समैन' लदन, दिनाक 18 दिसम्बर 1924

प्रिय रे नाइट,

यद्यपि मैं आपको आवश्यक कार्यवश लिख रहा हू और समय सीमित है, लेकिन मैं आरंभ मे आपको आत्र-ज्वर से बखूबी छुटकारा पाने के लिए बधाई देना चाहूगा। जैसे ही मुझे बताया गया कि आपकी चिकित्सा शिलाग स्थित मेरे मित्र डा. राबर्ट कर

रहे हैं, मैं आश्वस्त हो गया कि चिकित्सा संबंधी जो भी सूझबूझ और परिचर्या संबंधी सावधानी संभव है, वह सब आपको प्राप्त होगी। यह बड़े संतोष की बात है कि आप अब खतरे से बाहर हैं और हमारी ईश्वर से प्रार्थना के अनुसार—आप शीघ्र बीमारी झेल कर पहले से अधिक सक्षम बनेंगे।

जिस मामले पर मैं आपको लिखना चाहता हूं, वह एस.सी. बोस द्वारा 'द इंग्लिशमैन' के विरुद्ध लाया गया मुकदमा है और मुझसे 'बड़ा साहब' लोगों ने यह लिखने के लिए अनुरोध किया है। अपनी कार्रवाई के बारे में निर्णय करने से पहले पत्र के मालिकों ने मुझसे कहा कि मैं श्री एच.एन. डन की राय ले लूं। आपको शायद याद होगा कि श्री डन लगभग 20 वर्ष पूर्व कलकत्ता बार में एक प्रमुख हस्ती रहे हैं और अब प्रिवी कौंसिल की न्यायिक समिति के बहुत ही व्यस्त वकील हैं। श्री डन से अपनी भेंट की पूरी कथा सुनाने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती, क्योंकि आप मेरे द्वारा भेजे जा रहे स्मरणपत्र के साथ सावधानीपूर्वक लिखी गई एक टिप्पणी भी पाएंगे। संक्षेप में, डन की राय यह थी कि 'द इंग्लिशमैन' के 13 नवम्बर के अंक में प्रकाशित लेख के दूसरे पैराग्राफ को 'हिंसा के अपराध' शब्दों तक सफलतापूर्वक युक्तियुक्त टिप्पणी के सहारे उचित सिद्ध किया जा सकता है, लेकिन 'कैथोलिक हेराल्ड' की चर्चा वाले अंश का शायद औचित्य सिद्ध करने की आवश्यकता होगी, क्योंकि उसमें नजरबंदी वाले लोगों में से एक का नाम लिया गया है और संकेत रूप में उस पर क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न होने का आरोप लगाया गया है। चूंकि 'द इंग्लिशमैन' के पास शायद बोस के विरुद्ध अपने कोई प्रमाण नहीं हैं, इसलिए डन का निष्कर्ष था कि बंगाल सरकार से संपर्क करना आवश्यक होगा जिससे उससे सभी संभव सहायता प्राप्त की जा सके, क्योंकि शायद उसके पास इतने पर्याप्त प्रमाण हैं कि वह बोस को निरुत्तर कर सके। दुर्भाग्य से इंडिया ऑफिस के उस अधिकारी के अनुसार, जो इन कानूनी कार्रवाइयों से संबद्ध प्रभारी अधिकारी है, बंगाल सरकार शायद हमारी बहुत सहायता नहीं कर पाएगी। इस अधिकारी के पास कोई कागजात तो नहीं थे, लेकिन याददाश्त के सहारे बोलते हुए उसने विश्वास प्रकट किया कि बोस के विरुद्ध कोई लिखित प्रमाण नहीं है, केवल अत्यधिक विश्वस्त गवाहों का साक्ष्य है जिन्होंने बोस के क्रांतिकारी गतिविधियों से संबंध के बारे में अपनी जानकारी के आधार पर बताया। फिर भी यह संभव है कि बंगाल सरकार के पास कुछ सूचना हो और उस स्थिति में हमें यह संकेत करने का अधिकार है कि अगर वह हमें ऐसी स्थिति में नहीं रख सकती कि हम उसकी ही लड़ाई लड़ सकें, तो जहां तक बोस का संबंध है, हमें झुकना पड़ सकता है।

लेकिन पत्र के मालिकों द्वारा हमें भेजे गए पत्र से यह स्पष्ट है कि जहां हमें एक ओर बंगाल सरकार को सहायता देने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए, वहीं हमें झुकने के लिए भी यथोचित जमीन रखनी चाहिए। फिर भी अगर लैंगिन को जिन तीन वकीलों को मामले की जानकारी देने के लिए कहा गया है, वे अगर सहमत हों कि हमारा पक्ष मजबूत है, तो हमें मुकदमा लड़ना चाहिए। ये वकील हैं : श्री एन. एन. सरकार, श्री

लैंगफोर्ड जेम्स और श्री बी सी मित्र। अतएव उपर्युक्त बातो के बारे मे एक समुद्री तार वाटसन को भेजा गया है जिसकी प्रति मैं आपको भेज रहा हू।

यह पत्र लिखने के समय डन को लिखित राय जिसके लिए हम प्रतीक्षा कर रहे थे, प्राप्त हो गई है और इसकी भी एक प्रति भेजी जा रही है। लेकिन उन्होने भेंट के दौरान जो कुछ जुबानी कहा था उसमे और लिखित राय मे कोई अतर नहीं प्रतीत होता।

अत्यत सद्भावपूर्वक आपका
(ह) जे ए. जोन्स

पुनश्च

तार की प्रति अनिवार्य कारणो से डन को राय भेजे जाने के समय तक रोक रखी गई।
जे ए जे

श्री डन से मुलाकात के बारे मे जे ए. जोन्स की टिप्पणी

मैंने श्री ए. एम डन से भेंट की और जब मैंने उनसे कहा कि मुझे याद है कि वे मिदनापुर केस मे वकील थे तो उन्होने काफी अपनत्व और दिलचस्पी दिखाई। मैंने उन्हें वे परिस्थितिया स्पष्ट कीं जिनमें 'द इग्लिशमैन' मे 13 नवबर का प्रथम लेख लिखा गया था और उनके अनुरोध पर इस लेख के सगत अश पढकर सुनाए।

श्री डन ने परिस्थिति को तेजी से समझ लिया क्योंकि जैसा कि आप कहते हैं उन्हें बगाल की राजनीति की व्यक्तिगत जानकारी और अनुभव है।

लेकिन यह विचित्र बात है कि उनके पास 1818 के रेगूलेशन 3 की या नए बगाल अध्यादेश की कोई प्रति नहीं थी। मैं यह मानकर उनके यहा गया था कि इनकी प्रतिया उनके पास होगी। लेकिन उन्होने उनको माग की और भेट के अत मे कहा कि वे तब तक अतिम राय नहीं देगे जब तक वे रेगूलेशन अध्यादेश और लार्ड रीडिग तथा लार्ड लिटन के वक्तव्यो को न पढ ले।

शिकायत से सबद्ध अश पर अर्जी को विचार के दौरान श्री डन ने उसे दो भागो में विभक्त किया (जैसा कि रत्तिगन ने और मैंने बातचीत के दौरान पहले ही किया था)। पहले वह अश है जिसमे कहा गया है

'श्री बाल्डविन ने इस तथ्य को दर्ज किया है कि श्री दास ने नए अध्यादेश और हाल की गिरफ्तारियो के प्रभाव को गलत ढग से पश किया है और वे यह मानकर चले हैं कि वे उनके और उनके दल के विरुद्ध की गई हैं। यह बात समझ म आने वाला है कि श्री दास सत के प्रभामडल पर शहीद का मुकुट पहनाने की इच्छा से प्ररित हैं जैसा कि लार्ड ओलिवर ने उनके सबध मे करना चाहा है। लेकिन यह कहना महज प्रवचना है कि गिरफ्तारिया इसलिए की गई कि गिरफ्तार किए गए लोग स्वराज पार्टी

के सदस्य थे। वे अगर आज सींखचों के पीछे हैं, तो इसलिए कि इंग्लैंड के भूतपूर्व लार्ड चीफ जस्टिस जैसे निर्णयकुशल व्यक्ति ने साक्ष्य को देखते हुए कहा था कि वे हिंसात्मक कार्रवाइयों में सहायता और सहयोग दे रहे थे और उनका कथन किसी के लिए भी यथेष्ट विश्वसनीय माना जाएगा।'

इस अंश के बारे में श्री डन का विचार था कि इसका औचित्य युक्तियुक्त टिप्पणी के रूप में माना जा सकता है। स्थिति यह थी कि श्री सी. आर. दास ने सरकार पर आरोप लगाया था कि उसने नया अध्यादेश स्वराज पार्टी पर प्रहार के उद्देश्य से जारी किया है। यह कहना युक्तियुक्त टिप्पणी के रूप में माना जाना चाहिए कि उनका आरोप मिथ्या था और अध्यादेश इसलिए जारी किया गया है क्योंकि सरकार के पास ऐसे प्रमाण थे, जिनसे लार्ड रीडिंग संतुष्ट थे कि गिरफ्तार किए गए लोग हिंसात्मक षड्यंत्र में संलग्न थे।

यह सार्वजनिक रुचि के मामले पर युक्तियुक्त टिप्पणी थी।

दूसरा अंश इस प्रकार है :

'जब से कलकत्ता कार्पोरेशन के मुख्य कार्यपालक अधिकारी को गिरफ्तार किया गया है, तब से उनके मित्र लगातार यह घोषणा करते रहे हैं कि अत्यंत व्यस्त रहने के अलावा वे दुनिया के आखिरी व्यक्ति होंगे जो क्रांतिकारी कार्रवाइयों में भाग लेंगे। लेकिन हमारे समकालीन पत्र 'कैथेलिक हेरल्ड' की खबर है कि श्री सुभाष चन्द्र बोस के पिता ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की है कि उनके पुत्र की कार्य-व्यस्तता उसे 'क्रांतिकारी गतिविधियों से अलग रखे हुए है और खतरनाक संबंधों से काटती जा रही है'। प्रमाण के अभाव में हम अपने समकालीन पत्र की इस धारणा का समर्थन तो नहीं कर सकते कि श्री बोस को किसी पुराने अपराध के लिए गिरफ्तार किया गया है। लेकिन उनके पिता का बयान महत्वपूर्ण है, क्योंकि उससे सिद्ध है कि श्री सी.आर. दास की अपेक्षा उनसे कहीं अधिक जानकारी रखने वाले व्यक्ति ने उनके 'खतरनाक संबंधों की निंदा की है, इस आरोप का औचित्य सिद्ध करना आवश्यक होगा।'

मैंने सुझाव दिया कि इस अंश को केवल युक्तियुक्त टिप्पणी वाले अंश की पुष्टि का प्रमाण माना जाए और इसके लिए यह तर्क दिया जाए कि गिरफ्तार लोगों में से एक को उसके अपने ही पिता के साक्ष्य के अनुसार, 'क्रांतिकारी गतिविधियों' से अलग रखने की जरूरत थी।

श्री डन सहमत थे कि अगर औचित्य सिद्ध करना संभव न हो तो बाद के अंश का संबंध युक्तियुक्त टिप्पणी वाले अंश से जोड़ना आवश्यक होगा, लेकिन वे निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि यह तर्क किस रूप में स्वीकार किया जाएगा।

मैं यहां यह कह दूं, जिसका श्री जे. डब्ल्यू. के. की उपयोगी टिप्पणी से संबंध है कि यह हर्जाने से संबद्ध दीवानी का मामला है, इसलिए यह जूरी के सम्मुख नहीं पेश होगा। लेकिन कुछ भारतीय जजों पर भारतीय जूरियों से अधिक विश्वास शायद ही किया जा सके।

की है उसमें दखल दिया जा रहा है। लेकिन इन कठिनाइयों से हतोत्साह न होकर पोलाक के साथ मैं इंडिया ऑफिस गया और वहां लार्ड इवांस से मिला। उन्होंने अत्यंत कृपापूर्वक हमें 1818 के रेगुलेशन-3 और 1924 के बंगाल अध्यादेश की प्रतियां दीं। उन्होंने सुझाव दिया है कि हम श्री होव से मिलें जो इन आपराधिक कार्रवाइयों के बारे में प्रभारी अधिकारी हैं और हमने उन्हें खूब मामला समझाया। पहले तो वे कोई राय जाहिर करने से हिचक रहे थे, क्योंकि उनके पास पूरे तथ्य नहीं थे तथा यह संभव था कि बंगाल सरकार कहे कि 'द इंग्लिशमैन' ने अपनी टिप्पणी में आवश्यकता से अधिक आगे कदम रखा है और जिस हालत में वह अपने ही अविवेक के परिणामस्वरूप पहुंची है उससे उसे उबारने के लिए वह सहायता नहीं देगी। परंतु श्री पोलाक की दलीलों के कारण और यह कहने पर कि जिस प्रकार जब लाजपतराय ने 'पायोनियर' और 'द इंग्लिशमैन' के विरुद्ध मामला चलाया था तो पंजाब सरकार ने उसकी सहायता की थी। श्री होव के रुख में कुछ तब्दीली आई। उन्होंने कहा कि उन्हें संदेह है कि सरकार कुछ अधिक सहायता दे सकेगी। जहां तक उन्हें एस.सी. बोस से संबद्ध कागजात की याद आ रही है, मामला विशुद्ध रूप में गवाहों के साक्ष्य पर टिका हुआ है जिन्होंने एस.सी. बोस और उनके क्रांतिकारी दल के बीच गहरे संबंधों की बात कही। उनका ख्याल यह है कि इससे संबद्ध कोई कागजात नहीं है। परंतु उन्हें निश्चय है कि बंगाल सरकार सभी संभव सहायता करना चाहेगी और बंगाल के अधिकारियों को यह स्पष्ट करने के लिए कि इंडिया ऑफिस को कोई भी एतराज नहीं होगा अगर सहायता की जाए, वे लार्ड बर्कन हेड के समक्ष इसके बारे में अनुकूल राय रखने को तैयार हैं। उन्होंने तत्काल तार का प्रारूप लिखा, जो पोलाक को और मुझे काफी संतोषजनक लगा और ऐसा लगा जिसे पाने के बाद बंगाल सरकार आश्वस्त हो जाएगी कि इंडिया ऑफिस की ओर से कोई विरोधी टिप्पणी नहीं होगी।

फिर हम लोग सर एडवर्ड चामियर के पास गए, जो इन दिनों इंडिया ऑफिस के कानूनी सलाहकार हैं। उनका रुख काफी सहानुभूतिपूर्ण लगा, पर बहुत उत्साहवर्धक नहीं था। उनके विचार से बंगाल सरकार सहायता देने को इच्छुक तो होगी, लेकिन अगर उनके पास ऐसे व्यक्तियों के कथनों का ही साक्ष्य होगा जिनका नाम प्रकट होने पर उनकी हत्या किए जाने की आशंका हो, तो सरकार शायद सहायता देने की स्थिति में न हो। उन्होंने कहा कि उनके ख्याल से इतना ही काफी नहीं होगा कि बंगाल सरकार के मुख्य सचिव गवाहों के कटघरे में खड़े होकर कहें कि सरकार के पास ऐसे प्रमाण हैं, जिनसे वह श्री बोस के अपराध के बारे में संतुष्ट है।

203. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

17-7-26

कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,

बंगाल।

38/1 एल्गिन रोड
17-7-26
1 बजे दोपहर

प्रिय सुभाष,

मैं चाहता था कि मैं तुम्हारे पिछले तीन पत्रो का उत्तर देते हुए आज एक लंबा पत्र लिखू, लेकिन मेरे पास समय नहीं है। गोस्वामी के साथ मैं आज राजशाही जा रहा हू। वहा से हम जलपाईगुडी जाएगे। वहा हम श्रीमती नायडू से मिलेगे और तब गोस्वामी उनके साथ जाएगे। मैं यहा बुधवार या बृहस्पतिवार को सवेरे तक वापस आ जाऊगा। हम एक अर्द्ध-राजनीतिक मिशन पर जा रहे हैं।

मुझे जानने की उत्सुकता है कि तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा चल रहा है। लगातार चलने वाली मदाग्नि और वजन का घटते जाना ऐसी बातें नही हैं, जिनकी उपेक्षा की जाए। मैं समझता हू कि तुम्हें उत्तर प्रदेश के किसी पर्वतीय स्थल या मुरी मे तबादले के लिए अर्जी देनी चाहिए। मैं नहीं समझता कि तुम्हे मसूरी या मुरी अथवा शिमला जेल मे कहीं दूरस्थ स्थान मे भेजने मे कोई आपत्ति हो सकती है। बंगाल के किसी पर्वतीय स्थल मे भेजने मे अवश्य कुछ आपत्तिया उठाई जा सकती हैं।

मैंने मामले पर विचार किया है और मैं तुरत सरकार को आवेदन भेजने के लिए कहूगा। हम सब ठीक हैं।

तुम्हारा सस्नेह
शरत

श्री सुभाष सी बोस

204. शरत चन्द्र बोस का पत्र

सेंसर और पास किया

अस्पष्ट

2-8-26

कृते डी. आई. जी., आई. बी., सी. आई. डी.,

बंगाल।

38/1, एल्गिन रोड
31 जुलाई 1926
शनिवार, 9 बजे रात्रि

प्रिय सुभाष,

मैं समझता हूं कि मैंने तुम्हें इससे पहले 17 तारीख को पत्र भेजा था। मैं राजशाही जिले की यात्रा के बाद 21 तारीख को कलकत्ता लौटा। राजशाही में दो दिन रुकने के बाद हम पुठिया नाटोर और नौगांव गए। साथ वाले पबना जिले में सांप्रदायिक गड़बड़ी के बावजूद राजशाही में शांति बनी रह सकी है। हमें राजशाही जिले में सांप्रदायिक गड़बड़ी रोकने और गांवों में राहत कार्य आदि करने के लिए एक स्वयंसेवी संगठन बनाने में सफलता मिली है। अगर बंगाल के सभी जिलों में इसी ढंग से कार्य हो तो मैं समझता हूं कि हम सुदृढ़ रूप में (यद्यपि धीरे-धीरे) सांप्रदायिक समस्या को हल कर लेंगे। निस्संदेह स्वयंसेवी संगठन की सफलता के लिए उपदेशकों (विशेषतः विश्वास योग्य मुसलमान उपदेशकों) और प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता होगी। मेरी बहुत इच्छा है कि मैं इस काम में अधिक समय लगाऊं, लेकिन यह संभव नहीं प्रतीत होता।

अपने गत 17 जून के पत्र में तुमने पूछा था कि वुडरोफ का कोई चेला वकीलों की जमात में है या नहीं। तुम्हें नहीं मालूम कि कलकत्ता बार प्रतिभा के मामले में कितना दिवालिया है। उसका शायद ही कोई ऐसा सदस्य हो जो ऊंचे स्तर की चीजों में समय लगाता हो।

मैं नहीं जानता कि वरदाकांत मजुमदार कौन हैं। वे बनारस के कोई संस्कृतज्ञ होंगे।

मैंने तुम्हारी टिप्पणी अभी पंचानन दास बनर्जी के पास नहीं भेजी है। मैं उनसे एक जमाने से नहीं मिला हूं। मैंने सोचा कि अधिक अच्छा यह होगा कि मैं उनसे मिल लूं और उन्हें तुम्हारी टिप्पणी हाथों-हाथ दे दूं। लेकिन जब तुम्हारी टिप्पणी मिली, तब मैं मिल नहीं पाया तथा बाद में मैं उसके विषय में भूल गया।

डा. नरेन्द्र नाथ लॉ ने तुम्हारे पास भेजने के लिए मुझे पांच किताब दी हैं। उन्हें मैं अगले मंगलवार को भेजूंगा।

साउथ कलकत्ता नेशनल स्कूल को हाजरा पार्क में खेलने की अनुमति देने के बारे में मैंने आज तीसरे पहर कार्यवाहक मुख्य कार्यपालक अधिकारी से बात की। उस समय

सतोष बाबू भी उपस्थित थे और उन्होने श्री मुखर्जी पर जोर डाला कि वे उनके दावे को स्वीकार कर लें। श्री मुखर्जी ने इस विषय में जल्द विचार करने का वादा किया है।

क्या मैंने तुम्हें लिखा है कि पृथ्वीश को आखिरकार कलेक्शन विभाग मे काम मिल गया है? वह उस विभाग मे इस्पेक्टर है और 150 रुपये महीना पा रहा है।

मैं समझता हू कि तुमने अखबारो में पढा होगा कि काग्रेस कार्य समिति ने अपनी पिछली बैठक में, जो कलकत्ता मे हुई यह प्रस्ताव पास किया है कि दोनो ही सप्रदायो को 1924 मे मजूर एकता सम्मेलन के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेना चाहिए और तद्नुसार कार्य करना चाहिए। मैं समझता हू कि यह सही निर्णय था। बगाल समझौते से हिंदू और मुसलमान — दोनों को ही इतनी वितृष्णा हो गई है कि उसे त्याग देना और दोनो सप्रदायो के बीच किसी अन्य (सभव हो तो बेहतर) समझौते की प्रतीक्षा करना ही अक्ल की बात होगी। एक बात के बारे में मैं सुनिश्चित महसूस करता हू। वह यह है कि पृथक निर्वाचन समाप्त होना चाहिए, अन्यथा इस समस्या का हल नहीं निकल सकता।

क्या तुम्हे जोन्स के पत्रो की प्रतिया, जिन्हे मैंने कुछ समय पूर्व भेजा था मिल गई हैं? तो, आखिरकार जिस व्यक्ति को 'द स्टेट्समैन' ने 'षड्यत्र का दिमाग' बताया है उसके विरुद्ध कोई लिखित प्रमाण नहीं।

सत्य बाबू अब सपादक के रूप में काम कर रहे हैं। मैं समझता हू कि वे काफी अच्छी तरह काम कर रहे हैं। निस्सदेह वे पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत जूनियर लोगों मे हैं, लेकिन उनमें कल्पनाशक्ति है, 'फारवर्ड' में अब दो अप्रेंटिस भी काम कर रहे हैं, लेकिन अभी मैं नहीं कह सकता कि वे कैसे सिद्ध होगे।

मैं नहीं समझता कि चक्रवर्ती को फिर 'फारवर्ड' मे लिया जा सकता है। वे बहुत ही अस्थिर-चित्त वाले व्यक्ति हैं।

यह पत्र तुम्हारे पास पहुचने से पहले तुम यह खबर पढ चुकोगे कि चक्रवर्ती दड विधान की धारा 108 के तहत मुकदमे मे बरी कर दिया गया है। कितने अफसोस की बात है कि उन्होने बाड भर कर दिया। इससे हम जनता की नजरों मे कितने गिर गए।

तुमने अपने पत्रो में अपने बारे मे बहुत चुप्पी साध रखी है। तुमने अपने गत 26 जून के पत्र मे लिखा था कि तुम्हारा वजन 144 पौंड है, क्या उसके बाद तुम्हारा वजन बढा है? बरहमपुर मे तुम्हारे वजन की अपेक्षा आज के तुम्हारे वजन में कितनी गिरावट आई है?

मैं समझता हू कि तुम जब तक बदी-जीवन मे हो, तब तक तुम्हे कठोर अध्ययन का विचार त्याग देना चाहिए। तुम्हारा स्वास्थ्य इस समय जैसा है उसे देखते हुए बहुत अधिक मानसिक परिश्रम ठीक नहीं होगा। प्रसगत क्या तुमने किसी पर्वतीय स्थल में स्थानातरण के लिए आवेदन दिया है?

गोपाली ने अभी तय नहीं किया है कि भविष्य में वह क्या पढ़ेगा। वह अभी भी कटक में है।

सुनील यहां अगले महीने के मध्य तक आने वाला है।

खूकू (मेजदीदी की पुत्री) का विवाह आगामी मंगलवार को मुजफ्फरपुर के एक प्रमुख वकील बाबू अपूर्व कृष्ण मित्र के दूसरे पुत्र के साथ होने जा रहा है। वह लड़का मुजफ्फरपुर में वकालत करेगा।

तुमने मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछा है। इस वर्ष मेरी तबियत बहुत अच्छी नहीं रही है। बीच-बीच में मुझे बदहजमी हो जाती है — शायद शक्ति से अधिक काम करने के कारण। मैं कुछ कविराजी औषधियां ले रहा हूं, जिनसे मुझे फायदा हुआ है। मैंने अभी तय नहीं किया है कि लंबी छुट्टी कहां बिताई जाएं। अगर मुझे कोई व्यावसायिक काम मिल गया तो (जैसे कलकत्ता के एक मामले में गवाहों से जिरह करने का काम) मैं श्रीलंका जाना चाहूंगा। अगर ऐसा काम मुझे नहीं मिला तो मुझे नहीं मालूम कि मैं कहां जाऊंगा। मेम्यों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? वहां का एक आकर्षक यह है कि मैं समय-समय पर तुमसे मिलता रहूंगा। क्या वह स्थान काफी सुखप्रद है? शायद तुम्हारे जेल-निरीक्षक तुम्हें इस विषय में जानकारी दे सकेंगे।

तुमने मुझे अपना पिछला पत्र कब लिखा था? मेरी मेज पर तुम्हारा आखिरी पत्र 30-6-26 का लिखा हुआ पड़ा है। हो सकता है कि उस तिथि के बाद लिखे गए तुम्हारे पत्रों को मैंने कहीं ऐसी जगह रख दिया हो कि मैं उन्हें नहीं ढूंढ पा रहा हूं।

कृपया इस पत्र के उत्तर में मुझे अपने बारे में सभी बातें लिखो।

हम सब ठीक हैं। प्यार पूर्वक,

तुम्हारा सस्नेह,
शरत

श्री सुभाष सी. बोस,

पुनश्च:

श्री सुकुमार सेन (भोम्बल के श्वसुर) ने कार्पोरेशन के सहायक सचिव पद के लिए आवेदन किया है। उन्होंने अपने आवेदन की एक प्रति भेजी है, जिसमें उन्होंने कहा है कि कुछ समय पूर्व उन्होंने अपने मूल प्रमाण-पत्र तुम्हारे पास छोड़े थे। क्या तुम्हें याद है कि तुमने उन्हें कहां रखा है?

प्रोफेसर वीरेंद्र चन्द्र मुखर्जी (जो तुम्हारे समय में प्रेसिडेंसी कालेज में थे और बाद में राजशाही में) इस पद के एक अन्य उम्मीदवार हैं। वे एक पखवाड़ा या तीन सप्ताह

पहले मुझसे मिलने आए थे और मैंने कहा था कि मैं उनके विषय में तुम्हें लिख दूगा और तुम्हारी राय ले लूगा। तुम्हारी उनके विषय मे क्या राय है?

प्रोफेसर वीरेन्द्र मुखर्जी और श्री सुकुमार सेन के विषय में तुम्हें जो भी जानकारी हो मुझे लिख भेजना।

205 शरत चन्द्र बोस के नाम

माडले
7 8 26

प्रिय दादा

आपके 10 17 और 31 जुलाई के पत्र मुझे क्रमश 17 जुलाई 27 जुलाई और 7 अगस्त को मिले। मुझे खेद है कि मैं आपको गत दो या तीन सप्ताह से नहीं लिख पाया।

मुझे आपके 10 जुलाई के पत्र के साथ जोन्स के पत्र उसकी टिप्पणी आदि की टाइप की हुई प्रतिया मिल गई थीं। वे बहुत ही दिलचस्प और हास्यास्पद थीं।

भूख हडताल के दौरान मेरा वजन घटकर 138 पौंड तक आ गया था। बाद मे वह बढकर 145 अथवा 144 पौंड हो गया और गत कई सप्ताहों से 143 पौंड पर स्थिर है। हडताल से पहले यह 155 पौंड था और बरहमपुर मे 183 था आपने अपने 17 जुलाई के पत्र मे कहा है कि मै सरकार को आवेदन दू कि मेरा स्थानातरण उत्तरी भारत के किसी पर्वतीय स्थल मे किया जाए। मैंने इस पर सावधानी से विचार किया है और मुझे नहीं लगता कि ऐसा करने से मुझे कोई और लाभ होगा सिवाय इसके कि मुझे भावशून्य शब्दो मे मनाही मिल जाएगी जिसे पाकर मेरा दिल कुछ और खट्टा हो जाएगा। इसलिए मेरे हित मे यही है कि मैं वर्तमान परिस्थितियों को समन्वय भाव से सहन करता रहू। अतत मेरी मन शाति तो मुझसे कोई नहीं छीन सकता।

आपने कुछ समय पूर्व द स्टेट्समैन से समझौता करने के बारे मे मेरी राय मागी थी। मैंने उत्तर में कहा था कि मैं इस मामले पर निर्णय पूरी तरह आप पर छोडता हू। विशेषत इसलिए कि मुझे परिस्थिति के सभी पहलुओं की जानकारी नहीं है। तब से अब तक मुझे इस मामले मे और कोई सूचना नहीं मिली है।

श्रीमती दास किसके साथ रह रही हैं? और भोम्बल का परिवार किसके साथ रहता है तथा उसकी देखभाल कौन करता है?

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सब उन्हें सांत्वना देने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। देशबंधु की अनुपस्थिति में उनके संबंधियों और मित्रों का व्यवहार कैसा है?

क्या आपको कश्मीर से कपड़ों के नमूने मिले हैं? अगर नहीं तो कब तक मिलने की आशा है?

मैंने आपको इतिहास संबंधी जो टिप्पणी भेजी थी, उसका आप क्या करेंगे? अगर आप राखाल बाबू को नहीं खोज पाए हैं तो आप बाबू विजय मजुमदार को देने की कोशिश कर सकते हैं। वे (विजय बाबू) लैंसडाउन रोड पर रहते हैं (कम से कम पहले रहा करते थे)। उनसे मैं जीवन में केवल एक बार मिला हूं, लेकिन वे शायद पिताजी को जानते हैं क्योंकि वह बहुत समय पूर्व संभलपुर में रह चुके हैं। विजय बाबू निस्संदेह अनेक विषयों में पारंगत विद्वान हैं और राखाल बाबू के समान ही दिग्गज प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति हैं। श्री ब्रजेन्द्र सील ने उनकी बहुत सराहना की है। दुर्भाग्यवश राखाल बाबू और विजय बाबू में अनबन है। अगर विजय बाबू से संपर्क किया जाए और वे चाहें तो आसानी से सहायता कर सकते हैं। शायद सत्य बाबू उन्हें जानते होंगे।

मुझे प्रसन्नता है कि राजशाही में आप जिस उद्देश्य से गए थे, वह पूरा हुआ।

आशा है कि मुखर्जी साहब कलकत्ता में नेशनल स्कूल के लड़कों के लिए खेल के मैदान की व्यवस्था कर देंगे। मैं स्कूल के अधिकारियों को लिखूंगा कि वे आपका पत्र लेकर मुखर्जी से मिलें।

मैंने गत सप्ताहों में कोई गंभीर काम नहीं किया, यद्यपि मौसम अनुकूल रहा है। मैं यही समझता हूं कि मैं सर्दियों से पहले ऐसा कर पाऊंगा। यह अत्यंत दुखदायी स्थिति है कि दिन के दिन निकलते जाएं और उनका सर्वोत्तम उपयोग न किया जा सके। मुझे संदेह है कि शांतिपूर्ण वातावरण में अध्ययन के लिए ऐसा अवसर मुझे रिहाई के बाद मिल पाएगा।

मुझे याद नहीं आता कि मैंने आपको बताया है या नहीं कि स्थानीय सरकार के आदेश से हमारे मामले में रात में कमरों में तालाबंदी समाप्त कर दी गई है। इससे निस्संदेह कुछ राहत मिली है। अब मैं कुछ अन्य लोगों के साथ बरामदे में सोता हूं। इससे हमें दखीना का आनंद मिल जाता है।

मुझे अपनी सूची से पता चला है कि मैंने आपको इससे पहले 30 जून को पत्र लिखा था। इसके बाद मैंने मेजदादी दीदी को 21 जुलाई को पत्र लिखा था। अब हम सप्ताह में तीन की जगह चार पत्र भेज सकते हैं। इससे मुझे उन पत्रों को निपटाने में कुछ सहायता मिली है, जो बहुत समय से बिना उत्तर के पड़े हुए थे।

मुझे यह जानकर चिंता हुई कि आपको बदहजमी की शिकायत है। यह निस्संदेह शक्ति से अधिक काम करने और व्यायाम न करने के कारण है। क्या आप सवेरे घूमने का कार्यक्रम नहीं बना सकते? उससे आरंभ में भले ही बहुत लाभ न दिखाई दे, लेकिन

उसका स्थाई लाभ अवश्य होगा। कविराजी औषधिया भी असर दिखाएगी। मैंने गत सर्दियों में लगातार दो माह तक कविराजी औषधियों का सेवन किया और मुझे उनसे बहुत लाभ हुआ। मैं अपने अगले पत्र मे आपको मेम्यों के बारे मे भी लिखूगा। मैंने पाया है कि चाय पाचन की बडी शत्रु है यद्यपि जैसे जैसे अपच बढती है चाय के लिए तलब भी बढती जाती है। मैं समझता हू कि शाम को 5 या 6 बजे के बाद अगर चाय पी जाए तो विशेष रूप से हानि होती है। उससे रात्रि के भोजन के लिए भूख मर जाती है।

आप जानना चाहते थे कि क्या मुझे बगाल कौंसिल के लिए उत्तरी कलकत्ता से चुनाव लडने की इच्छा है ? मैं इस सबध मैं किन्हीं अन्य क्षेत्रों से सुझाव की आशा लगाए हुए था और आपसे सुझाव पाकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने सुझाव आने की आशा मे काफी पहले से अपना मन उसके पक्ष मे बना लिया था लेकिन आपकी जिज्ञासा से मुझे नए सिरे से सोचना पडा। काफी गभीर चितन के बाद 5 अगस्त को मैंने बगाल कौंसिल के लिए उत्तरी कलकत्ता से चुनाव न लडने का अपना निर्णय लिखकर भेज दिया। मैंने क्यों यह निर्णय किया इसके सभी कारणो मे जाना आवश्यक नहीं है। आप उनका अनुमान बखूबी कर सकते हैं।

बाबू सुरेन्द्र नाथ विश्वास (भूतपूर्व राय साहब) ने जो फरीदपुर जिले के मदारीपुर में सहयोगी वकील हैं और जिन्होंने सहायक सचिव के पद के लिए आवेदन किया था मुझसे कहा है कि मैं उनके बारे मे आपसे और सुकुमार बाबू से सिफारिश कर दू। उनके अनुरोध ने मुझे बहुत असमजस की स्थिति में रख दिया है। यह न जानते हुए कि अन्य आवेदनकर्ता कौन हैं और कार्पोरेशन द्वारा न पूछे जाने पर मैं कार्पोरेशन को या उसके किसी सदस्य को इस या उस व्यक्ति की सिफारिश नहीं कर सकता। मैं सुरेन बाबू को यही लिखने जा रहा हू। वे अपनी योग्यताओ को आसानी से कागज पर लिख सकते हैं और उससे अधिक मैं कह भी क्या सकता हू ? सभवत कार्यवाहक मुख्य कार्यपालक अधिकारी से न कि मुझसे राय देने के लिए कहा जाएगा। शायद समिति उम्मीदवारो का इटरव्यू करे और अपनी राय खुद कायम करे। सुरेन बाबू कभी राय साहब थे ये मदारीपुर के प्रभावशाली वकील हैं शायद कुछ समय तक स्थानीय बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे हैं और लगभग 12 वर्ष तक उसके सदस्य रहे हैं। वे असहयोग आदोलन के दौरान जेल जा चुके हैं और काग्रेस के लिए काम कर चुके हैं। अभी हाल में वे शायद मदारीपुर म सहायता कार्यों के इचार्ज रहे हैं।

श्री सुकुमार सेन ने लगभग दो वर्ष पूर्व किसी नौकरी के लिए दरख्वास्त दी थी और उस समय उन्होंने मेरे पास अपने मूल सर्टिफिकेट भेजे थे।

मैंने उन्हे अपने कागजात और पत्रो के साथ घर में रखा था और तलाशी के बाद शायद उन्हें पुलिस ले गई होगी। जो भी हो वे अब भी वही होगे। जब रागामामा बाबू यहा पिछली बार आए थे तो मैंने उनसे इसके बारे में कहा था और अनुरोध किया था कि वे सर्टिफिकेट का पता लगाकर उन्हे श्री सेन को वापस कर दे। वे शायद इस बारे

से भूल गए। कृपया किसी को कहें कि वह मेरे कमरे में खोज कर लें।

मुझे श्री सेन से मिलने का सौभाग्य कभी नहीं मिला और मुझे उनका प्रत्यक्ष परिचय नहीं है।

प्रोफेसर बंकिमचन्द्र मुखर्जी प्रेसिडेंसी कालेज में उस समय दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए थे, जब मैं वहां तीसरे वर्ष का विद्यार्थी था। वे एक कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र थे। उन्होंने एम. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की (अगर मेरी याददाश्त धोखा नहीं दे रही है तो) और अध्यापक के रूप में उनकी अच्छी धाक थी। उनकी उनके पद पर पुष्टि नहीं की गई जिस पर वे रंगपुर के कारमाइकेल कालेज के लिए चले गए। रंगपुर में उनका अधिकारियों से कुछ झगड़ा हुआ — जिनमें शायद प्रिंसिपल और जिला मजिस्ट्रेट भी था। झगड़ा काफी समय तक चला और प्रोफेसर मुखर्जी ने अंततः मजिस्ट्रेट के विरुद्ध मानहानि का दावा किया। मुझे मुकदमे या उसके फैसले के बारे में अधिक कुछ मालूम नहीं है। झगड़े के दौरान प्रोफेसर मुखर्जी ने कालेज छोड़ दिया (या शायद उनसे छोड़ने के लिए कहा गया —मुझे ठीक से पता नहीं है) और एन. सी. ओ. (असहयोग) आंदोलन में भाग लिया— असहयोगी के रूप में उनका कार्य कुछ सिलसिला रंगपुर जिले तक सीमित था, जहां उन्हें लोकप्रियता और प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आंदोलन के दौरान वे जेल गए और उनका स्थानांतरण रंगपुर से अलीपुर सेंट्रल जेल में किया गया। वहां मैं उन दिनों देशबंधु तथा अन्य लोगों के साथ रखा गया था। आंदोलन के दौरान वे कट्टरपंथी और मैं कहूं तो विशुद्धतावादी असहयोगी थे—वे जूते नहीं पहनते थे और विदेशी नमक नहीं खाते थे, निरामिषभोजी थे और गांधी टोपी लगाते थे। प्रायः एक वर्ष तक जेल में रहे। रिहाई के बाद से वे प्रकाश में नहीं आए हैं और मैं भी उनसे नहीं मिला हूं। कुल मिलाकर वे किसी को भी एक सुयोग्य, सीधे-सच्चे और विश्वसनीय व्यक्ति लग सकते हैं। असहयोग आंदोलन ने शायद उन्हें इतनी नैतिकता प्रदान की थी कि वे द्वन्द्व-विरोध को भुला बैठे थे, लेकिन मुझे पता नहीं है कि अब वे कैसे हैं। मैं नहीं जानता कि अन्य उम्मीदवार कौन-कौन हैं, लेकिन उनसे अधिक सुयोग्य उम्मीदवार पाना कठिन होगा। अगर आपने मुझसे स्पष्ट न पूछा होता तो मैं यह सब नहीं लिखता।

मैं यह पत्र और लंबा नहीं बनाऊंगा, क्योंकि मैं चाहता हूं कि यह आपको जल्द से जल्द मिल जाए। अगले बुधवार को मैं आपको फिर लिखूंगा।

आशा है, आप सब स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

श्री एस. एन. सेन महोदय,
337, रसेल रोड,
कलकत्ता।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाष

206. वासंती देवी के नाम*

माडले जेल
(द्वारा डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
13, इलीसियम रो कलकत्ता)
21-7-26

सेंसर और पास किया
अस्पष्ट
28-7-26
कृते डी आई जी, आई बी, सी आई डी,
बंगाल।

श्री चरणेषु मा,

मैंने काफी समय पहले आपके पटना के पते पर आपको एक पत्र लिखा था और मुझे आशा है कि वह आपको मिल गया होगा। मैं 16 जून को आपके लिए पत्र लिखने बैठा, परंतु कुछ ही पंक्तियों को लिखने के बाद मेरी अंगुलियों ने जवाब दे दिया। वह पत्र आज तक मैं पूरा नहीं कर पाया और इसलिए आपको यह नया पत्र लिखने बैठा हूं। आपको आपदाओं के जिस झंझावात से होकर गुजरना पड़ा है, उसे सोचकर ही मन कांप उठता है। क्या भगवान सचमुच इतना क्रूर है? क्या वह मनुष्य की इतनी कड़ी परीक्षा लेता है? 29 जून को दोपहर बाद दुर्भाग्यपूर्ण समाचार पाकर मैंने यहां के अपने अन्य सहयोगियों की इच्छानुसार एक तार भेजा था। उसके बाद मैं आपको एक पत्र लिखना चाहता था, परंतु समझ ही नहीं पाया कि किन शब्दों में लिखूं। मैं लिखता भी तो क्या? कहता भी तो क्या? आपको सांत्वना भी देता तो कैसे? आपका दुख हल्का करता तो किस प्रकार? मैं बिल्कुल ही नहीं सोच पाया कि कैसे करूं। आपको देखने की बहुत तीव्र इच्छा है, किंतु वह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती। कौन जानता है कि इस जन्म में वह पूरी होगी भी या नहीं। हमने भाग्य से समझौता कर लिया है और सोच लिया है कि हमें हमेशा यहीं रहना होगा। इस बंदीगृह की दीवारों के घेरे में हमारे लिए मां की कल्पना, बंगमाता की कल्पना और जगतमाता की कल्पना--जिसके प्रति हम श्रद्धा के फूल अर्पित करते रहे हैं-- अब और भी अधिक प्रिय श्रद्धेय तथा पवित्र बन गई है और बनती जाएगी। मां की ये प्रतिमाएं हमारे मन में सदैव ताजा रहेंगी, परंतु हमारी कल्पना में उनकी उपस्थिति से भौतिक जगत से हमारी दूरी का दर्द और भी अधिक गहरा जाएगा।

---

* मूल बांग्ला से अनूदित।

कौन कह सकता है कि अपने मनःक्षितिज पर आकाश में नक्षत्रों की भांति दिन, महीने और वर्ष बीत जाएंगे। फिर भी मेरा यह विश्वास डिगेगा नहीं कि मनुष्य की आत्मा ही सत्य है, उसका जीवन ही सत्य है और मनुष्य तथा मनुष्य के बीच मधुर संबंध ही सत्य है। जीवन का प्रवाह अनंत है और यद्यपि किसी एक जीवन का अंत हो सकता है, तथापि जीवन के बंधनों का कभी अंत नहीं होता। धरती की शक्तियां हमें भले ही कारागृह में डाल दें, वे भले ही हमारा सर्वस्व छीन लें, लेकिन वे जीवन के प्रवाह को कभी भी अवरुद्ध नहीं कर सकतीं, न वे जीवन के शाश्वत और पवित्र बंधनों में हस्तक्षेप कर सकती हैं। हम वर्तमान की सभी यंत्रणाओं और शृंखलाओं की उपेक्षा करने के लिए सक्षम और संनद्ध हैं और हम उस महिमामय भविष्य के स्वप्न और चिंतन में मग्न हैं जो हमारे लिए प्रतीक्षित है। हम भविष्य के उषाकाल की प्रतीक्षा में वर्तमान घनघोर अंधकार को सह लेंगे। यही कारण है कि हम नितांत असहाय अवस्था में रहते हुए भी उज्ज्वल प्रभात की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम यह मानकर चल रहे हैं कि विश्व में अंततः न्याय का ही बोलबाला होगा। इसीलिए मेरा विश्वास है कि एक दिन हमारे लिए भी शुभ घड़ी आएगी, जब वह आएगी तो हम आज की निराशा और रिक्तता से पूरी तरह बदला चुका लेंगे। इसी विश्वास के कारण हम अभी तक जीवित रहे हैं और इसी को लेकर हम आगे भी अपने वर्तमान भौतिक अस्तित्व का जड़भार ढोते जाएंगे।

मैंने न जाने क्या बकवास लिख दी है। मुझे हर समय आपकी चिंता बनी रहती है। आप कैसी हैं? मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि मेजदादा और मेजोबहू दीदी आपसे अक्सर मिलने जाते हैं। यहां हम सबके बारे में कोई नई बात नहीं है।

इति
आपका सेवक,
सुभाष

207. सुंदरी मोहन दास का पत्र

109, अपर सर्कुलर रोड,
कलकत्ता
27-5-26

प्रिय सुभाष,

मुझे आज के समाचार-पत्र से पता चला है कि मंदाग्नि के कारण तुम्हारा वजन 20 सेर घट गया है। क्या तुम्हें संग्रहणी भी है? अगर है, तो अपने डाक्टर की सलाह लेकर निम्नलिखित दवाइयां लेना शुरू कर दो :-

लैक्टो पेप्टिन 10 ग्रा.
टाका डायस्टेस 2 ग्रा. एच. एस.
बिस्मथ सबनाइट्रेट 10 ग्रा.

पुन्य इपीकाक को 3 ग्रा

एम मैथ मिप एम टी

एम एफ टी पुल्य सेंड 8 प्रति

एक दिन मे तीन बार खाने के बाद

अगर 'गदल' की पतिया मिल सकें तो अपने भोजन के अतर्गत उबले मुलायम चावल के साथ उसकी पत्तियों का शोरबा लेना चाहिए।

अगर तुम्हे कब्ज और अम्लता की शिकायत है तो निम्नलिखित दवाए लेनी चाहिए

सोडा बाइकार्ब 12 ग्रा

सल्फ 3 ग्रा

टाका डिस्टस लि 3 आई

एस पी टी ईथर क्लोर एम एक्स वी

सेंड 8 प्रतिदिन खाने के बाद दो बार

जो भी हो भगवान की दया से हम शीघ्र ही फिर मिलगे।

मुझे डाक्टर कुमुद शकर से पता चला है कि तुम जातीय आयुर्विज्ञान विद्यालय के बारे में जानना चाहते हो।

तुम्हारे प्रयत्नो से एटाली क्षेत्र में एक मकान और प्लाट मिल गया है। 16 जनवरी 1925 को अस्पताल वहा ले जाया गया। उसका नाम 'चितरजन अस्पताल' रखा गया है। तुमने शायद यह सब कुछ अखबारो में पढा होगा।

अस्पताल में अब इतनी अधिक सख्या में मरीज आते हैं कि उसका विस्तार करना आवश्यक हो गया है। पिछले बुधवार को जो बैठक हुई थी उसमें एक लाख रुपया स्वीकृत हुआ। चितरजन दास के नाम पर वहा नए से नए उपकरण के साथ एक शल्य चिकित्सा खड बनाया जाएगा। यह शरत बाबू (शरत चन्द्र बोस) के द्वारा की गई पहल के कारण हो सका है। अगर वे प्रस्ताव न रखते तो धन की स्वीकृति वाला प्रस्ताव पास होना कठिन था। बहुत शीघ्र अस्पताल में 150 बिस्तर हो जाएगे। कार्पोरेशन ने 7 500 रु का आवर्तक अनुदान दिया है जो अब शायद बढकर 12 000 रुपये हो जाएगा। इतने पैसे से अस्पताल चलाना बहुत कठिन है। इसलिए हमें जनता के सामने याचक बनकर जाना होता है। अगर तुम यहा हमारे बीच म होते तो हम 'द स्टेट्समैन' 'द इंग्लिशमैन आदि से भी कहते कि वे अपने कोष से चदा दें।

लेकिन पैसे की बात यहीं तक। तुम्हारे साथी उत्सुक हैं कि तुम्हें अपने बीच स्वस्थ रूप में फिर से देखें।

जब हम फिर मिलेंगे तो मैं कलकत्ता कार्पोरेशन के बारे में तुमसे बातचीत करूंगा। वहां सभी कोई — कौंसिलर, कार्यपालक अधिकारी और क्लर्क — तुम्हारी अनुपस्थिति महसूस करते हैं। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि तुम सभी बीमारियों से मुक्त और पूरी तरह स्वस्थ होकर हमारे बीच फिर से आ जाओ।

सम्पूर्ण शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा विश्वस्त,
डा. सुंदरी मोहन दास

208. शिवनाथ चटर्जी के नाम
(322, हरिश्चन्द्र घाट रोड, बनारस)

मांडले जेल
4-2-26

प्रिय शिवनाथ,

मैं नहीं बता सकता कि तब मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, जब तुमने अपने विवाह के अवसर पर मुझे याद किया। जिस दिन सवेरे मुझे तुम्हारा पत्र मिला, उसी दिन मुझे अचानक तुम्हारी याद आई थी। उसके पहले बहुत समय से मुझे तुम्हारी याद भूली हुई थी। तुम्हारा पत्र मेरे पास पहुंचने में बहुत देरी हुई, क्योंकि तुमने अपने पत्र पर यहां का पता लिखा था।

तुम्हारे पत्र को पाकर हमारे कालेज के दिनों की पुरानी और मधुर स्मृतियां मन में उभर आईं। जीवन-सागर में ठतरते हुए हम एक-दूसरे से दूर जा पड़े हैं। अब मुझे तुमसे न जाने कितने सवाल पूछने की इच्छा होती है — अपने खेती-बाड़ी के काम में तुमने कितनी प्रगति की है? क्या तुम्हारी वह पत्रिका अब भी प्रकाशित हो रही है, जिसमें तुम ऐतिहासिक विषयों पर लेख दिया करते थे? तुम अब क्या अनुसंधान कार्य कर रहे हो और कालेज में पढ़ाने तथा उससे संबद्ध अध्ययन करने के अलावा तुम और किन विषयों का अध्ययन कर रहे हो? मुझे विश्वास है कि तुम अब तक चलता-फिरता ज्ञानकोष होंगे। अपने कालेज के दिनों में तुम एक सुपठित व्यक्ति थे और मुझे विश्वास है कि पिछले कुछ वर्षों में तुमने लगातार ज्ञानार्जन किया होगा। जो भी हो, मुझे कुछ बातों के लिए तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है और इन्हें मैं एक-एक करके गिनाऊंगा। क्षेमेश कहां है और कैसा है और क्या कर रहा है? क्या तुम्हारे लिए उससे यह पूछना संभव होगा कि वह मुझे पत्र लिखने की स्थिति में है या नहीं? मुझे वास्तव में कुछ बातों के लिए उसकी सहायता की भी आवश्यकता है और इसलिए अगर मेरा उससे पत्र-व्यवहार हो सके तो बड़ी मदद मिलेगी। अगर वह सहमत हो तो मुझे उसका पता लिख भेजना।

1 क्या यह सच है कि डाक्टर नरेन लाहा तथा कुछ अन्य लोगों ने मिलकर अंग्रेजी में ऐतिहासिक विषयों से संबद्ध एक पत्रिका निकाली है? क्या वह एक अच्छी पत्रिका है? क्या उसमें मूल अनुसंधान पर आधारित लेख और निबंध प्रकाशित होते हैं?

2 क्या राखाल दास बंद्योपाध्याय ने बांग्ला के इतिहास के अतिरिक्त और भी कोई पुस्तक लिखी है?

3 भूदेव मुखोपाध्याय कृत 'बांग्ला इतिहास' पुस्तक की भूमिका में यह लिखा हुआ है 'बांग्लार इतिहास' प्रथम भाग, नवाब अलीवर्दी खानेर ,शासन-काल पर्न्जलो *रामगति न्यायरत्न विरचित, अर्थात बंगाल का इतिहास — प्रथम भाग, अलीवर्दी खा* के शासन-काल तक, रामगति न्यायरत्न द्वारा लिखित। भूमिका में यह भी संकेत दिया गया है कि दूसरा भाग ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने लिखा था और उसके अंतर्गत लार्ड बेंटिक तक का समय आ जाता है। क्या तुम बता सकते हो कि ये दोनों पुस्तकें कहां से मिलेंगी?

4 क्या सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के बांग्ला में अनुवाद हुए हैं? (मैंने सुना है कि दुर्गादास लाहिड़ी ने उनका अनुवाद किया है।) अगर ऐसे अनुवाद उपलब्ध हैं तो क्या तुम उन्हें किसी व्यक्ति से या किताबों की दुकान से लेकर कुछ दिन के लिए मेरे पास भेज सकते हो?

5 *क्या बांग्ला में वेद और 'अवेस्ता' का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है?* (मैंने सुना है कि इस प्रकार की पुस्तकें जर्मन भाषा में पाई जाती हैं।) अगर ऐसी किताबें हैं तो वह कहां से मिलेंगी?

6 बहुत अच्छा होगा कि तुम मुझे कलकत्ता विश्वविद्यालय के एम. ए. कोर्स का विवरण भेज सको, जिससे यह पता चल सके कि वहां बांग्ला भाषा और साहित्य उड़िया भाषा और साहित्य (मैं नहीं जानता कि कलकत्ता विश्वविद्यालय में उड़िया भाषा की पढ़ाई एम.ए. तक होती है या नहीं), मराठी भाषा और साहित्य, भारतीय इतिहास, *अर्थशास्त्र, राजनीति प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, तुलनात्मक भाषा विज्ञान* आदि कोर्सों के लिए कौन-सी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

7 क्या तुम्हारे पास भारतीय इतिहास, बंगाल के इतिहास, शिक्षा और संस्कृति के बारे में ऐसी पुस्तकें हैं, जिन्हें तुम किसी तरह की असुविधा के बिना मेरे पास कुछ दिन के लिए भेज सको? कृपया इन पुस्तकों की सूची भेज दो।

8 क्या आसाम और 'अन्नाम' देश के इतिहास के बारे में पुस्तकें मिलती हैं? अगर हां, तो वह कहां से मिल सकती हैं?

9 क्या तुम्हें मालूम है कि भारत में धार्मिक आंदोलनों के आरंभ, उदय और ह्रास का तिथिवार विवरण उपलब्ध है? अगर यह हो, तो मुझे कृपया सूचित करना।

10. क्या भारतीय दर्शन के इतिहास की कोई ऐसी पुस्तक है, जिसमें तिथिवार विवरण दिया गया हो, जैसे कि आम तौर पर पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में दिया जाता है? क्या इस विषय पर लिखी गई सुरेन्द्र नाथ दास गुप्ता की पुस्तक में तिथिवार वर्णन दिया गया है? और क्या उसमें दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं के बीच संबंध को तिथिवार दिया गया है अथवा केवल तार्किक ढंग से?

11. अपनी पुस्तक 'बांग्लार इतिहास' के प्रथम भाग में राखालदास बंद्योपाध्याय ने बंगालियों और तमिलों की जातिगत समानता के बारे में लिखा है और यह भी दिखाया है कि द्रविड़ों की जातिगत समानता सुमेरियनों से है। क्या तुम्हें मालूम है कि इस दिशा में कोई शोध हुआ है? राखाल दास बंद्योपाध्याय ने प्रोफेसर हाल का हवाला दिया है जिनके अनुसार, द्रविड़ों का मूल स्थान भारत था। और यहां से वे ई. पूर्व 2000 में ब्लूचिस्तान होते हुए बेबीलोन गए, जहां उन्होंने साम्राज्य की नींव डाली—क्या यह स्थापना अब भी स्वीकार्य मानी जाती है? क्या इस विषय पर और कुछ प्रकाश डाला गया है? मोहनजोदड़ों की खोज के बारे में किस पुस्तक या पत्रिका में मुझे सामग्री मिल सकती है?

स्वामी विवेकानंद ने अपने लेख 'आर्य और तमिल' में (स्वामी विवेकानंद का सम्पूर्ण वाङ्मय, मायावती स्मृति संस्करण, पृष्ठ 246, 247) लिखा है कि 'जब तक कि ढेर-सी अस्पष्टता को दूर करते हुए पंडित सवरिरायन ने अपने लेख आर्यों और तमिलों का सम्मिश्रण विषय पर 'सिद्धांत दीपिका' में लेख नहीं लिखा . . . हमें यह भी प्रसन्नता है कि वे साहसपूर्वक प्राचीन तमिलों और अक्काडो—सुमेरियन जातिगत एकता की स्थापना को प्रस्तुत करते हैं . . . हम यह भी सुझाव देंगे कि मिस्र निवासियों की 'पुंट भूमि' न केवल मलाबार की भूमि थी, बल्कि इस जाति ने साहसिक जाति के रूप में मलाबार तट से महासागर की ओर प्रयाण किया . . . लेकिन उन्हें अपना पुंट प्रदेश हमेशा वरदानी जन्मभूमि के रूप में प्रिय लगता रहा।' क्या पंडित सवरिरायन की कोई पुस्तक या लेखन उपलब्ध हैं? क्या कोई ऐसी पुस्तक अथवा निबंध मिलता है जिसमें स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित 'पुंट' संबंधी स्थापना के पक्ष या विपक्ष में लिखा गया हो?

12. मैं निम्नलिखित पुस्तकें खरीदना चाहता हूं, लेकिन मुझे पता नहीं कि वे कहां से मिलेंगी। अगर तुम किसी पुस्तक भंडार से प्रबंध कर सको कि वह मुझे वी.पी. द्वारा इन्हें भेज दे तो बहुत अच्छा होगा। मैं समझता हूं कि इनमें से कुछ बंगवासी कार्यालय या संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी में उपलब्ध होंगी :

    1. हरतत्व दिधीति—हरकुमार टाकुर द्वारा संकलित और सुरेन्द्र मोहन टाकुर द्वारा प्रकाशित।

    2. हरिभक्ति विलास (गोपाल भट्ट प्रणीत वैष्णव स्मृति संबंधी एक ग्रंथ)।

    3. शुद्धितत्वम्

4 श्रद्धातत्वम्—रघुनदन भट्टाचार्य कृत। बगवासी और चडी चरणस्मृति भूपण द्वारा प्रकाशित।
5 अत्रि सहिता
6 विष्णु सहिता
7 हारीत सहिता
8 याज्ञवल्क्य सहिता
9 उपना सहिता
10 अगिरा सहिता
11 यम सहिता
12 उपस्तम्य सहिता
13 सवर्त सहिता
14 कात्यायन सहिता
15 बृहस्पति सहिता
16 पाराशर सहिता
17 व्यास सहिता
18 शख सहिता
19 लिखित सहिता
20 दक्ष सहिता
21 गौतम सहिता
22 शत्पथ सहिता
23 वशिष्ठ सहिता
24 बौधायन सहिता

अत्रि सहिता से वशिष्ठ सहिता एक पचानन तर्करत्न द्वारा इनके अनुवाद किए गए हैं। अच्छा होगा अगर मुझे उनके मूल श्लोकों के साथ बाग्ला अनुवाद मिल सके। अगर ऐसा न हो तो बाग्ला अनुवाद से काम चलेगा।

क्या तुम विश्वविद्यालय से यह सूचना ले सकते हो कि कलकत्ता मे ऐसे उपकरण मिलते हैं या नहीं, जिनका प्रयोग मानव शरीर-विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा चेहरा, आख नाक, सिर आदि की नाप-जोख करने के लिए होता है? कलकत्ता मे वे किस दुकान में मिलते हैं और उनका अनुमानित मूल्य क्या है?

मैंने तुमसे एक साथ बहुत से सवाल पूछ लिए हैं और बहुत से दावे किए हैं। आशा है, तुम अन्यथा न मानोगे। इन तमाम प्रश्नो और दावों मे से तुम्हारे लिए जिनका भी उत्तर देना सम्भव हो और जिन्हे भी तुम सिद्ध कर सको वे ही मेरे लिए यथेष्ट होंगे। मैं बखूबी समझ सकता हू कि तुम्हारे लिए सभी प्रश्नो का उत्तर एक साथ देना सभव नहीं होगा। इसलिए तुम अपनी सुविधा के अनुसार उत्तर लिखते रहना और उन्हें मेरे पास भेजते रहना।

अगर तुम पत्र लिखो तो उन्हें इस पते पर भेजना : द्वारा डी.आई.जी., आई.बी., सी.आई.डी. (बंगाल), 13, इलीसियम रो, कलकत्ता। अगर तुम वर्तमान पते पर पत्र लिखोगी तो वे मेरे पास काफी देर से पहुंचेंगे, क्योंकि कलकत्ता से मुझ तक पत्र बिना सेंसर हुए नहीं आते। अगर तुम किताबें भेजो तो उन्हें द्वारा सुपरिंटेंडेंट, सेंट्रल जेल, मांडले, अपर बर्मा, के पते पर भेजना। पुस्तकों के पार्सल भेजते हुए डाक द्वारा जेल सुपरिंटेंडेंट के नाम उनकी सूचना भी भेजना जिससे सहायता मिलेगी, क्योंकि तब जेल के अधिकारी पार्सलों की विशेष चिंता करेंगे।

पत्र और लंबा करने से कोई फायदा न होगा। अपने बारे में शुभ समाचार देकर मुझे प्रसन्नता प्राप्त करने का अवसर दो।

तुम्हारा सस्नेह,
सुभाष

पुनश्च:

यदि तुम्हारे पास जायसवाल की पुस्तकें हों तो क्या संभव होगा कि तुम उन्हें मेरे पास भेज सको?

सुभाष

209. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
22-7-26

प्रिय महोदय,

हम चूंकि इन्सीन जेल को सूचित कर चुके हैं कि सरकारी अनुदान से हम कई पुस्तकें खरीदने जा रहे हैं, यह जानना उपयोगी होगा कि वे क्या पुस्तकें खरीद चुके हैं या खरीदना चाहते हैं। इससे पारस्परिक आदान-प्रदान में सुविधा होगी। यह जानना भी वांछनीय होगा कि पुस्तकों की खरीद के लिए निर्धारित 200 रुपये में से वे कितनी राशि खर्च करने जा रहे हैं। उस हालत में शेष पैसा हम खर्च कर सकते हैं। हमें प्रसन्नता होगी यदि इन्सीन जेल के सुपरिंटेंडेंट को उक्त बातें लिख दें।

आपका विश्वस्त,
एस.सी. बोस

210. मांडले जेल के सुपरिंटेंडेंट के नाम

मांडले
22-7-26

प्रिय महोदय,

हम आभारी होंगे, यदि आप मांडले के डिप्टी कमिश्नर को लिख दें कि वे हमें निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ने के लिए दे दें :

1 अपर बर्मा गजेटियर का पांचवा खंड।

2 ब्रिटिश बर्मा गजेटियर (लोअर बर्मा का) के खंड 1 और 21

3 बर्मा सरकार के पुरातत्व विभाग की गत तीन वर्षों की रिपोर्टें।

हमें यह सूचना पाकर भी प्रसन्नता होगी कि क्या उनके पुस्तकालय में बर्मा के इतिहास के बारे मे ऐसी पुस्तकें हैं, जिन्हे वे सुविधापूर्वक हमे पढ़ने के लिए भेज सकें।

आपका विश्वस्त,
एस सी बोस

211. डी. आई. जी , आई. बी , सी आई.डी. के नाम

सी आई डी , बंगाल,
13, इलीसियम रो,
कलकत्ता।

मांडले,
23-7-26

प्रिय महोदय,

सात मई 1926 को मैंने 19बी, डालिमतला लेन, कलकत्ता के पते पर श्री शैलेन्द्र नाथ घोषाल को एक पत्र लिखा था। 15 जुलाई को लिखा गया उनका एक पत्र 21 जुलाई को मुझे मिला, जिसमें कहा गया था कि उन्हे मेरा उक्त पत्र नहीं मिला है। मैंने पत्र भेजने की तिथि की पुष्टि दो अलग-अलग पुस्तिकाओ मे दर्ज तारीख द्वारा तथा इचार्ज जेलर द्वारा जेल की पुस्तिकाओं में दो अलग-अलग इदराजो द्वारा कर ली है। इसलिए मुझे कोई सदेह नहीं है कि उक्त पत्र यहा से समय पर भेजा गया था, लेकिन वह अपने गतव्य पर नहीं पहुचा। मैं कृतज्ञ होऊंगा, यदि आप खोज के नतीजे से मुझे सूचित करें।

आपका विश्वस्त
एस सी बोस

212. गोपबंधु दास के नाम

पता-मांडले
द्वारा डी आई जी , आई बी , सी आई डी ,
बंगाल।
13, इलीसियम रो, कलकत्ता
26-7-26

प्रिय गोपबंधु बाबू,

मैंने आपको गत 7 अप्रैल को पत्र लिखा था लेकिन मुझे अभी तक आपका उत्तर नहीं मिला है। आशा है कि आपको मेरा पत्र यथासमय मिल गया होगा। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि आपने पिछले वर्ष जो पुस्तकें भेजी थीं, वे मुझको मिल गई हैं। वे

यहां के कार्यालय में बहुत समय तक पड़ी रही, क्योंकि उन्हें कोई नहीं पढ़ सका था और हाल में उनका अता-पता चला। उनके नाम हैं : (1) त्रिभाषी, (2) वर्ण बोध, (3) उड़िया व्याकरण, (4) शिशुबोध, और (5) पिलंको रामायन। मैं जानने को उत्सुक हूं कि क्या आपने मुझे किताबों का एक और पार्सल भी भेजा था अथवा क्या उपर्युक्त पुस्तकें ही भेजी गईं थीं जो पहले पार्सल में थीं? अगर मुझे उनको पढ़ने के बाद अन्य उड़िया पुस्तकें स्थानीय तौर पर नहीं मिल पाईं तो मैं आपको लिखूंगा और आप किसी उपर्युक्त पुस्तक-विक्रेता से कह देंगे कि वह वी.पी. द्वारा मुझे कुछ पुस्तकें भेज दें। अगर पुस्तकें वी.पी. द्वारा आती हैं तो प्रेषण के दौरान उनके गलत जगह या देरी से पहुंचने का अंदेशा नहीं रहता। जैसे ही पुस्तकें यहां पहुंचेंगी, उनकी सूचना मुझे मिल जाएगी क्योंकि उनके लिए पैसे भरने होंगे।

मैं अपने पिछले पत्र का उत्तर पाने के लिए उत्सुक हूं। आप सब कैसे हैं? मैं ठीक-सा ही हूं। कृपया मेरा प्रणाम स्वीकारें और मित्रों को मेरी याद दिला दें।

आपका,
सुभाष

पंडित गोपबंधु दास,
समाज कार्यालय, पुरी।

पुनश्च:

क्या आपको श्रीयुत् विजय मजुमदार की पुस्तक 'उड़ीसा इन द मेकिंग' मिली है? उसके बारे में आपकी क्या राय है? मैंने स्वयं उसे नहीं देखा है, लेकिन मैंने उसकी कुछ समीक्षाएं पढ़ी हैं।

213. विभावती बोस के नाम

मांडले जेल
27-7-26

प्रिय मेजबहू दीदी

आपका 14 जुलाई का पत्र मिल गया। इससे पहले मुझे अशोक का भी पत्र मिला था। उसे मैं शीघ्र उत्तर दूंगा। नादादा अब कौन-सा काम कर रहे हैं? क्या वे पुरानी नौकरी पर सिजूया चले गए हैं अथवा उनकी नई नौकरी है? जब सेजदीदी गोरखपुर वापस जाएंगी तो क्या वे गोरा को पीछे छोड़ जाएंगी या सभी बच्चों को साथ ले जाएंगी? मुझे मां और पिताजी के समाचार बहुत दिन से नहीं मिले हैं। गजट में मैंने देखा है कि गोपाली पास हो गया है। अब वह क्या करेगा? आप समय-समय पर वासंती देवी के पास जाती रहती हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। वे अब कहां रहती हैं? उन्हें एक बार देखने की मुझे तीव्र इच्छा है, लेकिन कोई उपाय नहीं है। सरकार की खुशामद करना मेरे वश की बात नहीं है। मेरा दुख और दुर्भाग्य यही है कि उन पर लगातार आती हुई विपत्ति के समय मैं उनकी किसी भी प्रकार से सेवा नहीं कर पाया।

यहा वृष्टि बहुत कम होती है। फिर भी इस माह गर्मी बहुत कम है। यह समय यहा स्वास्थ्यदायक नहीं है—जेलखाने में और शहर में खूब हारी-बीमारी चल रही है। हममें से एक महानुभाव को सैंडफ्लाई फीवर नाम की बीमारी हो गई थी, जो इन्फ्लुएजा के ढग की होती है। ऐसा कहा जाता है कि वह एक प्रकार के मच्छर के काटने से होती है। एक अन्य साथी को पेट की बीमारी अपेंडिसाईटिस हुई। एक अन्य को डेंगू ज्वर हुआ। हमें चिता हुई कि वह टायफायड मे बदल जाएगा, लेकिन छठे दिन बुखार उतर गया। इन दिनो मे किसी का भी स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता—किसी भी काम-काज में मन नहीं लगता। लेकिन मुझे कोई गभीर बीमारी नहीं है।

आप सब कैसे हैं ? पूजा की छुट्टिया कब आरभ हो रही हैं ? यहा की बातों और व्यवस्था से पता चलता है कि हमारी सख्या मे और वृद्धि होने वाली है। मेरा प्रणाम स्वीकारें।

आपका,
सुभाष

214. विभावती बोस के नाम*

श्री मा दुर्गा सहाय

माडले जेल
28-7-26

प्रिय मेजबहू दीदी,

आपके 24 अप्रैल के पत्र का उत्तर मैं आज पर्यन्त नहीं दे पाया। क्या गोपाली की परीक्षा का परिणाम प्राप्त हो गया है। अशोक और अरुणा के पत्र मुझे देरी से मिले—मैंने उन्हे उत्तर दे दिया है। आशा है, उन्हें मेरे पत्र यथासमय मिल गए होंगे। दीदी के पत्र से मालूम हुआ कि अरुणा अपने ससुराल में है। बडी दीदी इन दिनों कहा पर हैं ? विमल कहा है और उसकी पढाई कैसी चल रही है ?

इस बार अब तक जून और जुलाई महीने अपेक्षाकृत ठडे रहे हैं, लेकिन नहीं मालूम कि गर्मी बद जाएगी या नहीं। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से ये दो महीने अच्छे नहीं होते। एक-एक कर यहा सभी ने चारपाई पकड ली है। मैं अवश्य चलता-फिरता रहा हू, लेकिन

* मूल बागला से अनूदित।

मैं नहीं समझता कि शीतकाल आने से पहले मेरे पेट की हालत ठीक होगी या मैं रोगमुक्त हो सकूंगा। पिछले साल की तरह अब किसी काम में मेरा मन नहीं लगता—किसी प्रकार से दिन कट रहे हैं। शीत ऋतु आने पर मैं अध्ययन का क्रम फिर आरंभ करने की योजना बना रहा हूं। मैंने अखबारों में पढ़ा है कि वहां तेज गर्मी पड़ रही है और दारुण गर्मी से लोगों की जान तक गई है; अब कैसी गर्मी है।

मैंने मेजदादा को लिखा था कि वे बच्चों को संगीत-वाद्य और चित्रांकन सिखाने के लिए शिक्षक रख लें। आरंभ में वे स्वेच्छा से सीखने को तैयार नहीं होंगे और कुछ हद तक दबाव में काम लेना होगा। किंतु इसका सुफल उन्हें पूरे जीवन के लिए मिलेगा। अगर मैं गाना-बजाना और चित्रांकन जानता तो यहां के दिन और आनंद से कटते।

सुग्गा खाते-खाते खूब मोटा हो गया है—लेकिन उसे हम जो पढ़ाना सिखाना चाहते हैं उसकी ओर कोई प्रगति दिखाई नहीं देती। कबूतरों की वंशवृद्धि होती जा रही है—अब हमारे पास छह जोड़े हो गए हैं। जोड़े काले और सफेद हैं, एक जोड़ा लाल पंखों वाला है, एक जोड़ा सफेद और दो जोड़े मयूरपंखी हैं। मयूरपंखी कबूतर देखने में विशेष सुंदर हैं और वे मोरों की तरह पंख पसार कर नृत्य करते हैं। दो जोड़ी अंडे इस समय सेये जा रहे हैं। जब वे फूटेंगे तो वंश में और भी वृद्धि हो जाएगी। जब कबूतर रोज सवेरे यहां के छोटे से तालाब के इर्द-गिर्द कतार बांधकर बैठते हैं तो बहुत सुंदर दृश्य सामने आता है।

मां और पिताजी कहां हैं और कैसे हैं? बहुत समय से मुझे उनका कोई पत्र नहीं मिला है। क्या छोटेमामा की परीक्षा का परिणाम आ गया है? वे और छोटदादा कब तक लौटेंगे? मीरा के टायफायड की बात मैंने इससे पहले नहीं सुनी थी—दीदी के पत्र से मुझे यह खबर मिली। मीरा अब कैसी है? नादादा इन दिनों क्या काम कर रहे हैं? उनकी नौकरी पक्की है या अस्थाई? लालमामा बाबू की प्रेक्टिस कैसी चल रही है? अन्य मामा बाबू कहां हैं और कैसे हैं? लालमामा बाबू का स्वास्थ्य कैसा है? गोपाली इस समय कहां है? वह मुझे पत्र लिख सकता था। क्या दीदी आपके साथ ही रहेंगी या कटक जाएंगी? पॉली का स्वास्थ्य कैसा है? संजदादा की फैक्ट्री की चीजें बाजार में पहुंची हैं या नहीं?

आपका,
सुभाष

परिशिष्ट 1

दिलीप कुमार राय को सुभाष चन्द्र बोस द्वारा 9-10-25 को लिखे गए पत्र के सबध मे दिलीप कुमार राय के नाम रवींद्रनाथ ठाकुर का पत्र—

[दिलीप कुमार राय ने बनारस से 27 सितम्बर 1925 को सुभाष चन्द्र बोस को एक पत्र लिखा था (इस पुस्तक के पृष्ठ 81 पर पत्र सख्या 54)। उस पत्र म उन्होने रसल रोमा रोला और श्री अरविद के बारे मे चर्चा की थी। उस पत्र के उत्तर में माडले जेल बर्मा से सुभाष चन्द्र ने 9 अक्तूबर 1925 को दिलीप कुमार राय को पत्र लिखा था (इस पुस्तक के पृष्ठ 120 पर पत्र सख्या 82) जिसम उन्होने कला के प्रयोजन पर अपने विचार व्यक्त किए थे। दिलीप कुमार राय ने सुभाष चन्द्र बोस को 21 नवबर 1925 को जो पत्र लिखा था (इस पुस्तक के पृष्ठ 123 पर पत्र सख्या 83) उसके अतर्गत पुनश्च में उन्होने लिखा था 'मैं तुम्हारे पत्र को रवींद्रनाथ को भेजने का लोभ सवरण नहीं कर पाया। उन्होंने उत्तर मे तुम्हारे पत्र की प्रशसा में चार पृष्ठ लिख भेजे हैं। उन्होंने सचमुच मुझे बहुत सुदर पत्र लिखा है जिसे मैं कभी तुमको दिखाऊगा।' राय ने इस पत्र को अपनी बाग्ला पुस्तक आनामी के पृष्ठ 331 333 म प्रकाशित किया। रवींद्रनाथ ठाकुर के पत्र का रूपातर नीचे दिया जा रहा है।

—सपादक]

प्रिय दिलीप

मुझे कल तुम्हारा पत्र पाकर बडी प्रसन्नता हुई। सुभाष ने बहुत ही सुदर पत्र लिखा है—मुझे उस पत्र के माध्यम से उनके मन मस्तिष्क की विशिष्टताओ को जानकर सताप हुआ। सुभाष ने जो कहा है वह निरपवाद सत्य है। जब कला अपनी चरम सीमा उत्कृष्टता का स्पर्श करती है तो कला सपन्न और कला के आस्वादक जन भी बोध की चरम उच्चता तक पहुच जाते हैं। यह आशा नहीं की जा सकती कि उस ऊचाई तक प्रत्येक व्यक्ति पहुच सकेगा—यह वह अतरिक्ष है जहा सौंदर्य के इद्रधनुषी मेघ मडराते हैं और चूकि मेघ उस अगम्य ऊचाई पर घिरते हैं इसीलिए वहा से झरती वर्षा धरती को समृद्धि से भरपूर कर देती है। इस प्रकार सामान्य और असामान्य की कडी जुडती है—उसको निचले स्तर पर लाने स यह सभव नहीं हो सकता जो अपनी सहज ऊचाई पर स्थित है। रस की सृष्टि करने वाले यदि बाजारू माग को पूरा करने लगें तो सब गुड-गोबर हो जाता है। यह माग तो कलाकार की अतरात्मा से उठती है। और यदि उस माग के प्रत्युत्तर मे वह कुछ ऐसा सर्जन करता है जिसका स्थाई मूल हो तो वह स्वभावत सम्पूर्ण मानवता की थाती बन जाता है। लेकिन अगर वह सबको सपति बन भी जाए,

तो भी वह इतना सस्ता नहीं होता कि उसे सब कोई तत्काल हृदयंगम कर लें। वासंती सौंदर्य का प्रस्फुटन सभी के लिए होता है, लेकिन क्या हम कह सकते हैं कि उसका आस्वादन सभी समान रूप से करते हैं? अगर आम्र मंजरी से प्रत्येक को समान आनंद नहीं प्राप्त होता तो क्या हम इसके लिए मंजरी को दोषी ठहराएंगे। क्या हम यह कहेंगे कि आम्र मंजरी को अप्रस्फुटित होना चाहिए था? क्या हम यह कहेंगे कि एक गरीब देश में बकुल पुष्प की कोई सार्थकता नहीं है और सभी पुष्पोद्यानों को बैंगन के बगीचों में बदल जाना चाहिए? अगर सौंदर्य-भावना से शून्य व्यक्ति बकुल पुष्पों की ओर आंख उठाकर देखना तक नहीं चाहता तो बकुल पुष्पों को अनंतकाल तक उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए; उन्हें निराश नहीं होना चाहिए और सामान्य लोगों के हित-चिंतकों के भड़काने पर उन्हें अरबी के खेत में नहीं बदला जाना चाहिए। यूनान में सोफोक्लीज और ऐस्किलस के नाटक केवल अभिजात वर्ग के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए लिखे गए थे। वहां के लोग भाग्यशाली थे कि उन्हें किसी पुरानी दासू राय की शरण नहीं लेनी पड़ी। यदि सामान्य जनता के सम्मुख अच्छी चीज लगातार प्रस्तुत की जाए तो वे धीरे-धीरे उसे ग्रहण करने की मानसिकता निर्मित कर लेते हैं। हम कवि से कहेंगे कि तुम विविध रूप में अपनी सर्वोत्तम रचना दो; अगर कवि इसमें सफल होता है तो हम सामान्य लोगों से कहेंगे : प्रभु करे तुम सर्वोत्तम को हृदयंगम करने में सक्षम बनो।

जो लोग कला और सौंदर्य के स्रष्टा हैं, वे केवल यही जानते हैं कि क्या सत्य है और क्या असत्य, क्या अच्छा है और क्या बुरा—वे कला-सृजन की इन दो श्रेणियों को ही जानते हैं—वे एक प्रकार की कला का सृजन विशिष्ट व्यक्तियों के लिए और दूसरे प्रकार की कला-रचना सामान्य व्यक्तियों के लिए नहीं करते। सामान्यतः लोगों का यह विश्वास है कि शेक्सपियर सामान्य लोगों का कवि है, लेकिन क्या मैं पूछूं कि क्या हैमलेट सामान्य जनों के लिए लिखा गया नाटक है? मैं नहीं जानता कि कालिदास को कैसे श्रेणीबद्ध करूं, लेकिन सभी निर्विवाद कवि के रूप में उसकी सराहना करते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि यदि 'मेघदूत' ग्रामीणों के एक समूह में पढ़कर सुनाया जाता है तो क्या इस अत्याचार के लिए पढ़ने वाले को दंड संहिता के अंतर्गत सजा नहीं दी जानी चाहिए? यदि कालिदास के काल में सामान्य जनता का कोई ध्वजवाहक विक्रमादित्य को सिंहासन-च्युत कर देता और कालिदास को अपनी आज्ञा के अनुसार रचना करने को कहता तो 'मेघदूत' की जगह वे जो रसशून्य पद्य-रचना करते, क्या वह समय की कसौटी पर खरी उतर सकती? तुम मुझसे पूछ सकते हो कि आखिर इस समस्या का समाधान क्या है? मेरा यह कहना है कि 'मेघदूत' अवश्य ही सामान्य जनों के आस्वादन के योग्य रचना है, लेकिन जो लोग सामान्य स्तर से ऊंचे स्तर पर हैं उनका यह दायित्व है कि वे सामान्य जनों को उस आस्वादन के लिए सक्षम बनाएं और 'मेघदूत' को अपनी ही चीज समझने की प्रेरणा दें। कवि कुलगुरु का यह काम नहीं है कि वे 'मेघदूत' की जगह उसे न समझ सकने वाली जनरुचि की खातिर अलंकारिकता से बोझिल बनाए और मधुमक्षिका युक्त 'पांचाली' की रचना करें, कृत्रिमता सभी कलाकारों

और कवियों का महान दोष है। लेकिन यह कहना कि जो कुछ भी सभी के द्वारा सरलता से समझा जा सके वही स्वभाविक है और जिसके लिए मानसिक क्षमताओं के अर्जन की आवश्यकता पडे वह कृत्रिम है, एकदम गलत बात है। सच तो यह है कि हम सदेश उन लोगों के लिए सुरक्षित रखते हैं जिन्हें हम उच्चवर्गीय कहते हैं और सामान्य जनों को दही-भात से बहलाते रहते हैं क्योंकि उन्हे हम अपने से छोटा मानकर चलते हैं। बच्चों के प्रति मन में आदर के अभाव के कारण ही हम बच्चों के लिए साहित्य-लेखन का काम ऐसे लोगों को सौंपते हैं जिनके मन-मस्तिष्क के द्वार बद रहते हैं। वे बचकानी और मूर्खतापूर्ण बातो को ही बच्चो के लिए साहित्य मानते हैं। मैं बच्चों का आदर करता हू। इसलिए जब मैं अपने स्कूल मे बच्चो को पढाता हू तो मैं उनके लिए सच्चा साहित्य प्रस्तुत करता हू—ऐसा साहित्य जिसका आस्वादन हम सभी कर सकें। निस्सदेह मुझे प्रयास करना होता है जिससे बच्चे ऐसे साहित्य का रसास्वादन कर सके। मैं नहीं समझता कि मुझे इस प्रयास में सफलता नहीं मिली है।

मुझे तुमसे इतना सब कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी—मैं धीरे-धीरे इतना वाग्युद्ध-पटु होता जा रहा हू कि मित्रों के बीच में अपनी जबान बद नहीं रख पाता। जो भी हो, सुभाष के पत्र को मेरे पास भेजकर तुमने मुझे अत्यत आनद प्रदान किया है। कृतज्ञता स्वरूप मैंने चाकू से दाहिने हाथ की तर्जनी मे घाव हो जाने के बावजूद इतना ज्यादा लिख डाला।

तुम्हारा,
रवींद्रनाथ ठाकुर

परिशिष्ट 2

कलकत्ता कार्पोरेशन के तत्कालीन मुख्य कार्यपालक अधिकारी सुभाष चन्द्र *बोस की गिरफ्तारी के प्रतिवाद में मेयर देशबंधु चितरंजन दास का भाषण*

(सुभाष, सत्येन्द्र, अनिल बरन तथा अन्य लोगों की गिरफ्तारी के समय देशबंधु, जो लगातार और कठोर परिश्रम के बाद शिमला में विश्राम कर रहे थे, सुभाष की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर तुरंत कलकत्ता वापस लौटे। उन्होंने तत्काल कलकत्ता कार्पोरेशन की आम बैठक सुभाष तथा अन्य लोगों की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए बुलाई और अत्यंत अद्‌भुत भाषण दिया।)

भाषण के सबसे अधिक स्मरणीय शब्द इस प्रकार थे : ' . . . मैं यही कह सकता हूं कि श्री सुभाष चन्द्र बोस उतने ही क्रांतिकारी हैं, जितना स्वयं मैं हूं। उन्होंने मुझे क्यों नहीं गिरफ्तार किया? मैं जानना चाहूंगा कि क्यों नहीं? अगर देश से प्रेम करना गुनाह है तो मैं गुनहगार हूं। अगर सुभाष चन्द्र बोस अपराधी हैं तो मैं भी अपराधी हूं—कार्पोरेशन का मुख्य कार्यपालक अधिकारी ही नहीं, मेयर भी समान रूप से अपराधी है सुनो ('सुनो' की आवाज और तालियों की गड़गड़ाहट)।

'मैं विश्वास नहीं कर सकता कि इस कार्रवाई का उद्देश्य क्रांति के अपराध का दमन है। वे अध्यादेश वैध संगठनों के खिलाफ हैं। मैं जोर देकरा कहना चाहूंगा कि वे वैध संगठनों को कुचल देना चाहते हैं।

'एक शब्द और, और मैं चुप हो जाऊंगा। सुभाष बोस की 1818 के रेगूलेशन-3 के अंतर्गत गिरफ्तारी इस कार्पोरेशन के लिए भयावह है। राष्ट्रीयता के अथवा सरकार के विरुद्ध किसी राष्ट्रीय संघर्ष के प्रश्न के अलावा वह इस कार्पोरेशन के लिए खतरे की घंटी है। अगर सरकार को आज मुख्य कार्यपालक अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई करने दी जाती है तो कल वह एक के बाद एक अन्य लोगों को गिरफ्तार कर सकती है और कार्पोरेशन के स्वराजिस्टों या बहुसंख्यक सदस्यों द्वारा की गई प्रशासनिक व्यवस्था को ठप्प कर सकती है। आप एक ठोस उदाहरण देखें। मान लीजिए कि सरकार सोचती है और उनमें से कुछ सचमुच ऐसा सोचते हैं कि कार्पोरेशन का प्रशासन कांग्रेस वालों के हाथ में नहीं रहना चाहिए और मान लीजिए कि इस दृष्टिकोण से प्रेरित होकर वे मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा उनके बाद के अधीनस्थ अधिकारियों को एक के बाद एक पकड़ कर जेल में ठूंसते जाते हैं और इस प्रकार कांग्रेस के सदस्यों द्वारा प्रशासन को असंभव बना देते हैं। मैं चाहता हूं कि आप इस संभावना पर यहां विचार करें और मेरा कहना है कि इस दृष्टिकोण से अगर सुभाष चन्द्र बोस की निजी बात छोड़ भी दी जाए

तो भी, यदि इससे पैदा होने वाले अधिक महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्नो को छोड भी दिया जाए तो भी यह कार्पोरेशन के लिए खतरे की घटी है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप निश्चित शब्दो मे अपना प्रतिवाद व्यक्त करने के लिए इस कार्रवाई के लिए सरकार की निंदा करें और उस अधिकारी मे अपना विश्वास व्यक्त करें जिसे गिरफ्तार करके ले जाया गया है।

'रेगूलेशन-3 के अतर्गत सुभाष बोस की गिरफ्तारी नौकरशाही के विशुद्ध पाशविक शक्ति-प्रदर्शन की परिचायक है। एक शात सवेरे वे मुख्य कार्यपालक अधिकारी के अपने दायित्व का पालन करने के लिए कार्पोरेशन गए। वे घर लौटे और उन्होने पाया कि उनके घर में पुलिस दल मौजूद है। उनके विरुद्ध एक भी आरोप नहीं लगाया गया। उनसे कोई भी स्पष्टीकरण नहीं मागा गया। उनसे एक भी कारण नहीं बताया गया, सिवाय यह कहने के कि 'हमारे पास यहा पाशविक बल मौजूद है और हम तुम्हें बदीगृह तक घसीट ले जाएगे'। क्या यह पाशविक बल ही नहीं है? क्या यह कानून का शासन है? क्या यह न्याय है? एक भी आरोप नहीं लगाया गया। एक भी स्पष्टीकरण नहीं मागा गया। उन्होंने बस बल प्रयोग करके उनको उनके घर से जेल के अदर पहुचा दिया।'